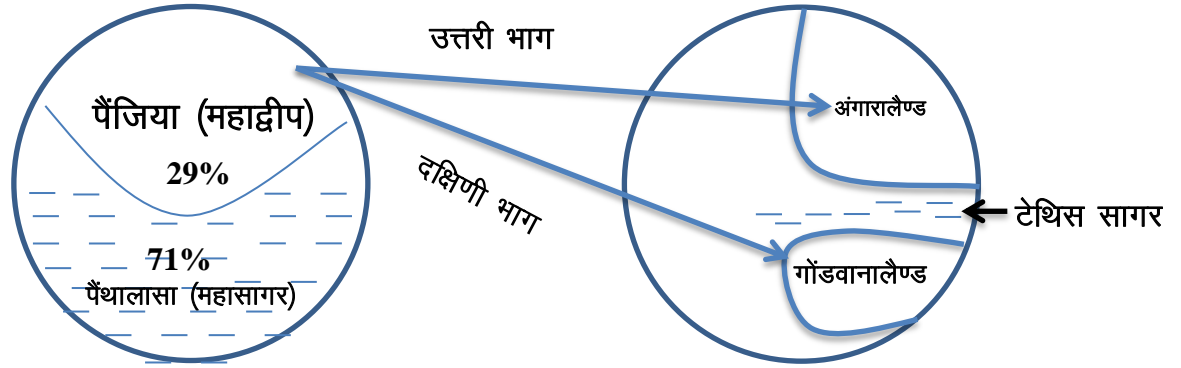
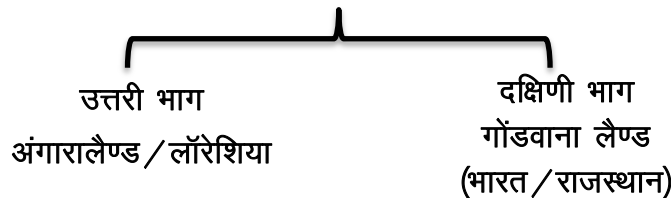


1. राजस्थान की उत्पत्ति



➤ पैजिया:- अल्फ्रेड वेगेनर के अनुसार महाद्वीपों के संयुक्त रूप को पैजिया कहाँ जाता है, जो कालान्तर/वर्तमान में दो भागों में विभाजित है।

पैजिया

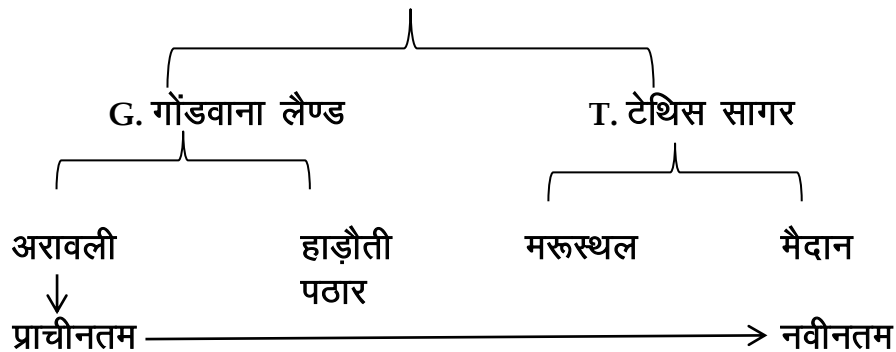


➤ पैथालासा :- वेगेनर के अनुसार महासागरों के संयुक्त रूप को पैथालासा कहाँ जाता था। इसका मूल महासागर प्रशान्त महासागर था।

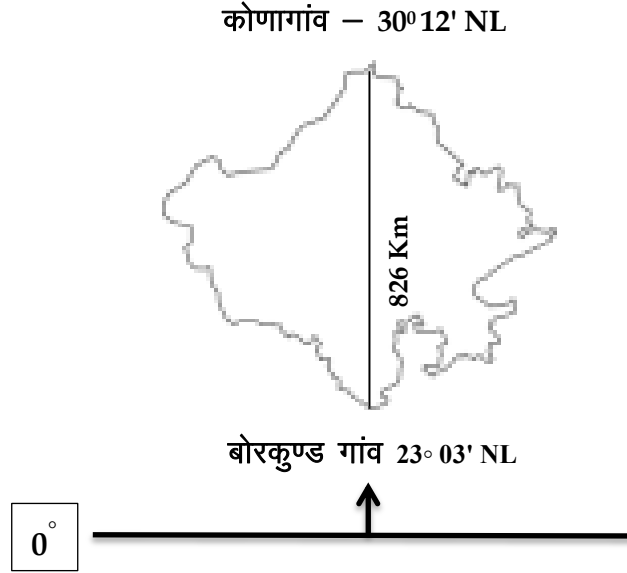
➤ टेथिस सागर :- यह एक भू सन्नति था, जो अंगारालैण्ड व गोंडवाना लैण्ड के मध्य स्थित था।

राजस्थान का निर्माण :-

GT



➤ अरावली व हाड़ौती भारत के "प्रायद्वीपीय पठार" का हिस्सा है, जबकि मरुस्थल व मैदान भारत के "उत्तर विशाल मैदान" का हिस्सा है।



❖ नोट:-

(i) 7°09' अक्षांशों में राजस्थान का विस्तार है।

(ii) 23 1/2° उत्तरी अक्षांश – Tropic of Cancer line या कर्क रेखा या उत्तरी अयनांत जो राजस्थान के बाँसवाड़ा एवं डूंगरपुर से गुजरती है। राजस्थान में इसकी कुल लम्बाई 26 किलोमीटर है।

➤ नोट:- 21 June :-

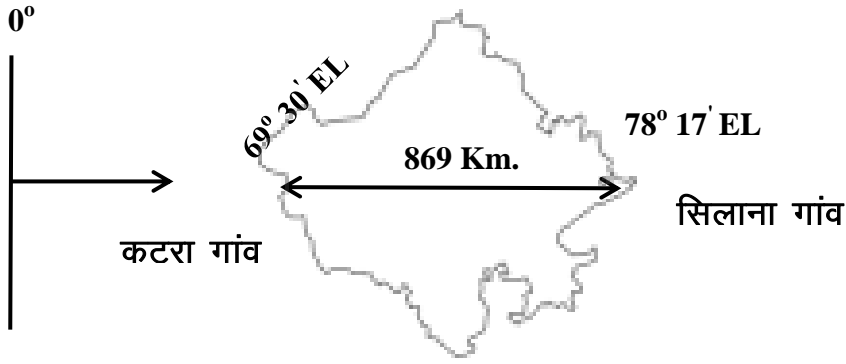
- राजस्थान/उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे बड़ा दिन एवं सबसे छोटी रात इसे कर्क संक्रान्ति (Summer solstice) कहा जाता है।

- 2015 से इसे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है।

(iii) अक्षांश रेखाओं को जलवायु रेखायें भी कहा जाता है।

b. राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार :-

- देशान्तर – 69° 30' EL – 78° 17' EL
- स्थान – कटरा गांव सिलाना गांव
- जिला – जैसलमेर धौलपुर
- दूरी – पश्चिम – 869KM – पूर्व



नोट:-

- (i) 8° 47' देशान्तरों में राजस्थान का विस्तार है।
- (ii) मध्य गांव



- सेटेलाइट सर्वे के अनुसार राजस्थान का मध्यगांव - गगराना (नागौर)
- (iii) देशान्तर रेखाओं को तिथि रेखा व समय रेखा कहा जाता है।

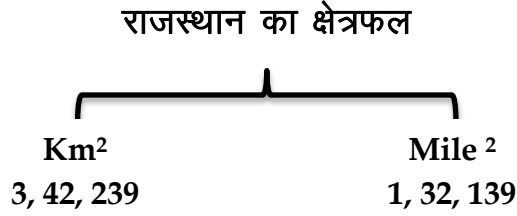
1° देशान्तर - 4 Min.
1' देशान्तर - 4 Sec.

- राजस्थान के पश्चिम (जैसलमेर) व पूर्व (धौलपुर) के मध्य समयांतराल-35 Minutes, 8 Secscond.

B. राजस्थान का विस्तार:-

- a) क्षेत्रफल
- b) आकृति
- c) सीमा

a) क्षेत्रफल –



➤ नोट:—

- देश के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान – 10.41% (1 Nov. 1956)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का स्थान – प्रथम (1 Nov. 2000)

राजस्थान में क्षेत्रफल की दृष्टि से

बड़े जिले – JBBJ	छोटे जिले – DDDP
<ol style="list-style-type: none"> 1. जैसलमेर – 38401 Km² 2. बीकानेर – 30239 Km² 3. बाड़मेर – 28387 Km² 4. जोधपुर – 22850 Km² 	<ol style="list-style-type: none"> 1. धौलपुर – 3034 Km² 2. दौसा – 3432 Km² 3. डूंगरपुर – 3770 Km² 4. प्रतापगढ़ – 4449 Km²

➤ नोट:—

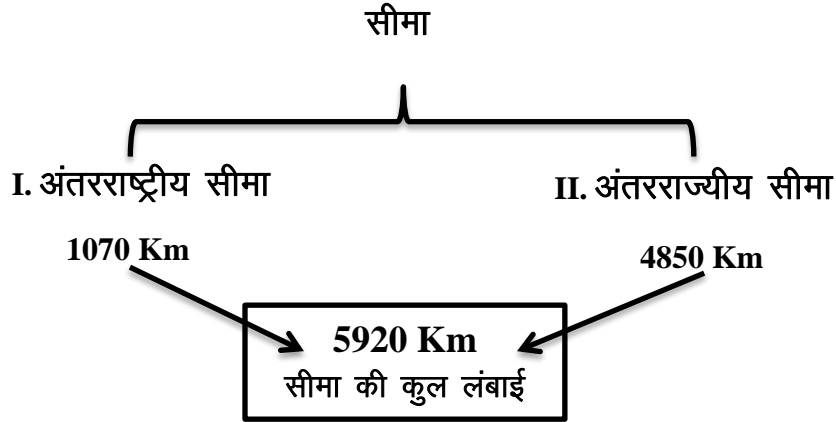
- जैसलमेर राजस्थान का क्षेत्रफल का **11.22** प्रतिशत है।
राजस्थान में 10 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रफल वाला एकमात्र जिला – **जैसलमेर**।
- धौलपुर राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का **0.89** प्रतिशत।
राजस्थान में 1 प्रतिशत से कम क्षेत्रफल वाला एकमात्र जिला – **धौलपुर**।
- राजस्थान का सबसे बड़ा जिला (जैसलमेर) सबसे छोटे जिले (धौलपुर) का **12.66** गुणा है।
- विश्व के क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान **0.25** प्रतिशत है। (भारत— **2.42** प्रतिशत)

प्रमुख देश – राजस्थान	प्रमुख देश – राजस्थान
फिनलैंड – बराबर	ब्रिटेन – 2 गुना
जर्मनी – बराबर	श्रीलंका – 5 गुना
पोलैंड – बराबर	इजराइल – 17 गुना
जापान – बराबर	
नार्वे – बराबर	

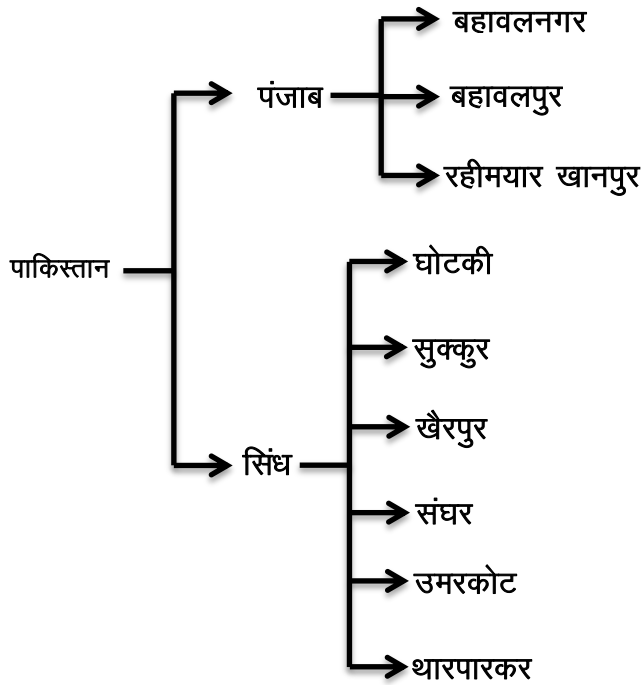
(b) राजस्थान की आकृति :-

➤ T.H. हैण्डले ने राजस्थान की आकृति रोमबस (Rhombus) अथवा विषमकोणीय चतुर्भुज कहा। इसे पतंगाकार आकृति भी कहा जाता है।

(c) राजस्थान की सीमा :-



I. अंतरराष्ट्रीय सीमा :-



महत्वपूर्ण तथ्य :-

1. राजस्थान के वह जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैं—

- (i) हनुमानगढ़ — पंजाब, हरियाणा
- (ii) डीग — हरियाणा, उत्तर प्रदेश
- (iii) धौलपुर — उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश
- (iv) बाँसवाड़ा — मध्यप्रदेश, गुजरात

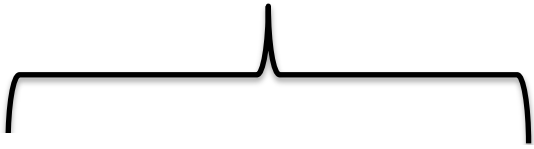
2. कोटा — चित्तौड़गढ़ :- राजस्थान के वे जिले जो एक राज्य के साथ दो बार सीमा बनाते हैं।

3. कोटा — राजस्थान का वह जिला जो एक राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है लेकिन अविखण्डित जिला है।

4. चित्तौड़गढ़ — राजस्थान का वह जिला जो एक राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है लेकिन विखण्डित जिला है।

5. भीलवाड़ा — चित्तौड़गढ़ को दो भागों में बाँटता है।

6. अंतर्राज्यीय सीमा पर —



सर्वाधिक लम्बी सीमा
झालावाड़ (मध्यप्रदेश)

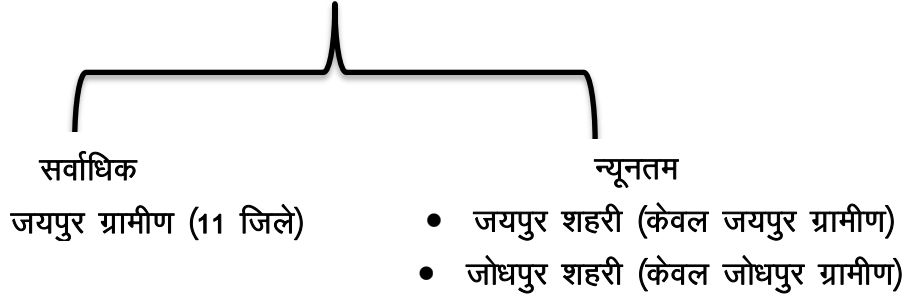
न्यूनतम सीमा
बाड़मेर (गुजरात)

7. 28 जिले :- राजस्थान के सीमावर्ती जिले हैं।

- 25 जिले — अंतर्राज्यीय सीमा पर स्थित।
- 23 जिले — केवल अंतर्राज्यीय सीमा पर स्थित।
- 5 जिले — अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित।
- 3 जिले — केवल अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित।
- 2 जिले — अंतर्राज्यीय व अंतर्राष्ट्रीय दोनों सीमा पर स्थित हैं (गंगानगर, बाड़मेर)

8. 22 जिले :- राजस्थान के अंतः स्थलीय (landlocked) जिले हैं।

नोट : राजस्थान के वे जिले जो सर्वाधिक एवं न्यूनतम जिलों से सीमा बनाते हैं।



नोट:- सीमावर्ती विवाद :-

- मानगढ़ पहाड़ी :- यह बाँसवाड़ा में स्थित है जो राजस्थान व गुजरात के मध्य विवादित है।

राजस्थान के ऐतिहासिक एवं भूगोल स्थल/वर्तमान स्थिति

1. राठी :- 25 सेमी से कम वर्षा वाला क्षेत्र को राठी क्षेत्र कहा जाता है।
इस क्षेत्र में सम्मिलित जिले, जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर
इस क्षेत्र में गाय की नस्ल को राठी भी कहा जाता है
- राठ/अहीरवाट :- यादव वंश द्वारा शासित क्षेत्र राठ के नाम से जाना जाता है।
इस क्षेत्र में मुख्य रूप से अलवर और जयपुर की कोटपूतली तहसील शामिल है।
2. शेखावाटी :- शेखावत राजवंश शासित क्षेत्र शेखावाटी के नाम से जाना जाता है।
इसमें शामिल जिले—चूरु, सीकर, झुंझुनू।
- तोरावाटी :- कांतली नदी का अपवाह क्षेत्र तोरावाटी के नाम से जाना जाता है।
इस क्षेत्र में शामिल जिले—सीकर, झुंझुनू
यह क्षेत्र तंवर वंशजों के लिए प्रसिद्ध है।
3. थली :- मरुस्थल का ऊँचा उठा हुआ भाग थली कहलाता है।
विस्तार —चूरु, बीकानेर
इस क्षेत्र में कोई भी नदी नहीं है।
- तल्ली :- मरुस्थल में बालूका स्तूपों के मध्य निम्न भूमि को तल्ली/तलाया कहते हैं।
तल्ली सर्वाधिक— जैसलमेर
4. मरु :- राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र को मरु कहा जाता है। जिसका निर्माण टेथिस सागर पर हुआ है।
इसका विस्तार मुख्यतः जैसलमेर, बीकानेर बाड़मेर, जोधपुर है।
मेरु :- अरावली पर्वतीय क्षेत्र को मेरु कहा जाता है। इसका निर्माण गोंडवाना लैण्ड से हुआ है।
अरावली राजस्थान का प्राचीनतम भौतिक प्रदेश है।

5. भोरार :- यह एक पठारी क्षेत्र है जो कुंभलगढ़ पहाड़ियों (राजसमंद) और गोगुंदा, पहाड़ी (उदयपुर) के बीच स्थित है।

नोट :- मेवाड़ अरावली की सर्वोच्च चोटी **जरगा** जो भोरार पठार पर स्थित है।

- भोमट :- यह एक पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र है जो उदयपुर एवं डूंगरपुर में स्थित है। इस क्षेत्र में भील जनजाति अधिक पायी जाती है।
- 6. मत्स्य :- ऐतिहासिक काल में अलवर के दक्षिणी-पश्चिमी भाग को मत्स्य कहा जाता था। इसकी राजधानी बैराठ थी जिसे वर्तमान में विराट नगर के नाम से जाना जाता है।
 - मत्स्य संघ :- एकीकरण के प्रथम चरण को मत्स्य संघ कहा जाता है। इस क्षेत्र में अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, निमराणा शामिल थे। मत्स्य संघ शब्द के. एम. मुंशी द्वारा दिया गया।
- 7. माल :- राजस्थान के हाड़ौती प्रदेश को माल कहा जाता है। जिसका निर्माण बेसाल्ट लावा से हुआ है। इसका विस्तार -कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़।
 - मालव प्रदेश :- प्रतापगढ़ व झालावाड़ को मालव प्रदेश कहा जाता है। इस क्षेत्र में मालवा पठार का विस्तार है।
- 8. बीड़ :- शेखावाटी की चारागाह भूमि को बीड़ कहा जाता है। इसका विस्तार मुख्यतः सीकर, चूरु, झुंझुनू
 - बीहड़ :- चंबल के अवनालिका अपरदन से निर्मित स्थलाकृतियाँ (बैडलैंड) को बीहड़ कहा जाता है।
विस्तार :- कोटा, बूंदी, करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर।
- 9. वागड़ :- राजस्थान के दक्षिणी भाग को वागड़ कहा जाता है जिसका विस्तार -बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़।

- बांगड़ :- पुरानी जलोढ़ मिट्टी का क्षेत्र जो अरावली के पश्चिम में स्थित है। इस क्षेत्र का विस्तार पाली, नागौर, सीकर एवं झुंझुनू में है।

10. ब्रजनगर :- झालरापाटन का प्राचीन नाम

- बृजनगर :- भरतपुर के क्षेत्र को कहा जाता है। जो UP से संलग्न है।

11. मारवाड़ :- राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र को मारवाड़ कहा जाता है।, जिसमें मुख्यतः जोधपुर संभाग शामिल है।

- मेरवाड़ा – मुख्यतः अजमेर तथा राजसमंद का आंशिक भाग मेरवाड़ा कहा जाता है।

- मेवाड़ – बप्पा रावल के वंशजों द्वारा शासित प्रदेश को मेवाड़ कहा जाता है।

इसमें शामिल मुख्य क्षेत्र – उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़, भीलवाड़ा

12. यौद्धेय – ऐतिहासिक काल में राजस्थान राज्य के उत्तरी भाग को यौद्धेय कहा जाता है।

वर्तमान में श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ जिले शामिल है।

13. जांगल :- बीकानेर और उत्तरी जोधपुर को जांगल कहा जाता है।

इस क्षेत्र की राजधानी अहिच्छत्रपुर थी।

नोट :- इस क्षेत्र में मुख्यतः कंटीली वनस्पति पायी जाती है।

14. अहिच्छत्रपुर – यह नागौर जिले का प्राचीन नाम था।

अहिच्छत्रपुर, सपादलक्ष एवं जांगल प्रदेश की राजधानी थी।

15. सपादलक्ष – चौहान वंशजों के द्वारा शासित क्षेत्र को सपादलक्ष कहा जाता है।

इसका मुख्यतः विस्तार अजमेर एवं आंशिक विस्तार नागौर व जोधपुर में था।

16. ढूंढाड़ :- ढूंढ नदी क्षेत्र को ढूंढाड़ कहा जाता है।

शामिल क्षेत्र – मुख्यतः जयपुर, टोंक और दौसा

17. कुरु क्षेत्र/कुरु प्रदेश :- अलवर के उत्तरी भाग को कुरु क्षेत्र कहा जाता है।

जिसका मुख्य विस्तार हरियाणा में है।

नोट :- कुरु क्षेत्र की राजधानी इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) थी।

18. शूरसेन क्षेत्र :- ऐतिहासिक काल में राजस्थान के पूर्वी भाग को शूरसेन कहा जाता था। इस क्षेत्र की राजधानी मथुरा थी।

इस क्षेत्र का विस्तार भरतपुर, करौली एवं धौलपुर में है।

19. हयाहय :- 18-19 वीं शताब्दी में हाड़ा वंशजों के क्षेत्र को हयाहय कहा जाता था।

इसमें शामिल मुख्य क्षेत्र कोटा, बूंदी है।

20. चन्द्रावती- यह सिरोही का प्राचीन नाम है।

यहां से भूकंप रोधी इमारतों के अवशेष मिले हैं।

21. जाबालिपुर - यह जालौर का प्राचीन नाम है जो जाबालि ऋषि के लिए प्रसिद्ध है।

इस क्षेत्र में जाल वृक्ष अधिक पाये जाते हैं।

22. मालानी-यह बाड़मेर का प्राचीन नाम है जो मल्लीनाथ संत/ऋषि के लिए प्रसिद्ध है।

23. मांड :- मांड गायिकी के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र मांड प्रदेश कहलाता है जिसका विस्तार जैसलमेर में है।

नोट: मांड के चारों ओर के क्षेत्र 'वल्ल' (जैसलमेर) कहा जाता है।

24. मेवात :- मेव जाति के क्षेत्र को मेवात कहा जाता है। जिसमें शामिल अलवर एवं भरतपुर है।

मेवल :- यह एक पहाड़ी क्षेत्र है जो मुख्यतः डूंगरपुर, बाँसवाड़ा में विस्तृत है।

25. कांठल :- प्रतापगढ़ जिले को कांठल के नाम से जाना जाता है। यह माही नदी के तट पर स्थित है।

राजस्थान के भौतिक प्रदेश

- राजस्थान के भौतिक प्रदेश – राजस्थान को 4 भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है जिसका आधार उच्चावच, जलवायु है।



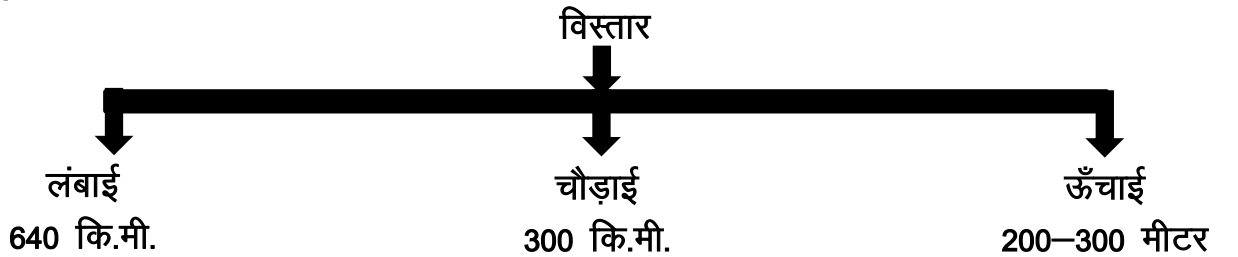
- भौतिक प्रदेशों की सामान्य जानकारी –

	मरुस्थल	अरावली	मैदान	हाड़ौती पठार
क्षेत्रफल	61.11%	9%	23%	6.89%
जनसंख्या	40%	10%	39%	11%
जिले	12	13	10	7
मृदा	बलूई / रेतीली	पर्वतीय / वनीय मिट्टी	दोमट / जलोढ़ मिट्टी	काली / रेगुर मिट्टी
जलवायु	शुष्क व अर्द्धशुष्क	उप आर्द्र	आर्द्र	अति आर्द्र

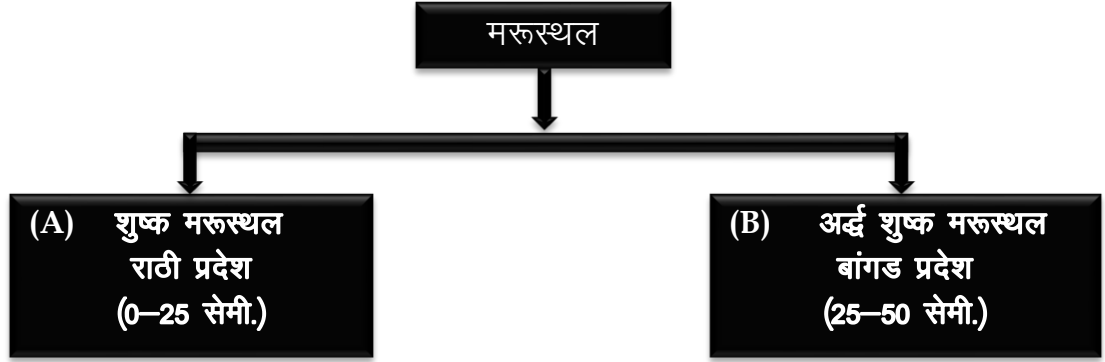
I. उत्तरी पश्चिमी मरुस्थल :-

- इसे थार मरुस्थल कहा जाता है।
➤ निर्माण – मुख्यतः टर्शियरी एवं प्लीस्टोसीन काल में हुआ है।

विस्तार :-



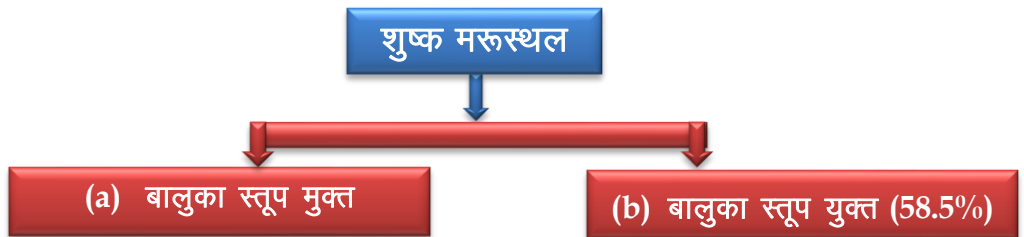
- ढाल :- उत्तर-पूर्व से दक्षिण पश्चिम
➤ मरुस्थल का अध्ययन :- अध्ययन की दृष्टि से मरुस्थल को दो भागों में बाँटा जाता है।



➤ **नोट:-** 25 सेमी. समवर्षा रेखा – यह मरुस्थल को दो भागों में बाँटती है जो शुष्क व अर्द्धशुष्क मरुस्थल है।

(A) शुष्क मरुस्थल/राठी प्रदेश:-

- 25 सेमी. से कम वर्षा वाला भौतिक प्रदेश शुष्क मरुस्थल कहलाता है।
- इसे अध्ययन की दृष्टि से पुनः दो भागों में बाँटा जाता है।



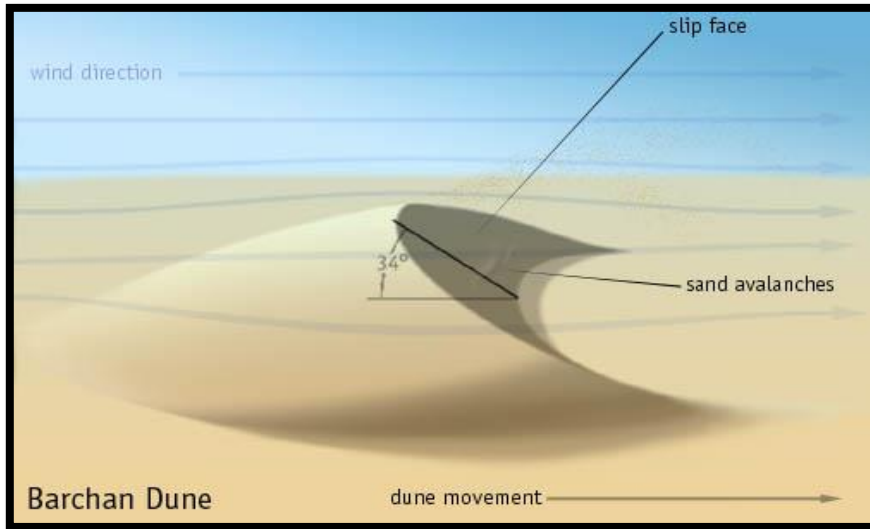
(a) बालुका स्तूप मुक्त:- शुष्क मरुस्थल में जहाँ “पथरीला मरुस्थल” पाया जाता है। उस क्षेत्र में बालुका स्तूप का निर्माण नहीं होता है। इस पथरीले मरुस्थल को “हमादा” कहा जाता है। इसका विस्तार – सर्वाधिक जैसलमेर (रामगढ़, लोद्रवा, पोकरण), बाड़मेर एवं जोधपुर में है।

(b) बालुका स्तूप युक्त:— शुष्क मरुस्थल में जहां पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण/जमाव किया जाता है तो निर्मित संरचना को बालुका स्तूप युक्त कहा जाता है। राजस्थान में सर्वाधिक बालुका स्तूप जैसलमेर एवं सभी प्रकार के बालुका स्तूप जोधपुर में पाए जाते हैं।

बालुका स्तूप के प्रकार

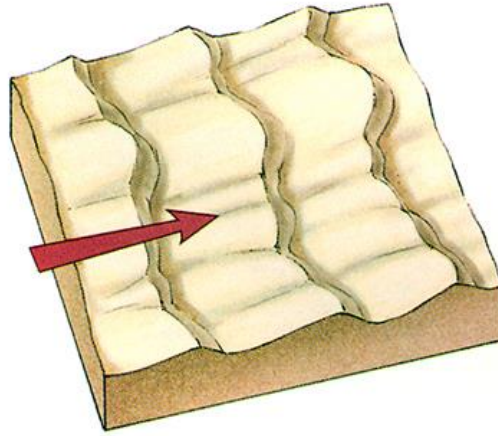
1. बरखान :-

- जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण अर्द्धचंद्राकार के रूप में किया जाता है तो इसे बरखान कहा जाता है।
- बरखान में जिस ओर से पवन आती है उस दिशा में उत्तल ढाल, जबकि आगे की दिशा में अवतल ढाल होता है।
- बरखान की चौड़ाई 100 से 200 मीटर जबकि ऊँचाई 10-20 मीटर होती है।
- ये बालुका स्तूप सर्वाधिक शेखावटी (सर्वाधिक-चुरू) में पाये जाते हैं।
- ये बालुका स्तूप सर्वाधिक गतिशील होते हैं, जिनके द्वारा मरुस्थलीकरण सर्वाधिक होता है।



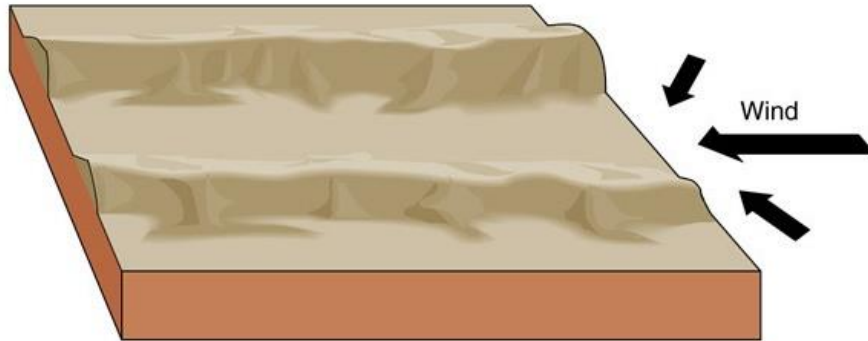
2. अनुप्रस्थ बालुका स्तूप :-

- जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण पवन की दिशा के समकोण पर होता है, तो निर्मित बालुका स्तूप को अनुप्रस्थ बालुका स्तूप कहा जाता है।
- ये बालुका स्तूप सर्वाधिक बाड़मेर, जोधपुर में पाये जाते हैं।

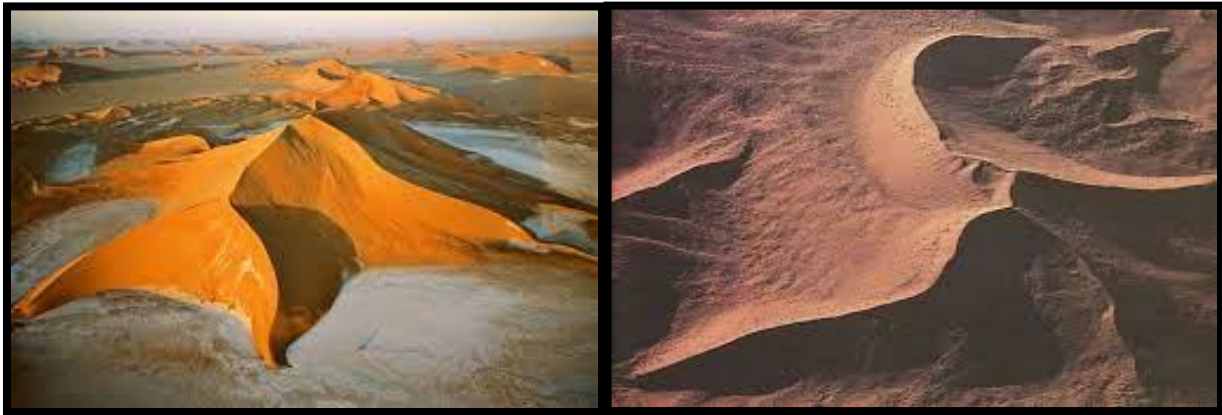


3. अनुदैर्घ्य/रेखीय बालुका स्तूप :-

- जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण पवन की दिशा के **समानांतर** होता है, तो निर्मित बालुका स्तूप को अनुदैर्घ्य/रेखीय बालुका स्तूप कहा जाता है।
- ये बालुका स्तूप सर्वाधिक जैसलमेर में पाये जाते हैं।

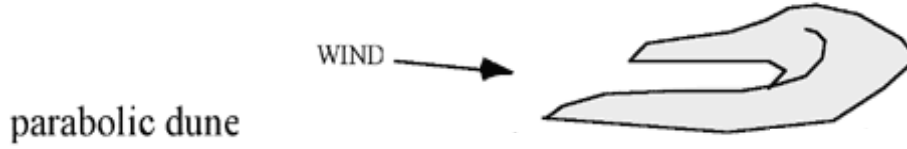


4. तारानुमा बालुका स्तूप :-



- यह रेतीले मरुस्थल में पाये जाते हैं, जिनका निर्माण अनियमित हवाओं द्वारा होता है।
- इन बालुका स्तूप में न्यूनतम 3 या अधिक भुजाएँ होती हैं।
- ये बालुका स्तूप सर्वाधिक जैसलेमर, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) में पाये जाते हैं।

5. पैराबोलिक बालुका स्तूप :-



- बरखान के विपरीत या महिलाओं के बालों की क्लिप (Hair pin) जैसे बालुका स्तूप पैराबोलिक कहलाते हैं।
- यह बालुका स्तूप सभी मरुस्थलीय जिलों में पाये जाते हैं इस कारण यह राजस्थान में सर्वाधिक है।

6. सीफ :-

- बरखान के निर्माण दौरान जब पवन की दिशा में परिवर्तन हो जाता है, तो बरखान की एक भुजा आगे की ओर बढ़ जाती है, इस संरचना को सीफ कहते हैं।

Note -

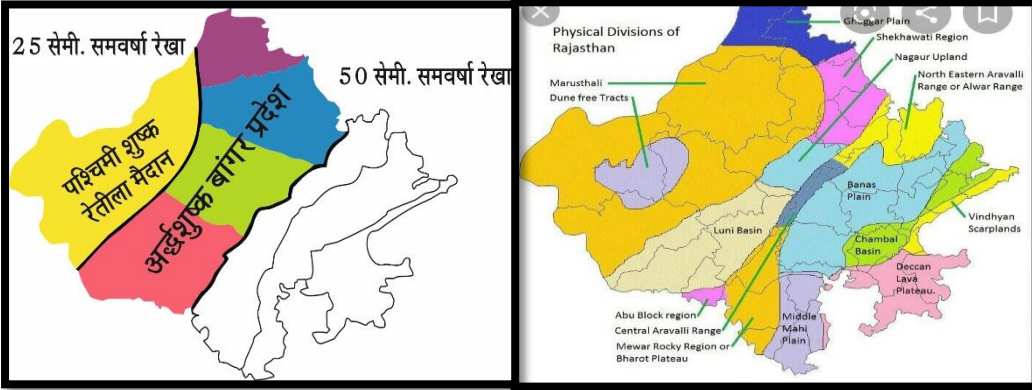
- (1) बरखान = अनुप्रस्थ
- (2) सीफ = अनुदैर्घ्य



7. सब कापीस :-



- झाड़ियों व छोटी वनस्पति के पास बनने वाले बालुका स्तूप सब कापीस कहलाते हैं।
- झाड़ियों के पीछे बनने वाले बालुका स्तूप या झाड़ियों के चारों ओर बनने वाले बालुका स्तूप नेबखा कहलाते हैं।



(A) अर्द्धशुष्क मरुस्थल या बांगड़ प्रदेश:-

- शुष्क मरुस्थल व अरावली के मध्य का भौतिक प्रदेश या 25 सेमी. वर्षा से 50 सेमी. वर्षा के वाला भौतिक प्रदेश।
- अर्द्ध शुष्क मरुस्थल को अध्ययन की दृष्टि से पुनः चार भागों में बांटा जाता है।

- (a) लूनी बेसिन
- (b) नागौरी उच्च भूमि
- (c) शेखावाटी अन्तः प्रवाह
- (d) घग्घर बेसिन

(a) लूनी बेसिन:-

- इस क्षेत्र को गोडवाड़ बेसिन भी कहा जाता है, जिसका विस्तार जोधपुर, जालोर, सिरोही, बाड़मेर एवं पाली।
- इस क्षेत्र में लवणीय पादप पाये जाते हैं, जो मुख्यतः बाड़मेर में मिलते हैं।
- नेहड़ दलदली क्षेत्र जालोर में इसी क्षेत्र में स्थित है।
- काला भूरा डूंगर:- इस बेसिन के पूर्व में पाली में स्थित पहाड़ियाँ।

(b) नागौरी उच्च भूमि:-

- इस क्षेत्र में लवणीय झीलें सर्वाधिक पाये जाते हैं।
- कूबड़ पट्टी / बांका पट्टी:- नागौर व अजमेर के मध्य स्थित अधिक फ्लोराइड वाले क्षेत्र को कूबड़ पट्टी/बांका पट्टी कहा जाता है, जिसके कारण फ्लोरोसिस बीमारी (Fluorosis Disease) हो जाती है।

(c) शेखावाटी अन्तः प्रवाहः—

- इस क्षेत्र का विस्तार झुंझुनूं, सीकर एवं चुरु में हैं, जिसमें निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती है:—
- **जोहड़**:— शेखावाटी में पाये जाने वाले पानी के कच्चे कुओं को कहा जाता है।
- **सर**:— शेखावाटी में पाये जाने वाले तालाबों को कहा जाता है।
- **बीड़**:— शेखावाटी में चारागाह भूमियों को कहा जाता है, जो मुख्यतः झुंझुनूं में स्थित है।
- **तोरावाटी**:— कांतली नदी के अपवाह क्षेत्र को तोरावाटी कहा जाता है, जिसका विस्तार सीकर एवं झुंझुनूं में है।

(d) घग्घर बेसिन:—

- इसका विस्तार गंगानगर एवं हनुमानगढ़ में हैं।
- **काठी/बग्गी**:— इस बेसिन में पायी जाने वाली चिकनी एवं उपजाऊ मिट्टी, जिसका विस्तार गंगानगर एवं हनुमानगढ़ में है।

मरुस्थल से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु :-

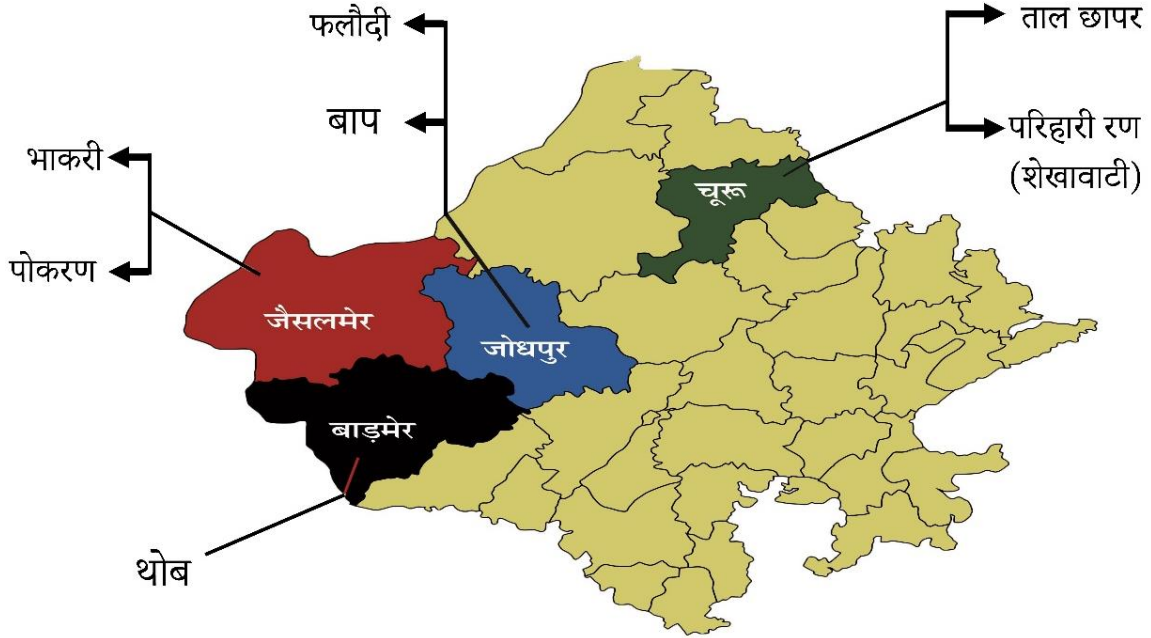
- (1) **खड़ीन/प्लाया झील**:— मरुस्थल में पाई जाने वाली अस्थायी पानी की झीलों को खड़ीन कहा जाता है। जिसमें पालीवाल ब्राह्मणों के द्वारा खड़ीन कृषि की शुरुआत की गई है। इन झीलों में मुख्यतः रबी की फसलें बोई जाती हैं।



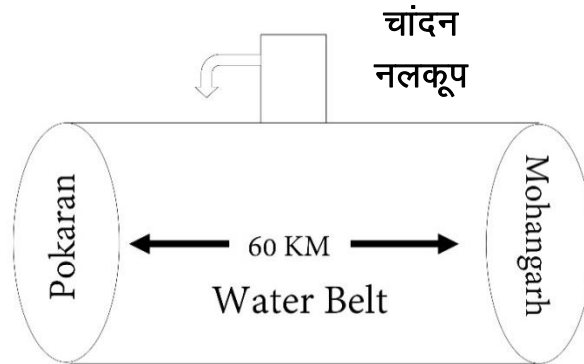
Note :- ये झील मुख्यतः जैसलमेर के उत्तरी भाग में पायी जाती है।

(2) रन/टाट :-

- मरुस्थल में पाई जाने वाली लवणीय, दलदली एवं अनुपजाऊ भूमि को रन/टाट कहा जाता है।
- रन सर्वाधिक जैसलमेर व बाड़मेर में पाये जाते हैं।



(3) जल पट्टी और लाठी सीरिज :-



- सरस्वती नदी के भूगर्भिक जलीय अवशेष को जलपट्टी/लाठी सीरिज कहलाता है। जो मुख्यतः जैसलमेर के पोकरण व मोहनगढ़ के मध्य स्थित हैं।
- जल पट्टी पर चांदन गांव में नलकूप सर्वाधिक है, जिन्हें थार का घड़ा कहा जाता है।
- जल पट्टी पर पाई जानी वाली सेवण घास को गोडावण की शरण स्थली कहा जाता है।
- राजस्थान में सरस्वती नदी का दूसरा भूगर्भिक जलीय अवशेष बायतू (बाड़मेर) – सांचौर (जालोर) क्षेत्र में मिला है।

(4) आकल वुड फॉसिल पार्क (जीवाश्म उद्यान)

- स्थिति – जैसलमेर (राष्ट्रीय मरु उद्यान) में लकड़ी के प्राचीनतम अवशेष जो वर्तमान में पाषाण रूप में प्राप्त हुए हैं।
- जिनका निर्माण काल जुरासिक काल (18 करोड़ वर्ष पूर्व) है।



Note:- ये जीवाश्म भारत में लकड़ी के प्राचीनतम जीवाश्म हैं।

(5) बाप बोल्टर – क्ले :-

- क्या – हिमानी के द्वारा जमा किये गये कंकर पत्थर व अवसादों को बोल्टर क्ले कहा जाता है।
- जिनका निर्माण काल पर्मी –कार्बोनीफेरस काल है। जो बाप (जोधपुर) में स्थित है।



(6) नखलिस्तान/मरू उद्यान :-

- मरूस्थल में वह क्षेत्र जहाँ जल बेसिन पाये जाते हैं उसके चारों ओर हरियाली विकसित हो जाती है जिसे नखलिस्तान कहा जाता है।



(7) धोरे एवं धरियन :-

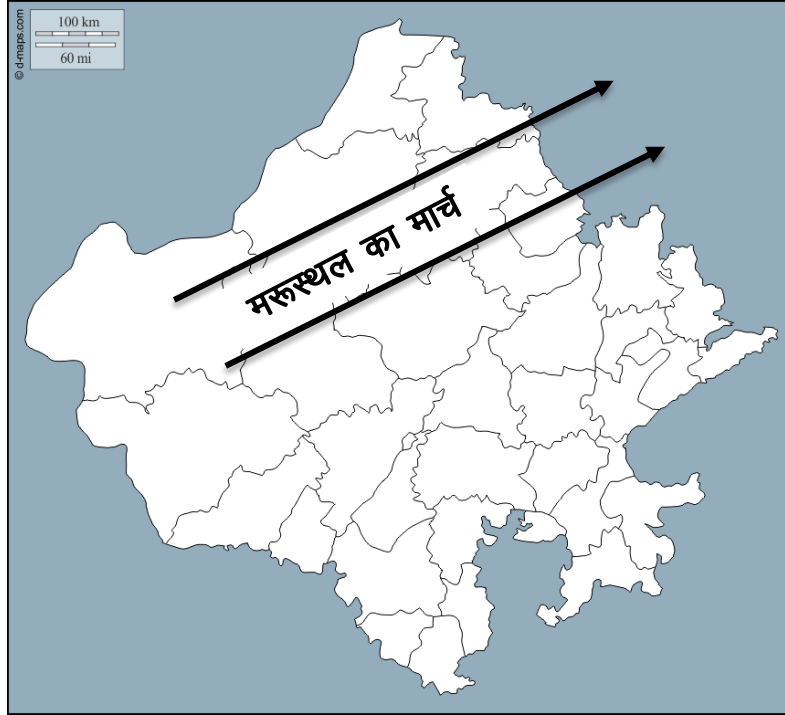
- **धोरे:-** पश्चिमी राजस्थान में लहरदार बालुका स्तूपों को धोरे कहा जाता है।
- **धरियन:-** पश्चिमी राजस्थान में गतिशील/स्थानान्तरित बालुका स्तूपों को धरियन कहा जाता है।
- धोरे व धरियन राजस्थान में सर्वाधिक – जैसलमेर में पाये जाते हैं।

(8) पीवणा :-

- मरूस्थल में पाई जाने वाली – सांप की प्रजाति, जिसका रंग पीला होता है।
- जो सर्वाधिक जैसलमेर में पाई जाती है।

(9) मरूस्थल का मार्च :-

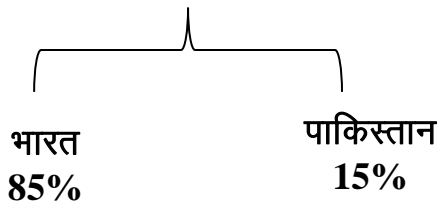
- मरूस्थल का आगे की ओर बढ़ना मरूस्थलीकरण या मरूस्थल का मार्च कहलाता है, जो राजस्थान से हरियाणा की ओर सर्वाधिक हो रहा है।
- जिसकी दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर होती है।
- मरूस्थलीकरण में सर्वाधिक योगदान बरखान बालुका स्तूप का होता है।



(10) बालसन:-

- मरुस्थल में पर्वतों के मध्य पाये जाने वाले जल बेसिन या झीलों को **बालसन** कहा जाता है।
उदाहरण:- सांभर झील

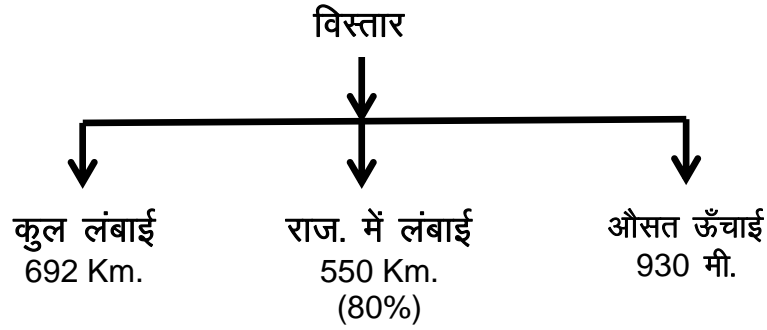
(11) थार का मरुस्थल:-



- ग्रेट डेजर्ट ऑफ इण्डिया का विस्तार भारत में चार राज्यों में है। जिसमें सर्वाधिक राजस्थान (62%), गुजरात, हरियाणा एवं पंजाब में है।

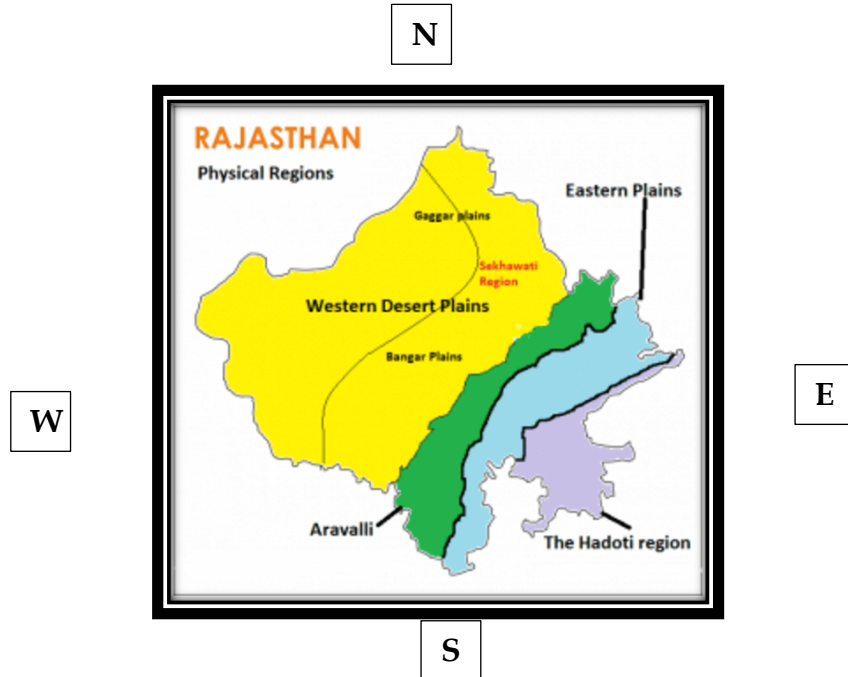
2. अरावली पर्वतमाला:-

- निर्माण – प्री-केम्ब्रियन काल में हुआ है।
- अरावली पर्वतमाला एक – वलित (निर्माण प्रक्रिया)
 - प्राचीनतम (समयानुसार)
 - अवशिष्ट (वर्तमान में) पर्वतमाला है।



अरावली की दिशा :-

- राजस्थान में अरावली की दिशा दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) से उत्तर – पूर्व (ईशान) की ओर है।



अरावली का अध्ययन:-

➤ अध्ययन के दृष्टिकोण के अनुसार, अरावली तीन भागों में बाँटा जाता है।

(a) उत्तरी अरावली :-

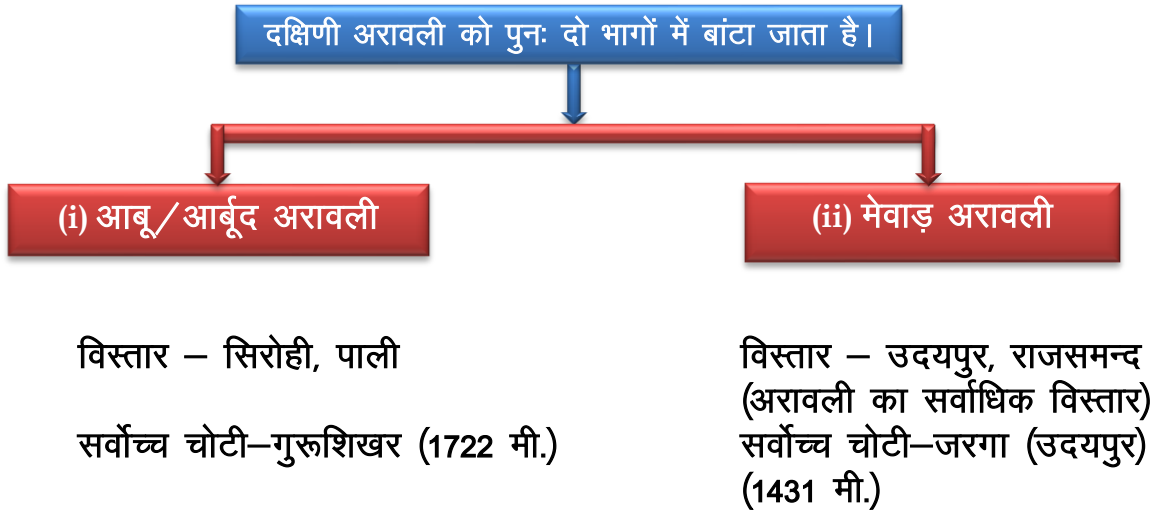
- झुंझुनूं से जयपुर के मध्य की अरावली को उत्तरी अरावली कहा जाता है।
- इसकी सर्वोच्च चोटी – रघुनाथगढ़ (सीकर – 1055 मी.)।

(b) मध्य अरावली / अजमेर अरावली :-

- जयपुर राजसमंद के मध्य की अरावली को मध्य अरावली कहा जाता है।
- सर्वोच्च चोटी – टॉडगढ़ (अजमेर – 934 मी.), तारागढ़ (अजमेर – 873 मी.)

(c) दक्षिणी अरावली :-

- राजसमंद से सिरोही के मध्य की अरावली को दक्षिणी अरावली कहा जाता है।
- सर्वोच्च चोटी – गुरुशिखर (1722 मी.)
- दक्षिणी अरावली को पुनः दो भागों में बांटा जाता है।

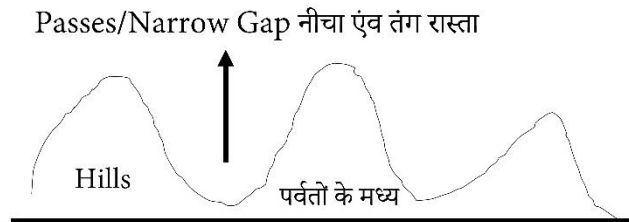


अरावली की सर्वोच्च चोटी (अवरोही क्रम में) –

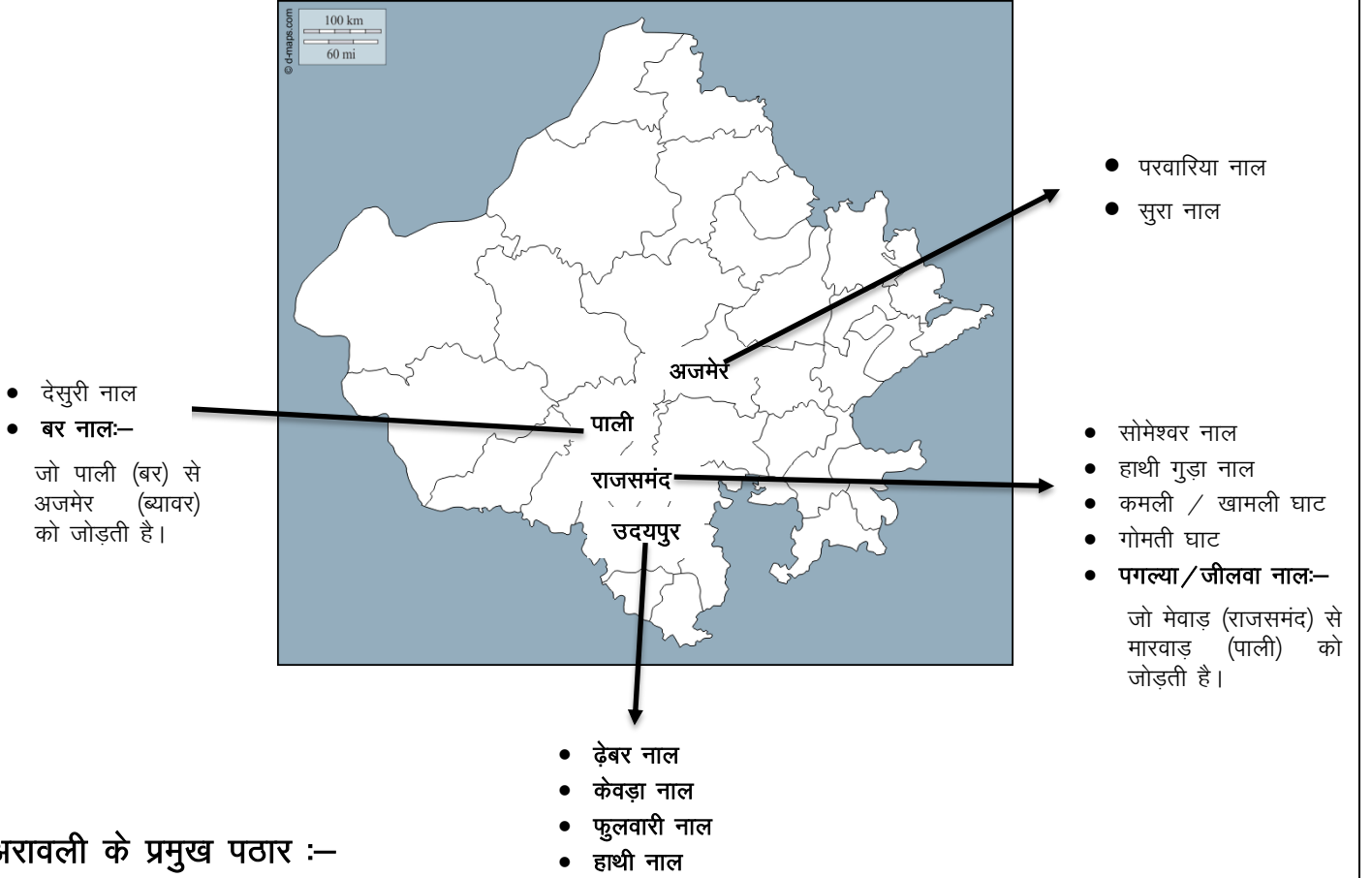
क्र.सं.	चोटी	स्थिति	ऊँचाई
1.	गुरुशिखर	सिरोही	1722 मी.
2.	सेर	सिरोही	1597 मी.
3.	देलवाड़ा	सिरोही	1442 मी.
4.	जरगा	उदयपुर	1431 मी.
5.	अचलगढ़	सिरोही	1380 मी.
6.	कुभलगढ़	राजसमन्द	1224 मी.
7.	रघुनाथगढ़	सीकर	1055 मी.
8.	ऋषिकेश	सिरोही	1017 मी.
9.	कमलनाथ	उदयपुर	1001 मी.
10.	सज्जनगढ़	उदयपुर	938 मी.
11.	मोरमजी / टॉडगढ़ / गोरमजी	अजमेर	937 मी.
12.	खो	जयपुर	920 मी.
13.	सायरा	उदयपुर	900 मी.
14.	तारागढ़	अजमेर	873 मी.
15.	बिलाली	अलवर	775 मी.
16.	रोजा भाकर	जालोर	730 मी.

अरावली के दर्रे :-

- पर्वतों के मध्य नीचे एवं तंग रास्ते को **नाल या दर्रे** कहा जाता है।
- अरावली में सर्वाधिक दर्रे राजसमंद में पाये जाते हैं।



राजस्थान में प्रमुख नाल :-



अरावली के प्रमुख पठार :-

(1) उड़ीया पठार (सिरोही) :-

- उड़ीया पठार दक्षिणी अरावली में सिरोही में स्थित है।
- उड़ीया पठार की ऊँचाई - 1360 मी. है।
- ये राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार है।

(2) आबू पर्वत:-

- यह एक पठार है।
- आबू पर्वत दक्षिणी अरावली में सिरोही में स्थित है।
- आबू पर्वत की ऊँचाई - 1200 मी. हैं।

➤ यह बैथोलिथ संरचना का एक उदाहरण है।

(3) भोरट पठार :-

- यह उदयपुर (गोगुन्दा पहाड़ियों) से राजसमंद (कुंभलगढ़) के मध्य दक्षिण अरावली में स्थित पठार है।
- भोरट की ऊँचाई 1225 मी. हैं।
- भोरट पठार राजस्थान का दूसरा ऊँचा पठार है।

(4) भोमट का पठार:-

- यह उदयपुर से डूंगरपुर के बीच स्थित एक पठार है।
- इस क्षेत्र में मुख्यतः भील जनजाति अधिक पाई जाती है।

(5) लसाड़िया पठार :-

- लसाड़िया पठार दक्षिणी अरावली में जयसमन्द झील के पूर्व में स्थित है।
- लसाड़िया पठार उबड़-खाबड़, विच्छेदित पठार है।

(6) काकणवाड़ी एवं क्रांसका पठार:-

- ये पठार उत्तरी अरावली में अलवर-सरिस्का में स्थित है।

अरावली का महत्व :-

- ✓ अरावली मरुस्थलीकरण को रोकती है।
- ✓ अरावली क्षेत्र में धात्विक खनिज अधिक पाए जाते हैं, क्योंकि अरावली का निर्माण धारवाड़ चट्टानों से हुआ है।
- ✓ अरावली को राजस्थान की जल विभाजन रेखा कहा जाता है, क्योंकि यह बंगाल की खाड़ी व अरब सागर के अपवाह तंत्र को अलग करती है।
- ✓ अरावली क्षेत्र में जैव – विविधता सर्वाधिक पायी जाती है क्योंकि यहाँ वनस्पति सर्वाधिक हैं।
- ✓ राजस्थान की अधिकांश नदियों का उद्गम अरावली से होता है।
- ✓ अरावली को जनजातियों की शरणस्थली के रूप में जाना जाता है। जैसे- भील, गरासिया, मीणा, डामोर, कथौड़ी।

- ✓ अरावली पर्यटन स्थलों के लिये प्रसिद्ध है, इसमें प्रमुख पर्यटन स्थल जयपुर, अजमेर, उदयपुर, एवं माउंट आबू (हिल स्टेशन) है।
- ✓ अरावली को प्राचीनतम सभ्यताओं (आहड़, गिलूंड, बैराठ) व नवीन नगरीय सभ्यताओं (जयपुर, अजमेर, उदयपुर) की शरणस्थली/जननी कहा जाता है।
- ✓ अरावली को राजस्थान का "योजना प्रदेश" कहा जाता है।

नोट:— योजना प्रदेश का कारण:— राज्य सरकार की वार्षिक योजना में बजट मुख्यतः अरावली से जुड़े हुए क्षेत्रों में खर्च किया जाता है। जैसे:— जनजाति क्षेत्रों, नदी-घाटी परियोजना, झील संरक्षण, खनन, नगरीय विकास, पर्यटन स्थल एवं जैव-विविधता क्षेत्र। इस कारण अरावली को राजस्थान का "योजना प्रदेश" कहा जाता है।

अरावली व राजस्थान की अन्य प्रमुख पहाड़ियाँ :-

➤ भाकर	— सिरौही
➤ पहाड़ी का नाम + भाकर	— जालोर
➤ पहाड़ी का नाम मगरा/मगरी	— उदयपुर
➤ पहाड़ी का नाम डूंगर/डूंगरी	— जयपुर

क्र.सं.	पहाड़ी/पर्वत	स्थिति
1.	त्रिकूट पहाड़ी (सोनार दुर्ग)	— जैसलमेर
2.	त्रिकूट पर्वत (केला देवी मंदिर)	— करौली
3.	चिड़िया टूंक (मेहरानगढ़ दुर्ग)	— जालोर – जोधपुर
4.	छप्पन हिल्स/56 पहाड़ी	— बाड़मेर (सिवाणा)
5.	रोजा भाकर	— जालोर
6.	इसराना भाकर	— जालोर
7.	झारोला भाकर	— जालोर

- | | | | |
|---|--|---|---------|
| 8. | जसवंतपुरा पहाड़ी
(सर्वोच्च चोटी—डोरा पर्वत) | — | जालोर |
| 9. | सुंडा पर्वत | — | जालोर |
| | ➤ सुंधा माता मंदिर | | |
| | ➤ 1 st रोपते— 2006 | | |
| | ➤ भालू संरक्षित क्षेत्र | | |
| 10. | भाकर | — | सिरोही |
| | ➤ दक्षिणी अरावली में छोटी, तीव्र ढाल एवं उबड़—खाबड़ पहाड़ियाँ भाकर कहलाती हैं। | | |
| | ➤ यह सिरोही में स्थित है। | | |
| 11. | बेल का मगरा | — | सिरोही |
| 12. | मोती मगरी (फतेहसागर झील के किनारे) | — | उदयपुर |
| 13. | हिरण मगरी | — | उदयपुर |
| 14. | माछला मगरा | — | उदयपुर |
| | ➤ पिछोला झील के पास स्थित पहाड़ी। | | |
| | ➤ 2 nd रोपवे — 2008 में इसी पहाड़ी पर बनाया गया। | | |
| 15. | जरगा हिल्स | — | उदयपुर |
| 16. | रागा हिल्स | — | उदयपुर |
| नोट:— देशहरो:— दक्षिणी अरावली में उदयपुर में स्थित जरगा—रागा पहाड़ियों के मध्य हरे—भरे क्षेत्र को देशहरों कहा जाता है। | | | |
| 17. | गोगुन्दा हिल्स | — | उदयपुर |
| 18. | बीछामेड़ा हिल्स (उद्गम — सोम नदी) | — | उदयपुर |
| 19. | रेल का मगरा | — | रामसमंद |

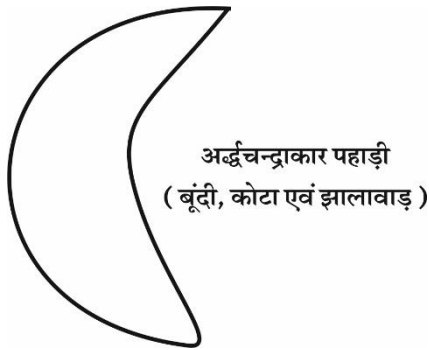
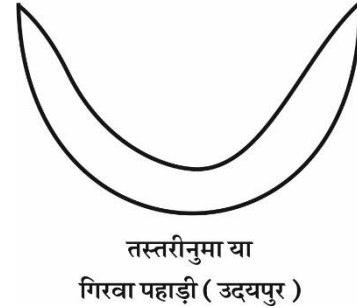
- | | | |
|---|---|---------|
| 20. बिजराल हिल्स (उद्गम – खारी नदी) | – | राजसमंद |
| 21. दिवेर हिल्स (उद्गम – कोठारी नदी) | – | राजसमंद |
| 22. खमनौर हिल्स (उद्गम – बनास नदी) | – | राजसमंद |
| 23. नाग पहाड़ी / सर्पीलाकार पहाड़ी
(उद्गम– लूनी नदी) | – | अजमेर |
| 24. मोती डूंगरी | – | जयपुर |
| 25. झालाना डूंगरी | – | जयपुर |
| 26. महादेव डूंगरी | – | जयपुर |
| 27. गणेश डूंगरी | – | जयपुर |
| 28. भीम डूंगरी | – | जयपुर |
| 29. बीजक डूंगरी | – | जयपुर |

नोट:– महादेव, गणेश, भीम एवं बीजक डूंगरी से बैराठ सभ्यता के अवशेष प्राप्त किये गये हैं।

- | | | |
|---|---|--------------|
| 30. बैराठ पहाड़ी (उद्गम – बणगंगा नदी) | – | जयपुर |
| 31. सेवर पहाड़ी (उद्गम – साबी नदी) | – | जयपुर |
| 32. मनोहरपुर पहाड़ी (उद्गम – मैथा / मेढा नदी) | – | जयपुर |
| 33. चील का टीला / Eagle Hills (जयगढ़ दुर्ग) | – | जयपुर |
| 34. बरवाड़ा | – | जयपुर |
| 35. चौथ का बरवाड़ा | – | सवाई माधोपुर |
| ➤ चौथ माता मंदिर | | |
| ➤ सीसा–जस्ता भण्डारण | | |
| 36. बाबाई पहाड़ी | – | जयपुर |
| 37. बबाई पहाड़ी | – | झुंझुनूं |

- | | | |
|---------------------------------------|---|----------|
| 38. मालखेत पहाड़ी | — | सीकर |
| 39. हर्ष पहाड़ी | — | सीकर |
| 40. खण्डेला पहाड़ी | — | सीकर |
| ➤ उद्गम – कांतली नदी | | |
| ➤ यूरेनियम के भण्डारण | | |
| 41. हर्षनाथ | — | अलवर |
| 42. उदयनाथ पहाड़ी (उद्गम—रूपारेल नदी) | — | अलवर |
| 43. भैरांच पर्वत | — | अलवर |
| 44. आड़ावाला / आरावाला पर्वत | — | बून्दी |
| 45. बीजासन पहाड़ी | — | भीलवाड़ा |

नोट:— विशेष आकृति की पहाड़ियाँ –



गिरवा:—

- इसका अर्थ "पर्वतों की मेखला" होता है।
- उदयपुर शहर गिरवा पहाड़ियों के मध्य स्थित हैं।

अरावली के अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु:—

- अरावली की भू-आकृतिक संरचना का अध्ययन ए.एम. हैरोन द्वारा किया गया।
- ए.एम. हैरोन के अनुसार अरावली का निर्माण देहली- महासमूह से हुआ है, जिसमें तीन समूह शामिल हैं—
 - ✓ अलवर समूह
 - ✓ अजबगढ़ समूह
 - ✓ रायलो समूह

पीडमांट:—

- पर्वत पदीय भागों पर अपरदित पहाड़ी/क्षेत्र को पीडमांट पहाड़ी कहा जाता है।
- यह राजसमंद (देवगढ़) में स्थित है।

3. पूर्वी मैदान:—

- नदियों द्वारा जमा किये गये अवसादों से मैदानी भागों का निर्माण हुआ है।
- इसका निर्माण प्लीस्टोनसीन काल में हुआ है।

पूर्वी मैदान का अध्ययन:—

- अध्ययन के दृष्टिकोण से पूर्वी मैदान को तीन भागों में विभाजित किया जाता है —
 - (1) माही मैदान
 - (2) बनास एवं बाणगंगा मैदान
 - (3) चम्बल मैदान

(1) माही मैदान:—

➤ राजस्थान के दक्षिणी मैदान को वागड़/भाटी/माही मैदान कहा जाता है। जिसका विस्तार बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर में है। इस मैदान को बाँसवाड़ा – प्रतापगढ़ के मध्य मुख्यतः छप्पन गाँवों में विस्तृत होने के कारण इसे **“छप्पन का मैदान”** भी कहा जाता है।

➤ **मिट्टी:—** लाल-चिकनी (रेड लॉमी)

➤ **उत्पादन:—**

(1) मक्का – माही धवल, माही कंचन

(2) चावल – माही सुंगधा

(2) बनास एवं बाणगंगा मैदान:—

(a) बनास मैदान को अध्ययन की दृष्टि से दो भागों में बांटा जाता है।

(i) मेवाड़ मैदान

(ii) मालपुरा-करौली मैदान

(i) मेवाड़ मैदान:—

➤ बनास के दक्षिणी मैदान को मेवाड़ का मैदान कहा जाता है।

➤ **विस्तार:—** चित्तौड़गढ़, राजसमंद एवं भीलवाड़ा में है।

(ii) मालपुरा – करौली मैदान:—

➤ बनास के उत्तरी मैदान को मालपुरा-करौली मैदान कहा जाता है।

➤ **विस्तार:—** अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर

➤ **नोट:—** बनास मैदान में मुख्यतः भूरी मिट्टी पाई जाती है।

(b) बाणगंगा का मैदान:—

➤ बाणगंगा का मैदान जयपुर, दौसा, भरतपुर में स्थित है।

➤ इस मैदान में मुख्यतः जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है।

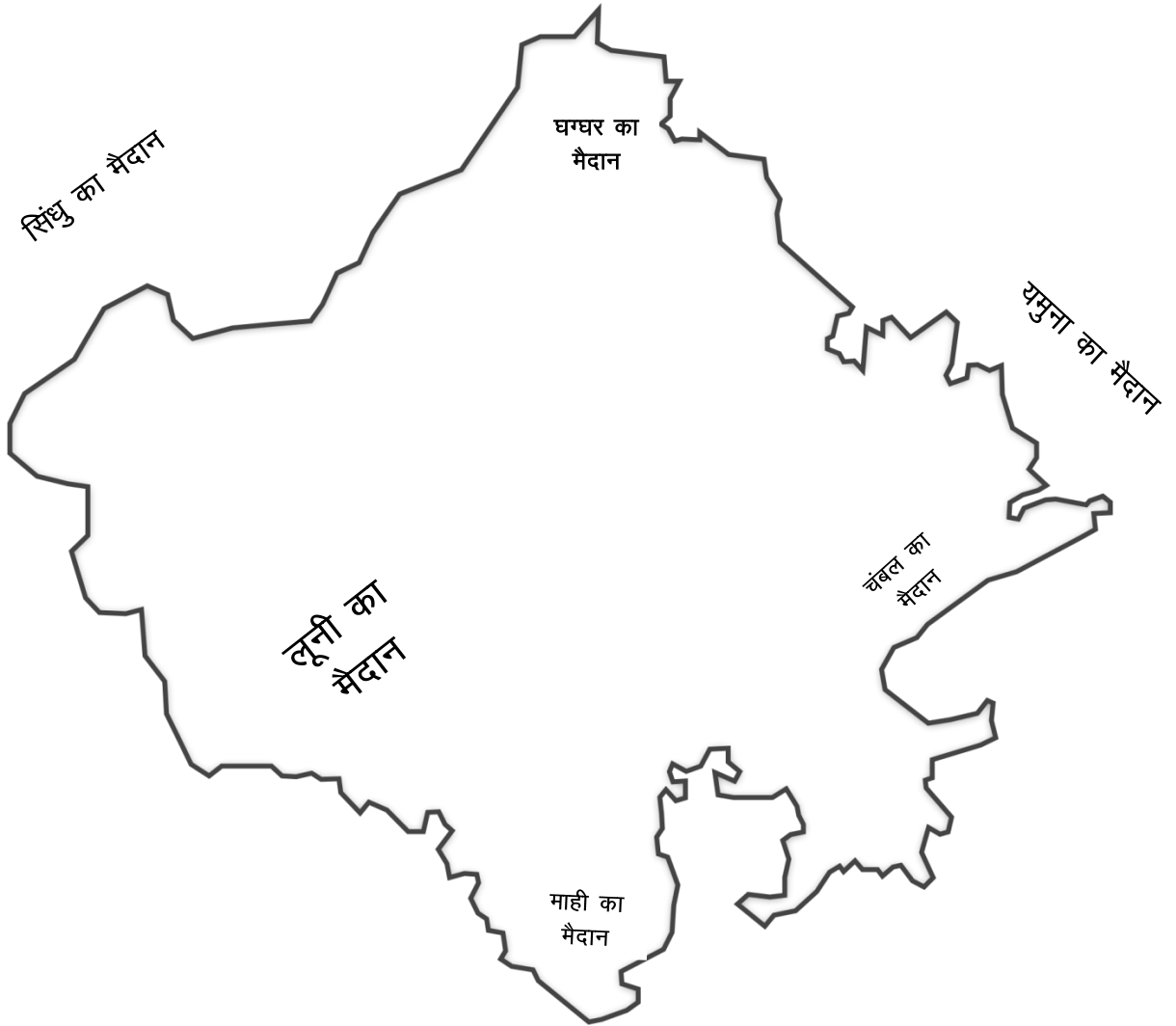
(3) चम्बल का मैदान:—

➤ इस मैदान को बीहड़/डांग का मैदान कहा जाता है।

- जिसका निर्माण नदियों के अवनलिका अपरदन से हुआ है।
- यह एक उबड़-खाबड़/उत्खात (Bad Land) मैदान है। जिसका विस्तार करौली, धौलपुर एवं सवाईमाधोपुर में है।
- इस मैदान में काली- जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु:-

- राजस्थान के पूर्वी मैदान में जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक होता है, क्योंकि यहाँ सर्वाधिक उपजाऊ मिट्टी जलोढ़ पाई जाती है।
- दिशा के अनुसार मैदान:-



4. हाड़ौती / दक्षिणी-पूर्वी पठार :-

- निर्माण:- इसका निर्माण ज्वालामुखी के बेसाल्ट लावे से हुआ है।
- निर्माण काल:- इसका निर्माण क्रीटेशस काल में हुआ है।
- मिट्टी:- हाड़ौती पठार में मुख्यतः हल्की काली मिट्टी पाई जाती है।
- अध्ययन:- अध्ययन की दृष्टि से हाड़ौती को दो मुख्य एवं तीन गौण भागों में विभाजित किया जाता है।

हाड़ौती के मुख्य भाग:-

- (a) ढक्कन लावा पठार
- (b) विंध्यन कगार

नोट:-

महान सीमांत भ्रंश (Great bound dary fault):-

- यह एक भ्रंश हैं, जो अरावली व हाड़ौती के मध्य स्थित है। जिसका विस्तार चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बून्दी, करौली, धौलपुर एवं सवाईमाधोपुर में हैं।

(a) ढक्कन लावा पठार :-

- यह हाड़ौती के दक्षिण में स्थित है।
- विस्तार:- मालवा प्रदेश:- इसमें प्रतापगढ़ और झालावाड़ शामिल है जहाँ मालवा पठार विस्तृत है।
- ऊपरमाल – यह एक पठारी क्षेत्र है, जो भीलवाड़ा के बिजौलियाँ से चित्तौड़गढ़ के भैंसरोगढ़ के मध्य स्थित है।

(b) विंध्यन कगार:-

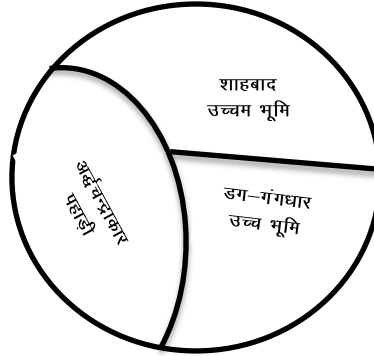
- विस्तार:- करौली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर (डांग प्रदेश) एवं हाड़ौती (कोटा, बून्दी, बारां, झालावाड़) में हैं।

➤ इसमें प्रमुख चट्टाने और खनिज :-

- सैंड स्टोन (सर्वाधिक)
- लाल पत्थर
- कोटा स्टोन
- चूना पत्थर/लाईम स्टोन
- हीरा

हाड़ौती के गौण भाग – हाड़ौती को तीन गौण भागों में विभाजित किया गया है

- (1) अर्द्धचन्द्राकार पहाड़ी :- यह मुख्यतः बून्दी एवं मुकुन्दरा पहाड़ी (कोटा – झालावाड़) के रूप में विस्तृत है।
- (2) शाहबाद उच्च भूमि :- बारां में स्थित है जहाँ रामगढ़ क्षेत्र में घोड़े की नाल जैसी- पहाड़ियाँ पाई जाती हैं।
- (3) डग-गंगधार उच्च भूमि :- हाड़ौती का गौण भाग जो झालावाड़ में स्थित है।

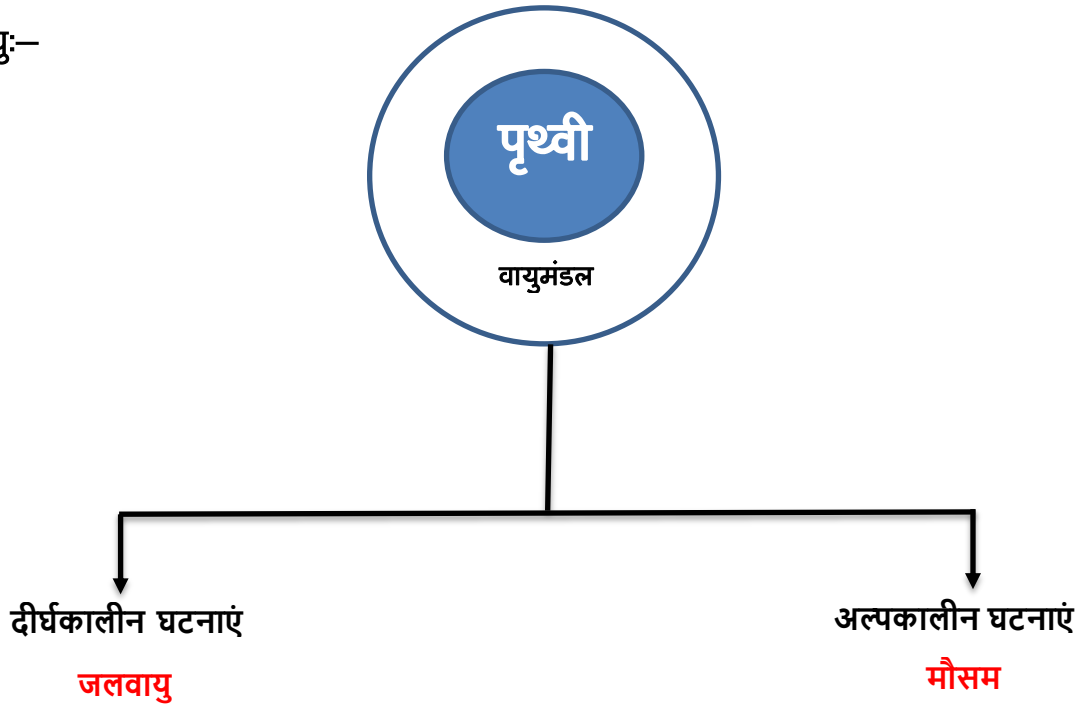


हाड़ौती पठार

जलवायु

- 1) जलवायु का अर्थ:—
- 2) जलवायु कैसी
- 3) जलवायु वर्गीकरण
- 4) जलवायु ऋतु वर्गीकरण
- 5) अन्य महत्वपूर्ण
 - ✓ समवर्षा रेखा
 - ✓ समवायुदाब रेखा

1. जलवायु:—



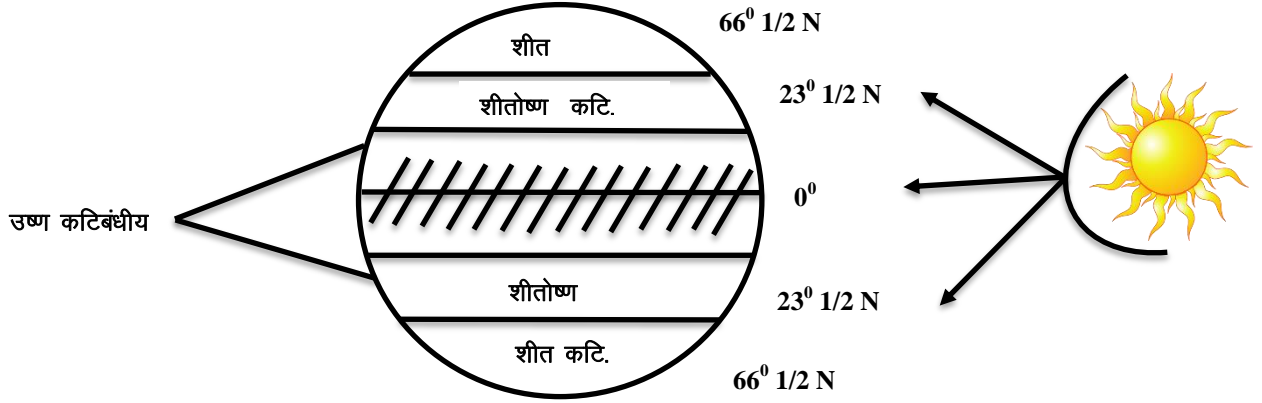
- पृथ्वी के चारों ओर वायुमंडल की दीर्घकालीन घटनाओं को जलवायु कहा जाता है।
- जलवायु का निर्धारण 30 वर्ष की औसत मौसमी दशाओं के आधार पर किया जाता है।

2. राजस्थान की जलवायु :-

- राजस्थान में उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु स्थिति पाई जाती है।

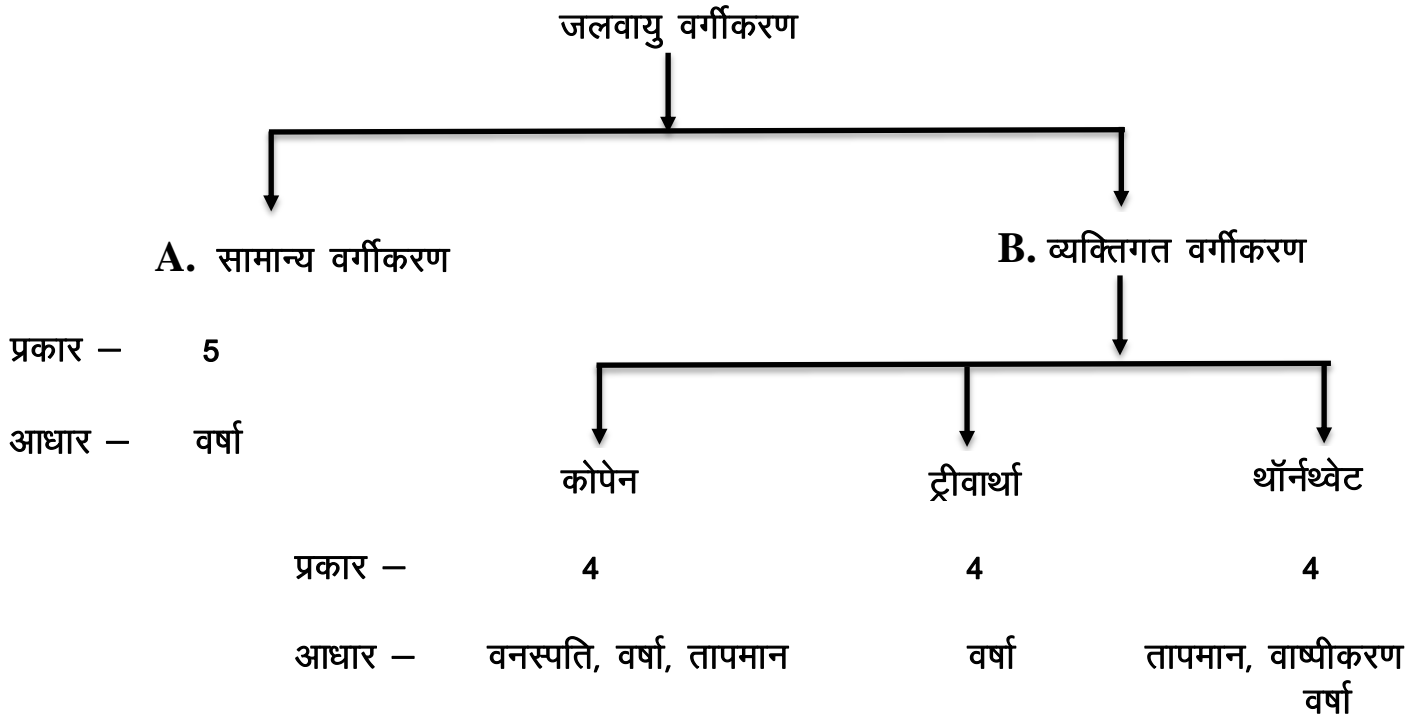
नोट:-

राजस्थान की स्थिति :- स्थिति के आधार पर राजस्थान शीतोष्ण एवं उष्ण कटिबंध में स्थित है।



3. जलवायु वर्गीकरण:-

➤ जलवायु वर्गीकरण को दो भागों में विभाजित किया गया है -



नोट:- जलवायु के निर्धारण का मुख्य आधार तापमान होता है।

A. सामान्य जलवायु वर्गीकरण:-

➤ सामान्य जलवायु वर्गीकरण के आधार पर जलवायु को 5 भागों में विभाजित किया जाता है। जिसका आधार वर्षा होती है।

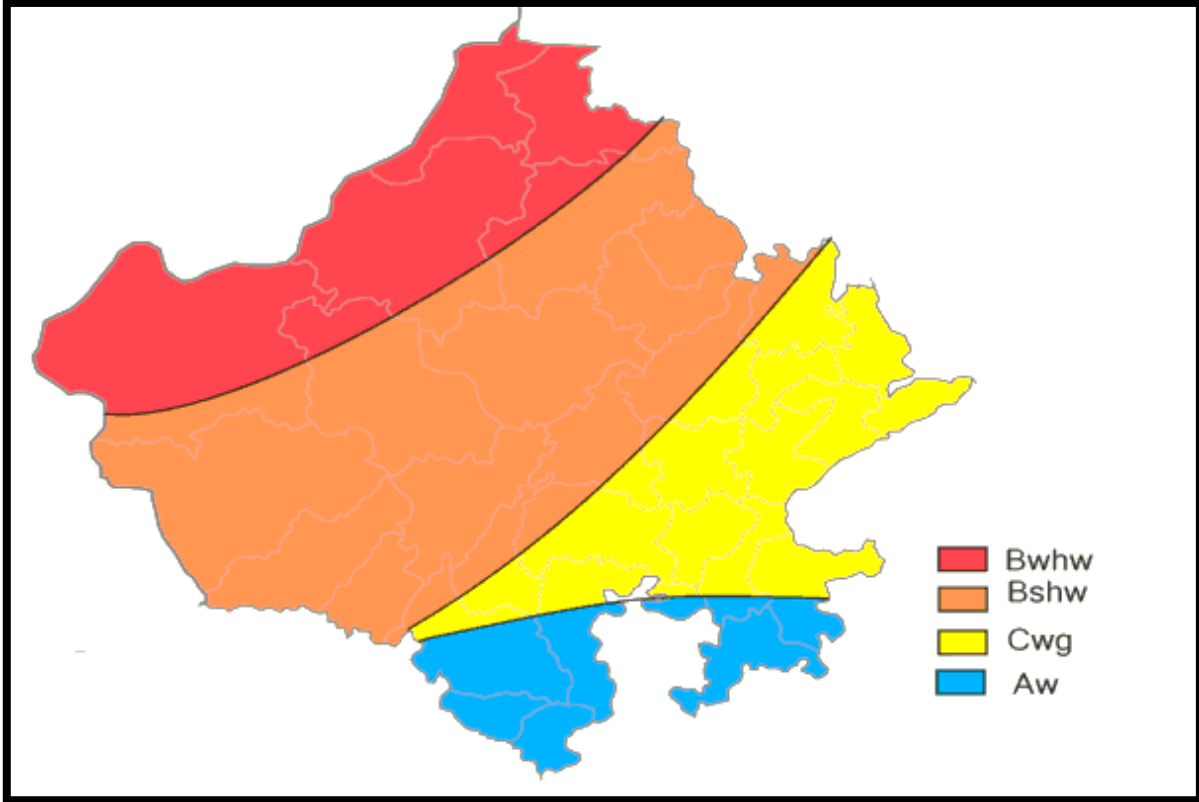
जलवायु		वर्षा (Cm)	भौतिक प्रदेश
1.	शुष्क कटिबंधीय	0-20	पश्चिमी मरुस्थल
2.	अर्द्ध शुष्क कटिबंधीय	20-40	पश्चिमी मरुस्थल
3.	उप आर्द्र कटिबंधीय	40-60	अरावली
4.	आर्द्र कटिबंधीय	60-80	पूर्वी मैदान
5.	अति आर्द्र कटिबंधीय	80-120	हाड़ौती पठार



B. व्यक्तिगत वर्गीकरण:-

a. कोपेन का जलवायु वर्गीकरण:-

- कोपेन के अनुसार राजस्थान की जलवायु को चार भागों में विभाजित किया गया।
- इस जलवायु वर्गीकरण का आधार वनस्पति, तापमान एवं वर्षा है।



(1) Aw :-

- **जलवायु** – इसे उष्णकटिबंधीय आर्द्र या अति आर्द्र जलवायु कहा जाता है।
- **वनस्पति** – सवाना प्रकार की वनस्पति
- **विस्तार** – वागड़ (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़), हाड़ौती (दक्षिणी कोटा, बारां, झालावाड़), माउंट आबू
- **विशेष** – यहां सघन वनस्पति पाई जाती है।

(2) BWhw :-

- जलवायु – शुष्क मरुस्थलीय तुल्य जलवायु
- वनस्पति – यहां जीरोफाइट व कंटीली वनस्पति पाई जाती है।
- विस्तार – जैसलमेर, बीकानेर, चूरु
- विशेष – यह न्यूनतम वर्षा वाला जलवायु प्रदेश है, जहां न्यूनतम वनस्पति व कंटीली वनस्पति क्षेत्र है।

(3) BShw :-

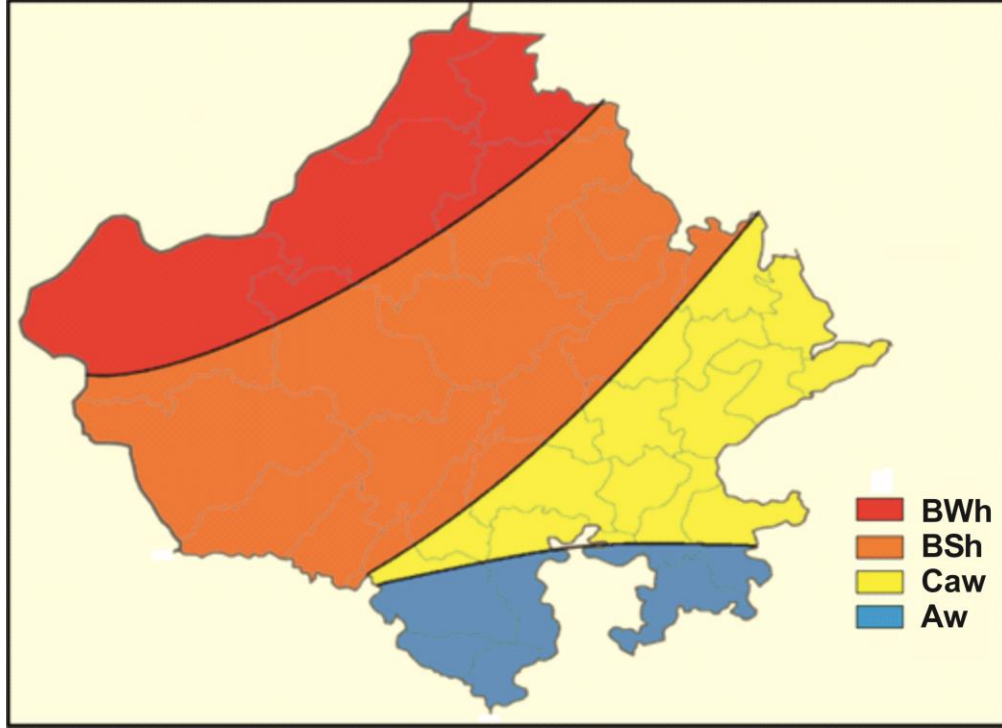
- जलवायु – यहां अर्द्धशुष्क/स्टेपी जलवायु पाई जाती है।
- वनस्पति – स्टेपी (छोटा घास के मैदान)
- विस्तार – लूनी बेसिन, घग्घर बेसिन, नागौर एवं शेखावाटी में है।
- विशेष – राजस्थान में यह कोपेन का सबसे बड़ा जलवायु प्रदेश है।

(4) Cwg :-

- जलवायु – उपोष्ण उपार्द्र जलवायु पाई जाती है।
- वनस्पति – शुष्क मानसूनी/पतझड़ वनस्पति पाई जाती है।
- विस्तार – अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, सिरोही-सवाई माधोपुर, टोंक, उदयपुर एवं जयपुर में है।
- इस जलवायु प्रदेश में कृषि उत्पादन सर्वाधिक होता है।

b. ट्रीवार्था का जलवायु वर्गीकरण:-

- ट्रीवार्था के अनुसार, राजस्थान की जलवायु वर्षा के आधार पर चार भागों में विभाजित किया गया है।

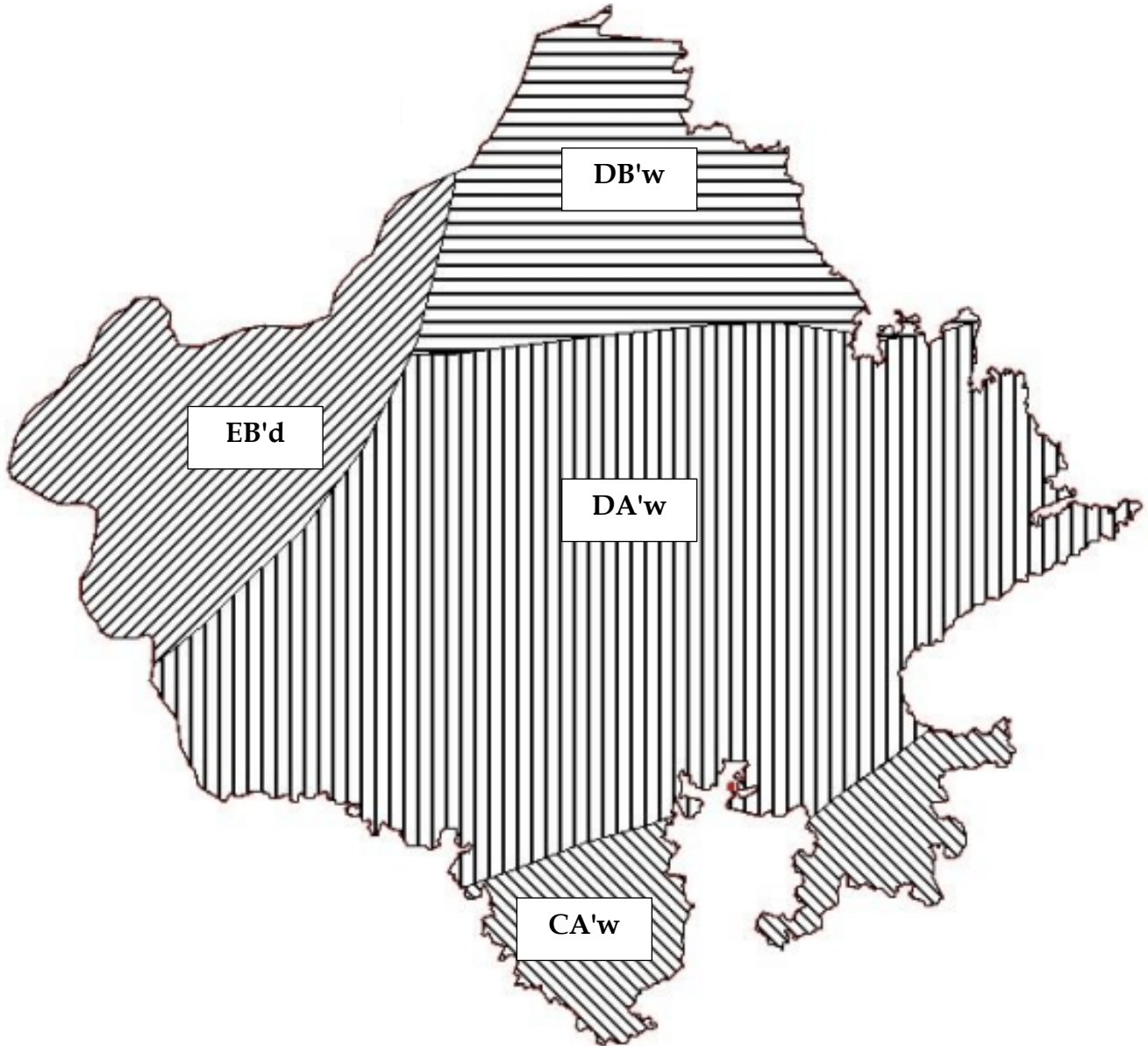


क्र.सं.	कोपेन	ट्रीवार्था	वर्षा
1.	Aw	Aw	100 cm
2.	BWhw	BWh	10 cm
3.	BShw	BSh	80 cm
4.	Cwg	Caw	70 cm

c. थॉर्नथ्वेट का जलवायु वर्गीकरण:-

- थॉर्नथ्वेट के अनुसार, राजस्थान की जलवायु तापमान, वाष्पीकरण और वर्षा के आधार पर चार भागों में विभाजित है।

A	-	अति आर्द्र	} → राजस्थान में शामिल नहीं है।
B	-	आर्द्र	
C	-	उप आर्द्र	
D	-	अर्द्ध शुष्क	
E	-	शुष्क	



(1) CA'w :-

- जलवायु – उपार्द्र जलवायु पाई जाती है।
- विस्तार – बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, झालावाड़, बारां एवं दक्षिणी कोटा में है।

(2) DA'w :-

- जलवायु – अर्द्धशुष्क जलवायु पाई जाती है।
- विस्तार – अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, अजमेर, बून्दी, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, दौसा, जयपुर, नागौर एवं पाली में है।
- नोट:- यह थॉर्नथ्वेट का सबसे बड़ा जलवायु प्रदेश है।

(3) DB'w :-

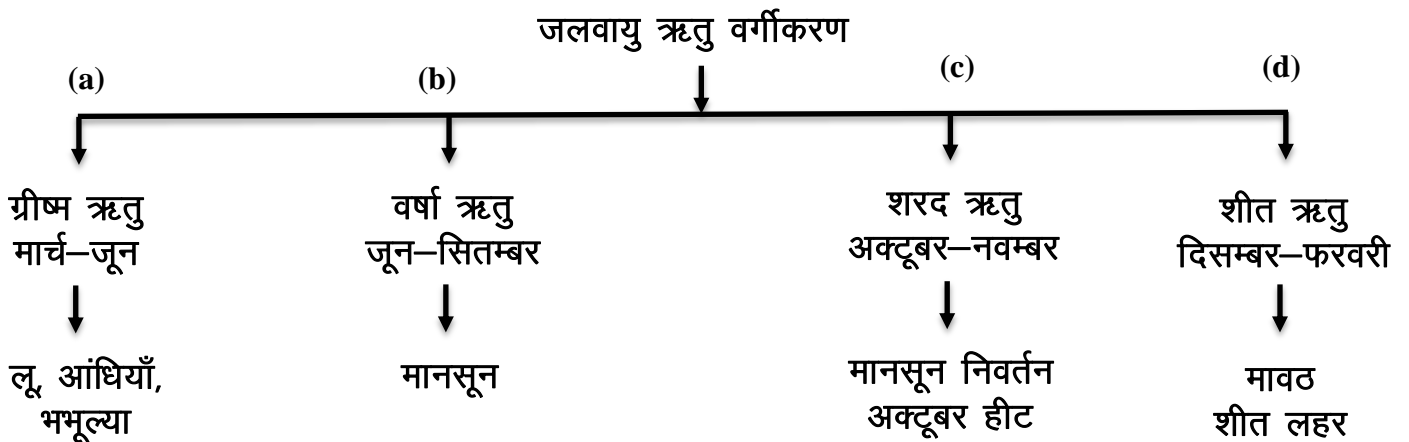
- जलवायु – शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु पाई जाती है।
- विस्तार – बीकानेर, चुरू, गंगानगर एवं हनुमानगढ़ में है।

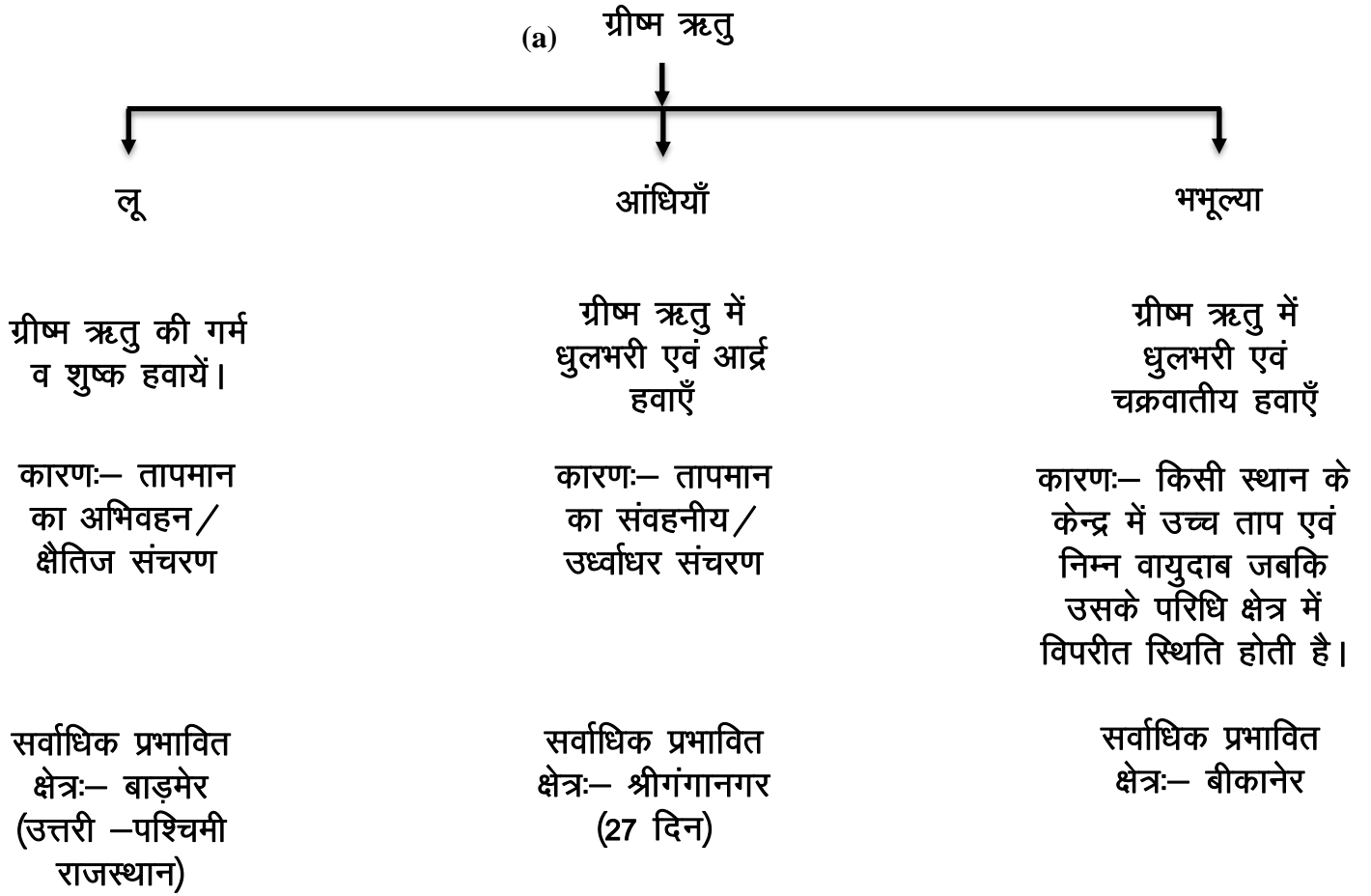
(4) EA'd :-

- जलवायु – शुष्क जलवायु पाई जाती है।
- विस्तार – जैसलमेर, बाड़मेर एवं पश्चिमी जोधपुर में पाई जाती है।

नोट:- राजस्थान के जलवायु वर्गीकरणों में थॉर्नथ्वेट का जलवायु वर्गीकरण अधिक प्रामाणिक है।

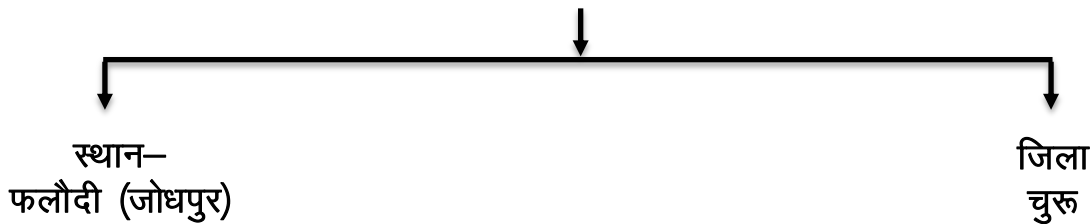
4. जलवायु ऋतु वर्गीकरण:-



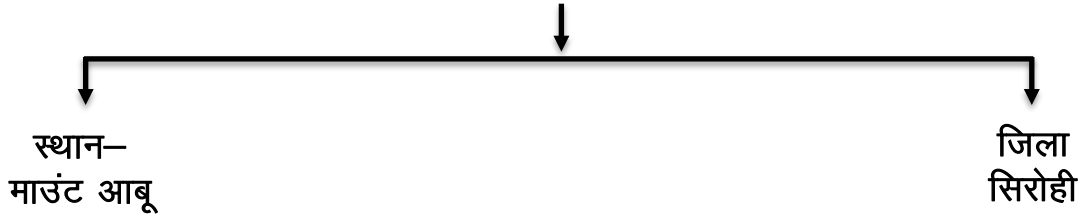


नोट:- ग्रीष्म ऋतु में तापमान बढ़ाने वाली प्रमुख घटना 'लू' है, जबकि ग्रीष्म ऋतु में तापमान को कम करने वाली घटना 'आंधी' है।

ग्रीष्म ऋतु में सर्वाधिक तापमान

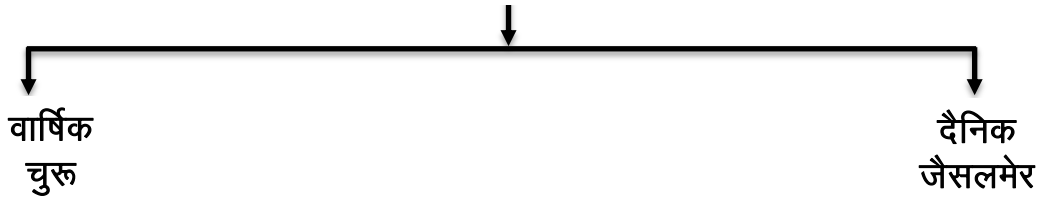


ग्रीष्म ऋतु में न्यूनतम तापमान



कारण- राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम में धरातलीय ऊँचाई अधिक है। इस कारण ऊँचाई अधिक होने के कारण तापमान में कमी आती है।

राजस्थान में सर्वाधिक तापांतर



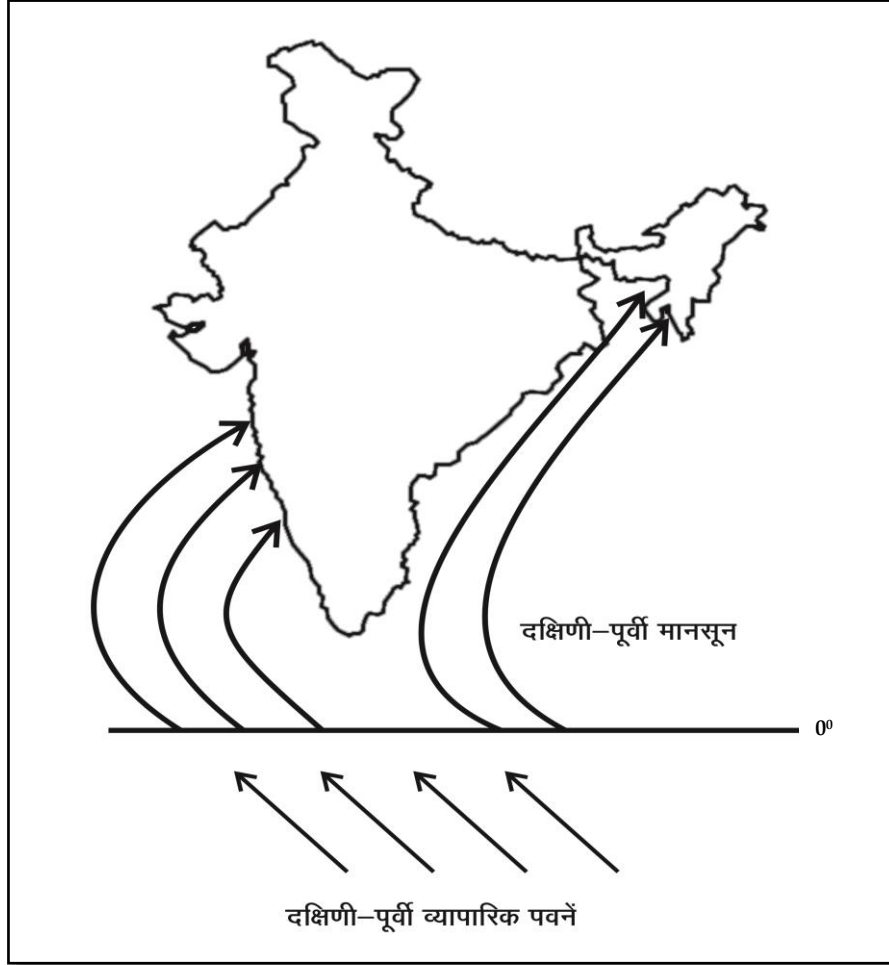
तापांतर :- निश्चित समय में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान के अन्तर को तापांतर कहा जाता है।

(b) वर्षा ऋतु :-

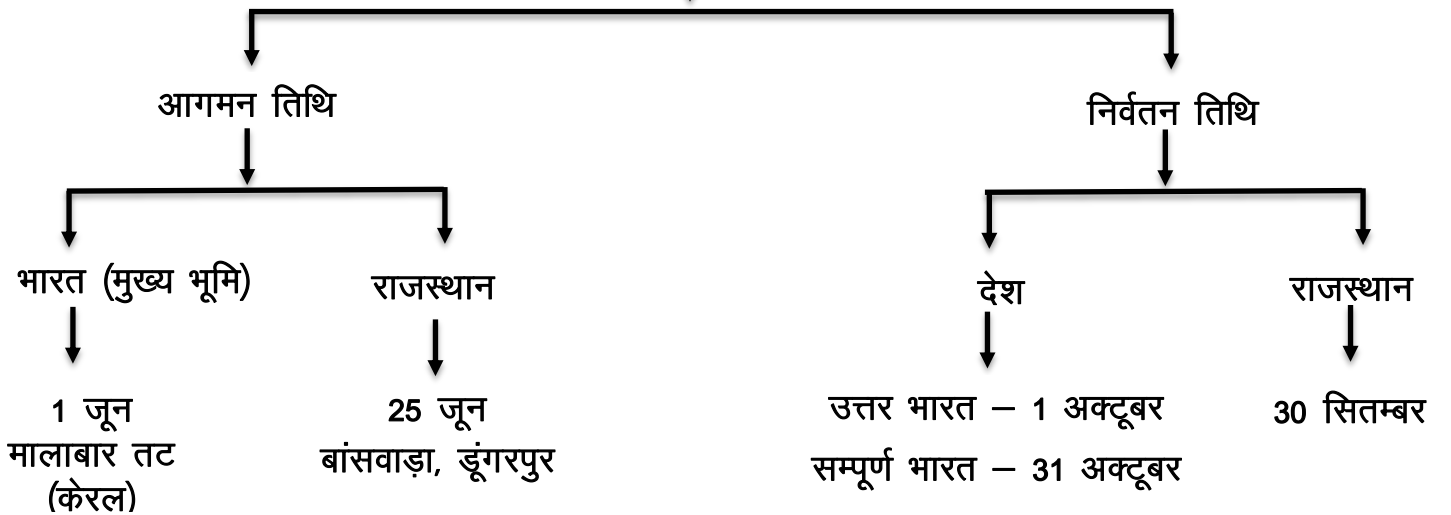
मानसून

- मूल शब्द - मौसिम
- मौसिम शब्द अरबी भाषा से लिया गया है।
- मानसून शब्द का जनक - अल मसूदी
- अर्थ- ऋतुओं में परिवर्तन / मौसमी हवाओं की दिशा में परिवर्तन जो जल से स्थल की ओर होता है।

➤ मानसून :- भारत/राजस्थान के मानसून को "दक्षिणी-पश्चिमी मानसून" कहा जाता है।

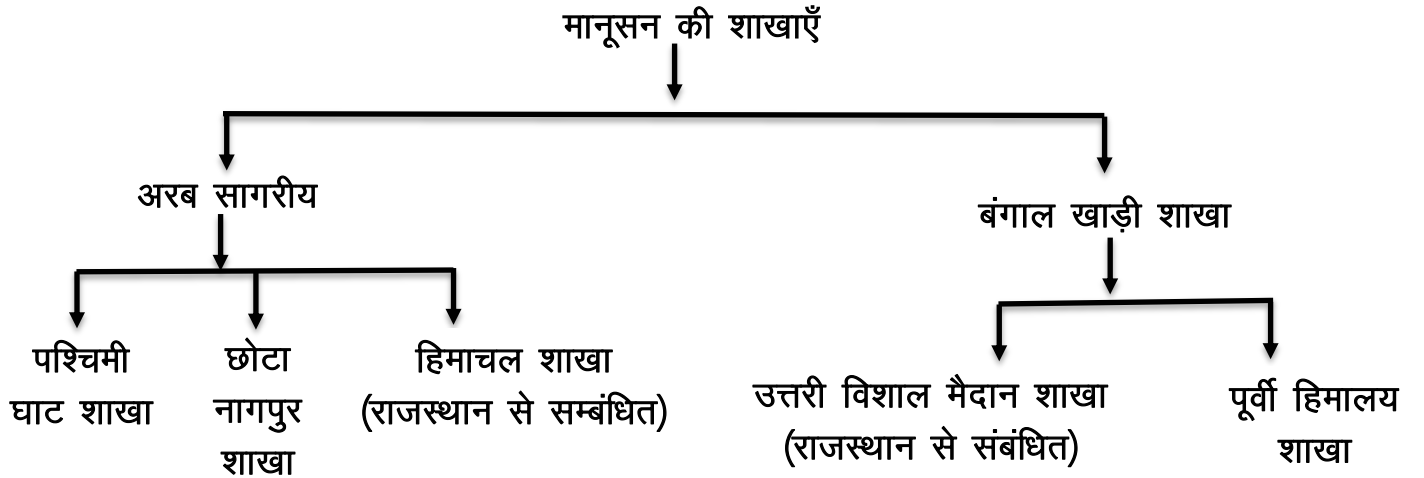


मानसून की तिथि



नोट:- राजस्थान में मानसून की प्रकृति – देरी से आना एवं समय से पहले लौट जाना।

❖ मानसून की शाखाएँ

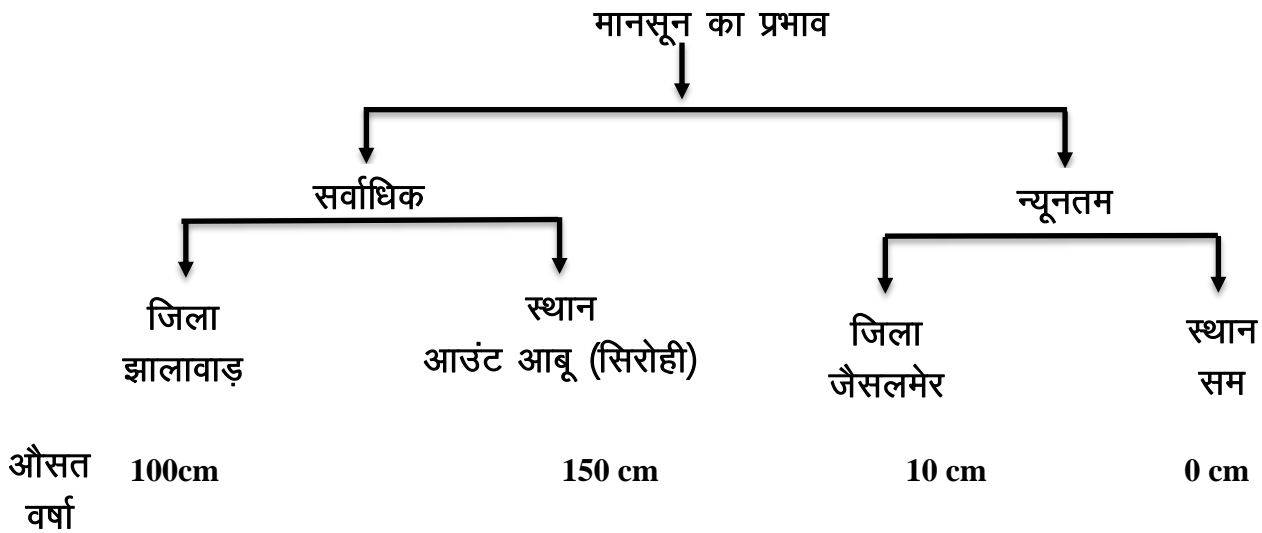


नोट:-

- राजस्थान में सबसे पहले पहुंचने वाली मानसूनी शाखा – अरब सागर शाखा (हिमाचल शाखा) है, किन्तु इस शाखा से “अधिक वर्षा नहीं” होती है क्योंकि अरावली इसके समानान्तर है।
- राजस्थान में वह मानसूनी शाखा जिससे अधिक वर्षा होती है – बंगाल खाड़ी की शाखा (उत्तरी विशाल मैदान शाखा) से होती है।

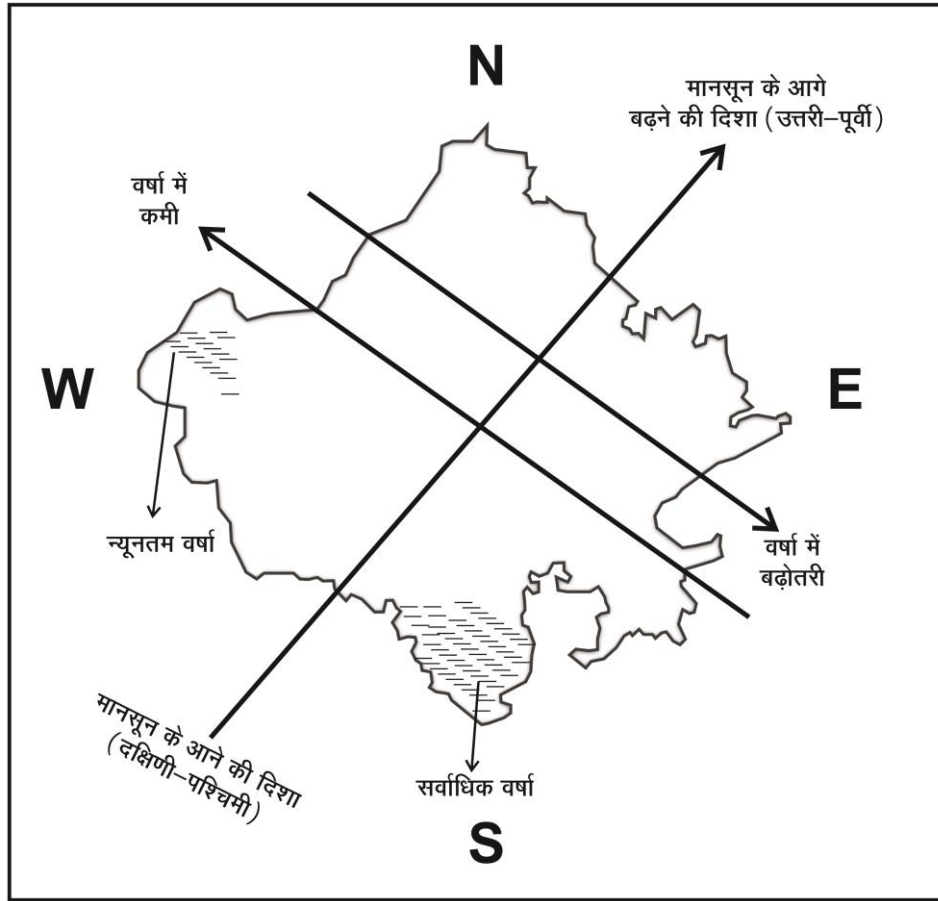
पूरवाई:- बंगाल की खाड़ी की ओर से आने वाली पूर्वी मानसूनी हवाएं पूरवाई कहलाती है। जिनसे अरावली के पूर्व में अधिक वर्षा होती है।

➤ मानसून का प्रभाव



नोट:- राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा- 57.5 सेमी एवं भारत में औसत वार्षिक वर्षा- 125 सेमी होती है।

❖ मानसून का दिशा के अनुसार प्रभाव :-



❖ मानसून के दौरान की घटनाएँ :-

- **मानसून का प्रस्फोट :-** मानसून के शुरुआत में होने वाली तेज वर्षा को मानसून प्रस्फोट कहा जाता है, जिसका समय मुख्यतः जुलाई – अगस्त माह होता है।
- **मानसून का प्रतिच्छेदन :-** मानसून प्रस्फोट के बाद दो से तीन सप्ताह तक वर्षा का नहीं होना। जिसका समय मुख्यतः अगस्त या सितम्बर माह होता है।
- **मानसून का निवर्तन :-** मानसून के लौटने की घटना को मानसून का निवर्तन कहा जाता है। जिसका समय मुख्यतः राजस्थान में अक्टूबर – नवम्बर माह होता है।
- **कार्तिक हीट –** मानसून निवर्तन के दौरान तापमान में होने वाली बढ़ोतरी को कार्तिक हीट कहा जाता है। जिसका समय अक्टूबर माह होता है।

❖ वैश्विक घटनाओं का मानसून पर प्रभाव:—

➤ अलनीनो :- ईशु का शिशु / महासागर का बुखार

क्या – यह एक गर्म जल धारा है।

स्थिति – 3⁰SL से 24⁰SL के मध्य दक्षिणी प्रशांत महासागर के पूर्वी तट पर चलती है।

समय – दिसम्बर का अंतिम सप्ताह

प्रभाव – मानसून का देरी से आना एवं कम प्रभावशाली होना।

➤ ला-नीनो :-

क्या – यह ठण्डी जल धारा है।

स्थिति – दक्षिणी प्रशान्त महासागर के पूर्वी तट पर चलती है।

समय – दिसम्बर का अंतिम सप्ताह

प्रभाव – मानसून का समय पर आना एवं अधिक प्रभावशाली होना।

(c) शरद ऋतु :- इस ऋतु की प्रमुख घटनाएं मानसून का निवर्तन एवं कार्तिक हीट है।

(d) शीत ऋतु :- इस ऋतु की प्रमुख घटनाएं मावठ एवं शीत लहर होती हैं।

1. मावठ :-

- क्या – शीतकालीन वर्षा को मावठ कहा जाता है।
- कहाँ से – भूमध्य सागर से आती है।
- किसके द्वारा – जेट स्ट्रीम (पश्चिमी विक्षोभ)
- समय – दिसम्बर से मार्च
- प्रभावित क्षेत्र – उत्तर – पश्चिम राजस्थान (बीकानेर, श्रीगंगानर, हनुमानगढ़ एवं जैसलमेर)
- लाभ – रबी फसल (सर्वाधिक गेहूँ) को सर्वाधिक होता है।

नोट:-

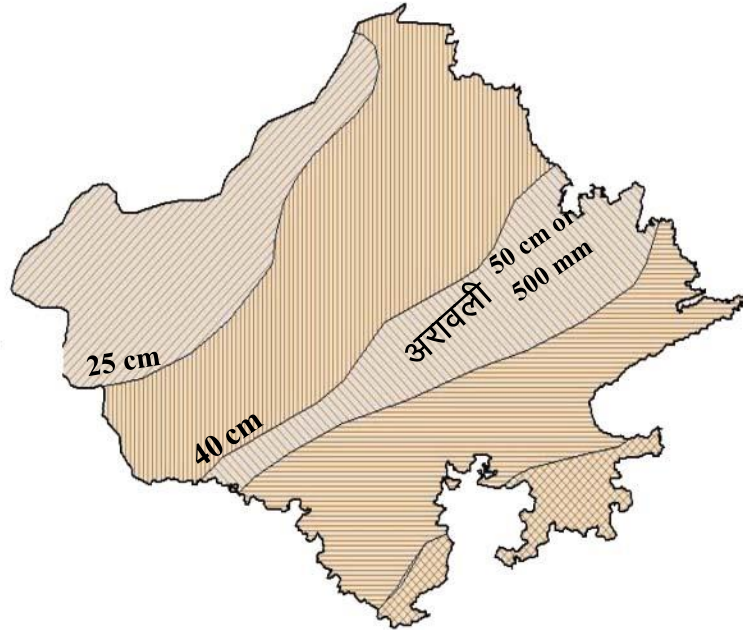
- गोल्डन ड्रॉप्स :- मावठ का सर्वाधिक लाभ गेहूँ का होता है इस कारण इसे गोल्डन ड्रॉप्स कहा जाता है।
- शीत कालीन मानसून को भूमध्य सागरीय मानसून/शीतोष्ण कटिबंधीय मानसून/उत्तरी-पश्चिमी मानसून कहा जाता है।

(2) शीत लहर

- क्या - हिमालय की ओर से आने वाली ठण्डी हवाओं को शीत लहर कहा जाता है।
- दिशा - उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम की ओर होती है।
- समय - ये मुख्यतः जनवरी माह में चलती है।
- प्रभाव - चुरू (सर्वाधिक), सीकर एवं बीकानेर।

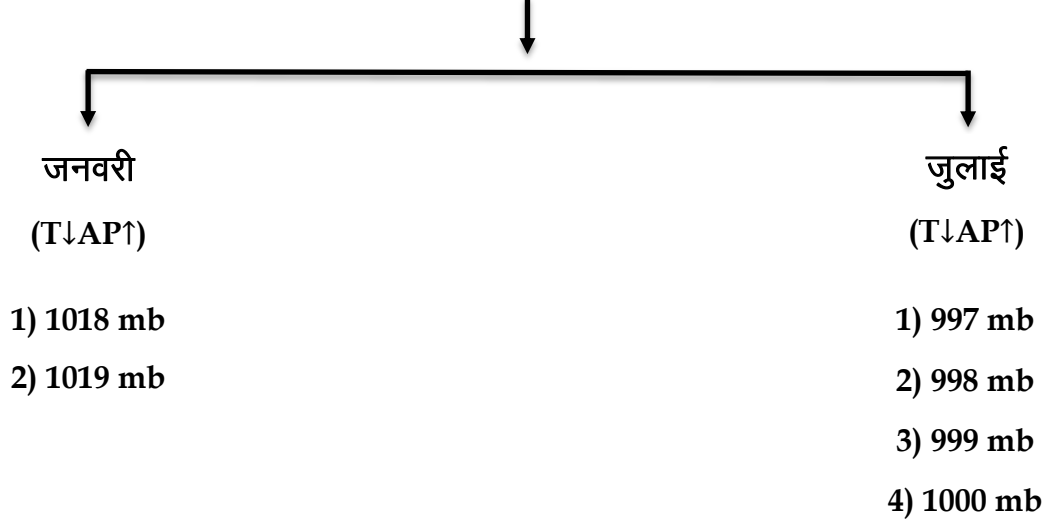
अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु :-

- ❖ **समवर्षा रेखा :-** मानचित्र में वे रेखाएं जो एक समान वर्षा वाले स्थानों को जोड़ती हैं, उन्हें समवर्षा रेखा कहा जाता है।

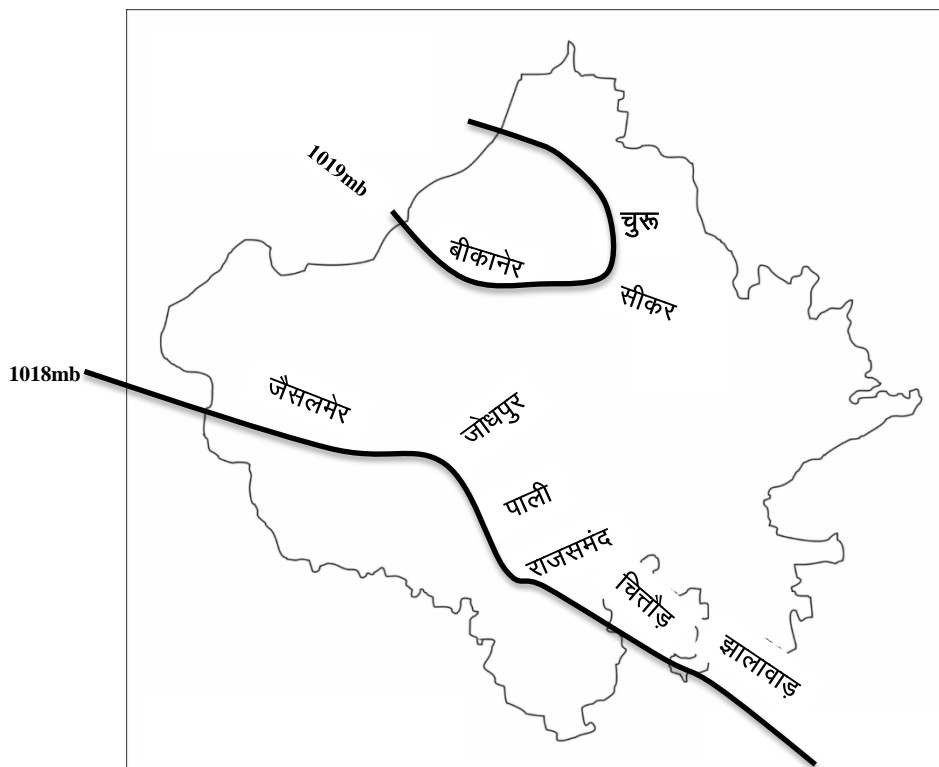
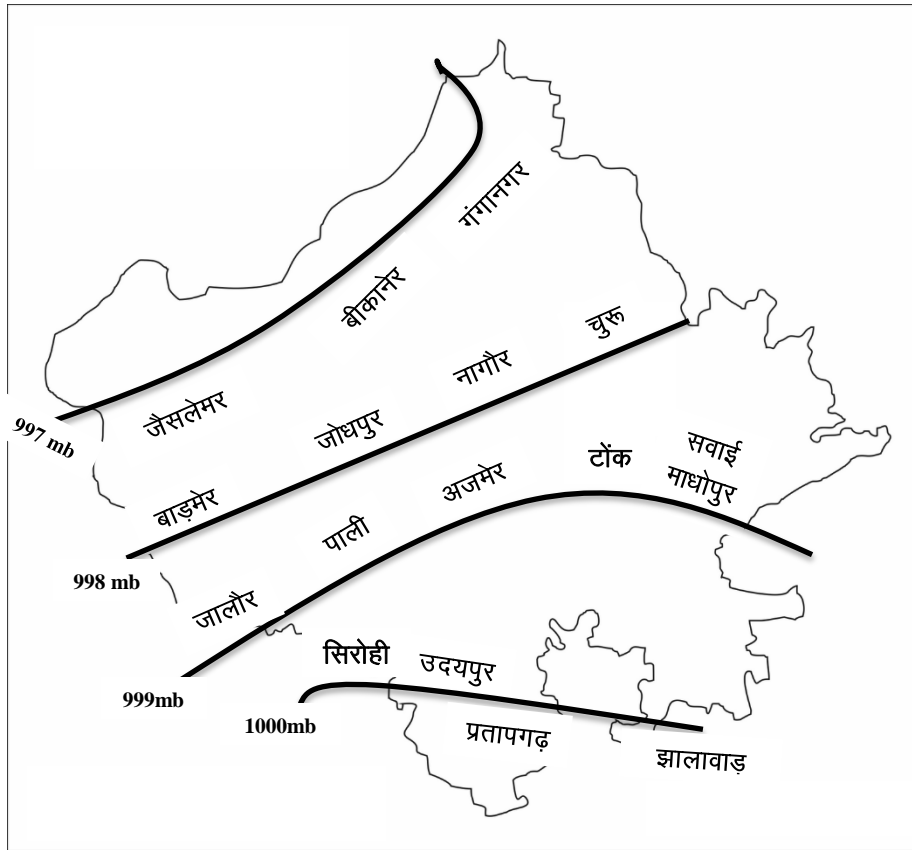


- 25 सेमी समवर्षा रेखा:- यह समवर्षा रेखा मरुस्थल को शुष्क एवं अर्द्धशुष्क दो भागों में बांटती है।
- 40 सेमी समवर्षा रेखा :-
 - ✓ यह "राजस्थान को दो बराबर" भागों में बांटती है।
 - ✓ यह पश्चिमी रेतीले मरुस्थल की पूर्वी सीमा निर्धारित करती है।
- 50 सेमी समवर्षा रेखा :- यह अरावली पर स्थित है जो पूर्वी मैदान व पश्चिमी मरुस्थल को अलग करती है।
- ❖ समवायु दाब रेखा :- मानचित्र में वे रेखाएँ जो एक समान वायुदाब वाले स्थानों को जोड़ती हैं।

राजस्थान में वायुदाब रेखा

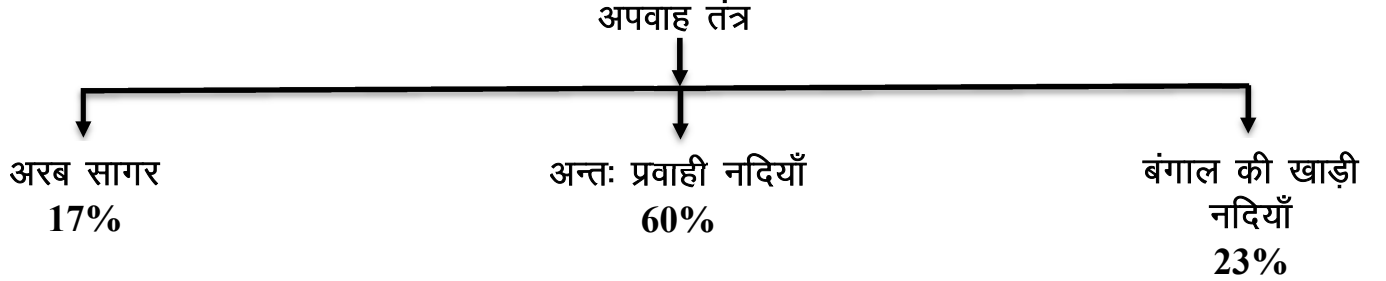


- जहाँ T = तापमान एवं AP = वायुदाब
- जबकि ↑ = अधिक एवं ↓ = कमी
- **mb** = मिलीबार



अपवाह तंत्र

राजस्थान के अपवाह तंत्र को संगम के आधार पर तीन भागों में बाटा जाता है।



- अरावली को "राजस्थान की जल विभाजक रेखा" के रूप में जाना जाता है, क्योंकि अरावली राजस्थान के अपवाह तंत्र को दो भागों (पूर्व में बंगाल की खाड़ी एवं पश्चिम में अरब सागर की नदियाँ) में बांटती है।
- राजस्थान में अन्तः प्रवाही नदियाँ सर्वाधिक है, क्योंकि राजस्थान में मरुस्थल का विस्तार सर्वाधिक है।
- भारत के कुल सतही जल/नदी जल का राजस्थान में 1.16 प्रतिशत है।
- भारत के कुल भूमिगत जल का राजस्थान में 1.69 प्रतिशत है।
- राजस्थान में कुल नदी बेसिन 15 एवं उप-बेसिन 58 हैं।

❖ अरब सागर की नदियां:—

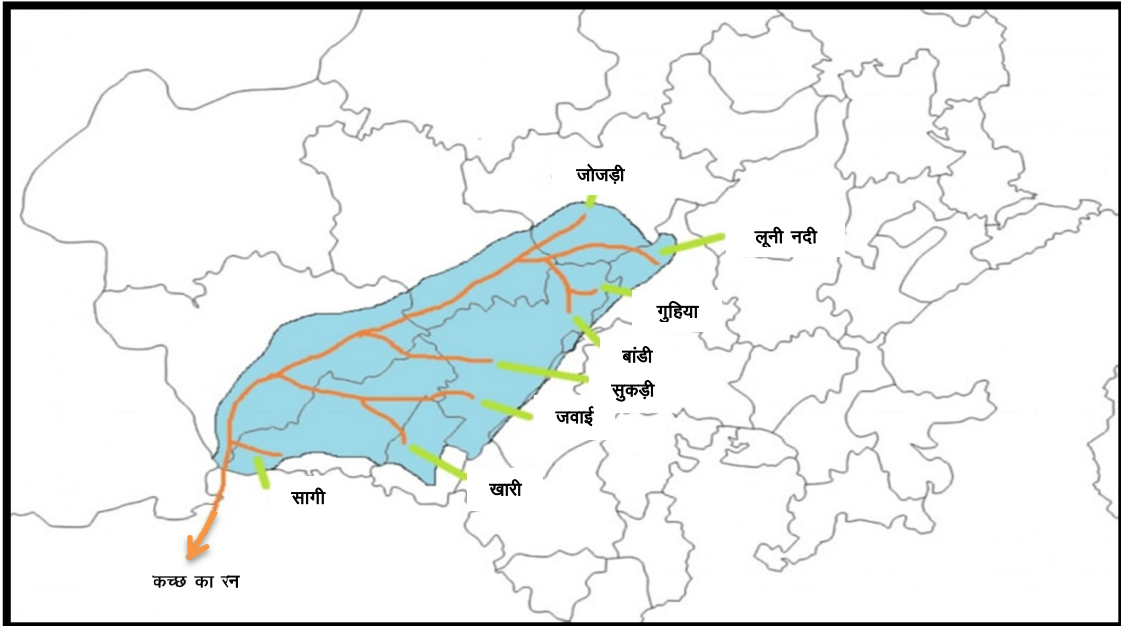
- A. लूनी,
- B. माही,
- C. पश्चिमी बनास,
- D. साबरमती

A. लूनी नदी:—

- उद्गम:— नाग पहाड़ी (अजमेर)
- संगम:— कच्छ का रण (गुजरात)
- लंबाई:— 495 कि.मी. (राजस्थान में लंबाई – 350 कि.मी.)
- अपवाह तंत्र:— अजमेर, पाली, नागौर, बाड़मेर, जालोर, जोधपुर
- सहायक नदियाँ:— सुकड़ी, बांडी, खारी, जोजड़ी, जवाई, सागी, मीठड़ी, लीलडी, गुहिया
- नोट:—

(1) जोजड़ी:— लूनी में दायीं ओर से आने वाली एकमात्र नदी।

(2) बांडी:— इसे रासायनिक नदी भी कहा जाता है क्योंकि इस नदी में रंगाई-छपाई उद्योग से आने वाला रासायनिक जल मिलता है।



➤ विशेषताएँ :-

1. लूनी के अन्य नाम :-

- (i) सागरमती
- (ii) लवणवती
- (iii) आधी मीठी – आधी खारी
- (iv) अन्तः सलिला (कालिदास के अनुसार)

- रेल/नाड़ा:- जालौर में लूनी के अपवाह क्षेत्र को रेल/नाड़ा कहा जाता है।

2. बालोतरा (बाड़मेर) :-

- लूनी नदी में बाढ़ इसी क्षेत्र में आती है।
- बालोतरा के बाद लूनी नदी का पानी खारा हो जाता है।

3. राजस्थान के कुल अपवाह तंत्र में लूनी नदी का योगदान 10.40 प्रतिशत है।

- लूनी – मरु प्रदेश में सबसे लंबी नदी है।

4. बांध परियोजना:-

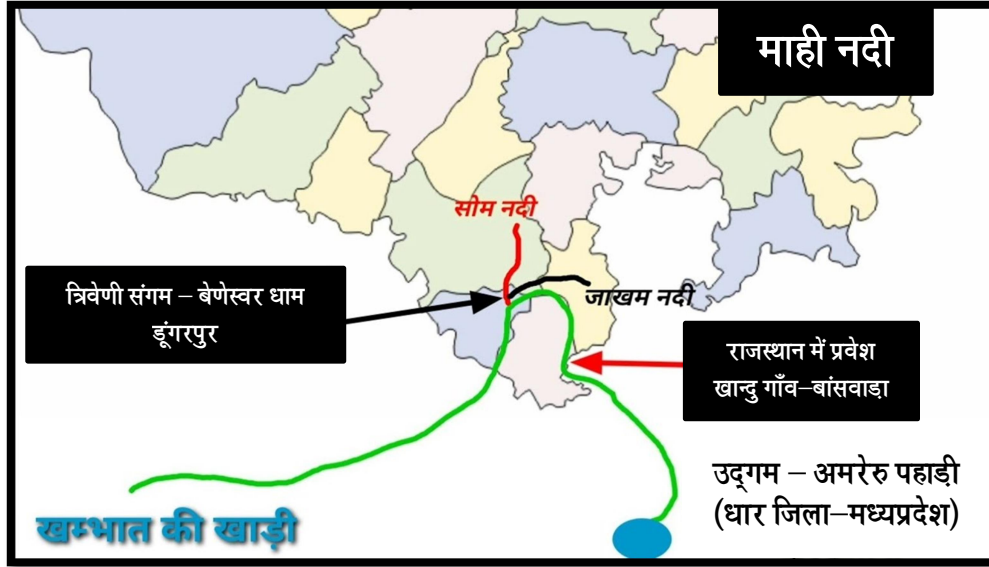
- जसवंत सागर/पिचयाक बांध (लूनी) – जोधपुर
- बाकली बांध (सुकड़ी) – जालौर
- हेमावास बांध (बांडी) – पाली
- जवाई बांध (जवाई) – सुमेरपुर, पाली

5. जवाई बांध:-

- यह पाली (सुमेरपुर) में स्थित है।
- जवाई बांध की जलापूर्ति – पाली, जोधपुर, जालौर और सिरोही को की जाती है।
- इसे "मारवाड़ का अमृतसरोवर" कहा जाता है।
- जब जवाई बांध में जल स्तर घटता है, तो सेई जल सुरंग से जलापूर्ति होती है।
- नोट:- सेई सुरंग
- यह राजस्थान राज्य की पहली जल सुरंग है जो उदयपुर से जवाई बांध तक जलापूर्ति करती है।

B. माही नदी:-

- उद्गम – महेंद झील (अमरेरु पहाड़ी-विंध्याचल)
- संगम – खंभात की खाड़ी (गुजरात)
- लंबाई – 576 किलोमीटर (राजस्थान में 171 किलोमीटर)
- अपवाह क्षेत्र – बांसवाड़ा (सर्वाधिक), डूंगरपुर, प्रतापगढ़
- सहायक नदियाँ – अराव, अन्नास, चाप, मोरेन, सोम, जाखम



1. उपनाम:-

- आदिवासियों की गंगा
- कांठल की गंगा
- वागड़ की गंगा
- दक्षिणी राजस्थान की स्वर्ण रेखा नदी।

2. त्रिवेणी संगम:-

- बेणेश्वर धाम (नवाटापरा-डूंगरपुर) – यहां सोम, माही और जाखम का संगम होता है।
- माघ पुर्णिमा को यहाँ मेले का आयोजन किया जाता है जिसे "आदिवासियों का कुंभ" कहा जाता है।

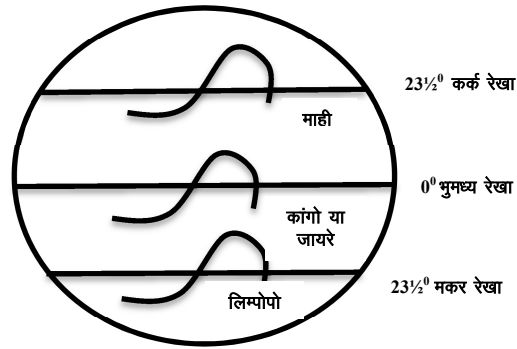
➤ इस मेले में भील जनजाति सर्वाधिक आती है।

3. सुजलाम – सुफलाम परियोजना:-

➤ माही नदी में सफाई के लिए चलाया गया कार्यक्रम।

➤ सुजलम परियोजना:- बाड़मेर में B.A.R.C. (भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र – ट्रॉम्बे, महाराष्ट्रा) द्वारा चलाई गई पेयजल परियोजना।

4. कर्क रेखा को दो बार काटने वाली विश्व की एकमात्र नदी।



5. माही राजस्थान के दक्षिण से प्रवेश कर पश्चिम की ओर बहने वाली नदी।

6. बांध परियोजना:-

- माही बजाज सागर – बांसवाड़ा
- कागदी पिकअप बांध – बांसवाड़ा
- कड़ाना बांध – गुजरात
- सोम-कागद परियोजना – उदयपुर
- सोम-कमला अम्बा – डूंगरपुर
- जाखम बांध – प्रतापगढ़

(i) माही बजाज सागर:-

- स्थिति – बोरखेड़ा (बांसवाड़ा)
- लम्बाई – 3109 मीटर

नोट:- यह राजस्थान का सबसे लम्बा बांध है, जबकि आदिवासी क्षेत्र व दक्षिणी राजस्थान में सबसे बड़ी परियोजना है।

(ii) जाखम बांध:—

➤ स्थिति – सीतामाता अभयारण्य (प्रतापगढ़)

नोट:— यह राजस्थान का सबसे ऊँचा बांध (81 मीटर) है।

C. पश्चिमी बनास

➤ उद्गम— नया सानवारा गाँव (सिरोही)

➤ संगम – लिटिल कच्छ (गुजरात)

➤ लम्बाई – 226 किलोमीटर

➤ अपवाह क्षेत्र – सिरोही

➤ सहायक नदी – कूकड़ी, सुकली / सीपू

➤ आबू (सिरोही) और डीसानगर (गुजरात) पश्चिमी बनास के किनारे स्थित है।



D. साबरमती

- उद्गम – पदराना हिल्स, उदयपुर
- संगम – खम्भात की खाड़ी
- लम्बाई – 416 किलोमीटर (राज. में लम्बाई 45 किलोमीटर)
- अपवाह क्षेत्र – उदयपुर
- सहायक नदियाँ – वेतरक, सेई, हथमति, मेश्वा, मानसी, वाकल एवं माजम।

विशेषताएँ –

- अहमदाबाद, साबरमती तथा गांधीनगर, साबरमती नदी के किनारे स्थित है।
- साबरमती राजस्थान की वह नदी है जिसका मुख्य अपवाह क्षेत्र गुजरात है।

साबरमती पर जल सुरंग



सेई जल सुरंग	मानसी वाकल जल सुरंग
<ul style="list-style-type: none"> ➤ विस्तार – उदयपुर से पाली ➤ जलापूर्ति – जवाई बांध को ➤ महत्व – राजस्थान की पहली जल सुरंग 	<ul style="list-style-type: none"> ➤ विस्तार – उदयपुर ➤ जलापूर्ति – देवास परियोजना / मोहनलाल सुखाड़िया ➤ महत्व – राजस्थान की सबसे लम्बी जलसुरंग।



❖ अन्तः प्रवाही नदियाँ :-

(A) घग्घर नदी:-

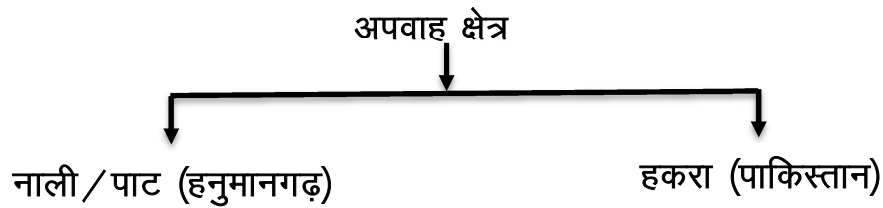
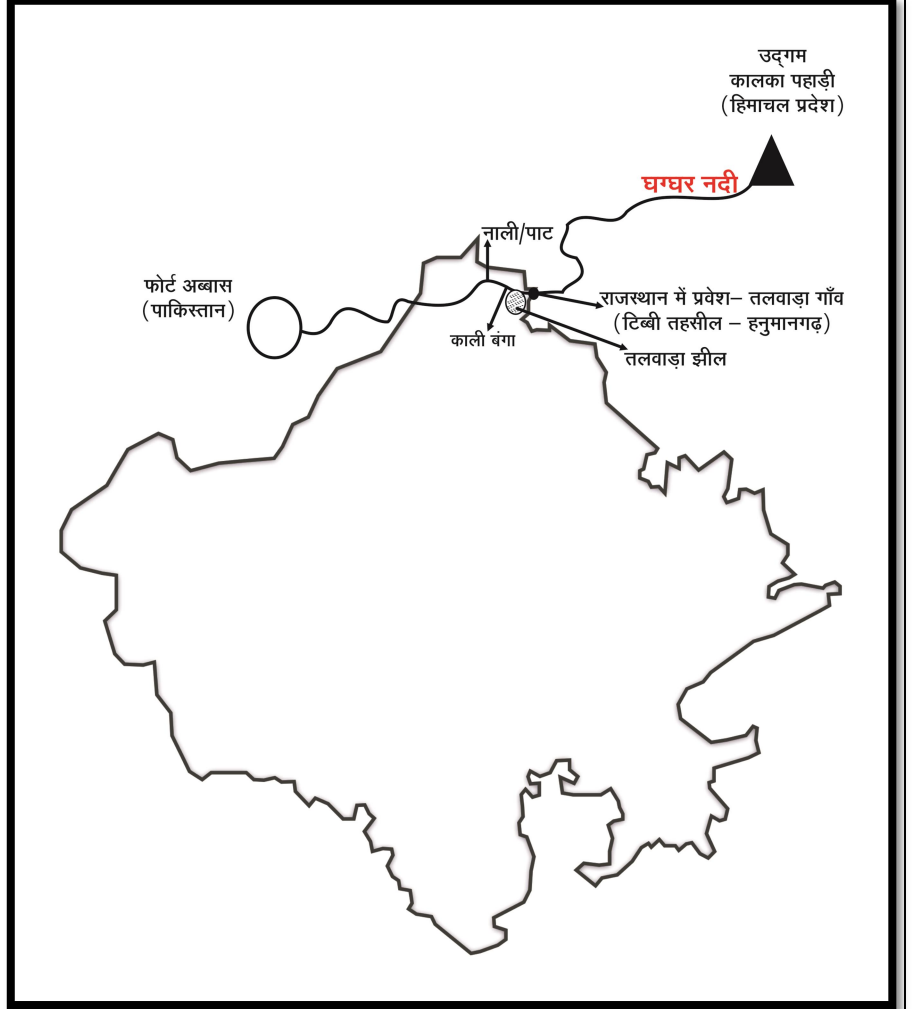
- उद्गम – कालका पहाड़ी (शिवालिक हिमालय – हिमाचल प्रदेश)
- अपवाह क्षेत्र – गंगानगर, हनुमानगढ़

❖ विशेषताएँ

1. उपनाम –

- (i) सरस्वती (प्राचीन नाम)
- (ii) मृत नदी
- (iii) नट नदी
- (iv) दृषद्वती

2. घग्घर के अपवाह क्षेत्र को अलग-अलग क्षेत्र में अलग अलग नाम से जाना जाता है।



➤ नोट – नाली अपवाह क्षेत्र के पास पाई जाने वाली भेड नस्ल को नाली नस्ल कहा जाता है।

- 3. हिमालय से राजस्थान आने वाली एकमात्र नदी है।
- 4. श्री राम वाडरे एवं हनुवंता राय को सरस्वती नदी का प्राचीन मार्ग को खोजने के लिए नियुक्त किया गया।
- 5. जलपट्टी – जैसलमेर में सरस्वती नदी का भू-गर्भिक जलीय अवशेष, जो पोकरण से मोहनगढ़ के मध्य स्थित है।
- 6. भारत की सबसे लम्बी अन्तः प्रवाही नदी घग्घर है।
- 7. फोर्ट अब्बास – पाकिस्तान में घग्घर नदी का अंतिम बिन्दु है, जहां घग्घर नदी में अधिक पानी या बाढ़ आने पर पहुंचती है।।

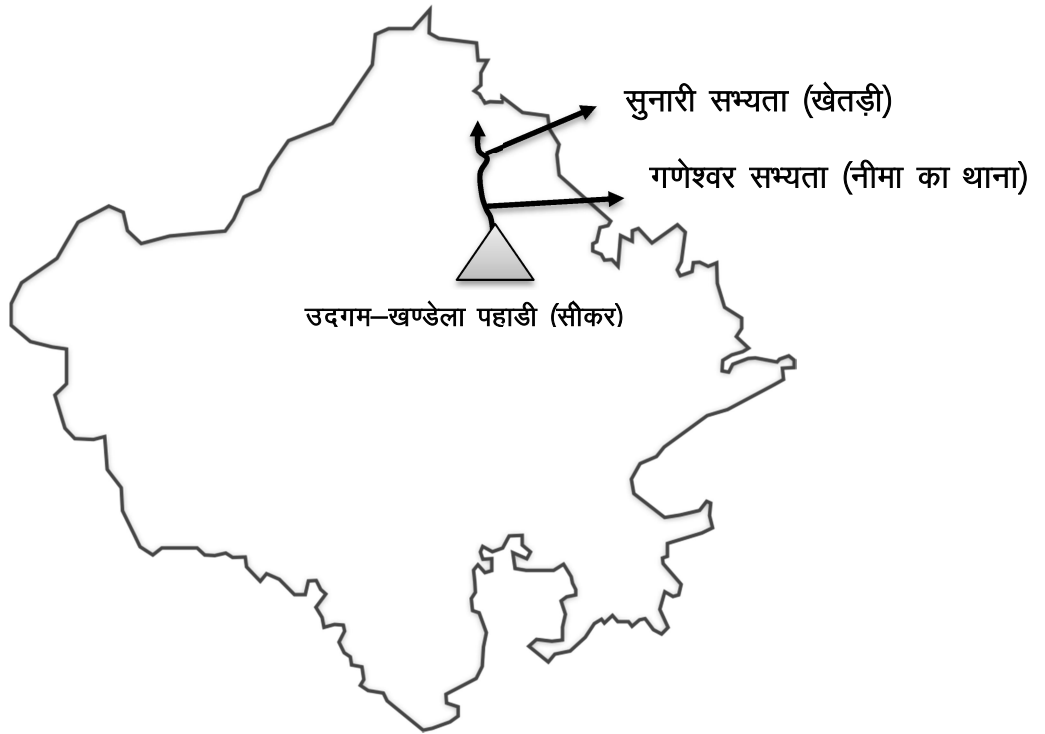
(B) कातली (काटली) नदी :-

➤ उद्गम – खंडेला पहाड़ी (सीकर)

➤ अपवाह क्षेत्र – सीकर – झुंझुनू

नोट – कातली नदी के अपवाह क्षेत्र को तोरावाटी के नाम से जाना जाता है, जिसका विस्तार सीकर और झुंझुनू में है।

➤ कातली राजस्थान में सबसे लम्बी अंतः प्रवाही नदी है, जिसकी लम्बाई 100 कि.मी. है।

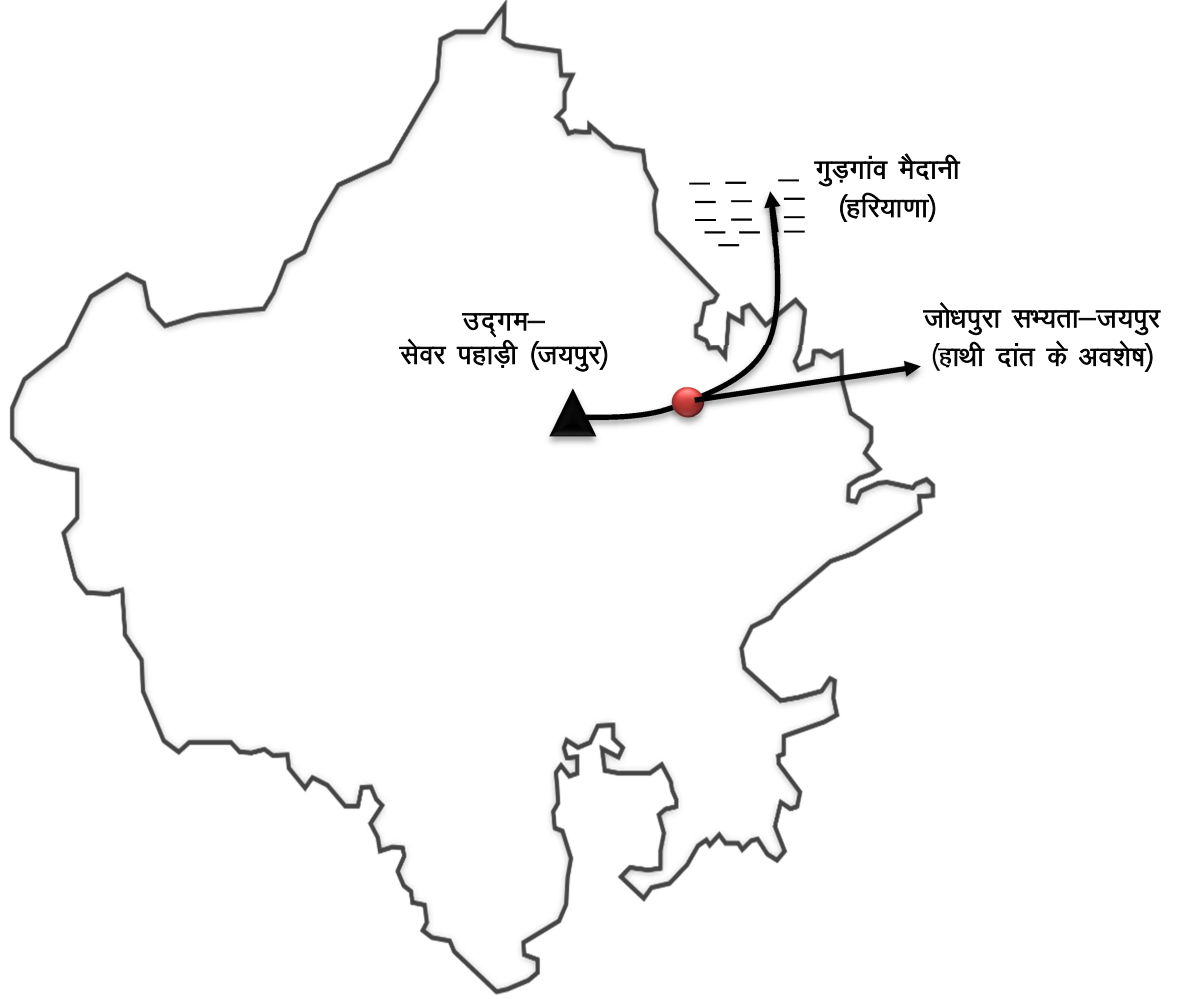


(C) साबी नदी :-

➤ उद्गम – सेवर पहाड़ी (जयपुर)

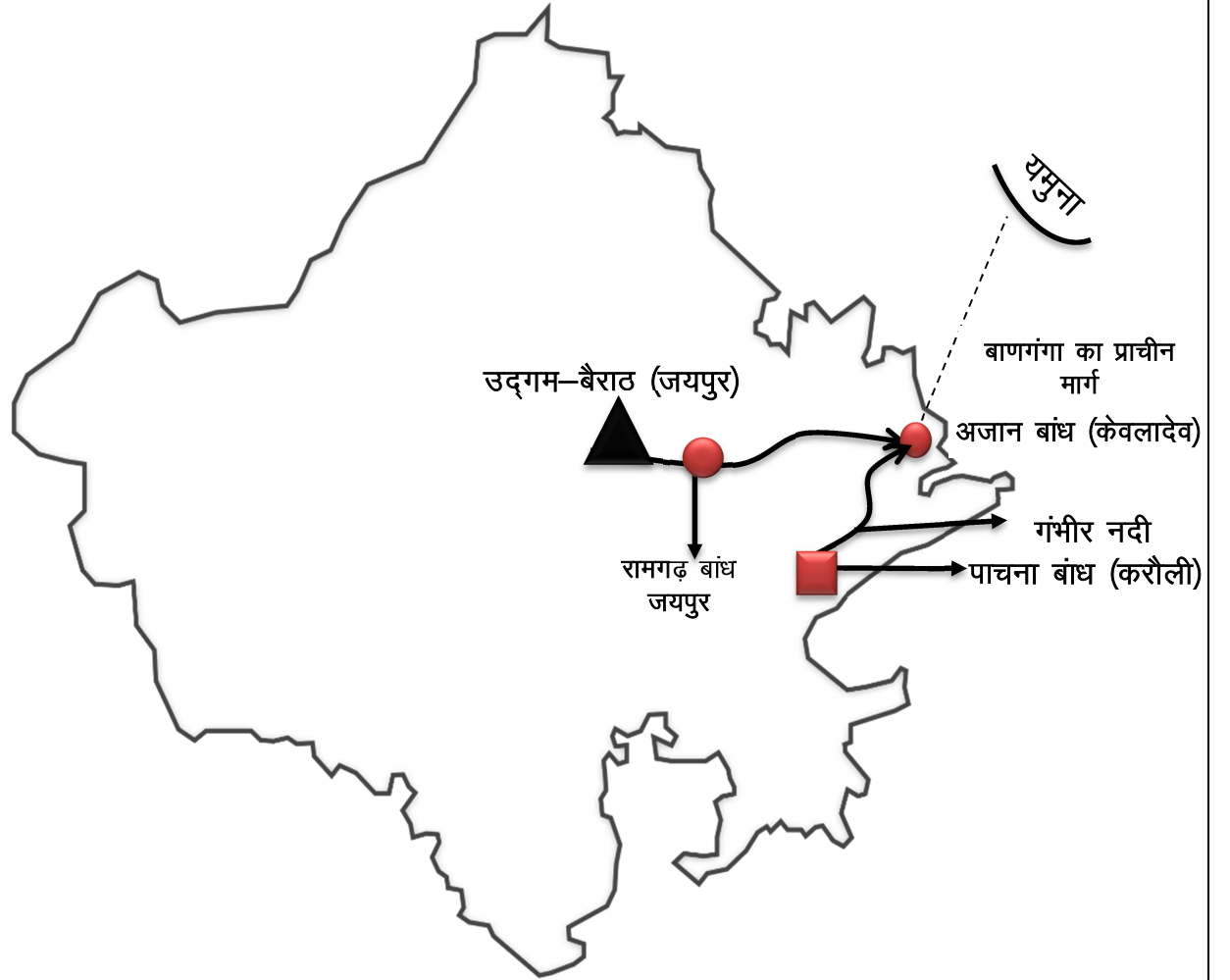
➤ अपवाह क्षेत्र – जयपुर, अलवर

नोट – साबी राजस्थान की वह नदी जो गुड़गांव मैदान (हरियाणा) में विलिन होती है।



(D) बाणगंगा नदी :-

- उद्गम – बैराट, जयपुर
- अपवाह क्षेत्र – जयपुर – दौसा – भरतपुर
- सहायक नदियाँ – सूरी, सँवान, पलासन, गोमती नाला



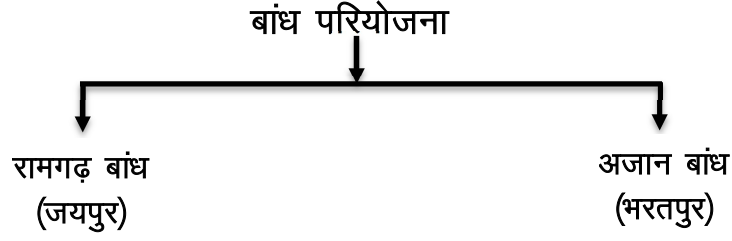
❖ विशेषताएँ –

1. उपनाम –

- (i) अर्जुन की गंगा
- (ii) ताला नदी
- (iii) रुण्डित नदी –

- वह सहायक नदी जो अपनी मुख्य नदी में गिरने से पहले ही समाप्त हो जाती है, उसे रुण्डित नदी कहते हैं।
- यह दर्जा बाणगंगा को 2012 में दिया गया।

2. बांध परियोजनाएँ –



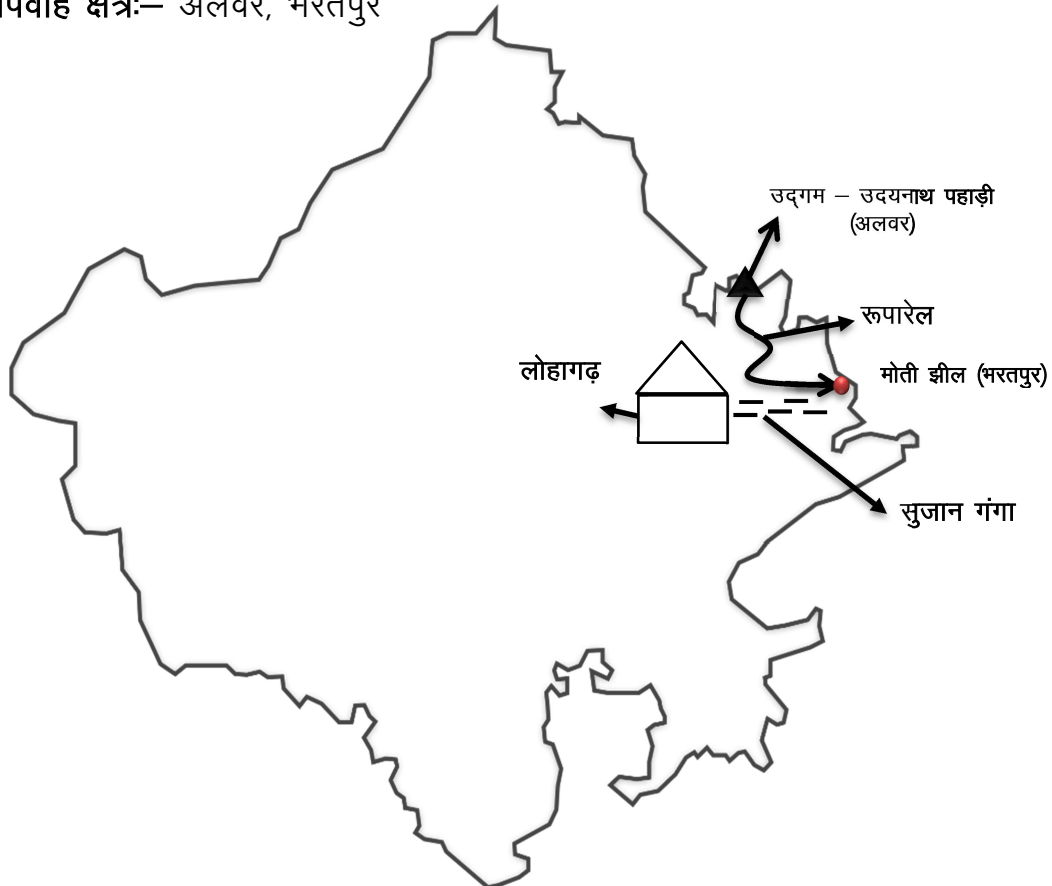
➤ अजान बांध:—

- ✓ यह भरतपुर जिले में स्थित है।
- ✓ इस से जलापूर्ति केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में की जाती है।
- ✓ इस बांध में जल की कमी होने पर इसमें पांचना बांध (करौली) से जलापूर्ति की जाती है।

(E) रूपारेल/वराह नदी :-

➤ उद्गम – उदयनाथ पहाड़ी (अलवर)

➤ अपवाह क्षेत्र:— अलवर, भरतपुर



❖ मोती झील:-

- यह भरतपुर में स्थित मीठे पानी की झील है। जिसके द्वारा सिंचाई के लिए जलापूर्ति की जाती है।
- इस कारण इसे "भरतपुर जिले की जीवन रेखा" भी कहा जाता है।

❖ सुजान गंगा:-

- यह एक चैनल है जो मोती झील व लोहागढ़ को जोड़ता है।

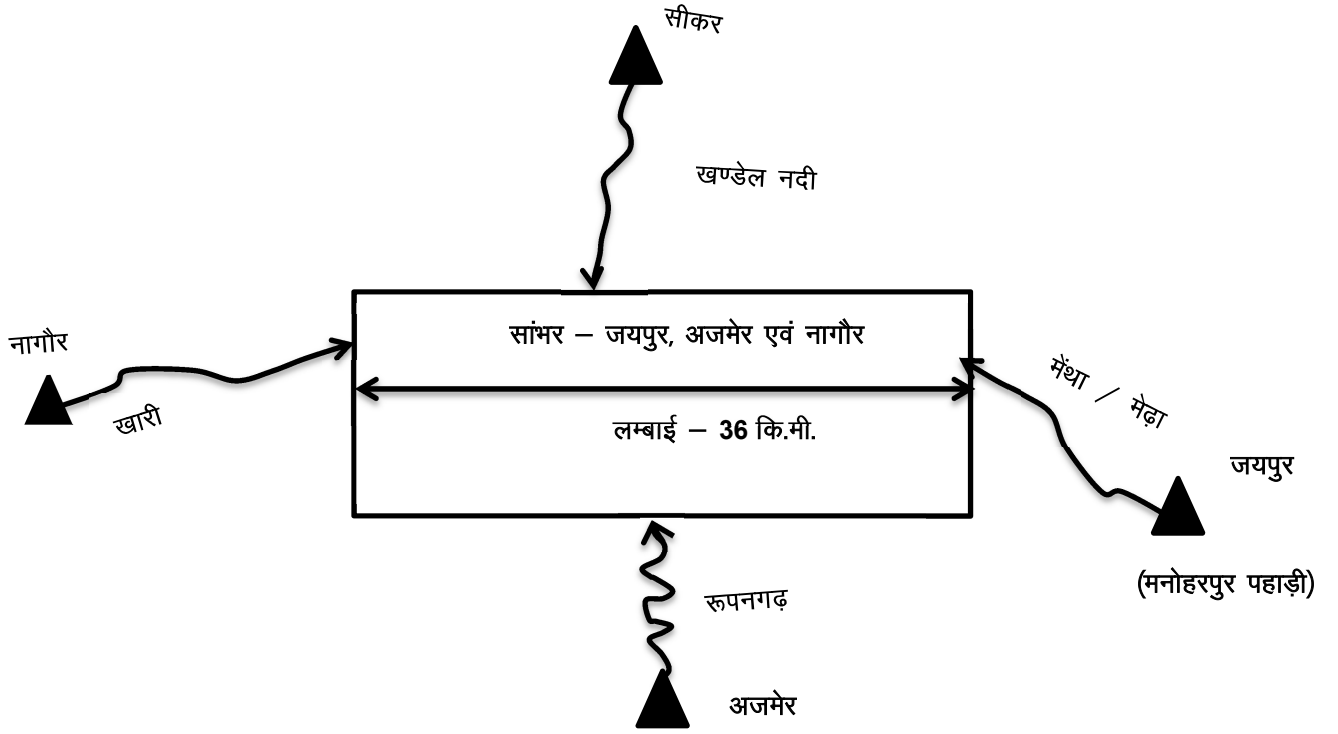
(F) काकनी/काकनेय नदी:-

- उपनाम – मसूरदी नदी
- उद्गम – कोटरी गांव (जैसलमेर)
- अपवाह क्षेत्र – जैसलमेर



- ❖ बुझ झील – यह जैसलमेर में स्थित मीठे पानी की झील है जो काकनी नदी द्वारा निर्मित है।

❖ अन्य अन्तः प्रवाही नदियाँ :-



➤ नोट -

- सांभर में सर्वाधिक नमक लाने वाली नदी - मेंथा
- सांभर अभिकेद्रीय नदी प्रतिरूप का उदाहरण है अर्थात् नदियाँ चारों ओर से आकर एक स्थान (सांभर) पर मिलती हैं।
- बालसन :- पर्वतों में घिरे हुए जल बेसिन/नदी बेसिन को बालसन कहा जाता है।
उदाहरण- सांभर झील।

❖ बंगाल की खाड़ी की नदियाँ :-

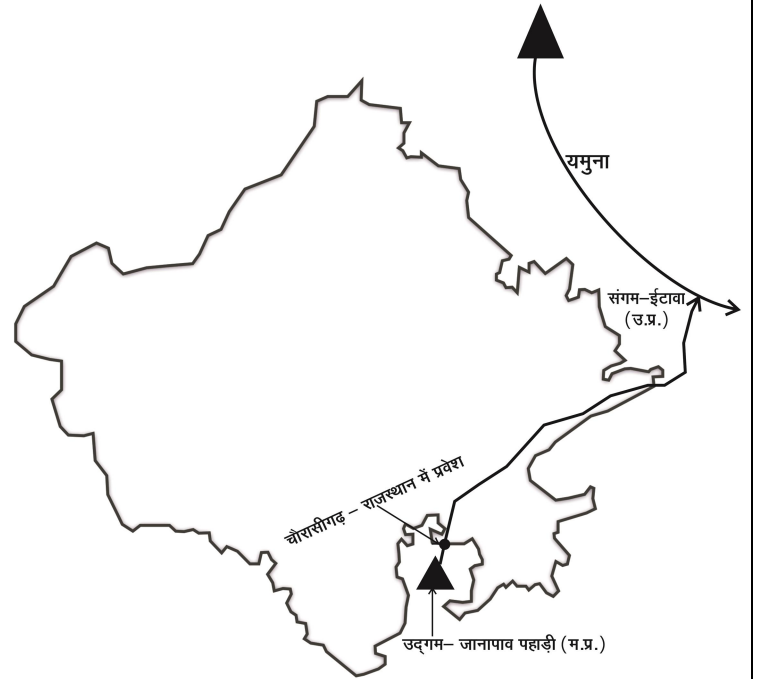
- A. चम्बल
- B. बनास
- C. बेड़च
- D. गंभीर

A. चम्बल:-

- उद्गम :- जानापाव पहाड़ी - इंदौर - (विंध्यन पर्वतमाला - मध्यप्रदेश)
- संगम :- यमुना - इटावा (उत्तर प्रदेश)
- लम्बाई :- 1051 किलोमीटर (राजस्थान में लम्बाई 322 किलोमीटर)
पुरानी लम्बाई :- 966 किलोमीटर (राजस्थान में लम्बाई 135 किलोमीटर)
- अपवाह क्षेत्र:-
 - ✓ चित्तौड़गढ़:- चम्बल का राजस्थान में प्रवेश (चौरासीगढ़)
 - ✓ कोटा, बून्दी एवं डोंग क्षेत्र (करौली, सवाई माधोपुर एवं धौलपुर)
- सहायक नदियाँ:- गुंजाली, मेज, माँगली, पार्वती, निवाज (नेवाज), आहू, कालीसिंध, घोड़ा-पछाड़, परवन, ब्राह्मणी, बनास, चाकण, कुनु, कुराल, सीप

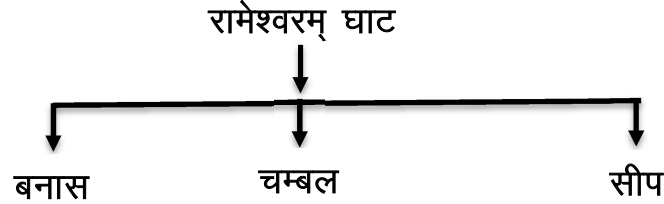
नोट:-

1. सामेला - आहू व कालीसिंध के संगम को सामेला कहा जाता है। जिसके किनारे गागरोन दुर्ग स्थित है।
2. बनास - चम्बल की सबसे लम्बी सहायक नदी है।
3. कालीसिंध - चम्बल में दाईं ओर से सबसे लम्बी सहायक नदी है।



❖ विशेषताएँ:-

1. चम्बल नदी के उपनाम – चर्मण्वती (प्राचीन नाम), कामधेनू, बारहमासी।
2. त्रिवेणी संगम – रामेश्वरम् घाट- पदरा गाँव (सवाई माधोपुर)

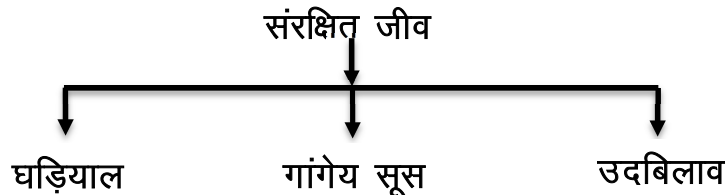


3. चूलिया जलप्रपात:-

- स्थिति – भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़)
- नदी – चम्बल
- विशेष:- यह राजस्थान का 'सबसे ऊँचा' जल प्रपात है जिसकी ऊँचाई 18 मीटर है।

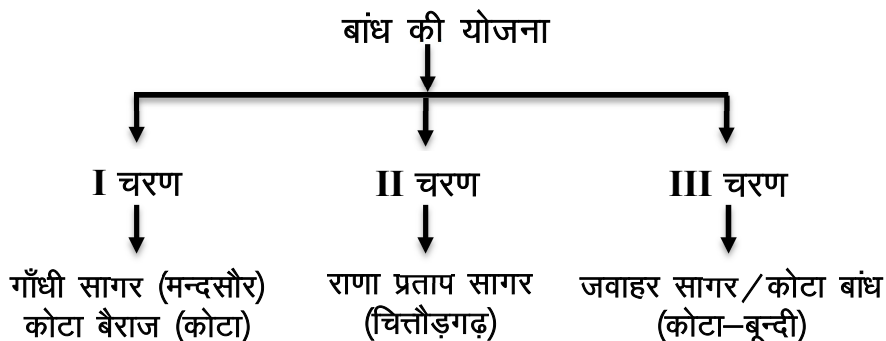
नोट:- कुचीकरण जलप्रपात :- भारत का सबसे ऊँचा (455 मीटर) जलप्रपात जो वाराही नदी पर कर्नाटक में स्थित है।

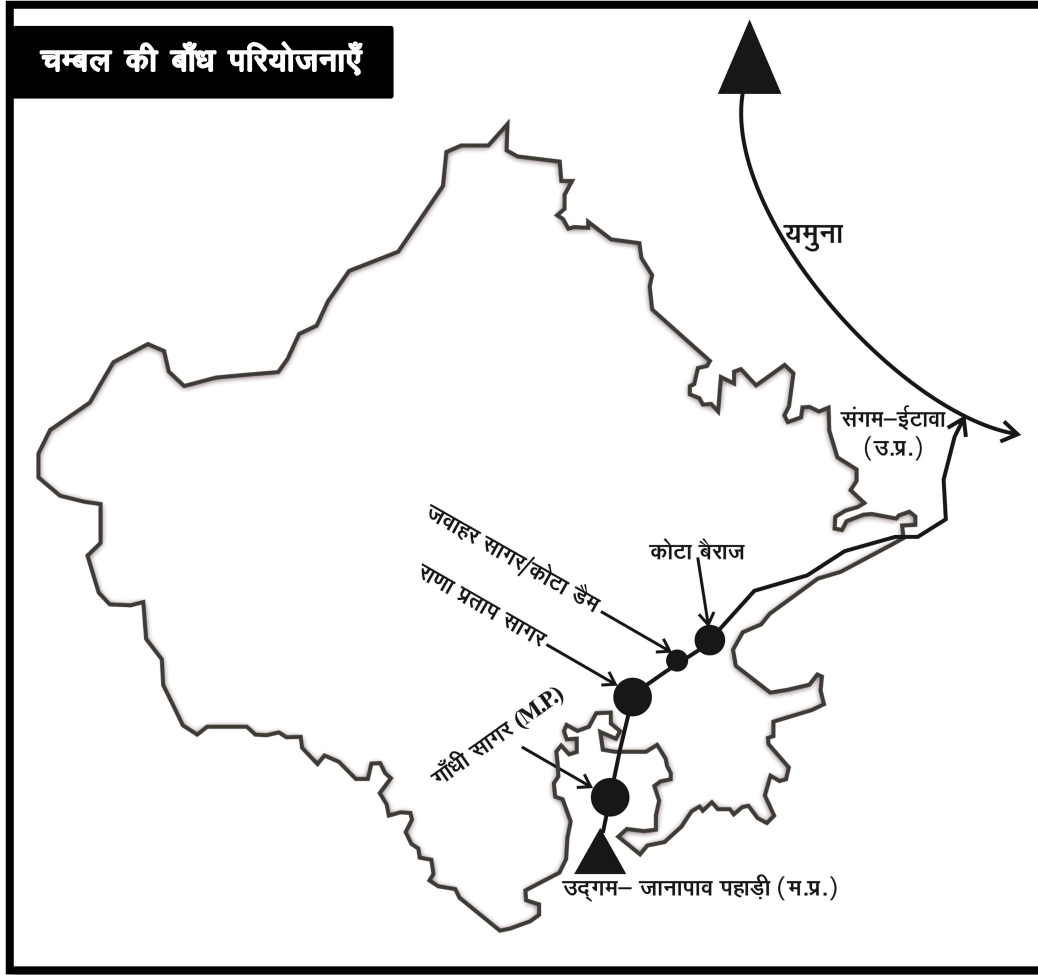
4. हैंगिंग ब्रिज:- यह कोटा में चम्बल नदी पर स्थित है जो राजस्थान का एक मात्र हैंगिंग ब्रिज है। जिसकी लम्बाई 1.5 कि.मी. है। यहां से NH27 गुजरता है।
5. चम्बल अंतरराज्यीय सीमा पर (राजस्थान-मध्यप्रदेश) बहने वाली सबसे लम्बी नदी है।
6. चम्बल में संरक्षित जीव:-



7. चम्बल के अवनालिका अपरदन द्वारा उत्खात (Bad Land) भूमि का निर्माण होता है। जिसे बीहड़/डांग कहा जाता है। जिसका विस्तार-करौली, सवाईमाधोपुर एवं धौलपुर में है।

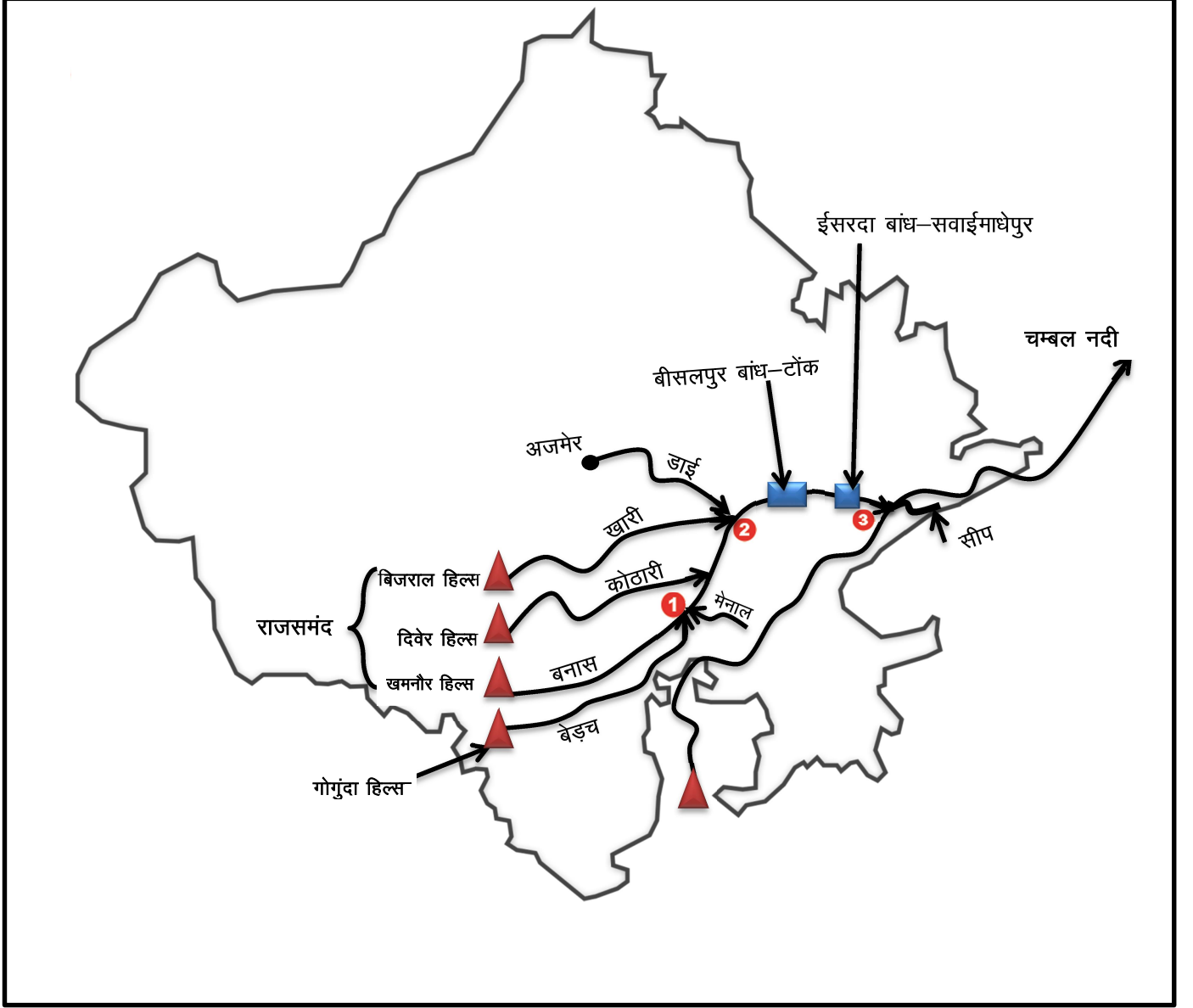
8. चम्बल की बाँध परियोजना – राजस्थान, मध्यप्रदेश के सहयोग से चम्बल पर तीन चरणों में चार बाँधों का निर्माण किया गया।





B. बनास:-

- उद्गम :- खमनौर पहाड़ी (राजसमंद)
- संगम :- चम्बल नदी (रामेश्वरम् घाट- सवाई माधोपुर)
- लम्बाई :- 512 किलोमीटर
- अपवाह क्षेत्र :-
 - ✓ मेवाड़ का मैदान (राजसमन्द, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़)
 - ✓ मालपुरा - करौली मैदान (अजमेर, टोंक, सवाईमाधोपुर)
- सहायक नदियाँ :- कालीसिल, डाई, मांसी, बांडी, मोरेल, मैनाल, आयड़, कोठारी एवं खारी।
 - ✓ खारी - बनास की सबसे लंबी नदी है।
 - ✓ बेड़च - दाई ओर से बनास नदी की सबसे लंबी सहायक नदी है।



मानचित्र में बनास के त्रिवेणी

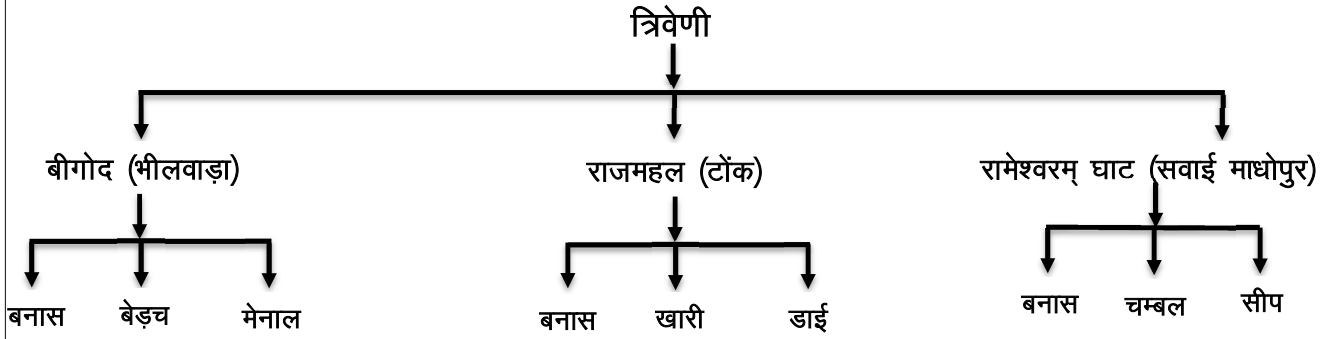
क्र.सं.	त्रिवेणी	अवस्थिति
1.	बनास, बेड़च, मेनाल	बीगोद- भीलवाड़ा
2.	बनास, खारी, डाई	राजमहल-टोंक
3.	बनास, चम्बल, सीप	रामेश्वरम् घाट- सवाईमाधोपुर

❖ विशेषता :-

1. बनास के उपनाम :-

- ✓ वन की आशा/वर्णाशा
- ✓ वशिष्ठी नदी

2. त्रिवेणी संगम :-



नोट:- बनास राजस्थान में सर्वाधिक त्रिवेणी बनाने वाली नदी है।

3. बनास :- राजस्थान में सर्वाधिक प्रदूषित नदी मानी जाती है।
4. केवल/पूर्णत राजस्थान में बहने वाली सबसे लम्बी नदी बनास है।

नोट:- चम्बल राजस्थान की सबसे लम्बी नदी है।

5. बांध परियोजना:-

- (i) बीसलपुर बांध – टोंक (बनास)
- (ii) ईसरदा बांध – सवाई माधोपुर (बनास)
- (iii) मोरेल बांध – दौसा (मोरेल)
- (iv) मेजा बांध – भीलवाड़ा (कोठारी)
- (i) बीसलपुर बांध (टोंक –बनास) :-

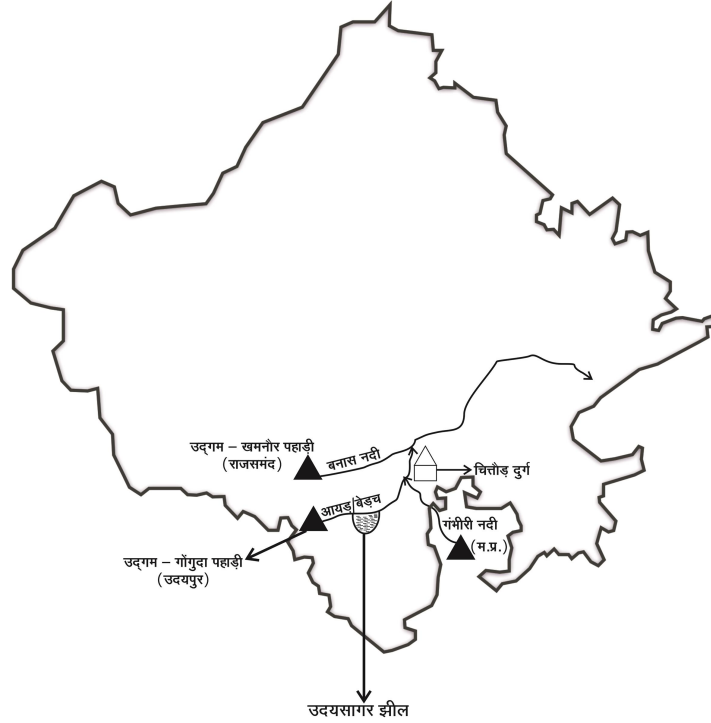
- बीसलपुर :- राजस्थान की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना है।
- जलापूर्ति :- टोंक-अजमेर, जयपुर-नागौर, दौसा-सवाई माधोपुर।
- बीसलपुर राजस्थान का "सबसे बड़ा कंक्रीट बांध" है।
- बीसलपुर राजस्थान के कंजर्वेशन रिजर्व में शामिल है।
- नदी जोड़ों परियोजना के तहत बीसलपुर बांध को चम्बल नदी से जोड़ा जायेगा।

नोट – अमृत क्रांति – नदी जोड़ो परियोजनाओं से संबंधित है।

- बीसलपुर के अतिरिक्त जल को ईसरदा बांध में छोड़ा जाता है।
- बीसलपुर बांध पर रंगीन मछलियों का प्रजनन केंद्रित स्थापित किया गया है।

(C) बेड़च/आयड नदी :-

- उद्गम – गोगुदा हिल्स – उदयपुर।
- संगम – बनास (बीगोद – भीलवाड़ा)
- अपवाह क्षेत्र – उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा
- सहायक नदी – गंभीर नदी (जिसका उद्गम-मध्य प्रदेश)



❖ विशेषता:-

- उदयसागर:- आयड नदी उदयसागर झील में गिरने के बाद बेड़च कहा जाता है।
- ✓ चित्तौड़गढ़ दुर्ग बेड़च व गंभीरी नदी के किनारे स्थित है।
- ✓ बेड़च बनास में दाएं ओर से मिलने वाली सबसे लम्बी सहायक नदी है।

(D) गंभीर नदी:-

- उद्गम- सपोटरा तहसील (करौली)
- संगम- यमुना मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)
- अपवाह क्षेत्र:- करौली, धौलपुर, भरतपुर
- सहायक नदियाँ:- अटा, माची, भद्रावती, भैंसावट एवं बरखेड़ा।

❖ विशेषताएँ:-

1. पांचना बांध :-

- स्थिति:- करौली
- राजस्थान का "सबसे बड़ा मिट्टी का बांध"।
- पाँचवा बांध से जलापूर्ति अजान बांध (केवलादेव भरतपुर) में की जाती है।

नोट:- पांचना बांध गंभीर की पाँच सहायक नदियों पर करौली में निर्मित है। जो राजस्थान का "सबसे बड़ा मिट्टी का बांध" है।

2. चम्बल के अलावा सीधे यमुना से मिलने वाली राजस्थान की दूसरी नदी गम्भीर है।

❖ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु:-

(1) बीकानेर – चुरू :- राजस्थान के वे जिले जहां कोई नदी नहीं है।

(2) चित्तौड़ – चित्तौड़गढ़ जिले में अधिकतम नदियाँ है।

(3) कोटा संभाग – इस संभाग में सर्वाधिक नदियाँ है।

(4) बीकानेर संभाग – इस संभाग में राजस्थान में न्यूनतम नदी है।

(5) लम्बाई के लिए प्रसिद्ध – सर्वाधिक लम्बाई

- ✓ उत्तरी राजस्थान की सबसे लंबी नदी – घग्घर
- ✓ मरुस्थलीय क्षेत्र या पश्चिमी राजस्थान की सबसे लंबी नदी – लूनी
- ✓ दक्षिणी राजस्थान या आदिवासी क्षेत्र की सबसे लंबी नदी – माही
- ✓ पूर्वी राजस्थान की सबसे लंबी नदी – चंबल
- ✓ केवल/पूर्णतः राजस्थान की सबसे लंबी नदी – बनास

(6) लम्बाई के अनुसार नदियों का अवरोही क्रम –

1st चम्बल – 1051 किलोमीटर

2nd माही – 576 किलोमीटर

3rd बनास – 512 किलोमीटर

4th लूनी – 495 किलोमीटर

(7) अपवाह क्षेत्र के अनुसार नदियों का क्रम (अवरोही)

1st बनास (45,833 KM²), 2nd लूनी (37,363 KM²),

3rd चम्बल (31,360 KM²), 4th माही (16,985 KM²)

(8) राजस्थान में मुख्य नदी बेसिन एवं उप-बेसिन :-

✓ कुल प्रमुख नदी बेसिन – 15 (राजस्थान के शेष क्षेत्र को आउटसाइड बेसिन के रूप में परिभाषित किया गया है)

✓ उप-बेसिन – 58

नदी – उप-बेसिन

- लूनी – 12
- बनास – 10
- चम्बल – 7
- माही – 6

(9) राजस्थान की प्रमुख मुख्य एवं सहायक नदियां :-

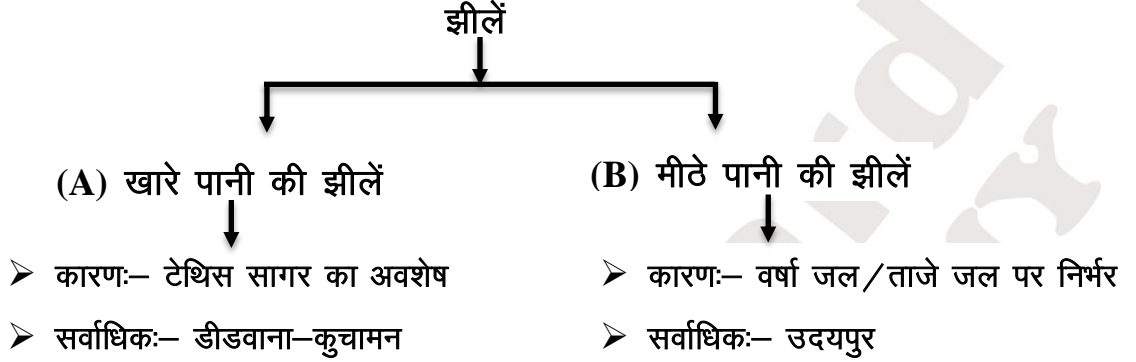
- साबी – अन्तः प्रवाही नदियां
सागी – लूनी की सहायक
- मोरेन – माही
मोरेल – बनास
- पार्वती – चंबल
पार्वती – गंभीर
- गंभीर – यमुना
गंभीरी – बेड़च
- कातली – तोरावटी
काकनी/काकनेय – जैसलमेर की मसूरदी
- सूकड़ी – लूनी
सुकली – पश्चिमी बनास
- बनास – बंगाल की खाड़ी
पश्चिमी बनास – अरब सागर
- काली सिंध – चंबल
काली सिल – बनास

- मांसी – बनास
मानसी – वाकल (साबरमती)
- रूपारेल – अलवर, भरतपुर (मोती झील)
रूपनगढ़ – अजमेर (सांभर)
- बांडी (उद्गम-पाली) – लूनी (अरब सागरीय नदी)
बांडी (उद्गम-अजमेर) – बनास (बंगाल की खाड़ी)
- खारी – शेरगाँव पहाड़ी (सिरोही) – लूनी (अरब सागरीय नदी)
खारी – नागौर – सांभर (अन्तः प्रवाही नदी)
खारी – बिजराल पहाड़ी (राजसमंद) – बनास (बंगाल की खाड़ी)
- सीप – चम्बल
सीपू – पश्चिमी बनास

राजस्थान राज्य की जल नीति 18
फरवरी 2010 को जारी की गई थी

राजस्थान की झीलें

➤ राजस्थान की झीलों पानी की प्रकृति के आधार पर दो भागों में बांटा जाता है –



नोट:-

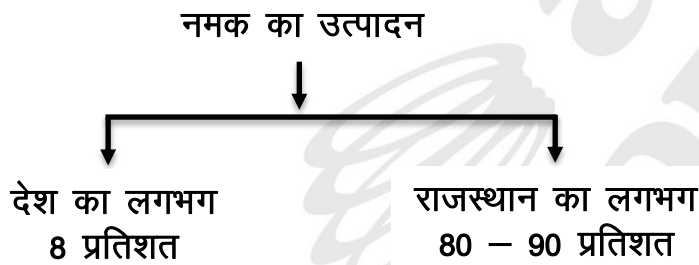
- खारे पानी की झीलों के खारेपन का मुख्य कारण 'माइका शिष्ट' चट्टानें हैं, जो इन झीलों के नीचे पायी जाती हैं।

(A) खारे पानी की झीलें –

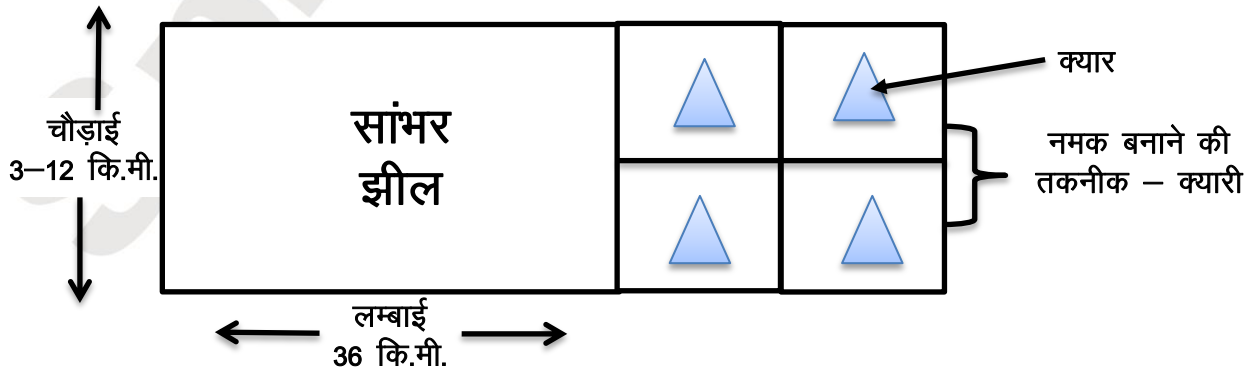
क्र.सं.	झीलें	स्थान
1.	सांभर	जयपुर
2.	पंचपदरा	बालोतरा
3.	डीडवाना	डीडवाना-कुचामन
4.	कुचामन	डीडवाना-कुचामन
5.	नावा	डीडवाना-कुचामन
6.	डेगाना	नागौर
7.	लूणकरणसर	बीकानेर
8.	तालाछापर	चुरू
9.	रैवासा	सीकर
10.	कोछौर	सीकर
11.	कावोद	जैसलमेर
12.	फलौदी	फलौदी

1. सांभर :-

- यह खारे पानी की झील है जो जयपुर में स्थित है।
- इस झील के निर्माता वासुदेव चौहान (बिजोलिया शिलालेख के अनुसार)
- सांभर राजस्थान की सबसे बड़ी एवं देश की तीसरी बड़ी खारे पानी की झील है। (देश में 1st चिल्का झील – ओडिशा, 2nd पुलीकट – आंध्रप्रदेश एवं तमिलनाडू)
- सांभर अन्तः स्थलीय भाग पर भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील।
- सांभर से नमक उत्पादन :-



- सांभर से नमक सांभर साल्ट लिमिटेड उत्पादित करता है जो हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड (HSL) के अधीन है।
- सांभर झील, रामसर साइट (1990) में सूचीबद्ध है। जहाँ कुरजा एवं राजहंस पक्षी को संरक्षण मिलता है।
- हाल ही में सांभर झील कुरजा पक्षियों की मृत्यु के कारण चर्चा में रही। जिसका कारण एवियन बोटुलिज्म बीमारी को माना गया है।
- सांभर झील से उत्पादित नमक को "क्यार" कहा जाता है।



2. पंचपदरा:-

- यह बालोतरा में स्थित एक खारे पानी की झील है।
- पंचपदरा से सर्वश्रेष्ठ किस्म का नमक उत्पादित होता है, क्योंकि इसमें सोडियम क्लोराइड की मात्रा 98 प्रतिशत होती है।
- **खारवाल:-** यह पंचपदरा से नमक उत्पन्न करने वाली जाति है।
- **मोरली झाड़ी :-** इसका उपयोग पंचपदरा में नमक उत्पादन के लिए किया जाता है।

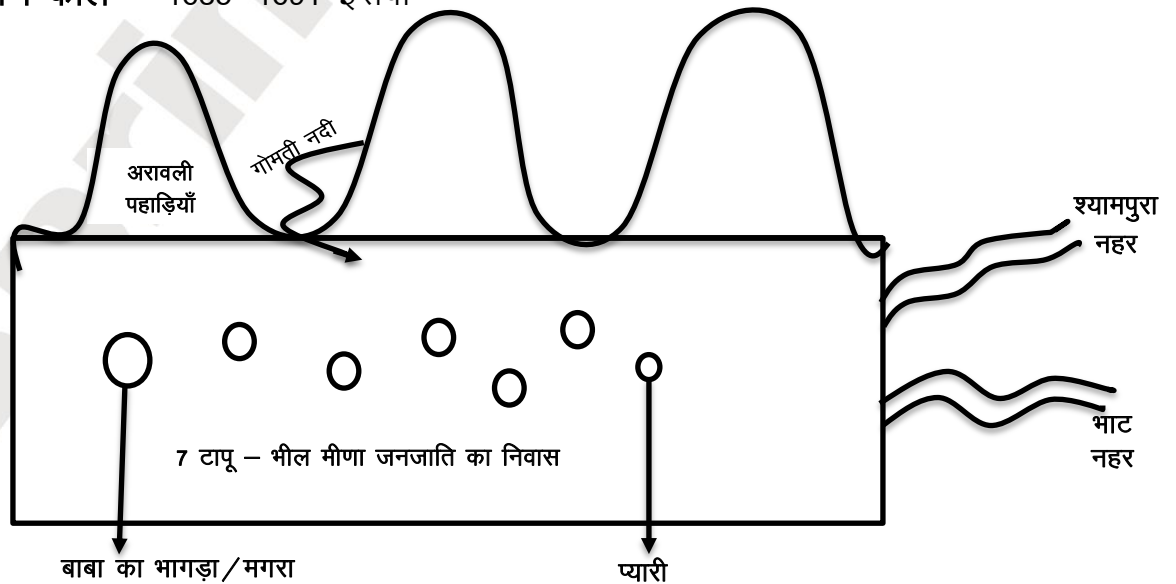
3. डीडवाना:-

- यह डीडवाना-कुचामन में स्थित एक खारे पानी की झील है।
- इस झील से निम्न श्रेणी का नमक उत्पादित होता है, क्योंकि इस झील में सोडियम क्लोराइड (NaCl) के स्थान पर सोडियम सल्फेट (Na_2SO_4) पाया जाता है।
- इस झील के पास "राजस्थान राज्य केमिकल वर्क्स" (1964) स्थापित की गई।
- **सोडियम सल्फेट का उपयोग :-** कांच उद्योग, कागज उद्योग और चमड़ा उद्योग में किया जाता है।

(B) मीठे पानी की झीले:- राजस्थान में, सर्वाधिक झीलें उदयपुर में स्थित हैं, इसलिए उदयपुर को **लैक सिटी** कहा जाता है।

1. जयसमंद झील:-

- यह एक मीठे पानी की झील है, जो सलूमबर में "गोमती नदी" पर स्थित है।
- इस झील का निर्माण महाराणा जयसिंह द्वारा करवाया गया।
- निर्माण काल - 1685-1691 ईसवी

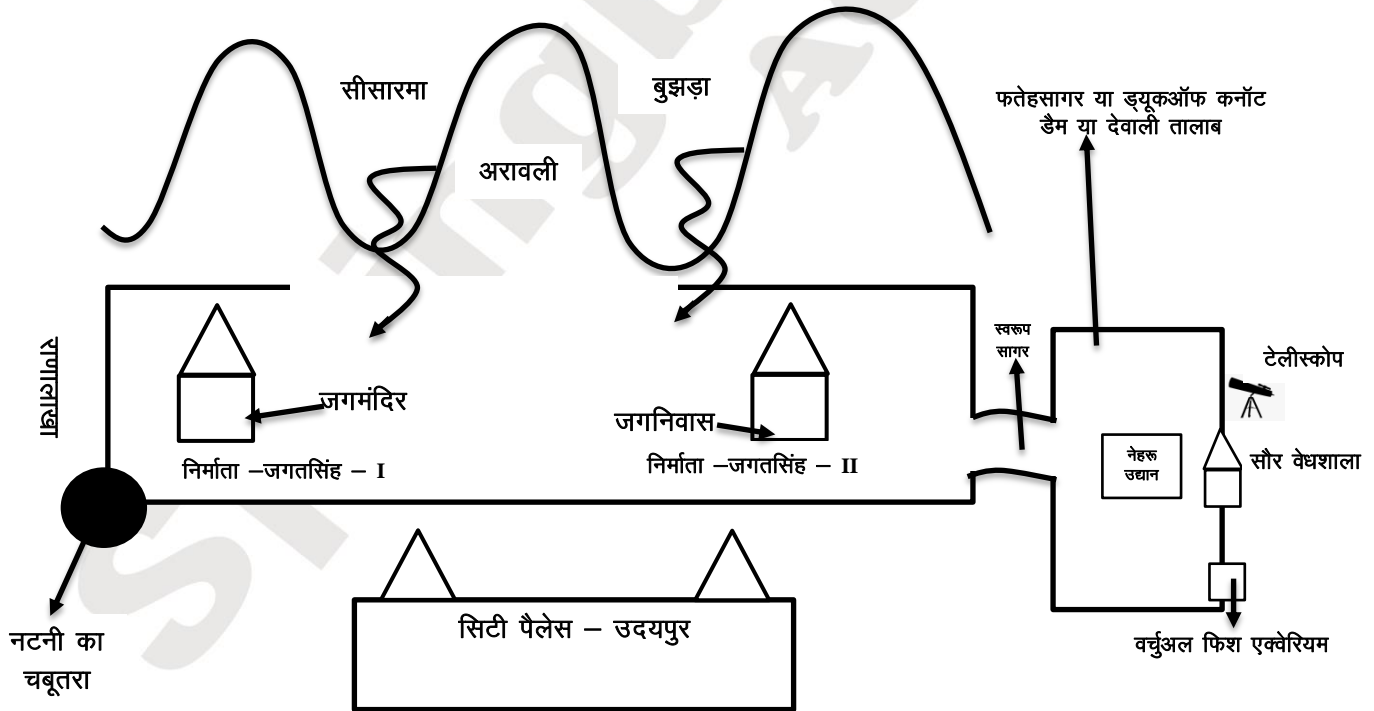


❖ विशेषताएँ :-

- इसे डेबर झील भी कहा जाता है, क्योंकि यह डेबर नाल में स्थित है।
- यह राजस्थान की सबसे बड़ी मीठे पानी की कृत्रिम झील है।
- इस झील में 7 टापू स्थित है जिनमें बड़ा टापू "बाबा का भागड़ा/मगरा" और सबसे छोटा टापू "प्यारी" है।
- इन टापुओं पर निवास करने वाली जनजाति भील – मीणा हैं।
- इस झील से सिंचाई के लिए दो नहरें निकाली गयी है – श्यामपुरा नहर, भाट नहर
- इस झील के किनारे महाराणा जयसिंह द्वारा निर्मित "नर्मदेश्वर महादेव" मंदिर स्थित है।

2. पिछोला झील :-

- यह उदयपुर में स्थित एक मीठे पानी की झील है।
- राणा लाखा के शासन में, बंजारे ने बैल की स्मृति में इस झील का निर्माण करवाया था।
- नदी :- सीसारमा, बुझड़ा



विशेषताएँ :-

- इस झील के पास, नटनी का चबूतरा स्थित है जिसका निर्माण राणा लाखा ने करवाया था।
- इस झील में जग मंदिर और जग निवास स्थित है।
- विद्रोहकाल के दौरान शाहजहां ने जग मंदिर में शरण ली थी।
- इस झील का अतिरिक्त जल फतेह सागर में वितरित किया जाता है।
- **नोट:- स्वरूप सागर:-** यह फतेहसागर और पिछोला झील को जोड़ने वाला चैनल/लिंग है।

3. फतेह सागर

- **निर्माता :-** महाराणा जयसिंह (पुनर्निर्माता – महाराणा फतेहसिंह)
- **निर्माण काल :-** 1688 ईसवी (पुनर्निर्माण काल – 1888)
- **नदी:-** सीसारमा, बुझड़ा

❖ विशेषताएँ :-

- नेहरू उद्यान इस झील के मध्य स्थित है।
- इस झील के किनारे टेलिस्कोप और सौर वेधशाला स्थित है।
- इस झील के पास वर्चुअल फिश एक्वेरियम स्थापित किया गया है।
- पिछोला व फतेहसागर झील "राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना" में शामिल हैं।

4. रंग सागर

- उदयपुर में स्थित मीठे पानी की झील।
- यह झील पिछोला व स्वरूप सागर से जुड़ी हुई है।

5. उदयसागर झील

- यह उदयपुर में आयड़/बेड़च नदी पर स्थित मीठे पानी की झील है।
- इस झील का निर्माण महाराणा उदय सिंह ने करवाया था।
- **निर्माण काल:-** 1559 से 1564 ईसवी
- **नोट:-** उदयसागर झील में गिरने के बाद आयड़ नदी को बेड़च नदी कहा जाता है।

6. **दुध तलाई झील**:- उदयपुर में स्थित मीठे पानी की झील है।

➤ **नोट**:- दूध बावड़ी सिरोही में स्थित है।

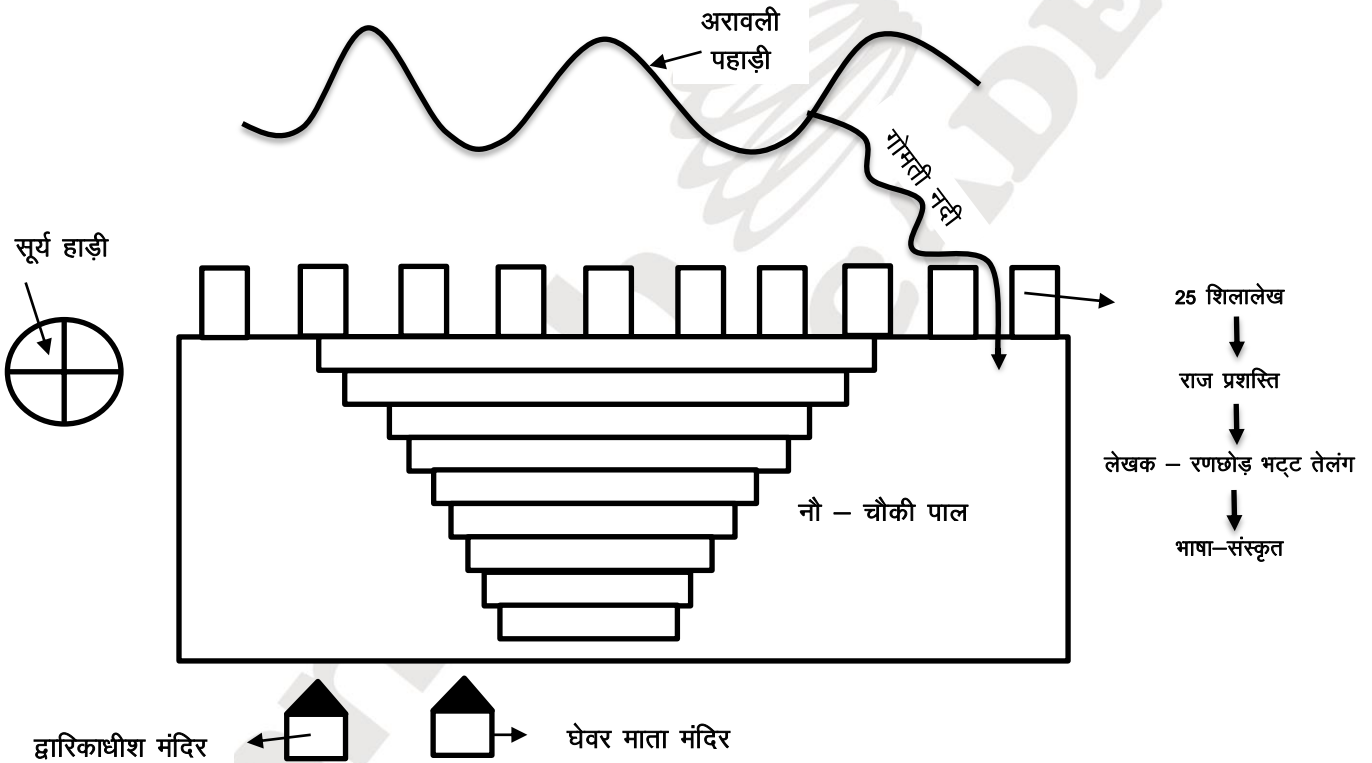
7. **बड़ी झील/जाना सागर**:- यह उदयपुर में स्थित मीठे पानी की झील है।

8. **राजसमंद झील**:-

➤ इस झील का निर्माण **महाराणा राज सिंह** ने करवाया था।

➤ **निर्माण काल** :- 1662 से 1676 ईसवीं में हुआ।

➤ **नदी** - गोमती



❖ **विशेषता** :-

➤ **नौ चौकी पाल**:- राजसमंद झील के उत्तरी भाग को नौचोकी पाल कहा जाता है।

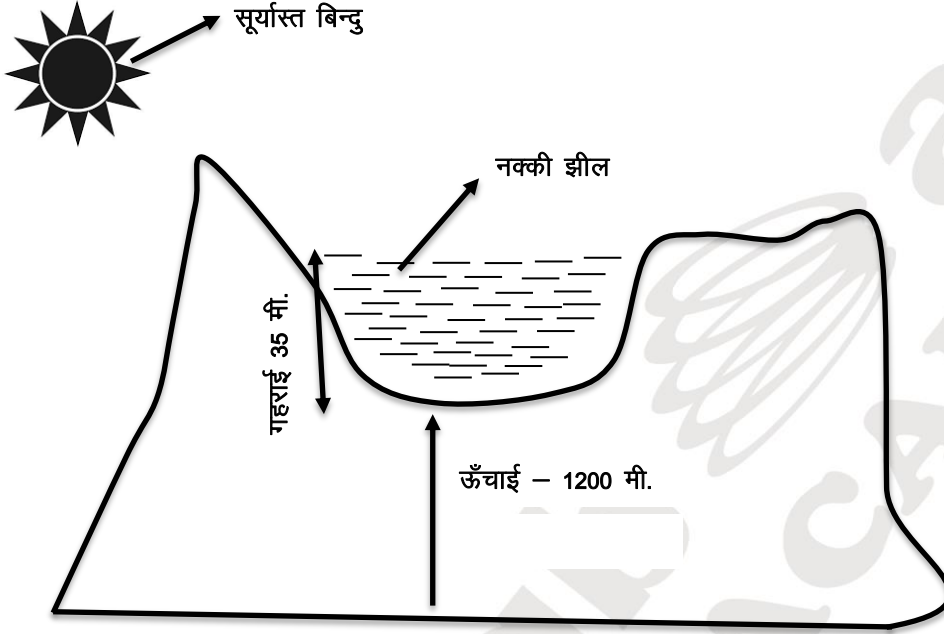
➤ यह अकाल राहत के लिए बनाई गई देश की प्रथम झील है।

➤ इस झील के पास स्थित **धार्मिक स्थल**- (1) द्वारिकाधीश मंदिर, (2) घेवर माता मंदिर

- इस झील के किनारे सूर्य घड़ी के अवशेष प्राप्त हुये है।
- इस झील के निर्माण में सर्वाधिक लोगों (लगभग 60,000) का योगदान रहा है।

9. नन्दसमंद झील:— यह राजसमंद में स्थित मीठे पानी की झील है।

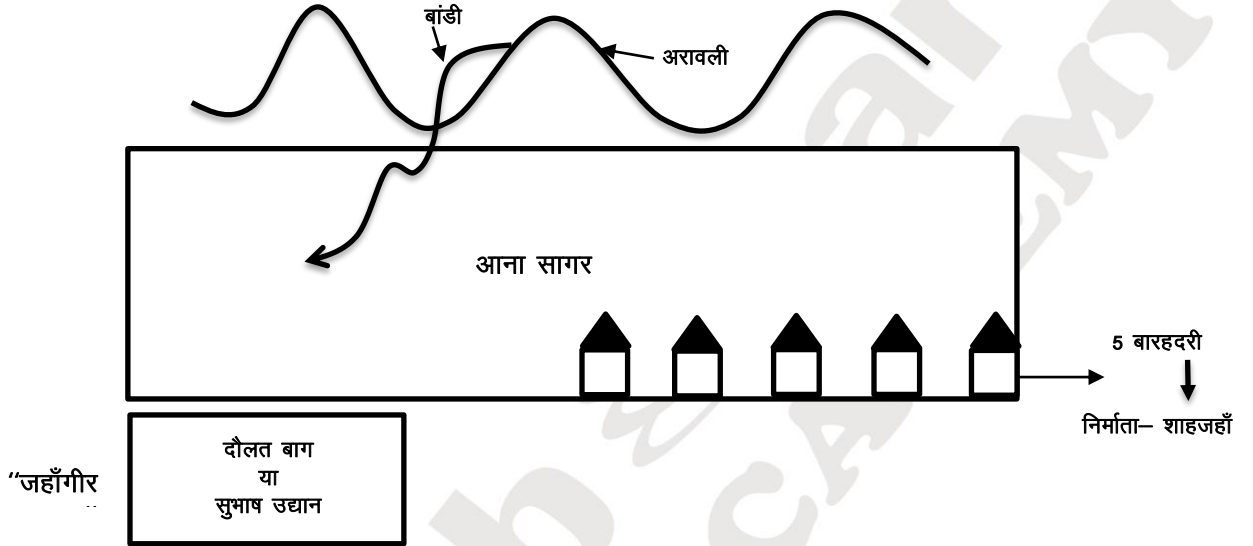
10. नक्की झील:— यह सिरोही में स्थित मीठे पानी की झील है।



- यह क्रेटर/कॉल्डेरा झील (ज्वालामुखी झील) है।
- लोक कहावतों के अनुसार, इस झील का निर्माण नाखूनों से किया गया है।
- यह राजस्थान की सबसे ऊँची व सबसे गहरी झील है।
- गरासिया जनजाति द्वारा इस झील में अस्थियों का विसर्जन किया जाता है।
- राजस्थान की एकमात्र झील जो हिल स्टेशन (माउंट आबू) पर स्थित है।
- राजस्थान की एकमात्र झील जो शीत ऋतु में जमती है।
- इस झील के किनारे टॉड रॉक, नन रॉक, नंदी रॉक एवं हॉर्न रॉक जैसी प्रमुख चट्टानें पाई जाती हैं।

11. अनासागर झील :-

- यह अजमेर में स्थित मीठे पानी की झील है।
- इस झील का निर्माण अर्णोराज चौहान द्वारा करवाया गया।
- इस झील का निर्माण काल - 1136 - 1137 ईसवीं
- नदी - बांडी



12. फॉय सागर - अजमेर

- निर्माता - इंजीनियर फॉय
- निर्माण काल - 1891 - 1892 ईसवीं
- यह बांडी नदी पर स्थित है।
- यह राजस्थान की दूसरी अकाल राहत (प्रथम - राजसमंद) झील है।

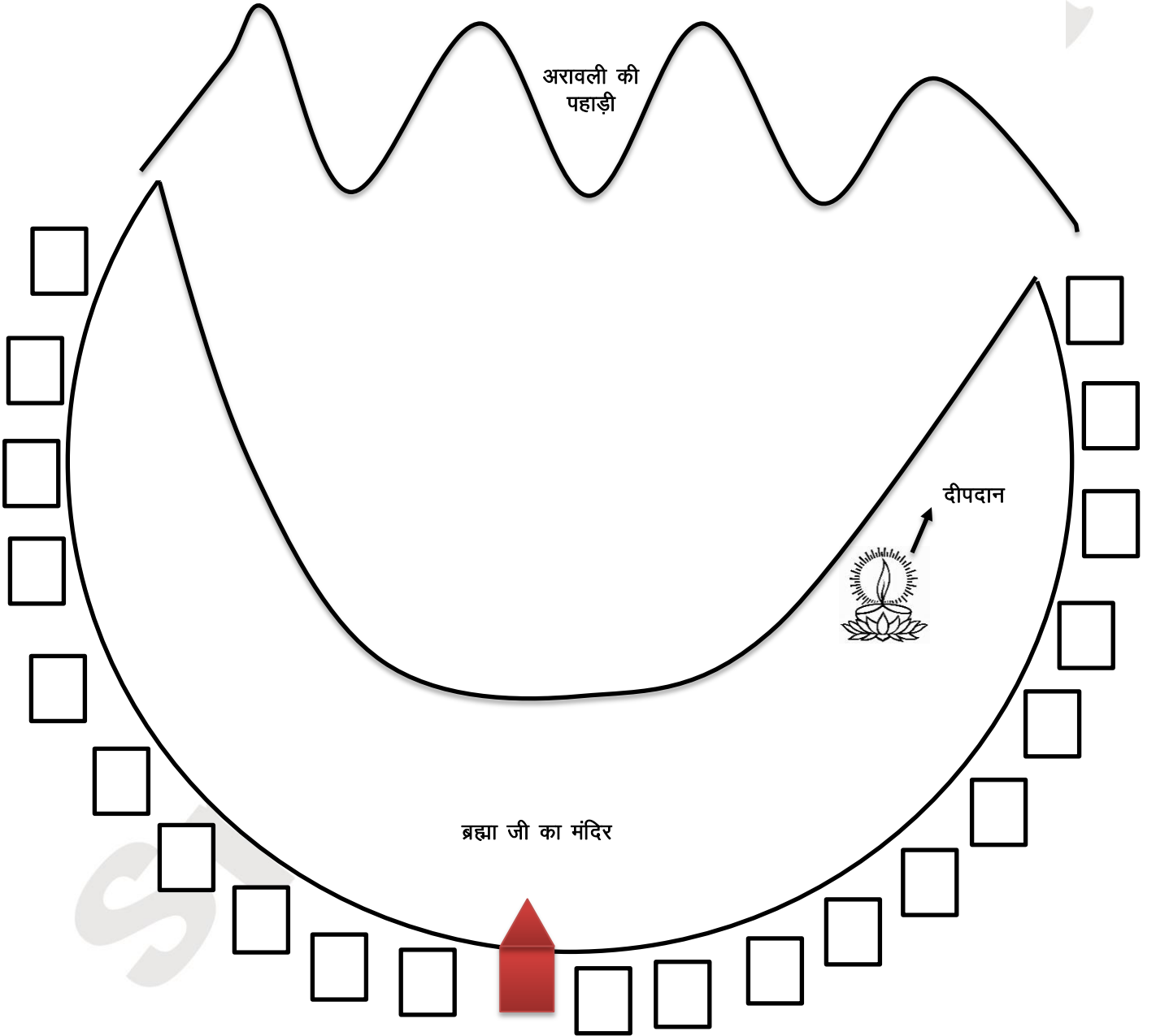
13. पुष्कर झील:- यह एक क्रेटर (ज्वालामुखी झील) हैं।

- उपनाम:- पांचवा तीर्थ/तीर्थों का मामा/तीर्थराज/कोंकण तीर्थ/अर्द्ध चंद्राकर झील/बावन घाट झील।

❖ विशेषताएँ:-

- पुष्कर राजस्थान की सबसे बड़ी मीठे पानी की प्राकृतिक झील है।
- पुष्कर राजस्थान की सबसे पवित्र झील है।

- पुष्कर झील के किनारे कार्तिक पूर्णिमा पर मेले का आयोजन किया जाता है, जिसे "राजस्थान का रंगीला मेला" कहा जाता है।
- इस झील में कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपक जलते हैं।
- राजस्थान की मुख्य पवित्र झील जहां प्रमुख व्यक्तियों महात्मा गांधी, बाला साहेब ठाकरे और अटल बिहारी वाजपेयी की अस्थियों का विसर्जन किया गया।

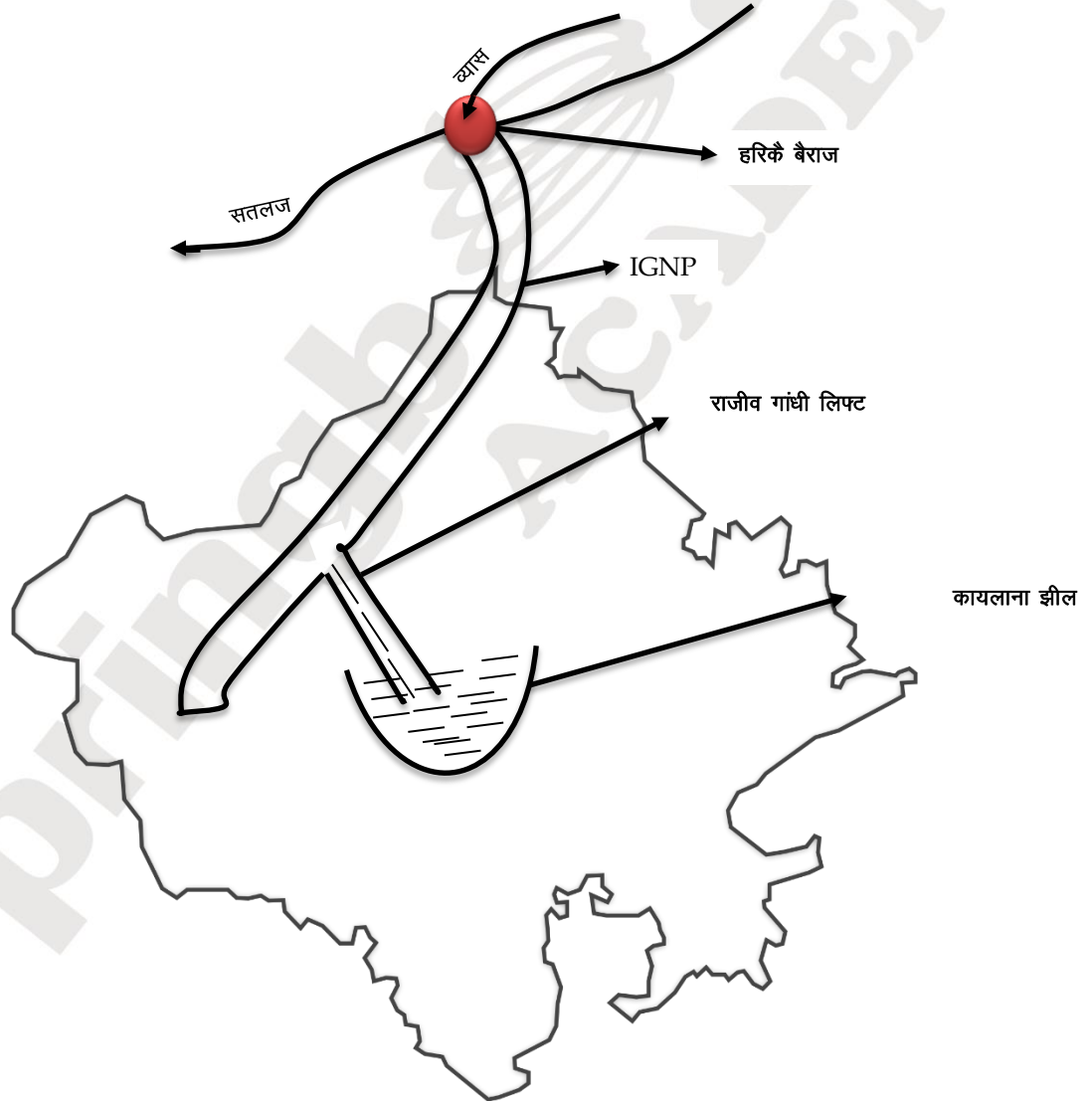


14. कायलाना झील / सर प्रताप सागर :-

- यह जोधपुर में स्थित मीठे पानी की झील है।
- निर्माता:- सर प्रताप सिंह
- निर्माणकाल :- 1872 ई.

❖ विशेषताएँ:-

- इंदिरा गांधी नहर परियोजना से इस झील में पानी वितरित किया जाता है।
- राजस्थान राज्य की एकमात्र झील जो IGNP) नहर (इंदिरा गांधी नहर परियोजना) से जुड़ी हुई है।



15. कोलायत झील:-

- यह बीकानेर में मीठे पानी की झील है। जिसके निर्माता कपिल मुनि को माना जाता है।

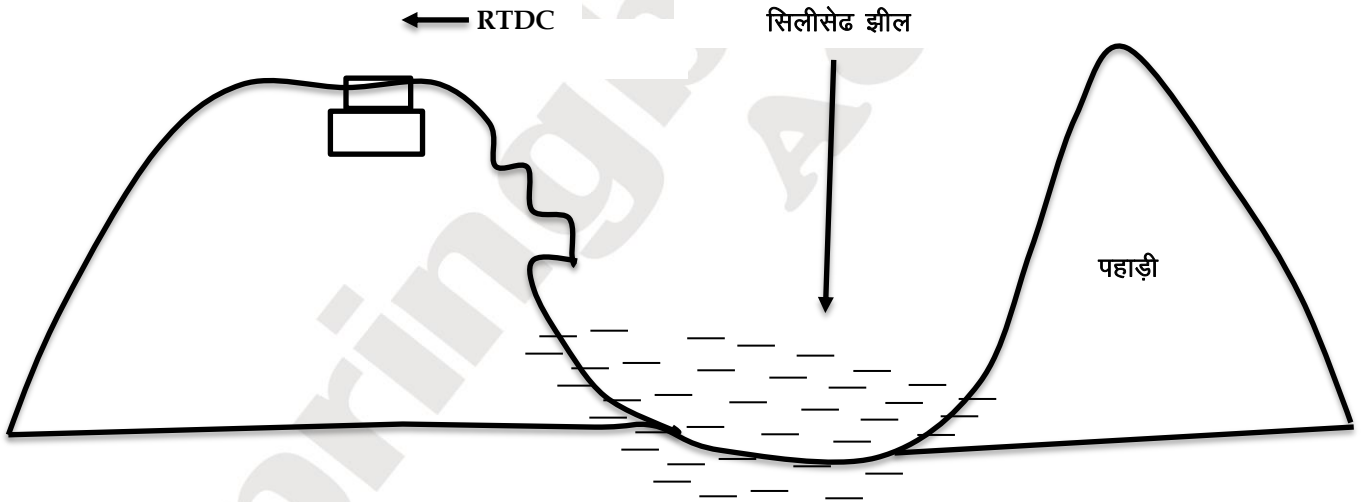
विशेषता:-

- कार्तिक पूर्णिमा को इस झील के किनारे मेले का आयोजन होता है।
- पुष्कर झील की तरह इस झील में दीपदान किया जाता है।
- चारण जाति इस झील के दर्शन नहीं करती है।
- कोलायत झील को मरु उद्यान/नखलिस्तान भी कहा जाता है।

16. गजनेर झील:-

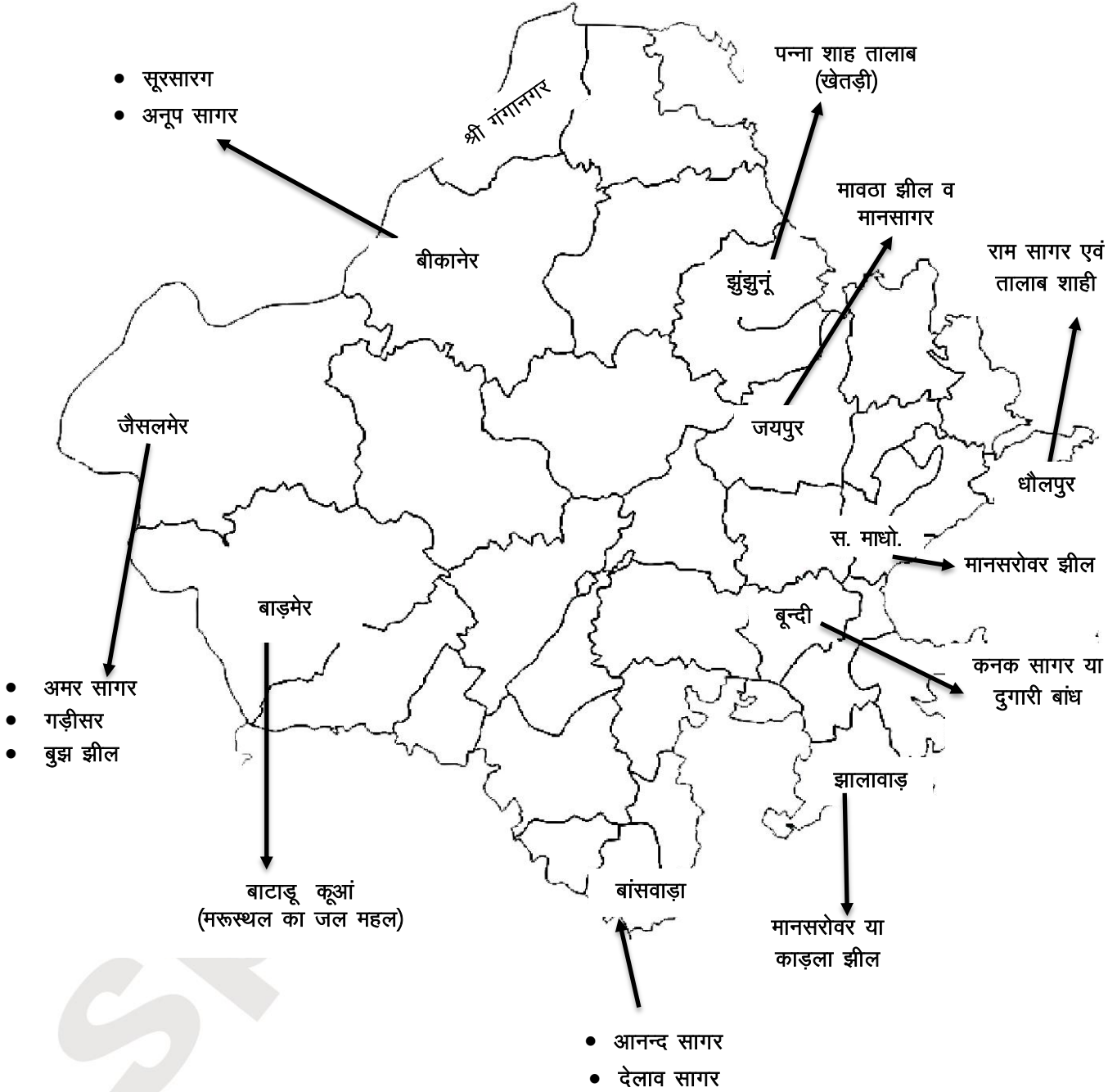
- यह बीकानेर में मीठे पानी की झील है। इसे "पानी का शुद्ध दर्पण" कहा जाता है।

17. सिलीसेड झील:-



- अलवर में स्थित मीठे पानी की झील है।
- यह झील "गोल्डन ट्रायंगल" (जयपुर, दिल्ली, आगरा) पर स्थित है।
- इसे राजस्थान का "नंदन कानन" भी कहा जाता है।

अन्य मीठे पानी की झीलें :-



1) आनंद सागर झील (बाई तालाब)	—	बांसवाड़ा
2) देलाव सागर	—	बांसवाड़ा
3) एडवर्ड/गैब सागर	—	डूंगरपुर
4) मानसरोवर झील (काडला झील)	—	झालावाड़
5) मानसरोवर झील	—	सवाई माधोपुर
6) रामसागर झील	—	धौलपुर
7) नवलखा झील	—	बूंदी
8) बंध बारेठा	—	भरतपुर
9) तलवाड़ा झील	—	हनुमानगढ़
10) मावठा झील	—	जयपुर
11) मानसागर (राजस्थान में सर्वाधिक प्रदूषित)	—	जयपुर
12) बुझ सागर	—	जैसलमेर
13) अमर सागर	—	जैसलमेर
14) गड़ीसर झील	—	जैसलमेर
15) कनक सागर (दुगारी बांध)	—	बूंदी
16) बालसमंद	—	जोधपुर
17) नंदसमंद	—	राजसमंद
18) बुड्ढा जोहड़	—	गंगानगर
19) रामगढ़	—	बारां

नोट:— रामगढ़ एक क्रेटर झील है। जिसे जिओ हैरिटेज में शामिल किया गया है। इसे अर्थ इम्पैक्ट डाटा बेस सोसायटी ऑफ कनाडा द्वारा विश्व के 200वें क्रेटर की मान्यता प्रदान की है।

राजस्थान के प्रसिद्ध कुएँ:—

- चंदन ट्यूबवेल (थार का घड़ा) — जैसलमेर
- बाटाडू कुआं (रेगिस्तान का जल महल) — बायतु (बाड़मेर)

नोट:— राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना —

- 2001 को केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई।
- सहयोग — केंद्र (60 प्रतिशत) : राज्य (40 प्रतिशत)
- इस कार्यक्रम में राजस्थान की पिछोला, फतेहसागर, आनासागर, पुष्कर एवं नक्की झील को शामिल किया गया है।

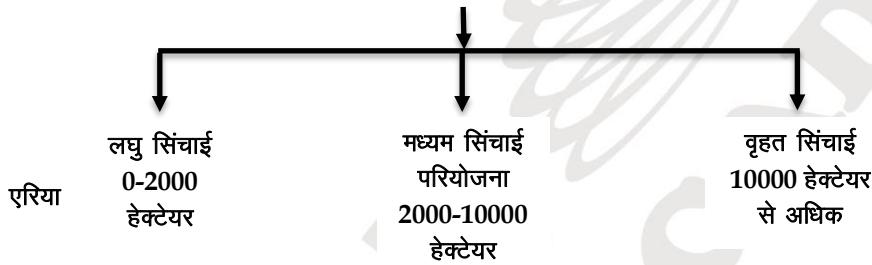
सिंचाई परियोजना

- A. सिंचाई के साधन/ माध्यम
B. सिंचाई परियोजनाओं का वर्गीकरण
C. अन्य प्रमुख परियोजनाएँ

A. सिंचाई के साधन/ माध्यम

	कुएँ	नलकूप	नहर	तालाब	अन्य
योगदान	24%	42%	30%	1%	3%
सर्वाधिक	जयपुर	जयपुर	गंगानगर	भीलवाड़ा	—

B. सिंचाई परियोजनाओं का वर्गीकरण



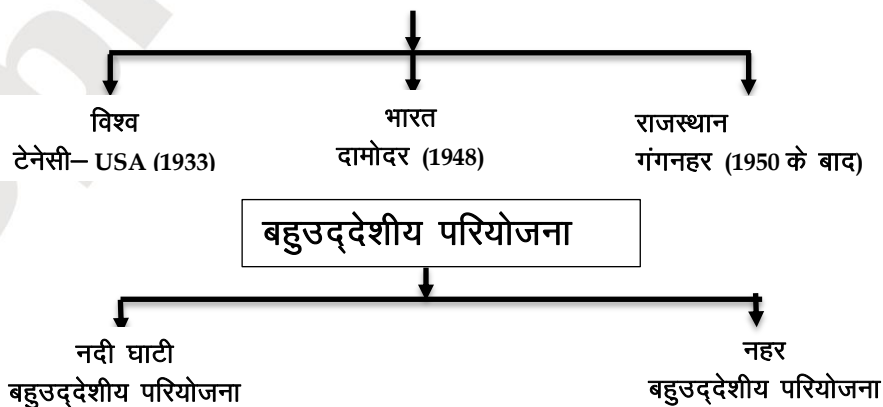
नोट:—

(1) सिंचाई में सर्वाधिक योगदान लघु सिंचाई परियोजना का होता है।

(2) बहुउद्देशीय परियोजना:—

- वे परियोजनाएँ जिनके उद्देश्य दो या दो से अधिक होते हैं उन्हें बहुउद्देशीय परियोजना कहाँ जाता है। **उदाहरण:—** सिंचाई, पेयजल एवं जल विद्युत परियोजना इत्यादि।
- पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने बहुउद्देशीय परियोजनाओं को "आधुनिक भारत के मंदिर" कहा।

प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना

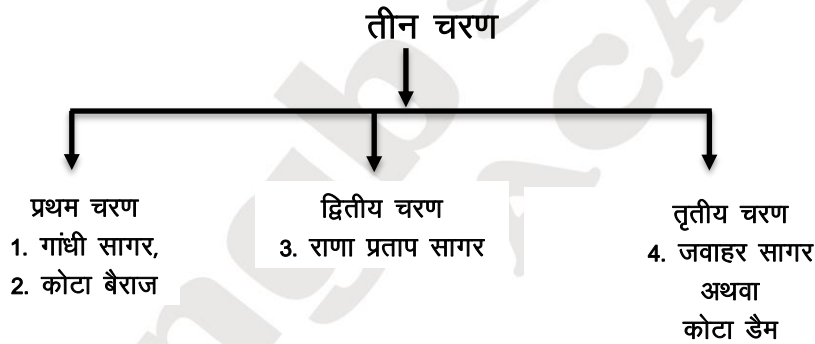


A. नदी घाटी बहुउद्देशीय परियोजना:-

- (1) चंबल बहुउद्देशीय परियोजना
- (2) माही बहुउद्देशीय परियोजना
- (3) भाखड़ा-नांगल बहुउद्देशीय परियोजना (सतलज नदी)
- (4) व्यास बहुउद्देशीय परियोजना
- (5) रेणुकाजी बहुउद्देशीय परियोजना (गिरि नदी)
- (6) लखवार बहुउद्देशीय परियोजना (यमुना नदी)

(1) चंबल बहुउद्देशीय परियोजना:-

- **सहयोग**— यह राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के समान सहयोग द्वारा संचालित है।
- इस परियोजना में तीन चरणों में चार बांधों का निर्माण किया गया।



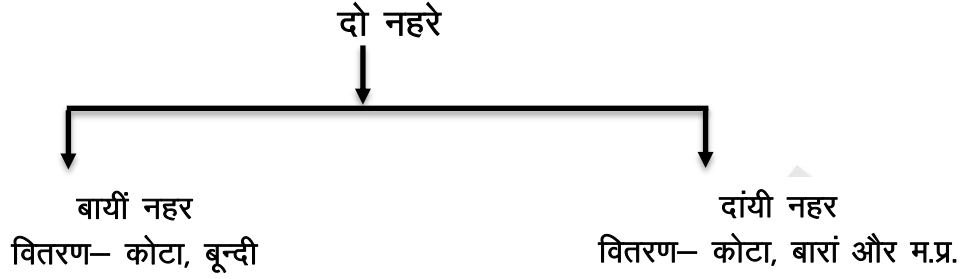
प्रथम चरण:-

1. गांधी सागर डैम:-

- स्थिति – मन्दसौर (म.प्र)
- चंबल बहुउद्देशीय परियोजना में सबसे ऊंचा एवं बड़ा बांध।
- जल विद्युत उत्पादन क्षमता – $23 \text{ MW} \times 5 \text{ Unit} = 115 \text{ MW}$

2. कोटा बैराज:-

- स्थिति – कोटा
- यह चंबल बहुउद्देशीय परियोजना का सिंचाई बांध है।
- सिंचाई के लिए इस बाँध से दो नहरें निकाली गयी हैं।



नोट:—

दांयी नहर:— चंबल की दांए नहर से 14 नहरें निकाली गयी हैं। जिसमें 8 राजस्थान में एवं शेष 6 मध्यप्रदेश में हैं।

चम्बल की 8 लिफ्ट नहरों के नाम

क्र.सं.	लिफ्ट	—	स्थान
1.	दी — दिगोद लिफ्ट	—	कोटा
2.	प — पचेल लिफ्ट	—	बारां
3.	क — कचारी लिफ्ट	—	बारां
4.	गणेश — गणेशगंज लिफ्ट	—	बारां
5.	आ — अंता लिफ्ट स्कीम	—	बारां
6.	आ — अंता माइनर लिफ्ट	—	बारां
7.	सो — सोरखंड लिफ्ट	—	बारां
8.	जा — जालीपुर लिफ्ट	—	कोटा

द्वितीय चरण:-

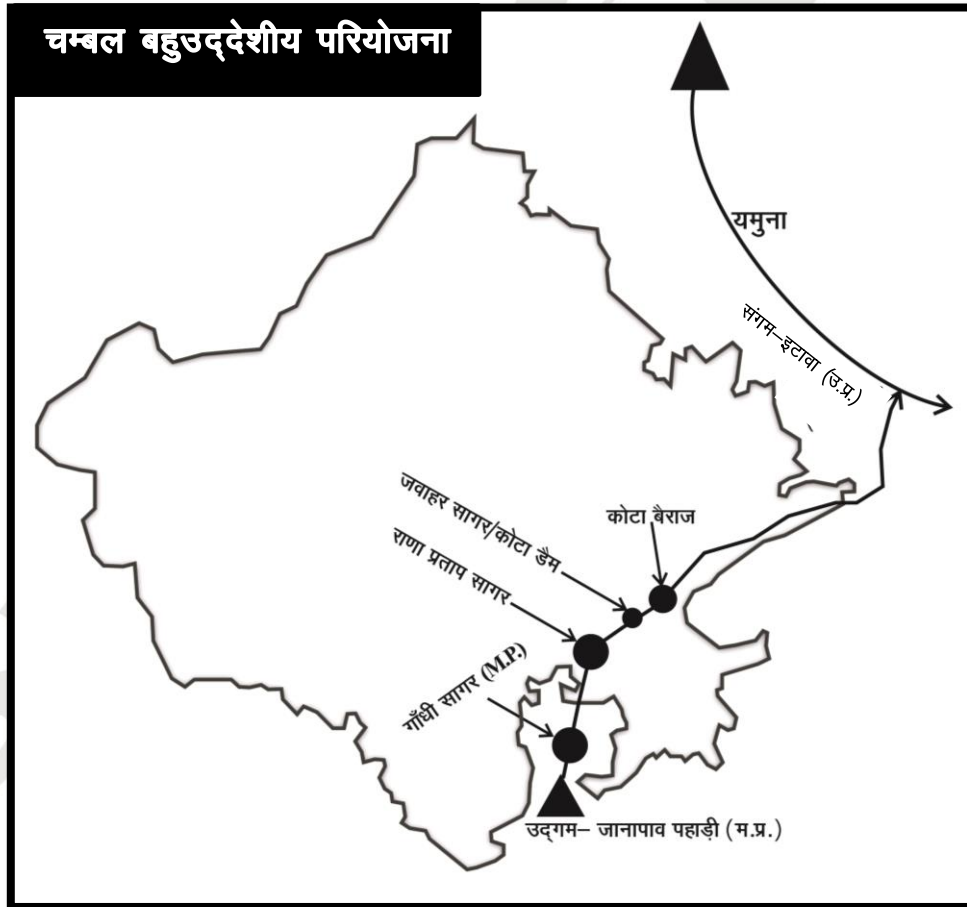
1. राणा प्रताप सागर :-

- स्थिति – चित्तौड़गढ़ जिला
- राजस्थान राज्य में सबसे बड़ा बांध है। इस बाँध से रावतभाटा परमाणु विद्युत गृह को जलापूर्ति की जाती है।
- जल विद्युत क्षमता – $43 \text{ MW} \times 4 \text{ Unit} = 172 \text{ Unit}$

तीसरा चरण:-

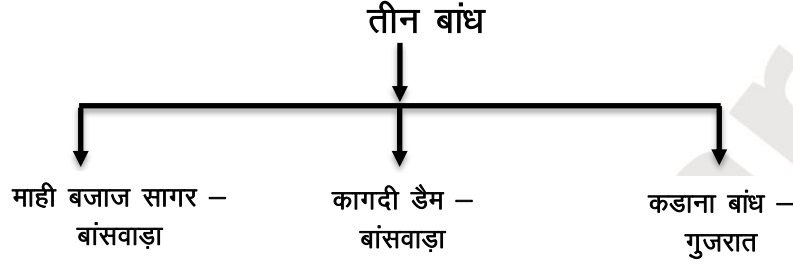
1. जवाहर सागर/कोटा डैम:- इसे चम्बल का पिक-अप बांध कहा जाता है।

- स्थिति – कोटा, बून्दी
- जल विद्युत उत्पादन क्षमता – $33 \text{ MW} \times 3 \text{ Unit} = 99 \text{ MW}$



(2) माही बहुउद्देशीय परियोजना:-

- सहयोग— राजस्थान : गुजरात (45 : 55)
- इस परियोजना में तीन बांधों का निर्माण किया गया।



(i) **माही बजाज सागर**

- यह बांध बोरखेड़ा (बांसवाड़ा) में स्थित है।
- राजस्थान की सबसे लम्बी (3109 मीटर) बांध परियोजना एवं आदिवासी क्षेत्र में सबसे बड़ी बांध परियोजना है।

(ii) **कागदी डैम**

- यह बांध बांसवाड़ा में स्थित है। इसे माही का पिकअप डैम कहा जाता है।

(iii) **कड़ाना बांध -**

- यह बांध माही नदी पर गुजरात में स्थित है।

इस परियोजना से उत्पादित जल विद्युत -

- 25 MW X 2 Units = 50 MW
- 45 MW X 2 Units = 90 MW

Total = 140 MW

- उत्पादित सम्पूर्ण जल विद्युत (140 MW) राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में वितरित की जाती है।

(3) भाखड़ा-नांगल बहुउद्देशीय परियोजना :-

- **सहयोग-** इस परियोजना के निर्माण में पंजाब, हरियाणा एवं राजस्थान (15.2 प्रतिशत) राज्यों का सहयोग है।
- यह परियोजना सतलज नदी पर संचालित है।

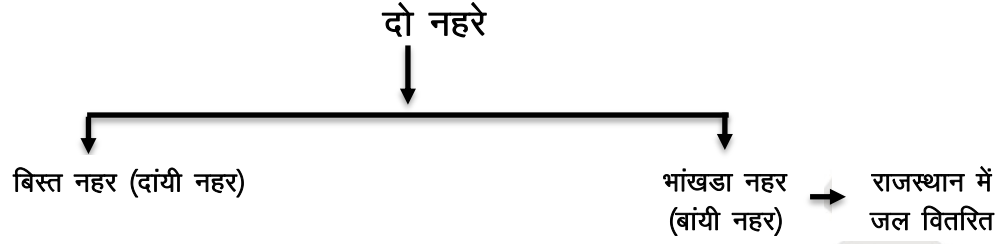


(अ) **भाखड़ा बांध:-**

- **स्थिति** – बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश)
- नेहरू जी ने इसे “भारत की चमत्कारी विराट वस्तु” कहा ।
- यह भारत का सबसे ऊँचा गुरुत्वीय बांध (ऊँचाई – 226 मी.) है।
- इस बांध के पीछे गोविन्द सागर झील स्थित है।

(ब) **नांगल बांध :-**

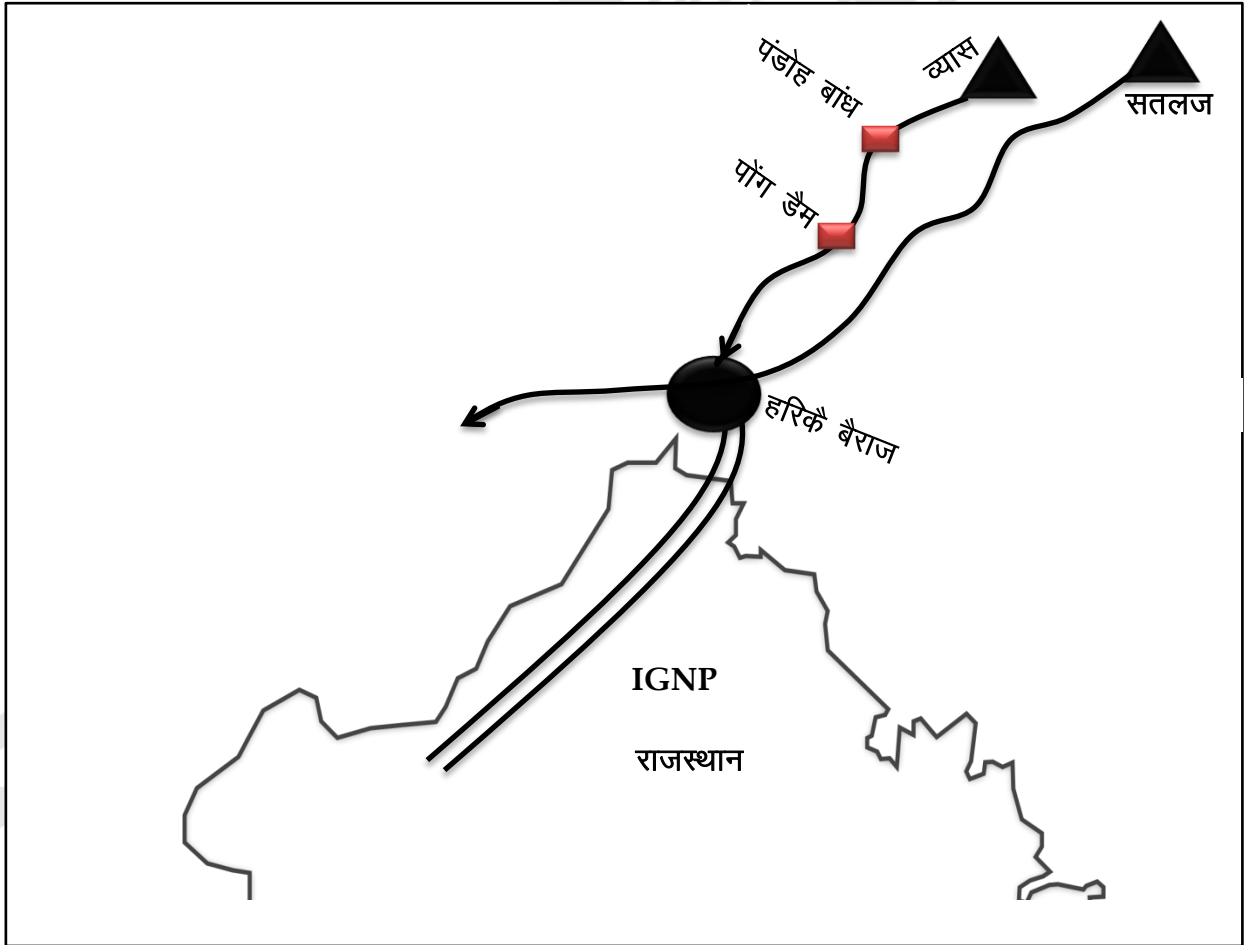
- **स्थिति** – रूपनगर/रोपड़ (पंजाब)
- इस बांध से दो नहरे निकाली गयी है।



- भाखड़ा-नांगल बहुउद्देशीय परियोजना से राजस्थान में हनुमानगढ़ सर्वाधिक लाभान्वित जिला है। यह राजस्थान राज्य एवं देश की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय परियोजना है।

(4) व्यास बहुउद्देशीय परियोजना:-

- सहयोग – पंजाब, हरियाणा, राजस्थान
- राजस्थान को पोंग बांध से 59 प्रतिशत तथा पंडोह बांध से 20 प्रतिशत लाभ प्राप्त होता है।



- जब शीत ऋतु में IGNP में पानी की कमी होती है तो जलापूर्ति पोंग बांध से की जाती है।
- राजीव गांधी – लोंगोवाला समझौता (1985) और इराड़ी आयोग (1986) दोनों व्यास परियोजना से संबंधित हैं।

(5) रेणुकाजी बहुउद्देशीय परियोजना (निर्माणाधीन) :-

- सहयोग – हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं राजस्थान
- वित्तीय सहयोग – केंद्र : राज्य (90 : 10)
- यह एक सिंचाई एवं पेयजल परियोजना है, जो गिरी नदी पर निर्माणाधीन है।
- इस परियोजना की संभावित जल विद्युत उत्पादन क्षमता – 40 मेगावाट

(6) लखवार बहुउद्देशीय परियोजना (निर्माणाधीन) :-

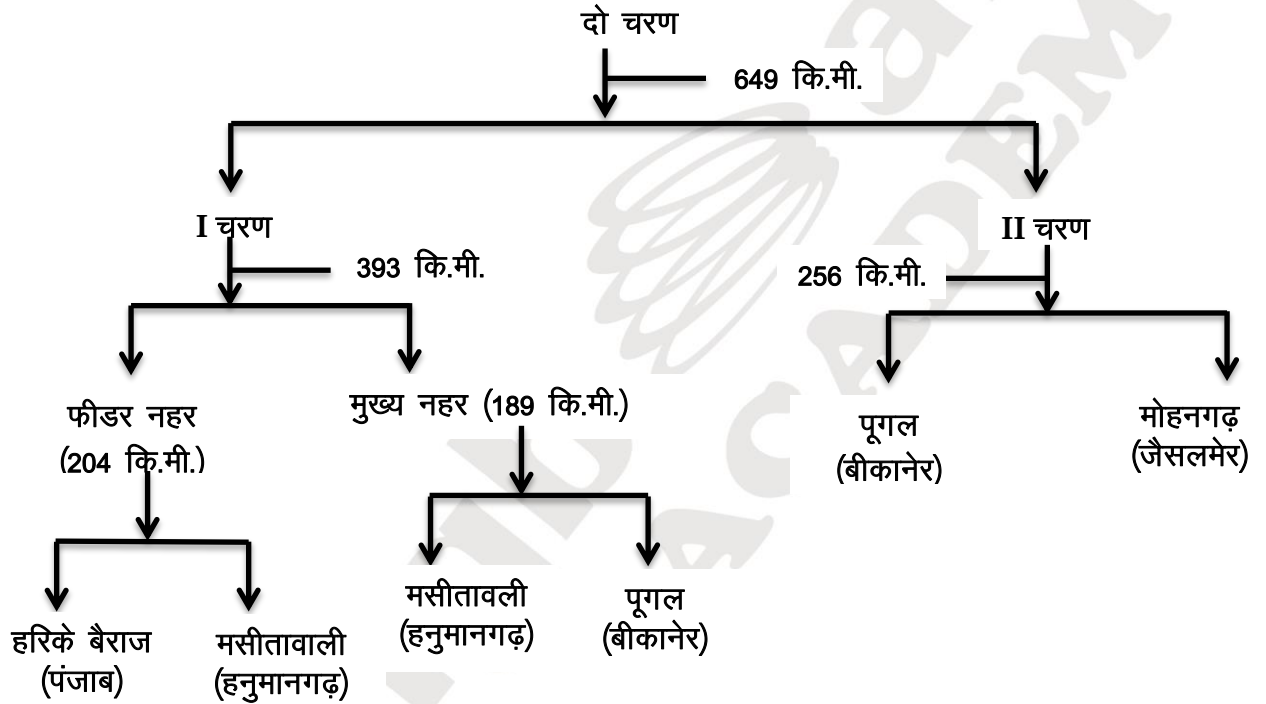
- स्थिति – देहरादून (उत्तराखण्ड)
- सहयोग – हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान
- वित्तीय सहयोग – केंद्र : राज्य (90 : 10)
- नदी – यमुना
- इस परियोजना की संभावित जल विद्युत उत्पादन क्षमता – 300 मेगावाट
- उद्देश्य – इस परियोजना से पेयजल एवं सिंचाई के लिए जलापूर्ति की जायेगी।

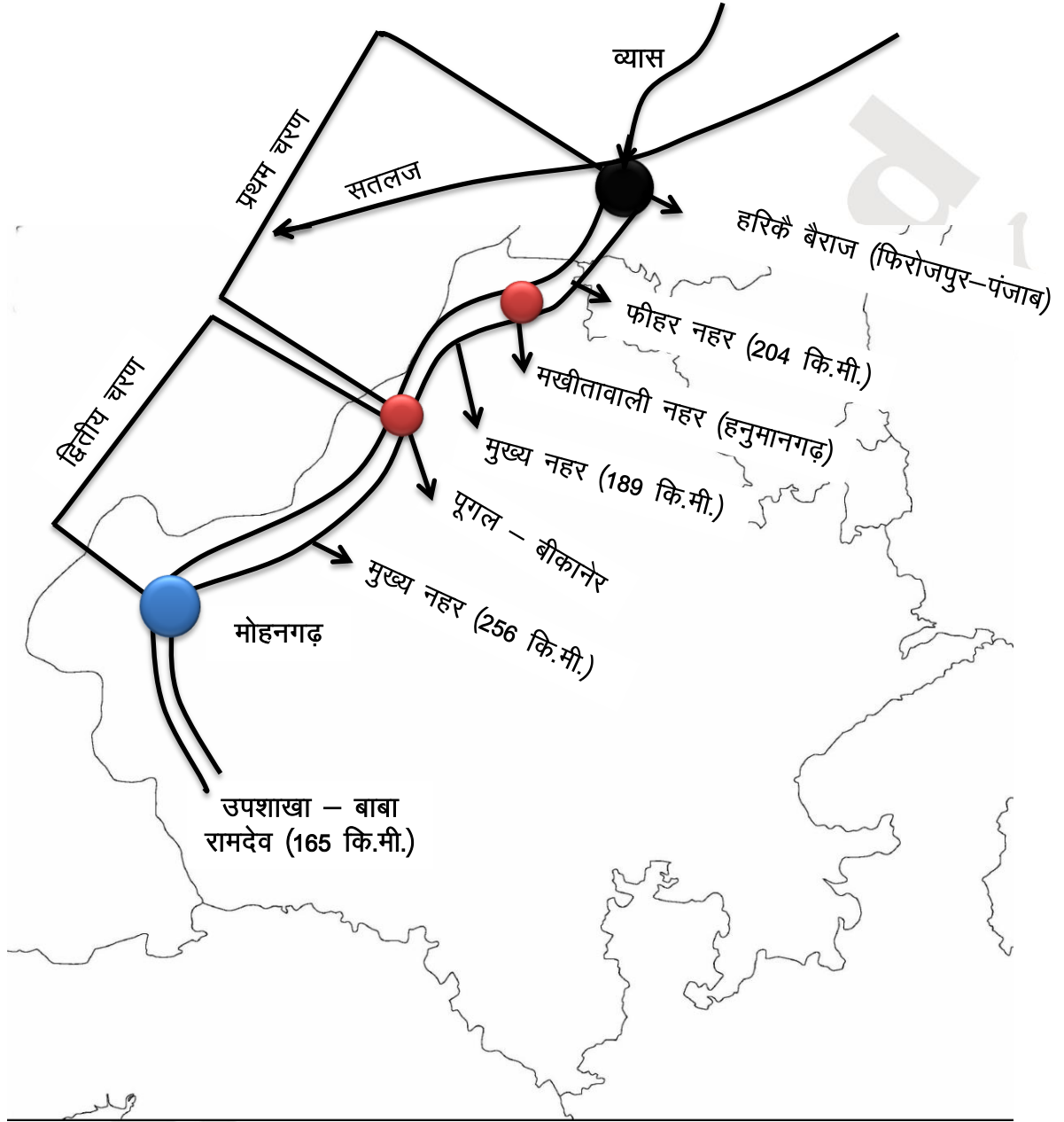
B. नहर बहुउद्देशीय परियोजना:-

- (1) इंदिरा गांधी नहर पारियोजना/राजस्थान नहर
- (2) गंग नहर
- (3) राजीव गांधी सिद्धमुख नहर/नोहर नहर
- (4) नर्मदा नहर
- (5) गुडगाँव नहर/यमुना लिफ्ट नहर
- (6) भरतपुर नहर
- (7) पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना

(1) इंदिरा गांधी नहर परियोजना/राजस्थान नहर:-

- कल्पनाकार/निर्माता-इंजीनियर कंवरसेन (1948)
- नींव - गोविंद वल्लभ पंत द्वारा (उद्घाटन- 31 मार्च 1958) रखी गयी।
- उद्घाटन - सर्वपल्ली राधाकृष्णन [1961-नौरंगदेसर (हनुमानगढ़)]
- गोविंद वल्लभ पंत ने राजस्थान नहर को "मरू गंगा" कहा।
- निर्माता - इंजीनियर कंवर सेन
- नदी - सतलज एवं व्यास (हरिके बैराज)
- IGNP का निर्माण दो चरणों में हुआ है -



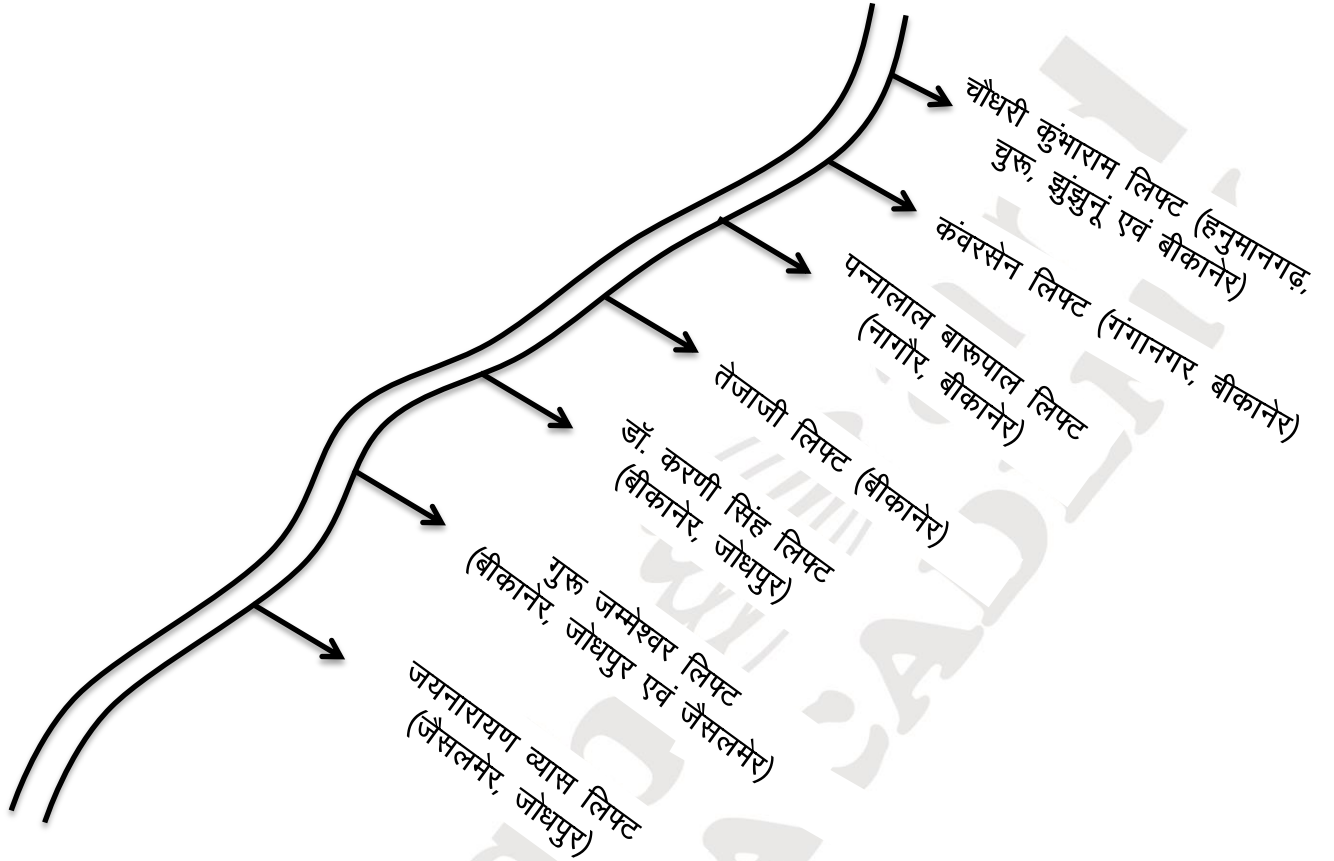


नोट:-

- IGNP का मुख्य उद्देश्य:- इसका मुख्य उद्देश्य सिंचाई एवं पेयजल के लिए जलापूर्ति करना।
- वित्तीय सहयोग - विश्व बैंक
- IGNP पर सिंचाई के लिए 7 लिफ्ट और 9 शाखाएँ बनाई गई हैं।

❖ IGNP लिफ्ट:—

➤ IGNP की सभी लिफ्ट बायीं ओर स्थित है क्योंकि बाईं ओर का धरातल ऊँचा है।



नोट:—

(a) चौधरी कुंभाराम लिफ्ट:—

- IGNP की सर्वाधिक जिलों में वितरित लिफ्ट है।
- यह हनुमानगढ़, चुरू, झुंझुनूं एवं बीकानेर जिलों में वितरित है।

(b) कंवर सैन लिफ्ट:—

- IGNP में सबसे पहली और सबसे लंबी लिफ्ट है।
- यह गंगानगर एवं बीकानेर जिलों में वितरित है।

(c) पन्नालाल बारूपाल लिफ्ट:—

- नागौर में "जायल डी-फ्लोराईडीकरण पेयजल परियोजना" इस लिफ्ट पर स्थित है।

(d) तेजाजी लिफ्ट:—

- IGNP की सबसे छोटी लिफ्ट है जो केवल बीकानेर में स्थित है।

(e) डॉ. करणी सिंह लिफ्ट:—

- यह जोधपुर एवं बीकानेर जिलों में वितरित है।

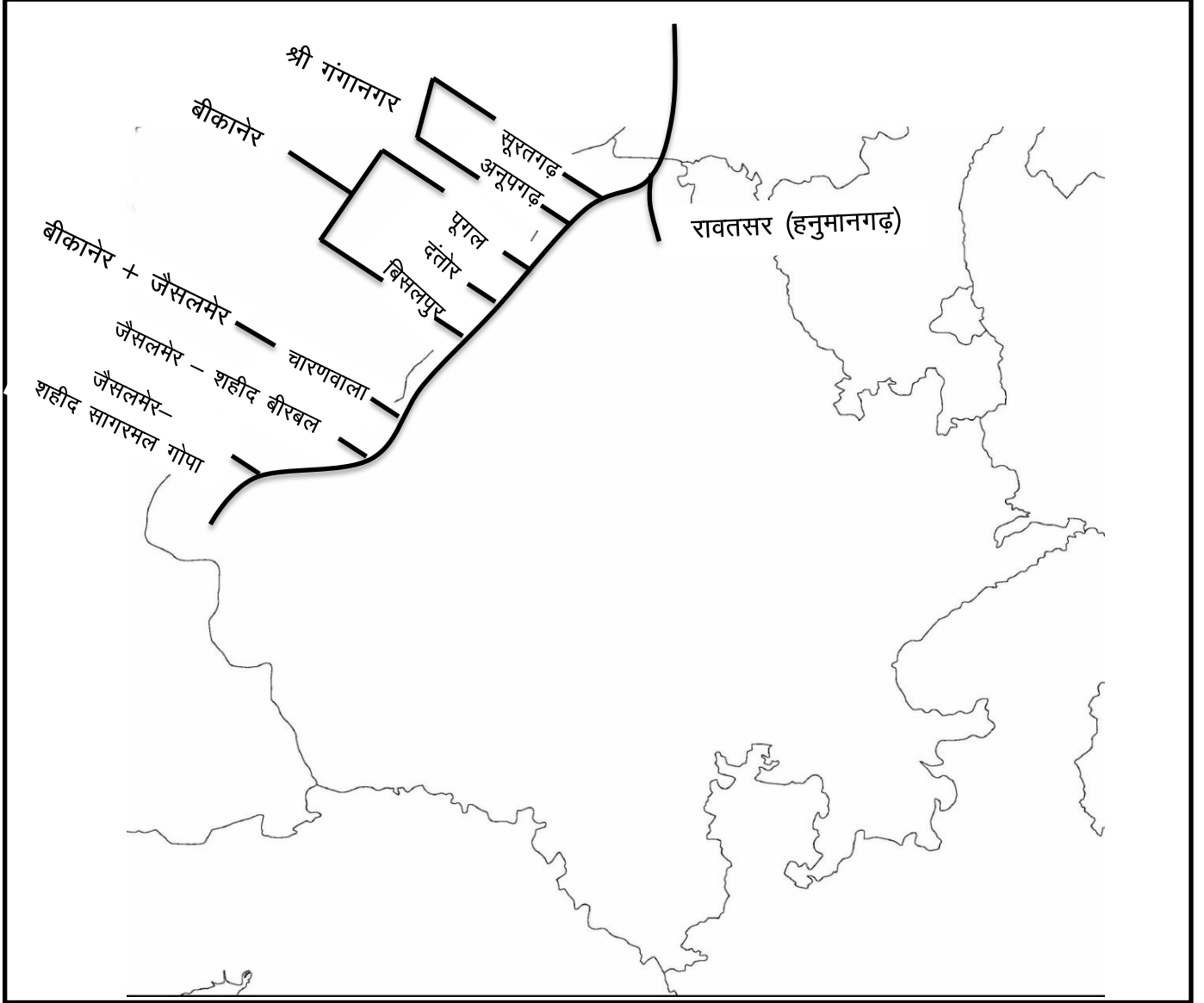
(f) गुरु जम्मेश्वर लिफ्ट:—

➤ यह जैसलमेर, जोधपुर एवं बीकानेर जिलों में वितरित है।

(g) जयनारायण व्यास लिफ्ट:—

➤ यह जैसलमेर एवं जोधपुर जिलों में वितरित है।

IGNP की शाखाएँ :-



नोट:—

- रावतसर एक मात्र शाखा है जो IGNP पर बाईं ओर है।
- चारणवाला एक मात्र शाखा है जो दो जिलों (बीकानेर एवं जैसलमेर) में वितरित है।
- IGNP का सर्वाधिक लाभ बीकानेर जिले को होता है।
- IGNP के द्वार सिंचित क्षेत्र - 16.17 लाख हैक्टेयर है।

IGNP पेयजल लिफ्ट

- कँवरसेन पेयजल लिफ्ट (बीकानेर एवं गंगानगर)
- आपणी पेयजल लिफ्ट / गंधेली साहब लिफ्ट (चूरु, हनुमानगढ़, झुंझुनू)
- राजीव गांधी पेयजल लिफ्ट – जोधपुर
- स्काडा तकनीक :- यह एक इलेक्ट्रॉनिक तकनीक है जिसके द्वारा पानी को वितरित व नियंत्रित किया जाता है।

IGNP का लाभ/वरदान :-

- IGNP से उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान में हरित क्रांति की शुरुआत हुई जिससे कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है।
- चारागाह भूमियों का विस्तार जिससे पशु सम्पदा बढ़ी है।
- किसानों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार।
- मत्स्य पालन की शुरुआत।
- ईको ट्यूरिज्म में बढ़ोतरी।
- पेयजल आपूर्ति (3 लिफ्ट – कँवरसेन, आपणी, राजीव गांधी लिफ्ट) की जाती है।
- जल विद्युत उत्पादन – सूरतगढ़, अनूपगढ़, पूंगल, बिरसलपुर (लगभग 24 मेगावाट)
- पश्चिमी राजस्थान में जैव विविधता में बढ़ोतरी।
- पेट्रोलियम रिफाइनरी (बाड़मेर) को जलापूर्ति।
- मरुस्थलीकरण पर नियंत्रण।

IGNP की हानियाँ/अभिशाप :-

- सेम की समस्या में बढ़ोतरी। (सर्वाधिक – हनुमानगढ़ एवं गंगानगर)
- लवणीयता की समस्या में बढ़ोतरी।
- भूमि विवादों में बढ़ोतरी हुई।
- भूमि की उर्वरकता में कमी मुख्य कारण रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का अधिक उपयोग।
- मरुस्थलीय जैव विविधता में कमी।

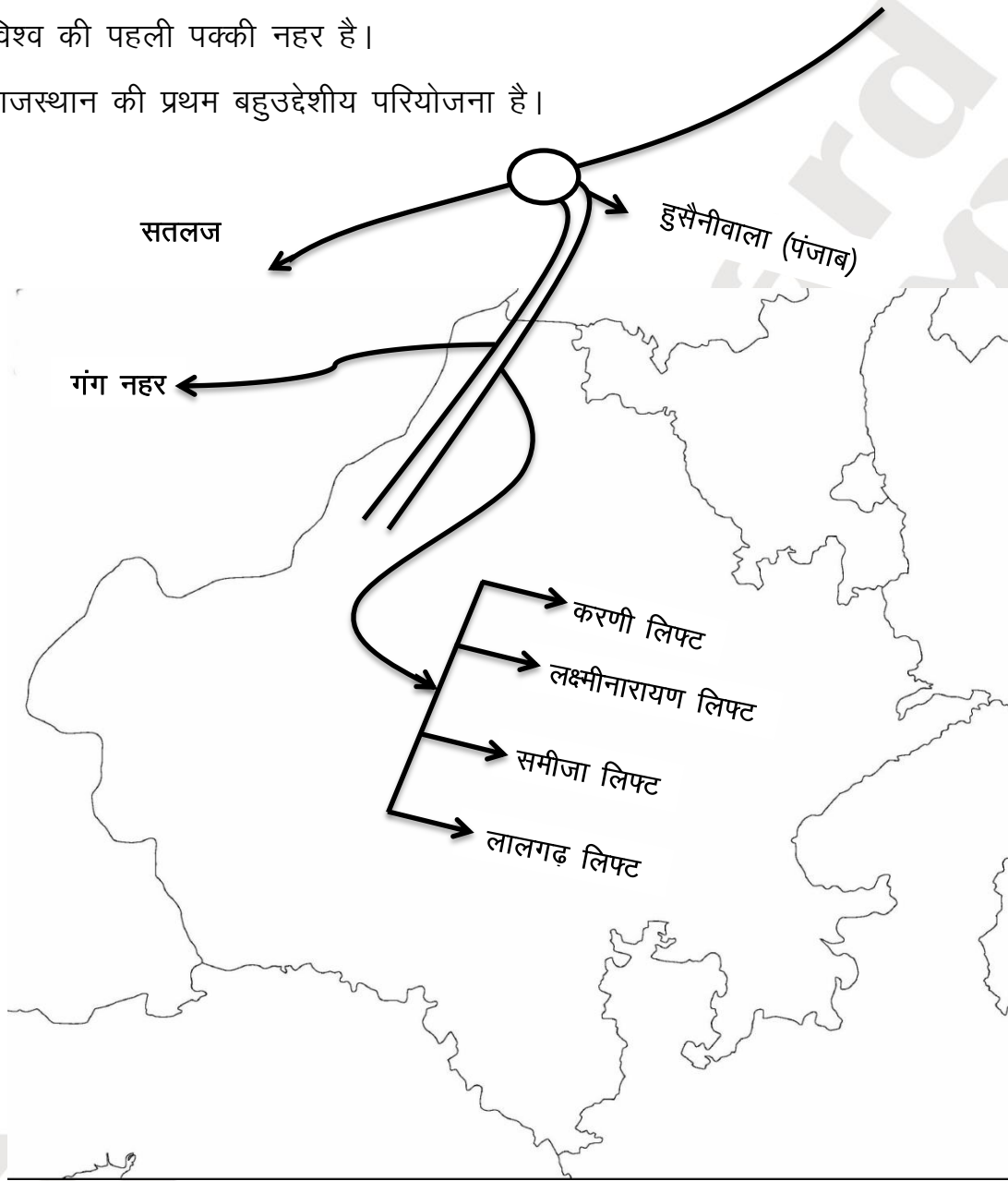
(2) गंगनहर :-

- शुरुआत – 1922 से 1927
- नदी – सतलज नदी

- सर्वाधिक लाभ – श्री गंगानगर
- निर्माता – महाराजा गंगा सिंह (आधुनिक भारत के भागीरथ)

नोट:-

- विश्व की पहली पक्की नहर है।
- राजस्थान की प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना है।

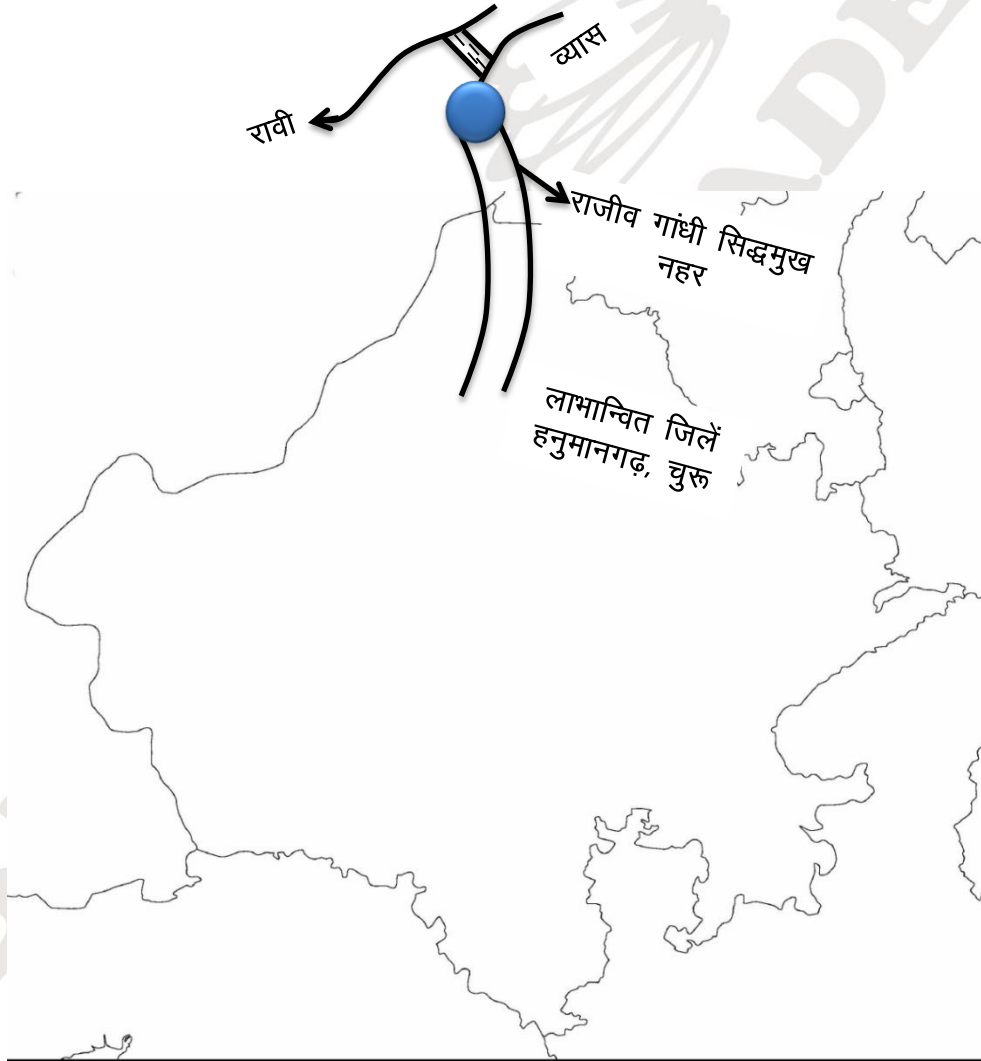


- गंग नहर की सभी लिफ्ट गंगानगर में स्थित है। गंगानगर इस परियोजना से सर्वाधिक लाभान्वित जिला है।

(3) राजीव गांधी सिद्धमुख नहर / नोहर नहर :-

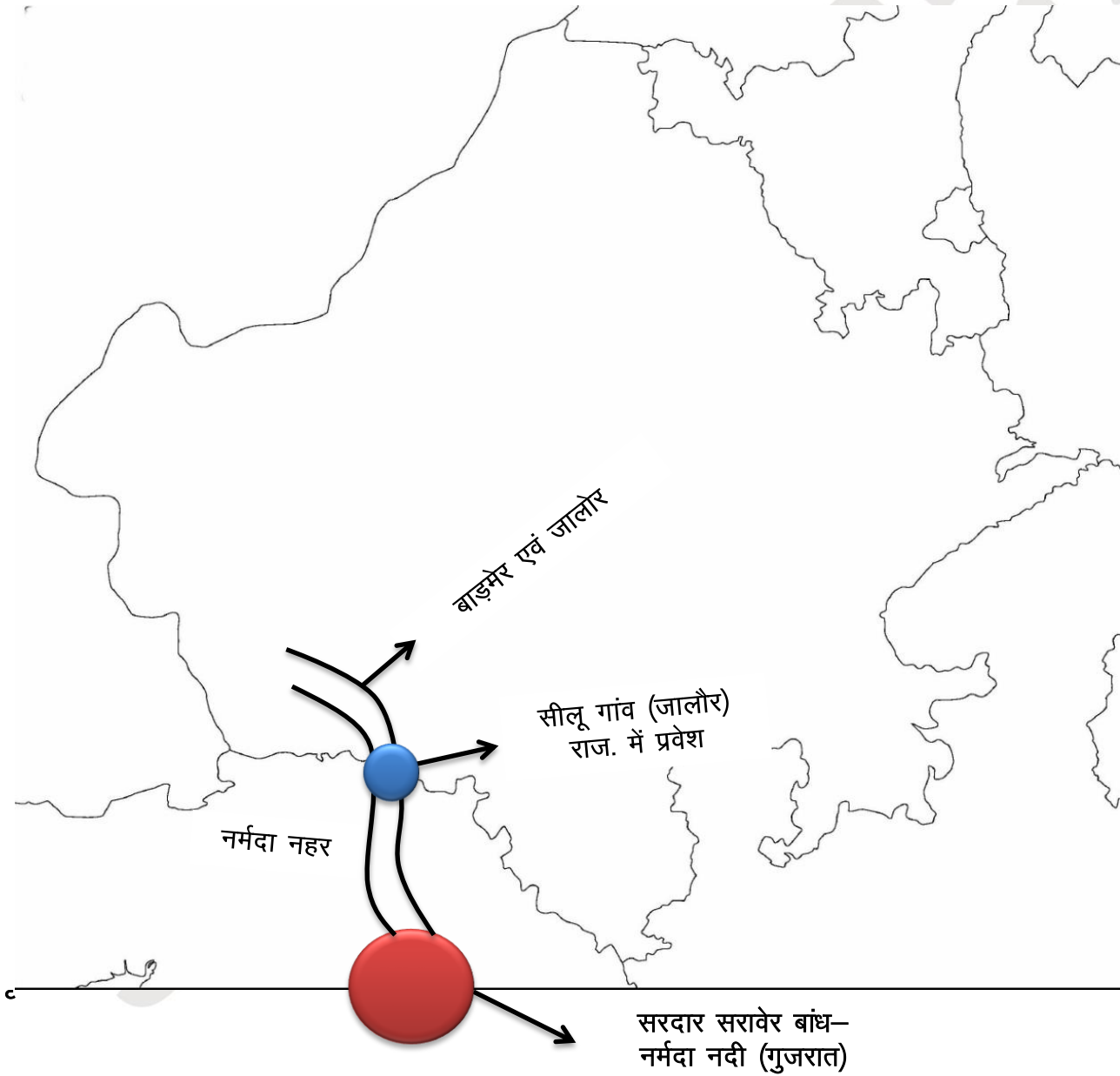
- शुरुआत – 2002
- नदी – रावी, व्यास का अतिरिक्त पानी
- लाभान्वित जिलें – (1) हनुमानगढ़ (नोहर, भादरा) (2) चूरु (राजगढ़/सादुलपुर)
- वित्तीय सहयोग – यूरोपीयन यूनियन व नाबार्ड

नोट:- 1998 के परमाणु परीक्षण के बाद आर्थिक सहयोग यूरोपीयन संघ के द्वारा बन्द कर दिया गया इसके बाद आर्थिक सहयोग नाबार्ड के द्वारा किया गया।



(4) नर्मदा नहर :-

- शुरुआत – 2008
- नर्मदा नहर सरदार सरोवर बांध गुजरात से निकाली गई है।
- सहयोग – गुजरात और राजस्थान
- सर्वाधिक लाभान्वित क्षेत्र – जालोर एवं बाड़मेर
- नर्मदा नहर पर फव्वारा और बून्द-बून्द सिंचाई तकनीक को अनिवार्य रूप से लागू किया गया।



नर्मदा की लिफ्ट नहर :-

- सांचोर लिफ्ट (जालोर), भादरेड़ा लिफ्ट (जालोर), पनोरिया लिफ्ट (बाड़मेर)

(5) गुडगाँव नहर / यमुना लिफ्ट नहर:-

- सहयोग – राजस्थान और हरियाणा
- नदी – यमुना नदी
- लाभान्वित क्षेत्र – भरतपुर (सर्वाधिक), शेखावाटी (चूरू, सीकर, झुंझुनू)

(6) भरतपुर नहर :-

- सहयोग – राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश
- नदी – यमुना नदी
- लाभान्वित क्षेत्र – भरतपुर

(7) पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP - Eastern Rajasthan Canal Project) :-

- संभावित बजट – 37500 करोड़
- लाभान्वित क्षेत्र –
 - (1) भरतपुर संभाग (धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर)
 - (2) कोटा संभाग (कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़)
 - (3) अजमेर, टोंक
 - (4) जयपुर संभाग (जयपुर, दौसा, अलवर)

मुख्य उद्देश्य :-

- 13 जिलों को सिंचाई और पेयजल के लिए पानी की आपूर्ति।
- इस परियोजना में 26 वृहद् एवं मध्यम बांध परियोजनाओं का निर्माण किया जायेगा। जिसके द्वारा 2.8 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जायेगी।
- ईआरसीपी एक राजस्थान राज्य के लिए एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। इस परियोजना के तहत, मानसून के समय में चंबल सहायक नदियों – कुनू, कुराल, कालीसिंध, चाकन, मेज, पार्वती का अतिरिक्त जल बाणगंगा, चम्बल, बनास, गंभीर नदियों में वितरित किया जायेगा।

नोट:—

राजस्थान की प्रमुख लघु और मध्यम सिंचाई परियोजनाएँ

क्र.सं.	परियोजना	स्थिति
1.	भीम सागर	झालावाड़
2.	गगरीन	झालावाड़
3.	पीपलाद	झालावाड़
4.	काली सिंध	झालावाड़
5.	चोली / चवरी	झालावाड़
6.	छापी	झालावाड़
7.	रेवा	झालावाड़
8.	राजगढ़	झालावाड़
9.	बैंथली	बारां
10.	बिलास	बारां
11.	परवन	बारां
12.	ल्हासी	बारां
13.	हथियादेह	बारां
14.	हरिश्चंद्र सागर	कोटा
15.	गोपालपुरा	कोटा
16.	तकली	कोटा

17.	सावण – भादो	कोटा
18.	आलनिया	कोटा
19.	गुढ़ा	बूंदी
20.	गरदड़ा	बूंदी
21.	जिगजैग	बूंदी
22.	चाकण	बूंदी
23.	मेज	बूंदी
24.	मेजा बांध	भीलवाड़ा
25.	माधोसागर	दौसा
26.	रेडियो सागर	दौसा
27.	मोरेल	दौसा, सवाईमाधोपुर
28.	चिरमिरी	दौसा
29.	झील मिली	दौसा
30.	बीसलपुर	टोंक
31.	टोरडी सागर	टोंक
32.	ईसरदा	सवाई माधोपुर
33.	पीपलदा	सवाई माधोपुर
34.	इंदिरा गांधी लिफ्ट परियोजना (चम्बल)	सवाई माधोपुर
35.	धौलपुर लिफ्ट परियोजना (चम्बल) एवं कालीतीर	धौलपुर

36.	पार्वती परियोजना	धौलपुर
37.	नारायण सागर	अजमेर
38.	बांडी – सेंदड़ा	जालोर
39.	बांकली बाँध	जालोर
40.	सुकली – सेलवाड़ा	सिरोही
41.	बत्तीसा नाला	सिरोही
42.	भाभराना	डूंगरपुर
43.	सोम कमला अम्बा	डूंगरपुर
44.	भीखाभाई सागवाड़ा नहर (माही)	डूंगरपुर
45.	कडाना बैक वॉटर परियोजना	डूंगरपुर
46.	अन्नास परियोजना	बाँसवाड़ा
47.	ओराई परियोजना	चित्तौड़गढ़ एवं भीलवाड़ा
48.	मदार बाँध	उदयपुर
49.	टिडी बाँध	उदयपुर
50.	सोम कागदर	उदयपुर

जल संरक्षण

A. जल संरक्षण

B. जल संरक्षण की तकनीक

C. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

A. जल संरक्षण:— व्यर्थ बहते हुए पानी को रोकने व उपयोग में लिए जाने वाले पानी का सीमित उपयोग करना जल प्रबंधन कहलाता है।

जल प्रबंधन की तकनीक

I. परम्परागत तकनीक

1. नाड़ी 2. टोबा 3. बावड़ी 4. झालरा 5. खड़ीन 6. बेरी/कुई
7. टांका/कुंड 8. जोहड़ 9. तालाब 10. झील

II. आधुनिक तकनीक

1. बांध 2. नहर
3. बूंद-बूंद एवं फव्वारा तकनीक

I. परम्परागत तकनीक –

1. नाड़ी :-

- ✓ एक तरह का पोखर/तालाब होता है। जिसमें वर्षा जल को संग्रहित किया जाता है।
- ✓ यह जल संरक्षण तकनीक पश्चिमी राजस्थान में प्रचलित है।
- ✓ 1520 में राजस्थान की प्रथम नाड़ी का निर्माण किया गया।

2. टोबा :-

- ✓ यह नाड़ी से गहरे जल संग्रहण के स्रोत होते हैं जिसमें वर्षा जल का संग्रहित किया जाता है।
- ✓ इनमें संग्रहित जल का उपयोग— पेयजल एवं सीमित सिंचाई के लिए किया जाता है।

3. बावड़ी (Stepwells) :-

- ✓ बावड़ी गोलाकार एवं कलात्मक सीढ़ीनुमा कुएँ होते हैं।
- ✓ जल के लिए ये कुएँ एवं वर्षा जल पर निर्भर होते हैं।
- ✓ सर्वाधिक बावड़ी –बूंदी में स्थित है। जिसे "बावड़ियों का शहर" कहा जाता है।

➤ प्रमुख बावड़ियाँ –

● नवलखा बावड़ी	डूंगरपुर	● दूध बावड़ी	सिरोही
● लाहिनी बावड़ी	सिरोही	● त्रिमुखी बावड़ी	उदयपुर
● भूत बावड़ी	जोधपुर	● रानी की बावड़ी	बूंदी
● अनारकली बावड़ी	बूंदी	● गुलाब बावड़ी	बूंदी
● चाँद बावड़ी	दौसा (आभानेरी)	● हाड़ी रानी की बावड़ी	टोडारायसिंह (केकड़ी)
● बड़ी बावड़ी, छोटी बावड़ी	दौसा	● नौ मंजिला बावड़ी	नीमराणा (कोटपूतली बहरोड़)

4. झालरा :-

- ✓ जल संग्रहण हेतु निर्मित आयताकार कुंड जो किसी झील या तालाब से जल प्राप्त करता है।
- ✓ झालरे के पानी का उपयोग धार्मिक रीति-रिवाजों के स्नान के लिए किया जाता है।
- ✓ इसके जल का उपयोग पेयजल के लिए नहीं किया जाता।

5. खड़ीन (प्लाया) :-

- ✓ पश्चिमी राजस्थान में पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा जल संग्रहण के लिए जो अस्थायी पानी की झील बनायी जाती है। उसे खड़ीन (प्लाया) कहा जाता है।
- ✓ ये सर्वाधिक उत्तरी जैसलमेर में स्थित हैं।

6. बेरी (कुई) :-

- ✓ पश्चिमी राजस्थान/अन्तरराष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्रों (जैसलमेर, बीकानेर) में जल संग्रहण के लिए बनाये गए छोटे, गोलाकार एवं कम गहरे खड्डे को बेरी (कुई) कहा जाता है।
- ✓ यह जल के लिए तालाब एवं जोहड़ पर निर्भर होते हैं।

7. टांका/कुंड :-

- ✓ टैंक का निर्माण मुख्यतः पेयजल के उद्देश्य से घरों या सार्वजनिक स्थानों पर किया जाता है। जिसमें वर्षा जल (पालर पानी) संग्रहित होता है।
- ✓ जल की शुद्धता के लिए के लिए इसे ऊपर से ढका जाता है।

8. जोहड़

- ✓ ग्रामीण क्षेत्र में ढाल की ओर बहता हुआ वर्षा जल निम्न भूमि में एकत्रित होता है जिसे जोहड़ कहा जाता है।
- ✓ शेखावाटी में यह अधिक प्रचलित है जहाँ इन्हें पानी के कच्चे कुएँ कहा जाता है।
- ✓ जोहड़ पद्धति को पुर्नजीवित करने का श्रेय श्री राजेन्द्र सिंह (अलवर) को जाता है इन्हें "जोहड़ वाले बाबा" के नाम से जाना जाता है, जिन्हें "रमन मैग्सेसे अवॉर्ड" दिया गया।

9. तालाब :-

- ✓ यह एक प्रकार का कृत्रिम या प्राकृतिक जलाशय होता है। जिसका विस्तार एक वर्ग मीटर से दो हैक्टर के मध्य हाता है।
- ✓ जिसमें वर्ष में कम से कम चार माह जल उपलब्ध होता है।
- ✓ प्रमुख तालाब –
 1. पदम तालाब, जंगली तालाब, काला तालाब, सुख तालाब – रणथम्भौर
 2. सरैरी, खारी तालाब – भीलवाड़ा
- ✓ **नोट:-** राजस्थान में सिंचाई में तालाबों का उपयोग सर्वाधिक भीलवाड़ा में किया जाता है।

10. झील :-

- ✓ वर्षा जल व नदी जल द्वारा निर्मित जल बेसिन जो मुख्यतः चारों ओर स्थलीय भाग से घिरे रहते हैं। उसे झील कहा जाता है।
- ✓ राजस्थान में सर्वाधिक झीलें उदयपुर (लेक सिटी) में है।
- ✓ **नोट:-** राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना – इसकी शुरुआत – 2001 में हुई।
- ✓ इसमें राजस्थान की 5 झीलें (पिछोला, फतेह सागर, नक्की, पुष्कर, आनासागर) शामिल है
- ✓ बजट – केन्द्र : राज्य (60 : 40)

❖ आधुनिक विधियाँ :-

1. डैम/बांध परियोजना :-

- ✓ बहते हुए व्यर्थ पानी को रोककर विभिन्न उद्देश्य (सिंचाई, पेयजल, जल विद्युत) को पूरा करने के लिए डैम का निर्माण किया जाता है।

2. नहर- राजस्थान में नहरों के द्वारा सर्वाधिक सिंचाई श्रीगंगानगर में होती है।

3. फव्वारा एवं बूंद बूंद सिंचाई तकनीक –

- ✓ राजस्थान में नर्मदा नहर क्षेत्र में इस तकनीक को अनिवार्य रूप से लागू किया गया है।
- ✓ इस जल संरक्षण तकनीक को इजराइल से ग्रहण किया गया है।

➤ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु :-

(a) प्रमुख योजनाएं

1. स्वजल धारा परियोजना

- शुरुआत – 2002
- यह परियोजना केन्द्र सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति के लिए शुरु की गई।

2. जल स्वावलम्बन

- शुरुआत – 27 जनवरी 2016 को गर्दनखेड़ी (झालावाड़) से की गई है।
- उद्देश्य – ग्रामीण क्षेत्रों में तालाब एवं कुएं के जल स्तर में सुधार, चारागाहों का विस्तार, कृषि उत्पादन को बढ़ाना।
- जल स्वावलम्बन परियोजना को 4 चरणों में चलाया गया।

प्रथम चरण – 27 जनवरी 2016	द्वितीय चरण – 9 दिसम्बर 2016
तृतीय चरण – 9 दिसम्बर 2017	चतुर्थ चरण – 3 अक्टूबर 2018

3. राजीव गाँधी जल संचय योजना

- शुरुआत 20 अगस्त 2019
- उद्देश्य :- ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजलापूर्ति, वर्षा जल का संग्रहण एवं संरक्षण, भू-जल स्तर में वृद्धि करना, कृषि योग्य क्षेत्र को बढ़ाना।
- नोट :- इस योजना को दो चरणों में चलाया गया है।
- प्रथम चरण- 20 अगस्त 2019, द्वितीय चरण- 22 मार्च 2023 (2 वर्ष के लिए)

4. अटल भू-जल योजना :-

- शुरुआत 1 अप्रैल 2020
- उद्देश्य :- भू-जल के गिरते स्तर को रोकना, एवं भू-जल का बेहतर प्रबन्धन करना।
- सहयोग :- भारत सरकार एवं विश्व बैंक (50:50)
- इस योजना को देश के सात राज्यों क्रमशः राजस्थान (17 जिले), हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में शुरु किया गया।

b. राज्य जल नीति -

- 18 फरवरी 2010
- इस नीति के अनुसार जल उपलब्धता की प्राथमिकता का क्रम - मानव पेयजल, पशु पेयजल, घरेलू कार्यों के लिए एवं कृषि कार्यों के लिए जलापूर्ति रखा गया है।

c. भूमिगत जल संसाधन मूल्यांकन - 2022 के अनुसार राजस्थान में कुल 302 "जल-ब्लॉक" है। जिसमें -

क्र.सं.	क्षेत्र	जल उपयोग	संख्या
1.	अति दोहित (Over Exploited)	More than 100%	219
2.	गंभीर/विषम (Critical/Odd)	90-100%	22
3.	अर्द्ध-गंभीर/अर्द्ध विषम (Semi - Critical/Semi Odd)	70-90%	20
4.	सुरक्षित (Safe)	Less than 70%	38
5.	लवणीय (Saline)	-	3

5. अन्तर्राष्ट्रीय जल दिवस - 22 मार्च (Theme - 2023 Accelerating change to solve the water and sanitation crisis)

6. जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम - 1974

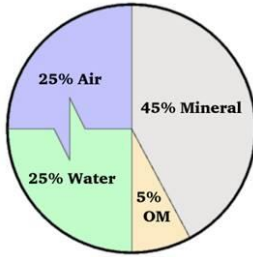
मृदा

- A. मृदा क्या है? B. मृदा के घटक एवं निर्माण
C. मृदा का वर्गीकरण D. मृदा की समस्याएँ

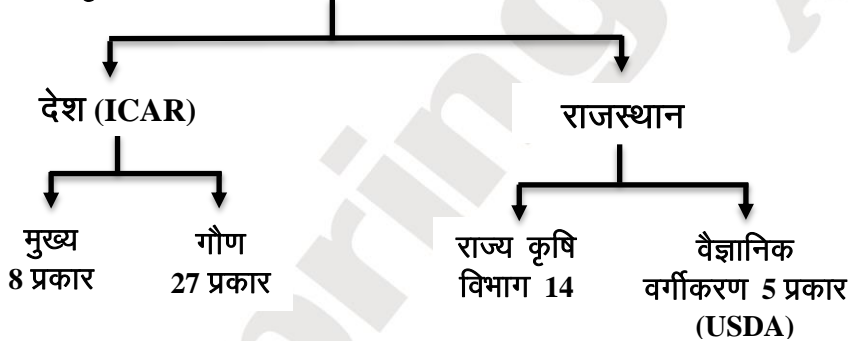
A. मृदा :-

- पृथ्वी की उपरी सतह पर असंगठित चट्टानों की परत को मृदा कहा जाता है।
- नोट:- पेडोलॉजी- मृदा संबंधित अध्ययन को कहा जाता है।

B. मृदा के घटक एवं निर्माण



C. मृदा का वर्गीकरण :-

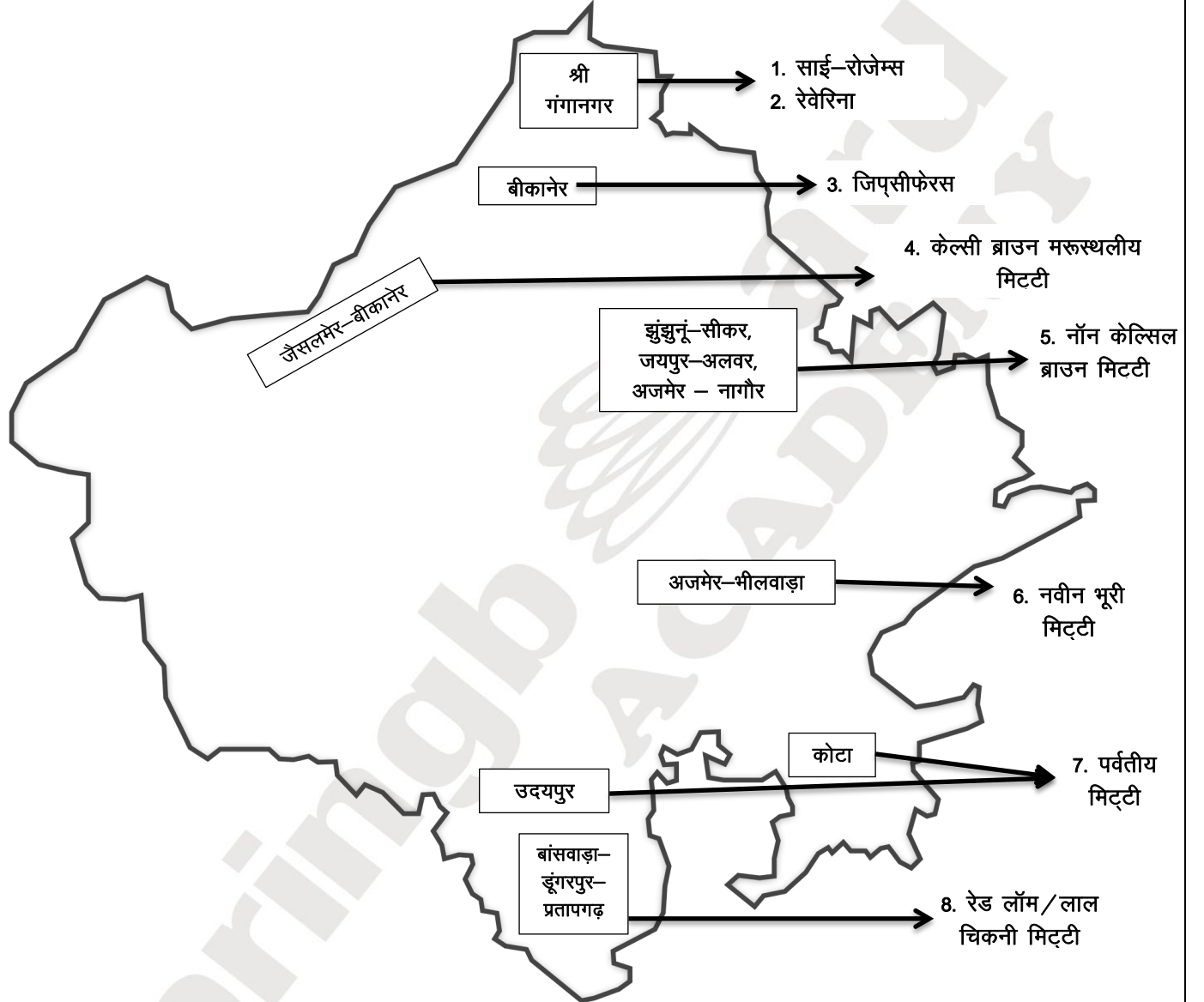


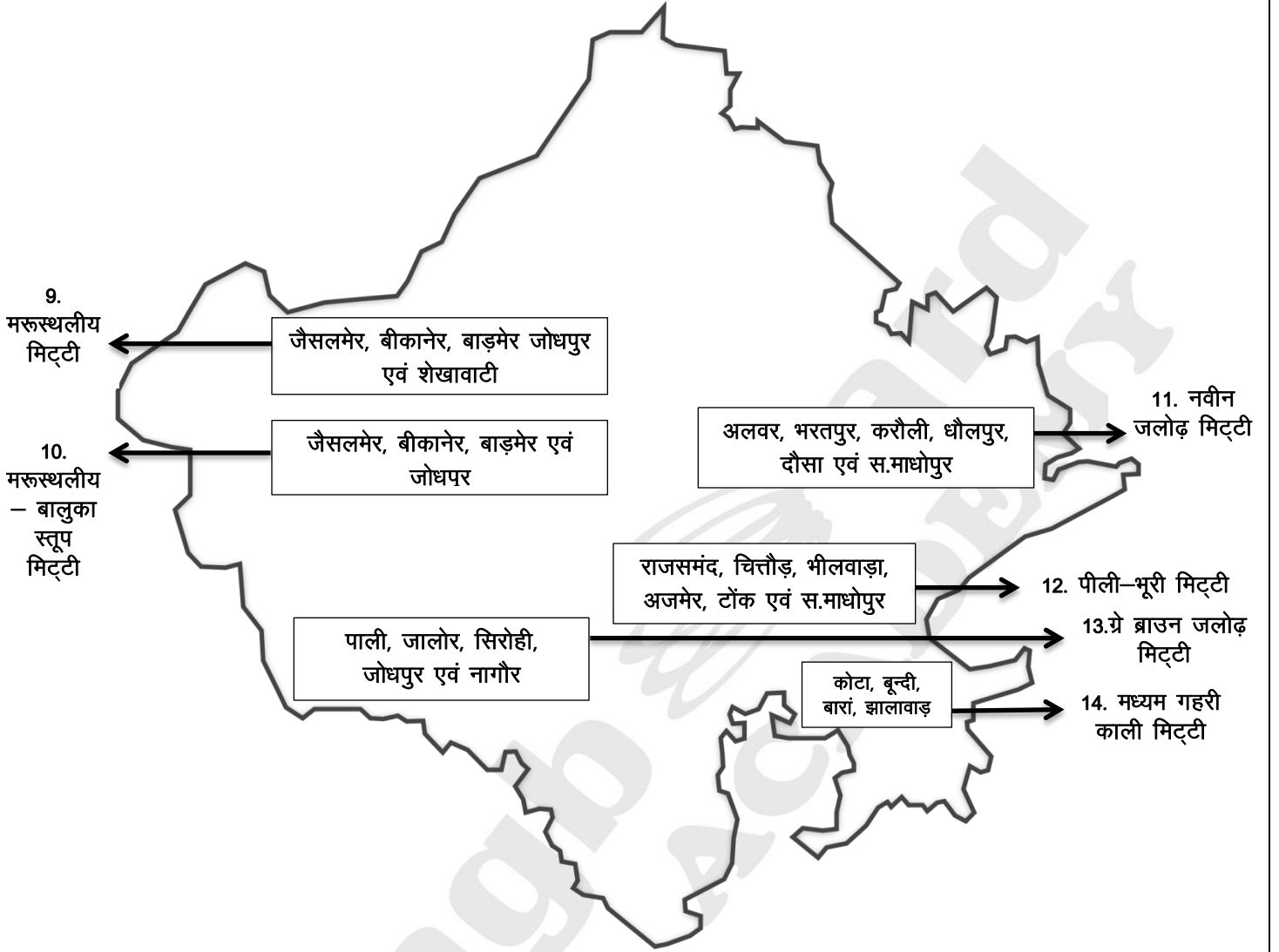
नोट:-

- **ICAR – Indian Council of Agricultural Research**
(भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान – 1929 (नई दिल्ली))
- **USDA – United State Department of Agriculture**
(स्थापना – 1862, वांशिगटन – DC)

I. राज्य कृषि विभाग –

➤ इसके द्वारा राजस्थान की मृदा को 14 भागों में बांटा गया है।





II. मृदा का वैज्ञानिक वर्गीकरण :-

- मृदा का वैज्ञानिक वर्गीकरण USDA के द्वारा किया गया जिसका मुख्य आधार "मिट्टी के कणों के आकार" को माना गया।
- राजस्थान की मृदा को 5 वैज्ञानिक मृदा वर्गों में बांटा गया है -
 1. एरिडोसॉल,
 2. एंटीसॉल,
 3. अल्फीसॉल,
 4. इन्सेप्टिसॉल,
 5. वर्टीसॉल



1. एरिडोसॉल :-

- विस्तार – बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
- जलवायु – यह शुष्क जलवायु प्रदेश में पाई जाती है।
- इस मृदा के 4 उपसमूह है –
1. कैम्बो ऑरथिड्स, 2. केलसी ऑरथिड्स, 3. पेलि ऑरथिड्स, 4. सेल ऑरथिड्स

2. एंटीसॉल :-

- विस्तार – अरावली के पश्चिम में
- जलवायु – यह मृदा शुष्क-अर्दशुष्क जलवायु प्रदेश पाई जाती है।

नोट :-

- ✓ राजस्थान में इस मृदा का विस्तार सर्वाधिक पाया जाता है।
- ✓ राजस्थान में सर्वाधिक पाये जाने वाली वैज्ञानिक मृदा – Ist-एंटीसॉल, IInd-एरिडोसॉल

3. अल्फीसॉल :-

- विस्तार – यह पूर्वी राजस्थान की ओर पाया जाने वाला मृदा समूह है।
- जलवायु – यह उपार्द्र-आर्द्र प्रकार की जलवायु में पाई जाती है।

4. इन्सेप्टिसॉल :-

- विस्तार – राजसमन्द, पाली, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़
- जलवायु – यह मिट्टी अर्द्रशुष्क – आर्द्र जलवायु में पाई जाती है।

5. वर्टीसॉल :-

- विस्तार – हाड़ौती क्षेत्र (कोटा-बूंदी, बारां एवं झालावाड़) में विस्तृत है।
- जलवायु – यह मिट्टी आर्द्र-अतिआर्द्र जलवायु प्रदेश में पायी जाती है।
- यह काली और चरनोजम मिट्टी होती है।

❖ सामान्य आधार पर राजस्थान की मिट्टियों का अध्ययन –

1. बलुई/रेतीली मृदा :-

- उपनाम – शुष्क मिट्टी, प्यासी मिट्टी
- निर्माण – बलुआ पत्थर व ग्रेनाइट के अपरदन से
- विस्तार – पश्चिमी शुष्क मरुस्थल (जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर एवं जोधपुर)
- उत्पादन – बाजरा (सर्वाधिक) मूंग, मोठ, ग्वार, मूंगफली, चना

● विशेषताएँ :-

- ✓ इस मिट्टी के कण मोटे होते हैं इसलिए जल रिसाव अधिक होता है इस कारण बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है, इसलिए इसे "प्यासी मिट्टी" कहा जाता है।
- ✓ इस मिट्टी में कैल्सियम सर्वाधिक पाया जाता है।
- ✓ राजस्थान में बुलई मिट्टी का विस्तार सर्वाधिक है।

2. भूरी रेतीली मिट्टी :-

- निर्माण – इसका निर्माण बलुआ पत्थर से लूनी बेसिन में हुआ है।
- विस्तार – जालौर, पाली, नागौर, अजमेर, सीकर एवं झुंझुनू

नोट :-

- ✓ इस मिट्टी में मुख्यतः फॉस्फेट की अधिकता पाई जाती है।

3. लवणीय मिट्टी :-

- उपनाम – रेह / कल्लर
- निर्माण – अधिक सिंचाई वाले क्षेत्र में भूमि से लवणीयता केशिकत्व प्रक्रिया द्वारा ऊपर की ओर आ जाती है जिससे सफेद परत का निर्माण होता है। इसे "लवणीय मिट्टी" कहा जाता है।
- विस्तार – बाड़मेर, जालौर, श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर
- उत्पादन – अनार व गन्ना

4. जलोढ़ मिट्टी –

- उपनाम – कछारी मिट्टी / दोमट मिट्टी / डेल्टाई मिट्टी
- निर्माण – इसका निर्माण नदियों के द्वारा जमा किये गये अवसादों से हुआ है।
- विस्तार – अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर, जयपुर, दौसा
- उत्पादन – गेहूँ (सर्वाधिक) सरसों, राई, जौ, बाजरा

• विशेषताएँ :-

- ✓ जलोढ़ मिट्टी सर्वाधिक उपजाऊ होती है।
- ✓ इस मिट्टी में पोटाश की मात्रा अधिक पाई जाती है।

5. लाल चिकनी मिट्टी/रेड लॉमी :-

- निर्माण – इसका निर्माण कायान्तरित चट्टानों के अपरदन से होता है।
- विस्तार – बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, दक्षिण उदयपुर
- उत्पादन – मक्का, चावल, गन्ना

नोट :-

- ✓ इस मिट्टी का रंग लाल होने का कारण "लोहा ऑक्साइड" को माना जाता है।

6. काली मिट्टी :-

- उपनाम – कपासी मिट्टी/ज्वालामुखी मिट्टी/रेगुर मिट्टी/स्वतः जुताई वाली मिट्टी
- निर्माण – यह बेसाल्ट चट्टानों के अपरदन से निर्मित होती है।
- विस्तार – हाडौती क्षेत्र – कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़
- उत्पादन – कपास, मसालें, सोयाबीन।

नोट :-

- ✓ काली मिट्टी को चरनोजम् मिट्टी भी कहा जाता है।
- ✓ इस मिट्टी में क्ले की मात्रा सर्वाधिक होती है।
- ✓ इस मिट्टी की जलधारणा क्षमता सर्वाधिक है। इस कारण एक बार सिंचाई के बाद लम्बे समय तक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।

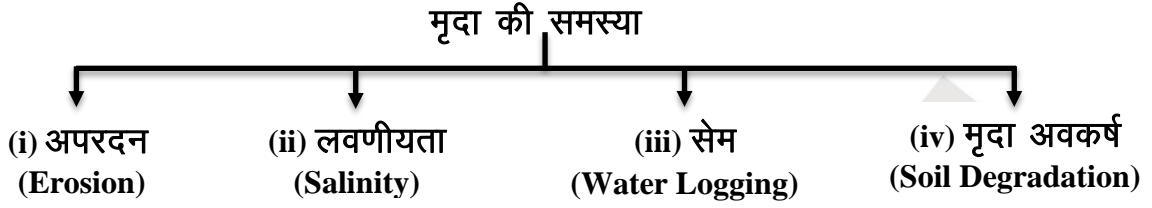
7. लाल-काली मिट्टी :-

- विस्तार – प्रतापगढ़, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा
- उत्पादन – मक्का, कपास, अफीम

8. लाल-पीली मिट्टी :-

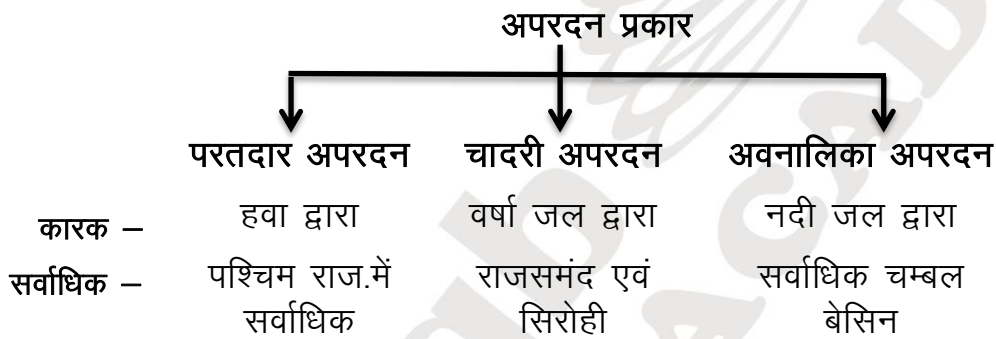
- निर्माण – जल योजन के कारण लोहा युक्त चट्टानों का अपरदन होता है, जिससे लाल-पीली मिट्टी का निर्माण होता है।
- विस्तार – उदयपुर, चित्तौड़, भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर

C. मृदा की समस्या -



(i) अपरदन :-

- क्या - मिट्टी के कटाव को अपरदन कहा जाता है। इसे मिट्टी की 'रेंगती हुई मौत' अथवा 'किसान की मृत्यु' भी कहा जाता है।
- अपरदन प्रकार -



नोट:- राजस्थान में हवा के द्वारा अपरदन सर्वाधिक होता है।

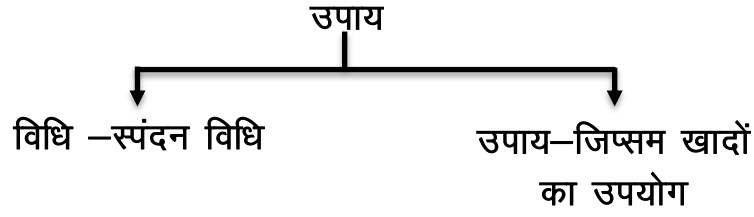
❖ अपरदन के मुख्य कारण :-

- वृक्षों का अतिदोहन।
- अत्यधिक पशु चारण
- कृषि भूमि की अत्यधिक जुताई

❖ अपरदन के उपाय :- वृक्षारोपण, खेतों की मेड़बंदी

(ii) लवणीयता :-

अत्यधिक सिंचाई के कारण "केशिकत्व" प्रक्रिया द्वारा लवण का भूमि की ऊपरी सतह आकर जमना लवणीयता/रेह/कल्लर कहलाता है।



(iii) सेम :-

- भूमि का दलदली / अधिक नमीयुक्त होना।
- विस्तार – हनुमानगढ़ (बड़ोपल), श्रीगंगानगर।
- उपाय – युकेलिप्टिस (सफेदे) वृक्षों का रोपण और फव्वारा एवं बून्द-बून्द सिंचाई तकनीक का उपयोग

(iv) क्षारीयता :-

- क्या – मिट्टी में Ph मात्रा 8 से अधिक होने पर उसे क्षारीयता की समस्या कहा जाता है।
- उपाय – ग्वार – ढेंचे की फसल की बुवाई कर पुन मिट्टी में मिला देना एवं जिप्सम एवं रॉक-फॉस्फेट खादों का उपयोग।

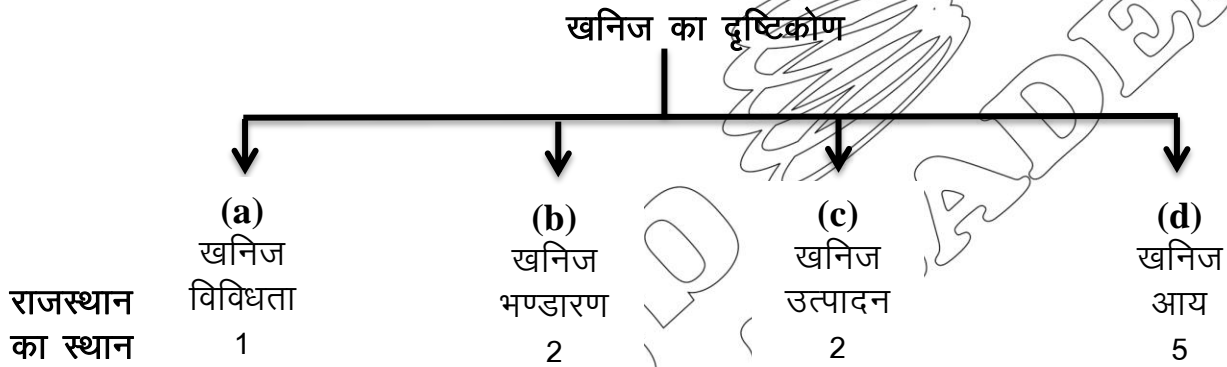
(v) मृदा अवकर्षण:-

- मिट्टी की भौतिक, रासायनिक व जैविक क्षमता का ह्रास होना।
- उपाय – जैविक उर्वरकों का उपयोग।

खनिज : धात्विक – अधात्विक खनिज

- A. खनिज का दृष्टिकोण
- B. खनिज चट्टानें
- C. खनिजों का वर्गीकरण
- D. खनिज उत्पादन
- E. खनिजों का उपयोग
- F. खनिज नीतियाँ
- G. खनिज संस्थान

A. खनिज का दृष्टिकोण



(a) खनिज विविधता :-

- देश में सर्वाधिक खनिज विविधता राजस्थान में पायी जाती है। इस कारण राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहा जाता है।

(b) खनिज भण्डारण :-

- राजस्थान में सर्वाधिक खनिज भण्डारण अरावली में पाया जाता है।
- इसलिए अरावली को "खनिजों का भंडार गृह" कहा जाता है।
- राजस्थान राज्य में कुल 81 प्रकार के खनिज उपलब्ध हैं।

(c) खनिज उत्पादन :-

- राजस्थान, भारत के कुल उत्पादन का 22 प्रतिशत खनिज का उत्पादन करता है।
- जिसमें धात्विक 15 प्रतिशत और अधात्विक 25 प्रतिशत है।

➤ अधात्विक खनिजों के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है।

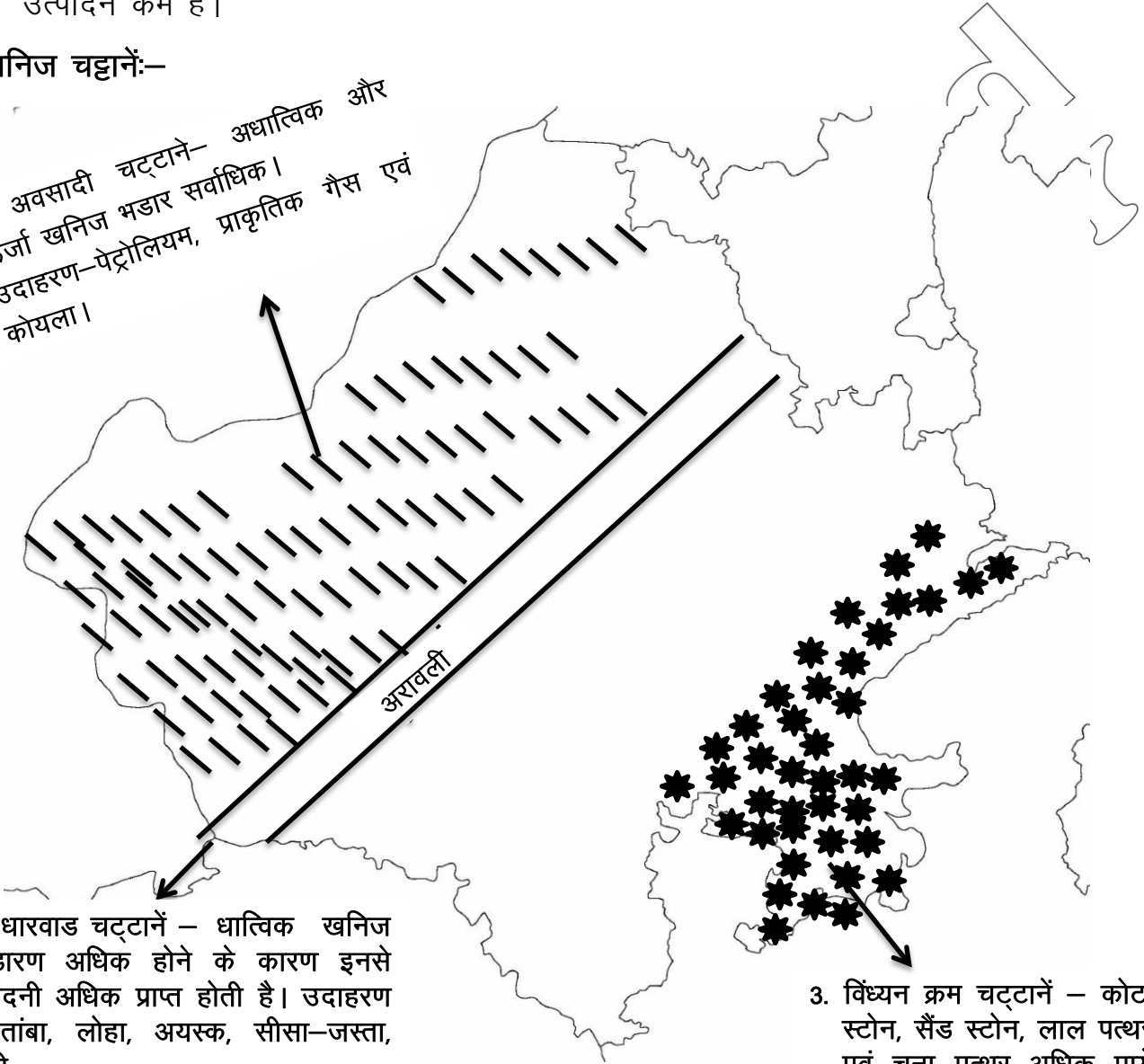
➤ नोट :- राजस्थान कुल 57 प्रकार के खनिजों का उत्पादन करता है।

(d) खनिज आय :-

➤ राजस्थान खनिज आय के दृष्टिकोण से पिछड़ा हुआ राज्य है क्योंकि यहाँ धात्विक खनिजों का उत्पादन कम है।

B. खनिज चट्टानें:-

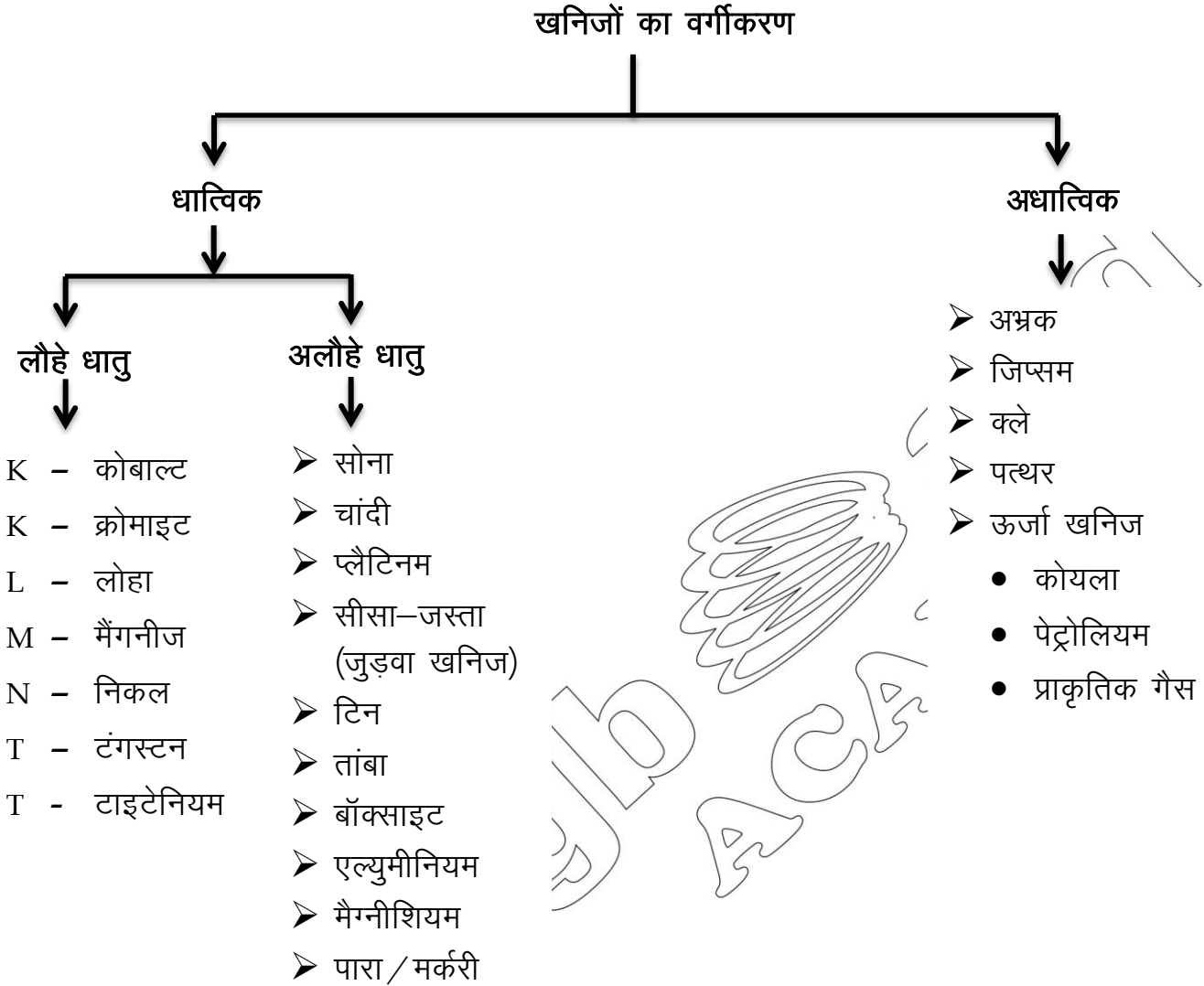
1. अवसादी चट्टानें— अधात्विक और ऊर्जा खनिज भंडार सर्वाधिक।
उदाहरण—पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस एवं कोयला।



2. धारवाड चट्टानें — धात्विक खनिज भण्डारण अधिक होने के कारण इनसे आमदनी अधिक प्राप्त होती है। उदाहरण — तांबा, लोहा, अयस्क, सीसा—जस्ता, चांदी

3. विंध्यन क्रम चट्टानें — कोटा स्टोन, सैंड स्टोन, लाल पत्थर एवं चूना पत्थर अधिक पाये जाते हैं।

C. खनिजों का वर्गीकरण:-



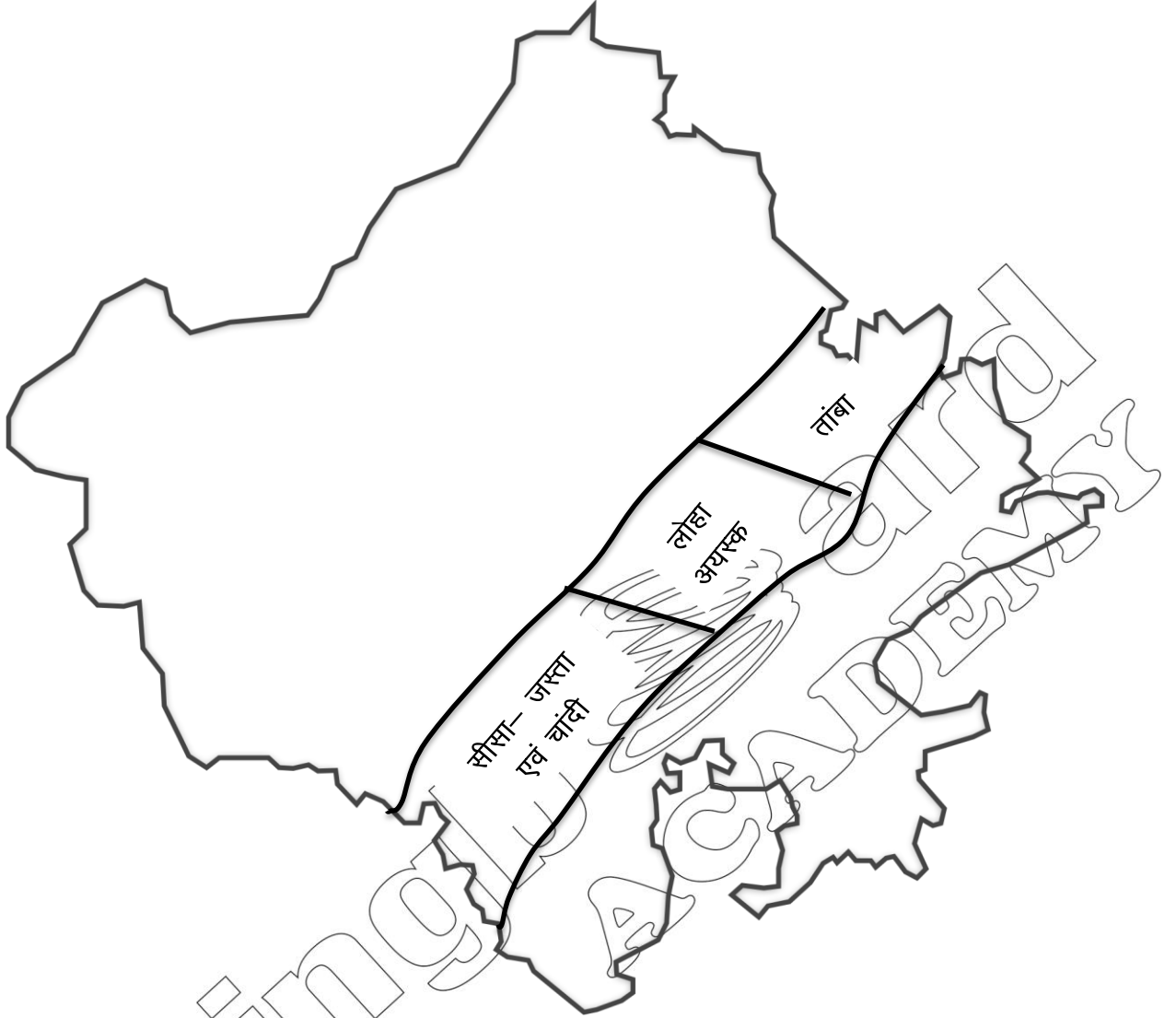
D. खनिज उत्पादन :-

I. अरावली खनिज पटी :-

(a) तांबा- इसका भण्डारण झुंझुनू, सीकर, अलवर, उदयपुर एवं चित्तौड़गढ़ में हैं।

उत्पादन क्षेत्र :-

1. झुंझुनू - कोल्हन, खेतड़ी चांदमारी
2. सीकर - बन्नो की ढाणी (नीम का थाना)
3. अलवर - खो-दरीबा
4. उदयपुर - अंजनी - सलूमबर
5. चित्तौड़गढ़ - भागेल - वारी क्षेत्र



(b) लौह –अयस्क :- इसके भण्डारण जयपुर, दौसा, झुंझुनूं, उदयपुर एवं भीलवाड़ा में पाये जाते हैं।

उत्पादन क्षेत्र :-

1. जयपुर – मोरिजा – बानोल
2. दौसा – नीमला – रायसेला
3. झुंझुनूं – डाबला – सिंघाना
4. उदयपुर – नाथरा की पाल, थूर हुण्डेर
5. भीलवाड़ा – तिरंगा क्षेत्र

(c) सीसा—जस्ता एवं चांदी :- इसके उदयपुर, राजसमंद, भीलवाड़, सवाईमाधोपुर एवं अलवर में पाये जाते हैं।

उत्पादन क्षेत्र :-

1. उदयपुर — जावर — देबारी
2. राजसमंद — राजपुरा दरिबा
3. भीलवाड़ा — गुलाबपुरा — अगुचा, रामपुरा — अगुचा
4. सवाईमाधोपुर — चौथ का बरवाड़ा
5. अलवर — गुढ़ा—किशोरीदासपुरा

II. वांगड़ पेटी के खनिज :-

(a) सोना — G.S.I (Geographical Survey of India) के द्वारा राजस्थान में सोने के नवीनतम भण्डार बांसवाड़ा (घोटिया अम्बा) और उदयपुर में खोजे गये हैं।

उत्पादन क्षेत्र :-

✓ बांसवाड़ा — आनंदपुरा — भुकिया एवं जयपुरा — भुकिया

नोट:- सोने के नवीनतम भण्डारण बांसवाड़ा के 'घोटिया-अम्बा' में मिले है।

(b) मैग्नीज — इसका भण्डारण मुख्यतः बांसवाड़ा, डूंगरपुर एवं उदयपुर में हैं।

उत्पादन क्षेत्र :-

✓ बांसवाड़ा — लीलवाची, कालाखूटा एवं तलवाड़ा।

(c) फ्लोराईट / फ्लोस्पाईर — इसका भण्डारण मुख्यतः डूंगरपुर में हैं।

उत्पादन क्षेत्र :-

✓ डूंगरपुर — मांडो की पाल।

(d) हीरा — इसका भण्डारण मुख्यतः प्रतापगढ़ में हैं।

उत्पादन क्षेत्र :-

✓ प्रतापगढ़ — केसरपुरा।

III. क्ले खनिज :-

1. बॉल क्ले / बीकानेर क्ले — बीकानेर
2. फायर क्ले — बीकानेर

3. चाइना-क्ले/चीनी मिट्टी – बीकानेर, सीकर

4. ब्लीचिंग क्ले/फुलर्स अर्थ/मुल्लानी मिट्टी – I - बाड़मेर, II - बीकानेर

नोट:-

➤ सिलिका सैंड का उत्पादन – I - बूंदी (बाड़ोदिया), II - जयपुर

➤ इसका उपयोग :- कांच उद्योग में किया जाता है।

IV. पत्थर वाले खनिज :-



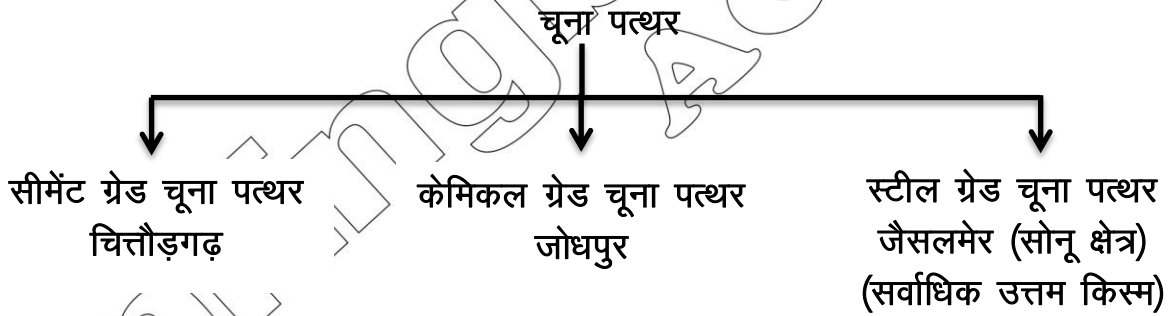
नोट:-

(i) **मार्बल का सर्वाधिक उत्पादन** – राजसमंद से होता है, क्योंकि मार्बल की सर्वाधिक उत्पादन इकाईयाँ राजसमंद में संचालित है। जबकि मार्बल की अन्य किस्में निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त होती है।

- ✓ सफेद मार्बल – मकराना (नागौर)
- ✓ काला मार्बल – भैंसलाना (जयपुर)
- ✓ पीला मार्बल – पीथला (जैसलमेर)
- ✓ हरा मार्बल – ऋषभदेव (उदयपुर)
- ✓ गुलाबी मार्बल – ऋषभदेव एवं बाबरमल (उदयपुर)
- ✓ सतरंगी मार्बल – पादरला (पाली)

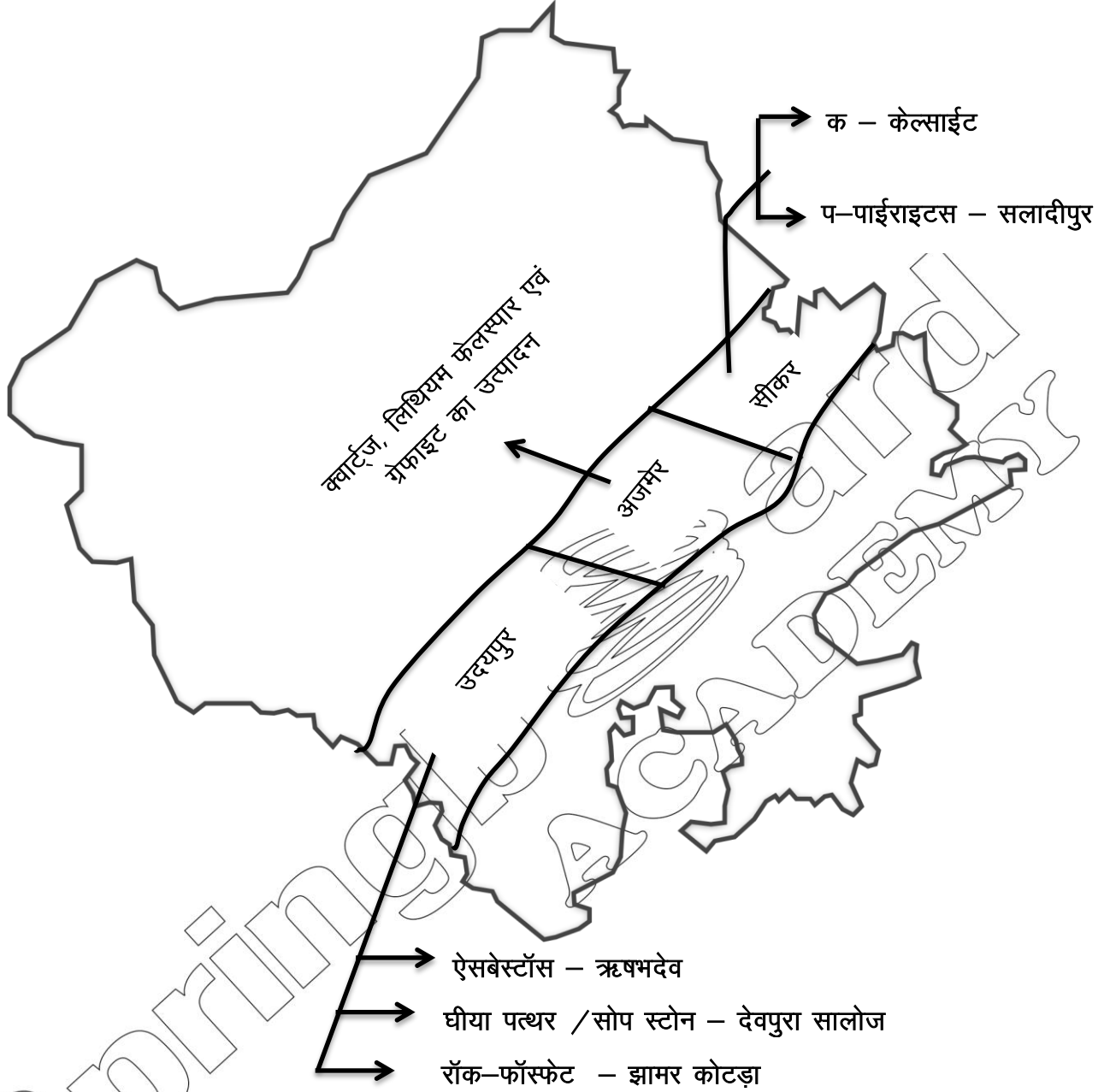
(ii) **चूना पत्थर** – सर्वाधिक उत्पादन जोधपुर से होता है।

चूना पत्थर की प्रमुख किस्में एवं उत्पादन क्षेत्र –



V. **पोटाश** :- इसके प्रमुख भण्डारण एवं उत्पादन क्षेत्र – हनुमानगढ़, श्री गंगानगर, बीकानेर एवं चुरू है।

VI. **अरावली क्षेत्र के खनिज** :- इस क्षेत्र में प्रमुख खनिज उत्पादक स्थान उदयपुर, अजमेर एवं सीकर है। जहां से उत्पादित खनिज निम्नलिखित है –



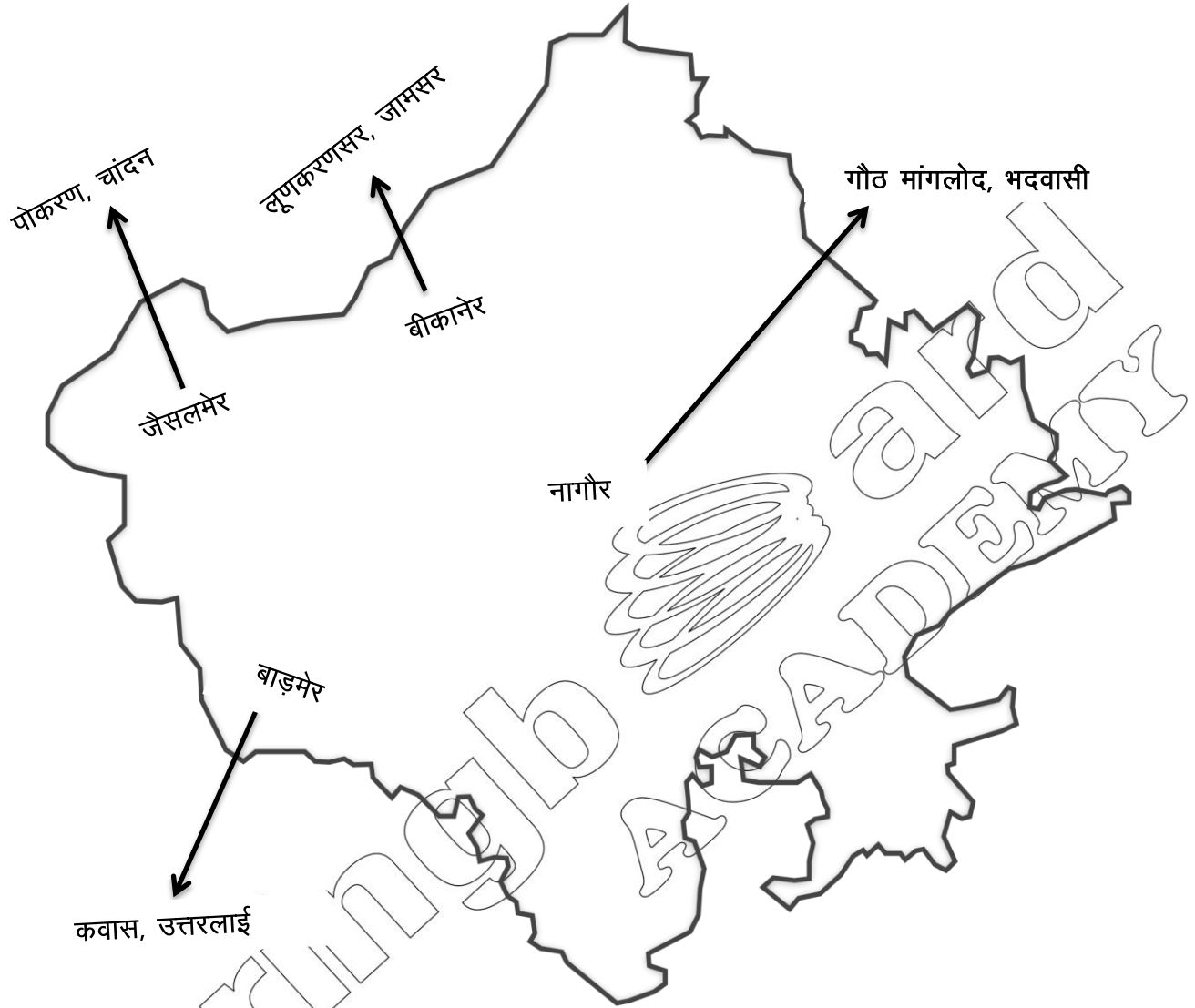
नोट:- राजस्थान में सर्वाधिक खनिजों का उत्पादन उदयपुर से होता है।

VII. नागौर वाले खनिज :-

G - जिप्सम

T - टंगस्टन

1. जिप्सम उत्पादक क्षेत्र – राजस्थान में जिप्सम का सर्वाधिक उत्पादन बीकानेर से होता है।



2. टंगस्टन उत्पादक क्षेत्र – टंगस्टन का भण्डार नागौर, पाली एवं सिरोही है।

उत्पादन क्षेत्र –

(i) नागौर :- डेगाना (रेवत की पहाड़ी)

नोट:- देश में टंगस्टन की सबसे बड़ी खान डेगाना (नागौर) है। जो वर्तमान में बन्द हैं।

(ii) पाली :- नाना-कराब

(iii) सिरोही :- बाल्दा/वाल्दा एवं आबू-रेवदर

VIII. एकाधिकार वाले खनिज :-

- आर्थिक समीक्षा 2020 – 2021 के अनुसार केवल राजस्थान से उत्पादित खनिज – सीसा, जस्ता, वालेस्टेनाइट एवं सेलेनाइट (जिप्सम)



- जास्पर – जोधपुर
- तामड़ा / गार्नेट और रक्त मणि – I - टोंक – राजमहल, जनकपुर एवं II – अजमेर – सरवाड़
- वाल्लेस्टोनाईट – सिरौही (बेल का मगरा)
- लाल गेरू / ऑकर – चित्तौड़गढ़
- पन्ना / हरी अग्नि – राजसमंद (आमेट-देवगढ़ के मध्य काला गुमान की खान से उत्पादन।

IX. आण्विक/परमाणु ऊर्जा खनिज :-

1. यूरेनियम (U) - राजस्थान में यूरेनियम भण्डारण क्षेत्र उदयपुर, सीकर एवं बारां है।

उत्पादन क्षेत्र -

- ✓ उदयपुर - उमरा
- ✓ सीकर - खण्डेला पहाड़ी, रोहिला क्षेत्र
- ✓ बारां - रामगढ़

2. थोरियम (Th) - राजस्थान में थोरियम भण्डारण क्षेत्र पाली एवं भीलवाड़ा है।

उत्पादन क्षेत्र -

- ✓ पाली - भद्रावन
- ✓ भीलवाड़ा - सरदारपुरा

X. अभ्रक/माईका :- अभ्रक का भण्डारण एवं उत्पादन सर्वाधिक भीलवाड़ा में होता है।

उत्पादन क्षेत्र -

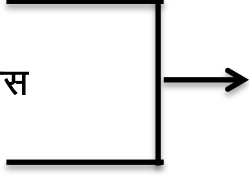
- ✓ भीलवाड़ा (दांता भूणास), अजमेर एवं राजसमंद है।
- ✓ अभ्रक को "खनिज का बीमार बच्चा" कहा जाता है, क्योंकि देश की 20 सबसे बड़ी खानों से केवल 50 प्रतिशत अभ्रक उत्पादन होता है।

XI. बेंटोनाइट, बॉक्साइट, बेरिलियम खनिज :-

- बेंटोनाइट - बाड़मेर
- बॉक्साइट - कोटा
- बेरिलियम - उत्पादन क्षेत्र -
 - (1) जयपुर - गुजरवाड़ा
 - (2) अजमेर - बांदर - सिंदरी
 - (3) उदयपुर - शिकारबाड़ी

XII. ऊर्जा खनिज :-

- a. पेट्रोलियम,
- b. प्राकृतिक गैस
- c. कोयला



ये खनिज अवसादी चट्टानों में पाये जाते हैं।
जिनका निर्माण काल टर्शियरी काल है।

a. पेट्रोलियम:-

- पेट्रोलियम का सर्वाधिक भण्डारण एवं उत्पादन बाड़मेर में होता है।
- राजस्थान में पेट्रोलियम भण्डारण 4 बेसिन एवं 14 जिलों में है।

पेट्रोलियम बेसिन :-

1. बाड़मेर – सांचौर बेसिन – इसका विस्तार बाड़मेर और जालोर (आंशिक रूप से) में है। इस बेसिन में पेट्रोलियम का भण्डार सर्वाधिक है। पेट्रोलियम उत्पादन में भी यह क्षेत्र प्रथम है।
2. राजस्थान शेल्फ बेसिन – इसका विस्तार जैसलमेर में है।
3. बीकानेर – नागौर बेसिन – इसका विस्तार बीकानेर, नागौर, अंगानगर, हनुमानगढ़ और चुरू (आंशिक रूप से) में है।
4. विंध्यन बेसिन – इसका विस्तार कोटा, बून्दी, बारा, झालावाड़, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा (आंशिक रूप से) में है।

पेट्रोलियम उत्पादन क्षेत्र –

Ist बाड़मेर –

- ✓ नगाना – मंगला (जोगसर गाँव)
- ✓ गुड़ा मालानी – रागेश्वरी
- ✓ कोसलू – सरस्वती,
- ✓ बायतु – ऐश्वर्या

नोट:-

- बाड़मेर में अन्य पेट्रोलियम कुएं :- भाग्यम, विजया, शक्ति, कामेश्वरी आदि।
- मंगला (बाड़मेर):- यह राजस्थान का प्रथम पेट्रोलियम कुआँ है। जहाँ से उत्पादन 29 अगस्त, 2009 से हो रहा है। वर्तमान में राजस्थान का सबसे बड़ा उत्पादन क्षेत्र है।

IInd जैसलमेर – बाघेवाला, साधेवाला, तनोट एवं चिन्नेवाला।

IIIrd बीकानेर :-

✓ तुवरी वाला

✓ पूनम क्षेत्र :- इसकी खोज Oil (आयल इंडिया लिमिटेड) के द्वारा की गई है। जिसकी स्थिति बीकानेर-नागौर बेसिन में है। इसकी उत्पादन क्षमता 30000 बैरल/दिन है।

नोट:- देश में पेट्रोलियम का सर्वाधिक उत्पादन -

1st बॉम्बे हाई (अपतटीय क्षेत्र) - 40-45 प्रतिशत उत्पादन।

2nd राजस्थान - 22-23 प्रतिशत उत्पादन। राजस्थान की पेट्रोलियम उत्पादन क्षमता 1.60 लाख- 1.70 लाख बैरल/दिन है।

b. प्राकृतिक गैस :- राजस्थान में इसका सर्वाधिक भण्डारण व उत्पादन जैसलमेर में है।

➤ उत्पादन क्षेत्र:-

1st जैसलमेर - डांडेवाला, गुमानेवाला, रामगढ़, तनोट, मनिहारी टिब्बा एवं घोटारू।

2nd बाड़मेर - मुडामालानी - रागेश्वरी

c. कोयला :- राजस्थान में कोयले का सर्वाधिक भण्डारण एवं उत्पादन बाड़मेर में है।

➤ निर्माणकाल के आधार पर कोयले के प्रकार

निर्माणकाल के आधार पर

गोंडवानालैंड काल - 98 प्रतिशत

टर्शियरी काल - 2 प्रतिशत

नोट:- राजस्थान में टर्शियरी काल का कोयला भण्डारित है। जबकि देश में सर्वाधिक गोंडवानालैंड काल का कोयला भण्डारित है।

➤ कार्बन की मात्रा के अनुसार कोयले के प्रकार :-

कोयला	—	कार्बन मात्रा	—	कोयले का रंग
एन्थासाइट	—	95 प्रतिशत	—	काला — चमकीला
बिटुमिनस	—	60 — 70 प्रतिशत	—	काला — भूरा
लिग्नाइट	—	50 — 60 प्रतिशत	—	भूरा कोयला
पीट	—	50 प्रतिशत	—	हल्का भूरा

नोट:-

- ✓ भारत में सर्वाधिक बिटुमिन्स व राजस्थान में सर्वाधिक लिग्नाइट कोयला पाया जाता है।
- ✓ सर्वश्रेष्ठ कोयला :- इसमें कार्बन की मात्रा अधिक होती है। इस कारण तापमान अधिक प्राप्त होता है जबकि धुंआ एवं राख की मात्रा कम होती है। यह कोयला नीली ज्वाला के साथ जलता है।

कोयला उत्पादन क्षेत्र :-

1st बाड़मेर:- कपूरडी, जालीपा, गिरल एवं भादरेस।

2nd बीकानेर :- बीठनोक, बरसिंहसर, पलाना, गुढा

नोट:- पलाना :- यह बीकानेर जिले में स्थित है जहाँ से सर्वश्रेष्ठ लिग्नाइट उत्पादित होता है।

3rd नागौर:- मेडता सिटी, ईग्यार, माता-सुख एवं कसनाऊ क्षेत्र

नोट:- सर्वाधिक लिग्नाइट कोयला उत्पादन —

1st - तमिलनाडु 2nd - गुजरात 3rd - राजस्थान (22 प्रतिशत)

E. खनिजों का उपयोग:-

1. तौबा:-

- विद्युत उपकरण बनाने में।
- विद्युत तार बनाने में।
- बर्तन बनाने में

2. लोहा अयस्क:-

- ऑटोमोबाइल और ऑटो पार्ट्स उद्योगों में।
- रेलवे संबंधित उपकरणों में।
- इमारतों के निर्माण में।
- सड़क एवं पुल निर्माण में।

3. सीसा अयस्क:-

- बूलेट्स / कारतूस निर्माण में।
- शुष्क सेल के निर्माण में।
- रंग बनाने में।

4. जस्ता / जिंक:-

- औषधी बनाने में।
- रंग बनाने में।
- ऑटोमोबाइल / ऑटो पार्ट्स में।

5. चाँदी :-

- आभूषण निर्माण में।
- पदक व सिक्के बनाने में।
- विद्युत उपकरणों में।
- औषधी उपयोग में।

6. सोना :-

- आभूषण निर्माण में।
- पदक व सिक्के बनाने में।
- तकनीकी उपकरणों (कम्प्युटर) में।
- औषधी उपयोग।

7. मैग्नीज :-

- इस्पात बनाने में।
- रंग और उपकरण बनाने में।

8. हीरा:-

- आभूषण बनाने में।
- काँच काटने में।

9. ऐसबेस्टॉस:-

- ईमारते बनाने में।
- ताप रोधी उपकरणों में।

10. वॉलस्टोनाईट:-

- टाइल्स बनाने में।
- सीमेंट चद्दर बनाने में एवं कल्च एवं ब्रेक बनाने में।

11. टंगस्टन:-

- विद्युत उपकरणों / बल्ब बनाने में।
- बुलेट्स बनाने में।

12. जिप्सम:-

- सीमेंट उद्योग में।
- रासायनिक उर्वरकों में।
- प्लास्टर ऑफ पेरिस।

13. चूना पत्थर:-

- सीमेंट उद्योग एवं भवन निर्माण में उपयोगी।
- घरों में रंग के रूप में।
- तम्बाकू के साथ उपयोगी।

14. पत्थर:—

- ईमारते बनाने में।
- मूर्तियाँ बनाने में।
- सड़क निर्माण में।
- फर्श बनाने में उपयोगी पत्थर — संगमरमर, ग्रेनाईट, कोटा स्टोन

15. कोयला:—

- तापीय ऊर्जा के उत्पादन में।
- अंगीठी में उपयोगी।
- रेलवे ईंधन बनाने में।
- इस्त्री/प्रेस में उपयोगी।

16. पेट्रोलियम (क्रुड ऑयल) :-

- पेट्रोल, डीजल, कैरोसीन/मिट्टी का तेल प्राप्त करने में।
- पेट्रोल रासायनिक उद्योगों में।
- सड़क निर्माण में।
- रंग उद्योग में।

17. केल्साईट :-

- रंग बनाने में।
- तेजाब बनाने में।

18. ग्रेफाईट :-

- पेंसिल बनाने में।
- परमाणु ऊर्जा में मंदक के रूप में उपयोगी।

19. अभ्रक/माईका :-

- विद्युत उपकरणों में।
- ईमारत बनाने में।
- पॉलीथीन बनाने में।

20. ब्लीचिंग-कले/मुल्तानी मिट्टी :-

- सौंदर्य प्रसाधन बनाने में।
- साबुन में उपयोगी।
- नमकीन/भोजन बनाने में उपयोगी।

F. खनिज नीतियाँ:-

1st - 1978

2nd - 1991

3rd - 1994

4th - 2011

5th - 4 जून 2015

उद्देश्य :- खनिज आधारित नवीनतम उद्योगों को आदिवासी व पिछड़े क्षेत्रों में स्थापित किया जायेगा।

प्रावधान :-

1. खनिजों का वैज्ञानिक विदोहन करना।
2. 31 प्रधान खनिज व गौण खनिज- खनन पट्टे न्यूनतम चार हेक्टेयर में जारी किये जायेंगे।
3. सैंड स्टोन खनन पट्टे न्यूनतम एक हेक्टेयर में जारी किये जायेंगे।
4. बजरी के खनन पट्टे न्यूनतम 5 हेक्टेयर से अधिकतम 50 हेक्टेयर में जारी किये जायेंगे।
5. अवैध खनन करने पर 5 साल की सजा व 5 लाख का जुर्माना होगा।
6. लॉटरी वाले खनिजों का लॉक इन पीरियड एक वर्ष का होगा।
7. खनन लाइसेंस की अवधि को 15 वर्ष से बढ़ाकर 30 वर्ष किया गया।
8. अवैध खनन क्षेत्रों में विवादों सुलझाने के लिए सेटलमेंट कमेटी का गठन किया जायेगा।
9. नवीनतम खनिज नीति में मिनरल्स डायरेक्ट्री का प्रावधान रखा गया। जिसमें खनिजों के भण्डारण एवं उत्पादन क्षेत्रों को दर्शाया जायेगा।
10. राज्य की जीडीपी में खनिज के योगदान को बढ़ाना।

नोट:-

i. मार्बल और ग्रेनाइट पॉलिसी – 2002

ii M – सैंड पॉलिसी –

- जनवरी 2021 में जारी की गई।
- उद्देश्य : M – सैंड को उद्योग का दर्जा देना एवं पर्यावरण संरक्षण है।
- M – सैंड को ग्रेनाइट से प्राप्त किया जायेगा। जिसका उपयोग सरकारी भवनों के निर्माण में 25 प्रतिशत अनिवार्य किया गया है। जिसे 50 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है।

iii विजन-2020 – यह खनिज क्षेत्र में 15 अगस्त, 1999 को शुरू किया गया।

प्रावधान:-

- खनिजों का वैज्ञानिक/सतत् पोषणीय विदोहन।
- खनन क्षेत्र में आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना।
- जी.डी.पी. में खनिज के योगदान को बढ़ाना।

G. खनिज संस्थान:-

1. RSMML - (राजस्थान स्टेट माइंस एण्ड मिनरल लिमिटेड)

- ✓ स्थापना:- 1974
- ✓ मुख्यालय:- उदयपुर।

2. हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड :-

- ✓ स्थापना:- 1966
- ✓ मुख्यालय:- देबारी (उदयपुर)
- ✓ नोट:- जिंक स्मेल्टर प्लांट की स्थापना 2005 में चंदेरिया (चित्तौड़) में की गई।

3. हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड :-

✓ स्थापना :- 1967

✓ मुख्यालय :- खेतड़ी (झुंझुनू)

नोट:- हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड की परियोजनाएँ:-

- खेतड़ी कॉपर प्रा हेजेक्ट - झुंझुनू
- चांदमारी कॉपर प्रोजेक्ट - झुंझुनू
- खो-दरीबा कॉपर प्रोजेक्ट :- अलवर

4. पेट्रोलियम रिफाइनरी:-

✓ स्थान :- पचपदरा

✓ बजट :- 43129 करोड़

✓ सहयोग :- HPCL : राज्य (74% : 26%)

✓ क्षमता :- 9 MMTPA (Million Metric Tonne Per Annum)

❖ विशेषताएँ:-

- i. यह राजस्थान की पहली और देश की 26 वीं रिफाइनरी।
- ii. इस रिफाइनरी का मानक BS (Bharat Stage) - VI होगा।
- iii. रिफाइनरी के साथ पेट्रो-केमिकल कॉम्प्लेक्स की स्थापना की जाएगी।

वनस्पति

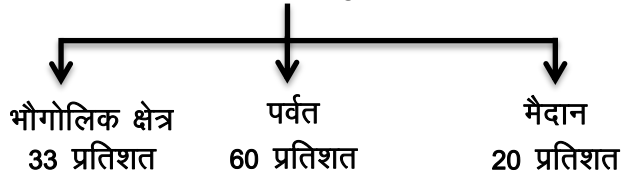
- A. वन नीतियां
- B. वन गणना
- C. वनों का वर्गीकरण
- D. प्रमुख वन सम्पदा
- E. घास
- F. वानिकी कार्यक्रम
- G. वानिकी व पर्यावरण संबंधी पुरस्कार
- H. प्रमुख अधिनियम
- I. प्रमुख दिवस
- J. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

A. वन नीतियां :-

➤ राष्ट्रीय स्तर पर:-

- 1894 – पहली वन नीति
- 1952 – स्वतंत्र भारत की पहली वन नीति
- 1988 – नवीनतम वननीति

नवीनतम वननीति के अनुसार वनों का लक्ष्य

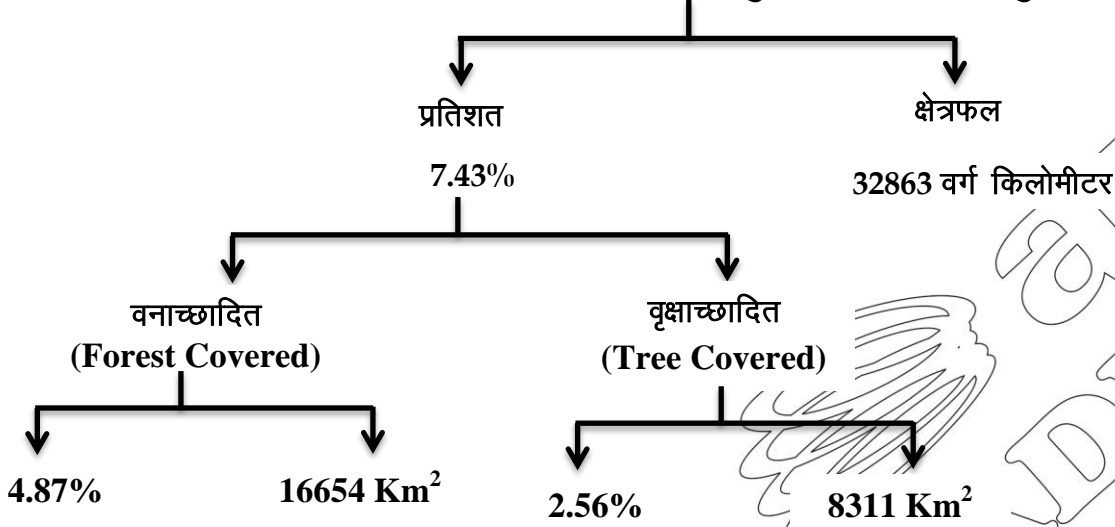


नोट:-

- राजस्थान राज्य की वन नीति – 18 फरवरी, 2010
- राज्य वननीति के अनुसार कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 20 प्रतिशत भाग पर वन होने चाहिए।
- राज्य की ईको टूरिज्म पॉलिसी – 2020 (प्रथम-4 फरवरी, 2010)

B. वन गणना –

- कार्य – वन सर्वेक्षण संस्थान – देहरादून (उत्तराखण्ड)
- समय – प्रति दो वर्ष में एक बार की जाती है।
- नवीनतम वन गणना – 17वीं (2021)
- ISFR (Indian State Forest Report) - 17th के अनुसार राजस्थान में कुल वन क्षेत्र –

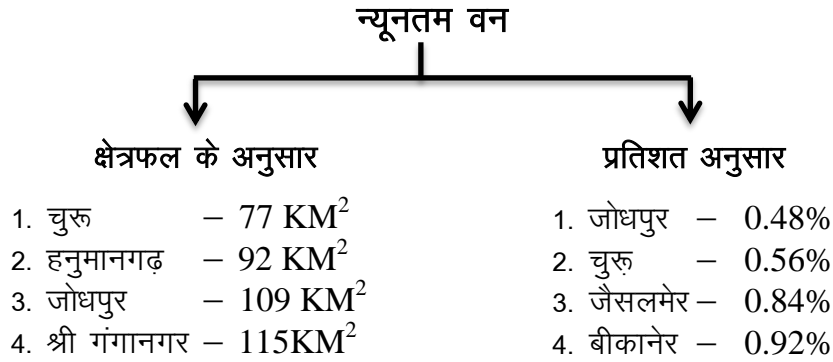


- 16वीं वन रिपोर्ट के अनुसार राज्य में सर्वाधिक वन विस्तार –

सर्वाधिक वन

क्षेत्रफल के अनुसार	प्रतिशत अनुसार
1. उदयपुर – 2753 KM ²	1. उदयपुर – 23.49%
2. अलवर – 1195 KM ²	2. प्रतापगढ़ – 23.24%
3. प्रतापगढ़ – 1033 KM ²	3. सिरोही – 17.49%
4. बारां – 1011 KM ²	4. करौली – 15.28%

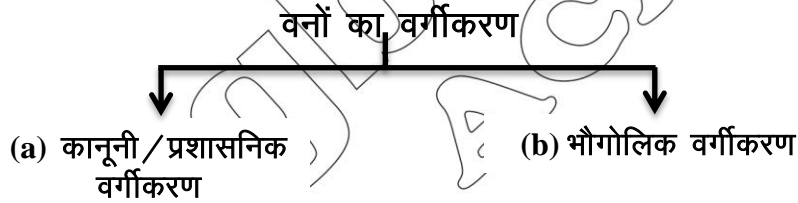
➤ 17वीं वन रिपोर्ट के अनुसार राज्य में न्यूनतम वन विस्तार –



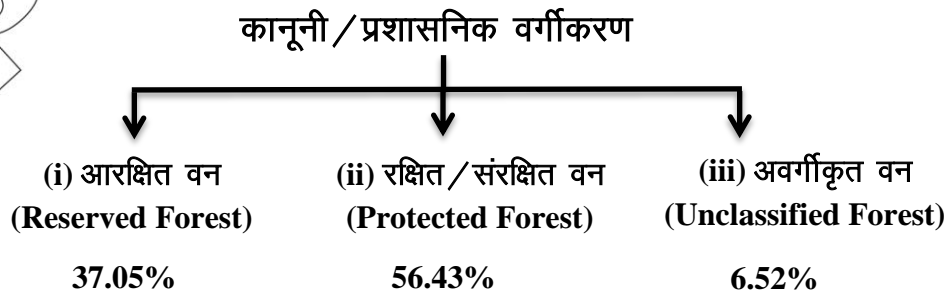
➤ **नोट:-** राजस्थान में कुल अभिलेखित वन (Recorded Forest)



C. वनों का वर्गीकरण:-



(a) **कानूनी / प्रशासनिक वर्गीकरण :-** राज्य वन अधिनियम 1953 के तहत प्रशासनिक आधार पर वनों को 3 भागों में बांटा गया है।



(i) **आरक्षित वन (Reserved Forest) :-**

➤ इन वनों में लकड़ी काटना, पशुचारण एवं आखेट/शिकार पूर्णतः प्रतिबन्धित होता है।

➤ इन वनों का सर्वाधिक विस्तार – उदयपुर

(ii) रक्षित/संरक्षित वन (Protected Forest) :-

➤ इन वनों में लकड़ी काटने एवं पशुचारण पर सीमित छूट होती है।

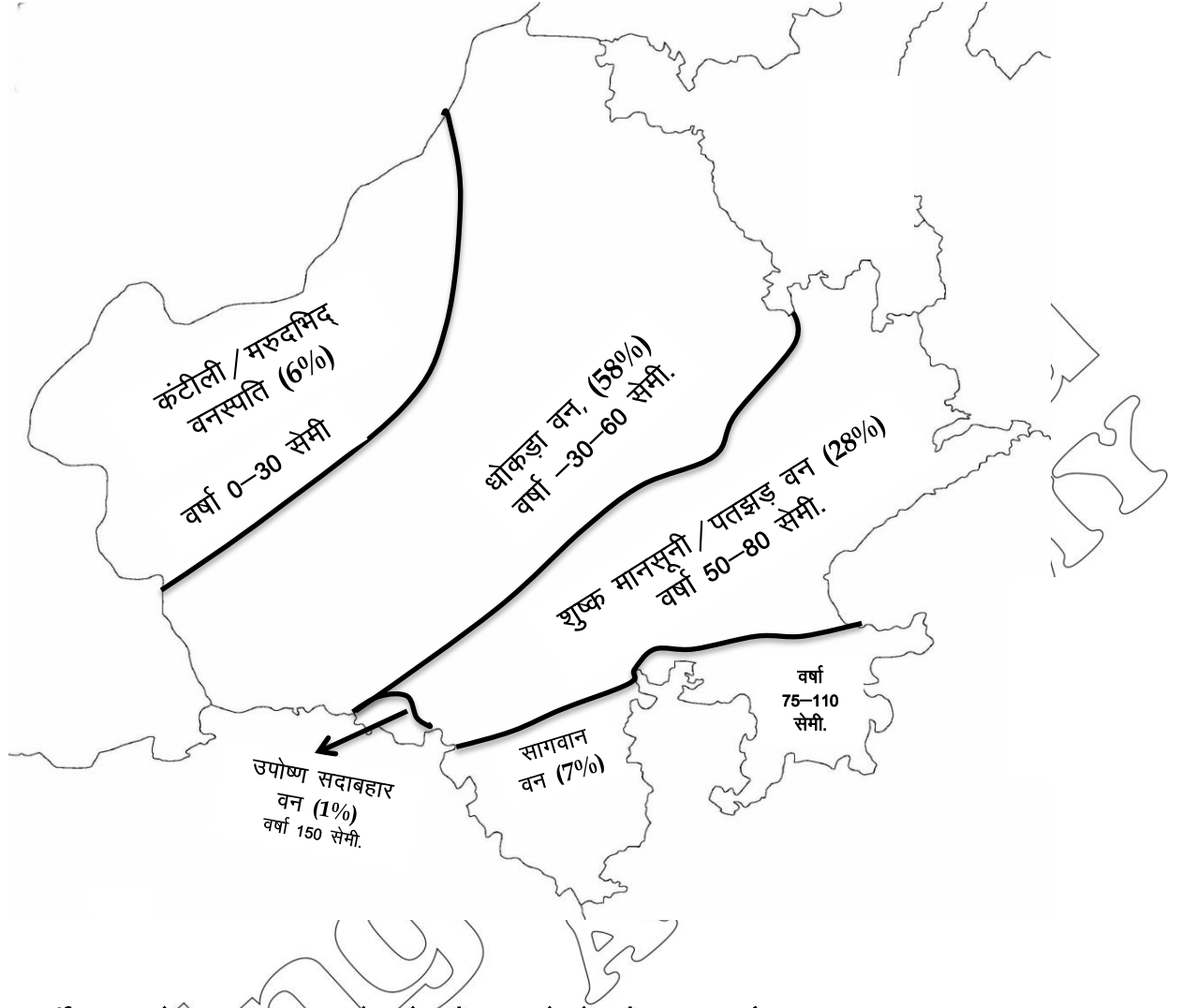
➤ इन वनों का सर्वाधिक विस्तार – बारां

(iii) अवर्गीकृत वन (Unclassified Forest) :-

➤ इन वनों में लकड़ी काटने एवं पशुचारण पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

➤ इन वनों का सर्वाधिक विस्तार – बीकानेर

(b) वनों का भौगोलिक वर्गीकरण:- तापमान व वर्षा के आधार पर वनों का भौगोलिक वर्गीकरण किया जाता है।



भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर वनों को पाँच भागों में बाँटा गया है—

- (1) उष्णकटिबंधीय कंटीले वन
- (2) उष्णकटिबंधीय धोकड़ा वन
- (3) उष्णकटिबंधीय शुष्क मानसूनी वन
- (4) उष्णकटिबंधीय सागवान वन
- (5) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन

(1) उष्णकटिबंधीय कंटीले वन:—

- वर्षा — 0 — 30 सेमी.
- वन क्षेत्र — 6 प्रतिशत

- विस्तार— शुष्क मरुस्थली क्षेत्र (जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर एवं जोधपुर)
- प्रमुख वन — नागफनी, एलोवेरा, कंटीली झाड़ी
- महत्व — मरुस्थलीकरण को रोकने में।

(2) उष्णकटिबंधीय धोकड़ा वन:—

- वर्षा — 30 — 60 सेमी.
- वन क्षेत्र — 58 प्रतिशत
- विस्तार— अर्द्धशुष्क मरुस्थली क्षेत्र (लूनी—बेसिन, नागौर, शेखावाटी, करौली एवं सवाईमाधोपुर)
- प्रमुख वन — खेजड़ी, रोहिड़ा, बबूल, बैर एवं कैर।
- महत्व — ईंधन की लकड़ी प्राप्त की जाती है।

(3) उष्णकटिबंधीय शुष्क मानसूनी वन:—

- वर्षा — 50 — 80 सेमी.
- वन क्षेत्र — 28 प्रतिशत
- विस्तार— अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा एवं राजसमंद
- प्रमुख वन — साल, सागवान, शीशम, आम एवं चन्दन।
- महत्व — इन वनों का आर्थिक महत्व सर्वाधिक होता है। उदाहरण— ईमारती लकड़ी के रूप में।

(4) उष्णकटिबंधीय सागवान वन:—

- वर्षा — 75 — 110 सेमी.
- वन क्षेत्र — 7 प्रतिशत
- विस्तार— बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, कोटा एवं झालावाड़।
- प्रमुख वन — गुलर, महुआ एवं तेन्दु।
- महत्व — औद्योगिक क्षेत्र में उपयोगी।

(5) उष्णकटिबंधीय सदाबहान वन:—

- वर्षा — 150 सेमी.

- वन क्षेत्र – 1 प्रतिशत
- विस्तार– माऊंट आबू
- प्रमुख वन – डिकल्पटेरा आबू ऐंसिस (अम्बरतरी), जामुन एवं बांस।
- महत्व – इन वनों में अधिक जैव विविधता पाई जाती है।

D. प्रमुख वन सम्पदा

1. खेजड़ी :- वैज्ञानिक नाम – प्रोसोपिस सिनेरेरिया (सर्वाधिक – पश्चिमी राजस्थान)
अन्य उपनाम – राज्य वृक्ष (1983)/राज्य का गौरव/शमी वृक्ष/राज्य का कल्पवृक्ष/जांटी (स्थानीय भाषा में)
नोट:- विजयादशमी/दशहरा के अवसर पर खेजड़ी की पूजा की जाती है।
2. रोहिड़ा – वैज्ञानिक नाम – टीकोमेला अंडूलेटा (सर्वाधिक – पश्चिमी राजस्थान)
अन्य उपनाम :- राज्य पुष्प (1983)/मरुस्थल का साम्राज्य
3. महुआ – वैज्ञानिक नाम – मधुका लॉगिफोलिया (सर्वाधिक – डूंगरपुर)
 - इसे "आदिवासियों का कल्पवृक्ष" कहा जाता है।
 - महुआ फूल का उपयोग शराब बनाने में किया जाता है।
4. पलाश/ढाक/खाखरा – वैज्ञानिक नाम – ब्युटिया मोनोस्पेर्मा (सर्वाधिक – राजसमंद)
 - इसे "जंगल की ज्वाला" कहा जाता है।
5. डिकल्पटेरा आबू ऐंसिस (अम्बरतरी) :- यह एक औषधीय पादप है जो विश्व में केवल माऊंट आबू में पाया जाता है।
6. खैर (सर्वाधिक – उदयपुर, चित्तौड़गढ़)
 - उदयपुर, चित्तौड़गढ़ में, कथौड़ी जनजाति द्वारा इस वृक्ष की छाल से "कत्था" तैयार किया जाता है।
7. शहतूत – (सर्वाधिक – उदयपुर)
 - इस वृक्ष पर रेशमकीट से रेशम उत्पादित किया जाता है। इस पालन को सेरीकल्चर कहा जाता है।
8. तेंदू – (सर्वाधिक – प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ एवं हाड़ौती)
 - इसकी पत्तियों का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है।
 - इसकी पत्तियों को "टिमरू" कहा जाता है।
 - 1974 में टिमरू के पेड़ का राष्ट्रीयकरण हुआ।

9. जामुन – (सर्वाधिक– माउंट आबू, सिरौही एवं अजमेर)

- मधुमेह के उपचार में उपयोगी।

10. सागवान – (सर्वाधिक – बांसवाड़ा)

- इसकी लकड़ी का उपयोग मुख्यतः फर्नीचर बनाने में किया जाता है।

E. प्रमुख घास



(i) सेवण/लीलोण – वैज्ञानिक नाम – लसीयूरस सिंडिकस (सर्वाधिक – जैसलमेर)

- ✓ पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी।
- ✓ इसे गोखावण की शरणस्थली भी कहा जाता है।

(ii) धामण – वैज्ञानिक नाम – सेन्क्रस सेटीजेरस (सर्वाधिक – जैसलमेर)

- ✓ दुधारू पशुओं के लिए उपयोगी।

(iii) बांस – वैज्ञानिक नाम – बम्बुसा वल्गरिस, (सर्वाधिक – बाँसवाड़ा)

- ✓ यह सर्वाधिक लम्बी घास होती है जिसे आदिवासियों का "हरा सोना" भी कहा जाता है।

(iv) खस घास (सर्वाधिक – भरतपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक एवं अजमेर)

✓ यह सुगंधित घास है। जो शरबत बनाने एवं इत्र बनाने में उपयोगी होती है।

(v) बुर घास (सर्वाधिक – बीकानेर)

✓ यह सुगंधित घास है।

(vi) मोचिया घास (सर्वाधिक – चूरु)

✓ यह तालछापर अभ्यारण्य में पाई जाती है।

F. वृक्षारोपण कार्यक्रम –

1. मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम –

➤ शुरुआत – 1977–78

➤ जिले – 10

➤ वित्तीय भागीदारी – केंद्र (75 प्रतिशत) – राज्य (25 प्रतिशत)

नोट:- मरुस्थल विकास कार्यक्रम (DDP)

प्रारंभ – 1977–78

जिला –16

वित्तीय सहयोग – केंद्र : राज्य (75 : 25)

2. अरावली वृक्षारोपण योजना –

➤ शुरुआत– 1992

➤ सहयोग – जापान

3. राज्य वानिकी क्रियान्वन योजना –

➤ शुरुआत – 1996 से 2016 (20 वर्षीय कार्यक्रम)

4. ऑपरेशन खेजड़ी

➤ शुरुआत 1991

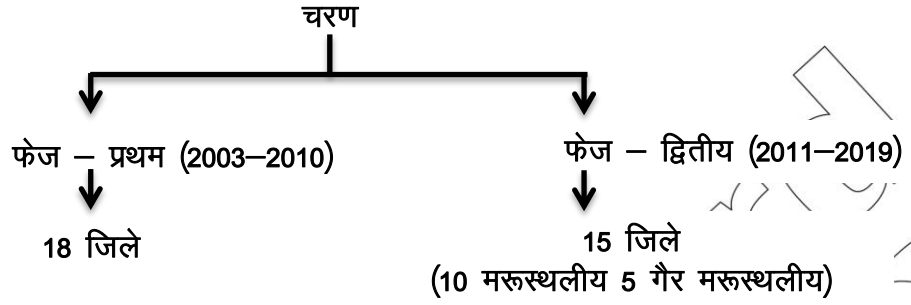
➤ उद्देश्य– मरुस्थलीकरण को रोकना

5. राजस्थान वानिकी और जैव – विविधता परियोजना –

➤ सहायता – जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेशन एजेंसी (JICA) ।

➤ उद्देश्य:-

- वनों एवं जैव – विविधता को बढ़ाना।
- मिट्टी एवं जल संरक्षण।
- गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका कार्यक्रम



नोट:- फेज – द्वितीय में गैर मरुस्थलीय जिलों में जयपुर, सिरोही, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर एवं भीलवाड़ा को शामिल किया गया है।

6. हरित राजस्थान कार्यक्रम – (2009 – 2014 तक)

- यह वृक्षारोपण की पंचवर्षीय योजना है।

7. वन धन योजना (राज्य सरकार) (12 अगस्त, 2015) –

उद्देश्य – वन क्षेत्रों के निकट रहने वाले लोगों के विकास एवं उनकी वनों पर निर्भरता कम करने व रोजगार उपलब्ध करवाने की योजना।

8. वन-धन विकास योजना (केन्द्र सरकार) –

- शुरुआत – 14 अप्रैल 2018

G. वन संरक्षण पुरस्कार:-

1. अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार –

- प्रारंभ – 1994

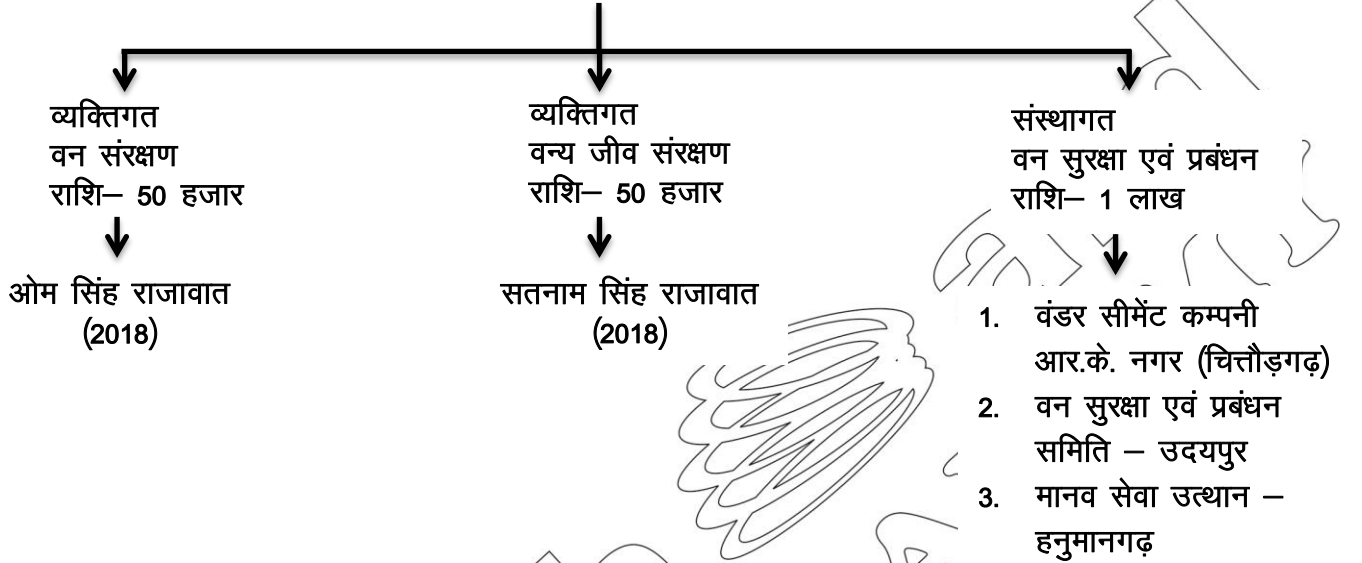
- उद्देश्य:-

(1) वृक्षारोपण

(2) वन संरक्षण

(3) वन्य जीवन संरक्षण

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है



2. इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार :-

- यह पुरस्कार भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा उन व्यक्तियों और संस्थानों को दिया जाता है जिन्होंने वनीकरण और बंजर भूमि विकास के क्षेत्र में अग्रणी और अनुकरणीय कार्य किया है।
- राशि - 2,50,000 रु.

3. राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार :-

- शुरुआत - 2012 (5 जून)

4. कैलाश सांखला वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार :-

- राशि - 50 हजार रुपये (वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु)

5. वनपालक पुरस्कार :-

- यह पुरस्कार सरकारी विभाग में कार्य करने वाले वन रक्षक और वन विभाग के कर्मचारियों को दिया जाता है।

H. वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी कानून/अधिनियम

1.	वन्य जीव संरक्षण अधिनियम	—	1972
2.	बाघ संरक्षण अधिनियम	—	1973
3.	मगरमच्छ संरक्षण अधिनियम	—	1975
4.	वन संरक्षण अधिनियम	—	1980 (संशोधित 1988)
5.	पर्यावरण संरक्षण अधिनियम	—	1986
6.	हाथी संरक्षण अधिनियम	—	1992
7.	जैव विविधता संरक्षण अधिनियम	—	2002
8.	डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम	—	2009

नोट:— राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड का गठन 14 सितम्बर, 2010 जयपुर में किया गया।

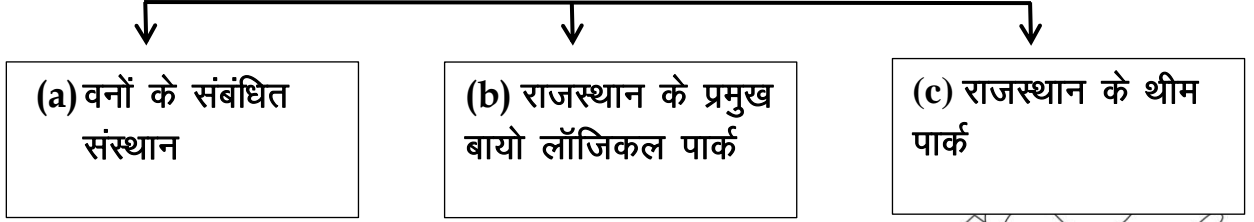
I. प्रमुख वन एवं पर्यावरण दिवस:—

- 14 जनवरी, 31 जनवरी — जीव जंतु पखवाड़ा
- 2 फरवरी — रामसर/ विश्व आर्द्रभूमि दिवस (Its time for wetlands Restoration)
- 21 मार्च — विश्व वानिकी दिवस (Forest and Health)
- 22 मार्च — जल दिवस (परिवर्तन में तेजी –Accelerating change)
- 22 अप्रैल — पृथ्वी दिवस (Invest in Our Planet)
- 22 मई — जैव विविधता दिवस (From Agreement to Action:Build Back Biodiversity)
- 5 जून — विश्व पर्यावरण दिवस (Only one earth)
- 1 जुलाई से 7 जुलाई — वन महोत्सव एवं वन सप्ताह
- 16 सितम्बर — ओजोन दिवस (Global Cooperation)

Protecting Life on Earth)

- 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर – वन्य जीव सप्ताह

J. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दू



(a) वनों के संबंधित संस्थान:—

(1) काजरी (CAZRI) - Central Arid Zone Research Institute

- स्थापना:— 1959 जोधपुर

(2) आफरी (AFRI) - Arid Forest Research Institute

- स्थापना:— 1988 जोधपुर

(b) राजस्थान के प्रमुख बायो लॉजिकल पार्क — 5

- | | | |
|-----------------|---|--------------------------------|
| 1. सज्जनगढ़ | — | उदयपुर |
| 2. माचिया सफारी | — | जोधपुर |
| 3. नाहरगढ़ | — | जयपुर |
| 4. अभेड़ा | — | कोटा (नांता) — निर्माणाधीन |
| 5. मरुधरा | — | बीकानेर (बीछवाल) — निर्माणाधीन |

(c) राजस्थान के थीम पार्क —

- | | | |
|-------------------------|---|-------------------------|
| 1. प्रकृति पार्क | — | चूरु, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) |
| 2. कैक्टस गार्डन | — | कुलधारा (जैसलमेर) |
| 3. बटरफलाई पार्क | — | जयपुर |
| 4. बोगनवेलिया थीम पार्क | — | जयपुर, उदयपुर |
| 5. जैव विविधता पार्क | — | गमधर (उदयपुर) |

नोट:— Monkey Valley of Rajasthan - गलता जी (जयपुर)

वनस्पति

- A. प्रमुख वन सम्पदा एवं घास
B. वानिकी कार्यक्रम
C. वानिकी व पर्यावरण संबंधी पुरस्कार
D. प्रमुख अधिनियम एवं परियोजनाएं
E. प्रमुख दिवस
F. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

A. प्रमुख वन सम्पदा एवं घास

- खेजड़ी :- वैज्ञानिक नाम - प्रोसोपिस सिनेरेरिया (सर्वाधिक - पश्चिमी राजस्थान)**
अन्य उपनाम - राज्य वृक्ष (1983)/राज्य का गौरव/शमी वृक्ष/राज्य का कल्पवृक्ष/जाटी (स्थानीय भाषा में)
नोट:- विजयादशमी/दशहरा के अवसर पर खेजड़ी की पूजा की जाती है।
- रोहिड़ा - वैज्ञानिक नाम - टीकोमेला अंडूलेटा (सर्वाधिक - पश्चिमी राजस्थान)**
अन्य उपनाम :- राज्य पुष्प (1983)/मरुस्थल का साम्रान
- महुआ - वैज्ञानिक नाम - मधुका लॉगिफोलिया (सर्वाधिक - डूंगरपुर)**
 - इसे "आदिवासियों का कल्पवृक्ष" कहा जाता है।
 - महुआ के फूलों का उपयोग शराब बनाने में किया जाता है।
- पलाश/ढाक/खाखरा - वैज्ञानिक नाम - ब्युटिया मोनोस्पर्मा (सर्वाधिक - राजसमंद)**
 - इसे "जंगल की ज्वाला" कहा जाता है।
- डिक्लिप्टेरा आबु ऐसिस (अम्बरतरी) :- यह एक औषधीय पादप है जो विश्व में केवल माउंट आबू में पाया जाता है।**
- खैर (सर्वाधिक - उदयपुर, चित्तौड़गढ़)**
 - उदयपुर, चित्तौड़गढ़ में, कथौड़ी जनजाति द्वारा इस वृक्ष की छाल से "कत्था" तैयार किया जाता है।
- शहतूत - (सर्वाधिक - उदयपुर)**
 - इस वृक्ष पर रेशमकीट से रेशम उत्पादित किया जाता है। इस पालन को सेरीकल्चर कहा जाता है।
- तेंदू - (सर्वाधिक - प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ एवं हाड़ौती)**
 - इसकी पत्तियों का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है।
 - "टिमरू" तेंदू फल को कहा जाता है।
 - 1974 में तेंदू पेड़ का राष्ट्रीयकरण किया गया।

9. जामुन – (सर्वाधिक– माउंट आबू, सिरौही एवं अजमेर)

- मधुमेह के उपचार में उपयोगी।

10. सागवान – (सर्वाधिक – बांसवाड़ा)

- इसकी लकड़ी का उपयोग मुख्यतः फर्नीचर बनाने में किया जाता है।

प्रमुख घास



(i) सेवण/लीलोण – वैज्ञानिक नाम – लेसियुरस सिंडिकस (सर्वाधिक – जैसलमेर)

- ✓ दूधारू पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी।
- ✓ इसे गोडावण की शरणस्थली भी कहा जाता है।

(ii) धामण – वैज्ञानिक नाम – सेन्क्रस सेटीजेरस (सर्वाधिक – जैसलमेर)

- ✓ दुधारू पशुओं के लिए उपयोगी।

(iii) बांस – वैज्ञानिक नाम – बम्बुसा वल्गारिस, (सर्वाधिक – बाँसवाड़ा)

- ✓ यह सर्वाधिक लम्बी घास होती है जिसे आदिवासियों का "हरा सोना" भी कहा जाता है।

(iv) खस घास (सर्वाधिक – सवाईमाधोपुर, भरतपुर, टोंक एवं अजमेर)

✓ यह सुगंधित घास है। जो शरबत बनाने एवं इत्र बनाने में उपयोगी होती है।

(v) बुर घास (सर्वाधिक – बीकानेर)

✓ यह सुगंधित घास है।

(vi) मोचिया घास (सर्वाधिक – चूरू)

✓ यह तालछापर अभ्यारण्य में पाई जाती है।

B. वृक्षारोपण कार्यक्रम –

1. मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम –

➤ शुरुआत – 1977-78

➤ जिले – 10

➤ वित्तीय भागीदारी – केंद्र (75 प्रतिशत) – राज्य (25 प्रतिशत)

नोट:- मरुस्थल विकास कार्यक्रम (DDP)

प्रारंभ – 1977-78

जिला – 16

वित्तीय सहयोग – केंद्र : राज्य (75 : 25)

2. ऑपरेशन खेजड़ी

➤ शुरुआत 1991

➤ उद्देश्य- मरुस्थलीकरण को रोकना

3. अरावली वृक्षारोपण योजना –

➤ शुरुआत- 1992

➤ सहयोग – जापान

➤ शामिल जिले – 10 (अलवर, जयपुर, सीकर झुंझुनू, नागौर, पाली, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़ एवं बांसवाड़ा)

4. राज्य वानिकी क्रियान्वन योजना –

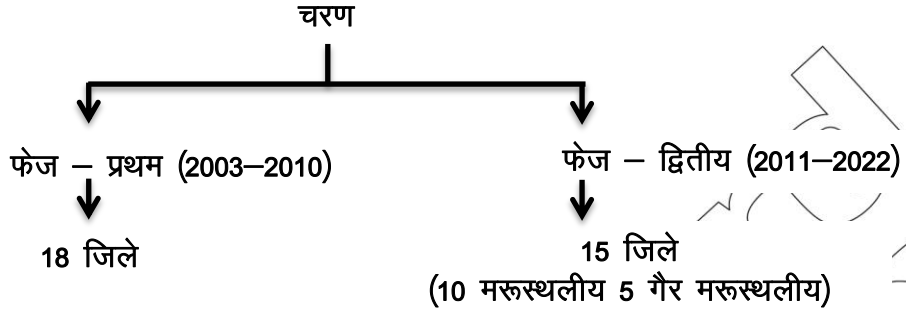
➤ शुरुआत – 1996 से 2016 (20 वर्षीय कार्यक्रम)

5. राजस्थान वानिकी और जैव – विविधता परियोजना –

➤ सहायता – जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेशन एजेंसी (JICA) ।

➤ उद्देश्य:-

- वनों एवं जैव – विविधता को बढ़ाना ।
- मिट्टी एवं जल संरक्षण ।
- गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका कार्यक्रम



नोट:- फेज - द्वितीय में गैर मरुस्थलीय जिलों में जयपुर, सिरोही, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर एवं भीलवाड़ा को शामिल किया गया है।

6. हरित राजस्थान कार्यक्रम – (2009 – 2014 तक)

➤ यह वृक्षारोपण की पंचवर्षीय योजना है।

7. वन धन योजना (राज्य सरकार) (12 अगस्त, 2015) –

उद्देश्य – वन क्षेत्रों के निकट रहने वाले लोगों के विकास एवं उनकी वनों पर निर्भरता कम करने व रोजगार उपलब्ध करवाने की योजना।

8. वन-धन विकास योजना (केंद्र सरकार) –

➤ शुरुआत- 14 अप्रैल 2018

➤ उद्देश्य – गैर लकड़ी आधारित उत्पादों द्वारा आदिवासियों की आय को बढ़ाना।

9. घर-घर औषधि योजना –

➤ शुरुआत – 1 अगस्त 2021 (2021 से 2026)

➤ उद्देश्य – रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना

– औषधीय पादपों को बढ़ाना

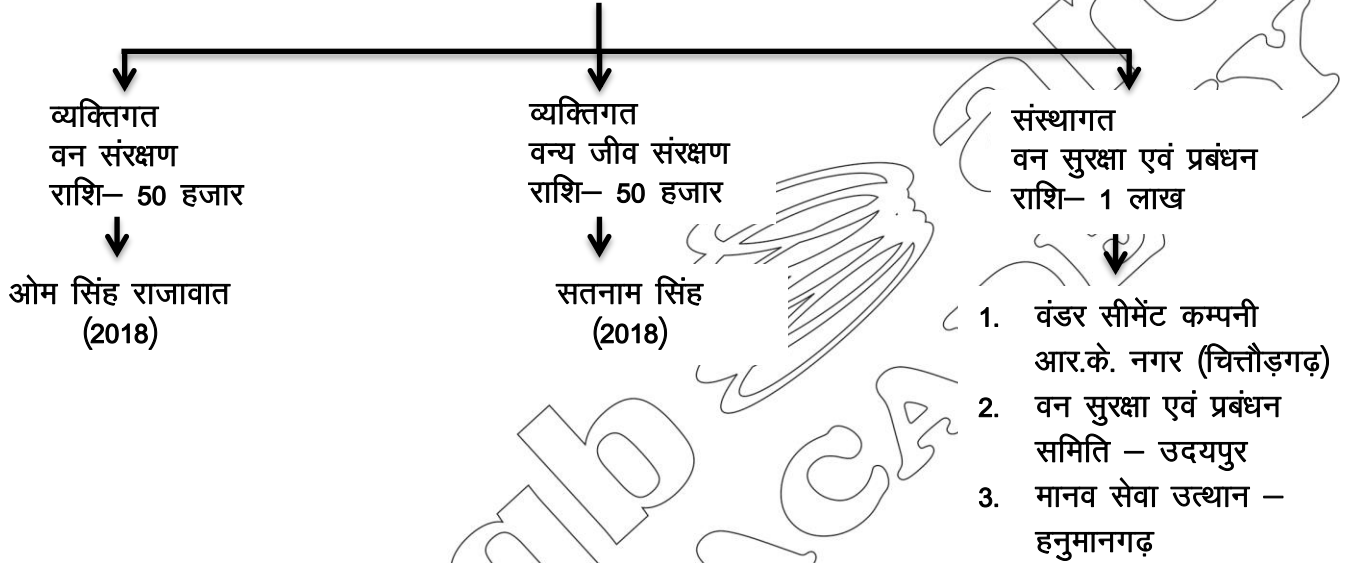
नोट:- इस योजना में 4 पादपों को शामिल किया गया है- तुलसी, अश्वगंधा, कालमेघ एवं गिलोय।

C. वन संरक्षण पुरस्कार:-

1. अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार –

- प्रारंभ – 1994
- उद्देश्य:-
 - (1) वृक्षारोपण
 - (2) वन संरक्षण
 - (3) वन्य जीवन संरक्षण

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है



2. इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार :- (शुरूआत-1986)

- यह पुरस्कार भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा उन व्यक्तियों और संस्थानों को दिया जाता है जिन्होंने वनीकरण और बंजर भूमि विकास के क्षेत्र में अग्रणी और अनुकरणीय कार्य किया है।
- राशि – 2,50,000 रु.

3. राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार :-

- शुरूआत – 2012 (5 जून)

4. कैलाश सांखला वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार :-

- राशि – 50 हजार रुपये (वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु)

5. वनपालक पुरस्कार :-

- यह पुरस्कार सरकारी विभाग में कार्य करने वाले वन रक्षक और वन विभाग के कर्मचारियों को दिया जाता है।

D. वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी अधिनियम एवं परियोजनाएं

1.	वन्य जीव संरक्षण अधिनियम	—	1972
2.	बाघ संरक्षण परियोजना	—	1973
3.	मगरमच्छ संरक्षण परियोजना	—	1975
4.	वन संरक्षण अधिनियम	—	1980 (संशोधित 1988)
5.	पर्यावरण संरक्षण अधिनियम	—	1986
6.	हाथी संरक्षण परियोजना	—	1992
7.	जैव विविधता संरक्षण अधिनियम	—	2002
8.	डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम	—	2009

नोट:— राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड का गठन 14 सितम्बर, 2010 जयपुर में किया गया।

E. प्रमुख दिवस:—

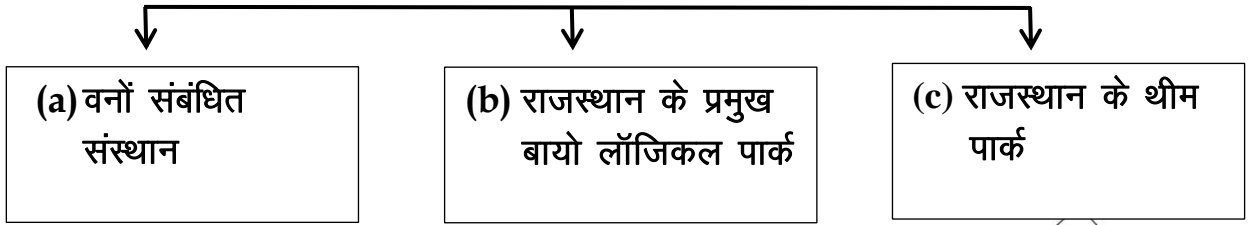
➤ 14 जनवरी, 31 जनवरी	—	जीव जंतु पखवाड़ा
➤ 2 फरवरी	—	रामसर / विश्व आर्द्रभूमि दिवस
➤ 21 मार्च	—	विश्व वानिकी दिवस
➤ 22 मार्च	—	जल दिवस
➤ 22 अप्रैल	—	पृथ्वी दिवस
➤ 22 मई	—	जैव विविधता दिवस
➤ 5 जून	—	विश्व पर्यावरण दिवस
➤ 1 जुलाई से 7 जुलाई	—	वन महोत्सव एवं वन सप्ताह
➤ 16 सितम्बर	—	ओजोन दिवस
➤ 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर	—	वन्य जीव सप्ताह

थीम-2023

➤ 2 फरवरी	—	It's time for wetlands Restoration
➤ 21 मार्च	—	Forest and Health
➤ 22 मार्च	—	Accelerating change to solve the water and sanitation crisis.
➤ 22 अप्रैल	—	Invest in Our Planet
➤ 22 मई	—	From Agreement to Action:Build Back Biodiversity
➤ 5 जून	—	Beat Plastic Pollution
➤ 16 सितम्बर	—	Global Cooperation Protecting Life on Earth

F.

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दू



(a) वनों के संबंधित संस्थान:-

(1) काजरी (CAZRI - Central Arid Zone Research Institute)

➤ स्थापना:- 1959 जोधपुर

➤ उप-केन्द्र (5) - बीकानेर, जैसलमेर, पाली, भुज (कच्छ-गुजरात) एवं लेह (लद्दाख)

(2) आफरी (AFRI - Arid Forest Research Institute)

➤ स्थापना:- 1987 जोधपुर

(b) राजस्थान के प्रमुख बायो लॉजिकल पार्क - 5

- | | | |
|-----------------|---|--------------------------------|
| 1. सज्जनगढ़ | - | उदयपुर |
| 2. माचिया सफारी | - | जोधपुर |
| 3. नाहरगढ़ | - | जयपुर |
| 4. अभेड़ा | - | कोटा (नांता) - निर्माणाधीन |
| 5. मरुधरा | - | बीकानेर (बीछवाल) - निर्माणाधीन |

(c) राजस्थान के थीम पार्क -

- | | | |
|--------------------------|---|-------------------------|
| 1. प्रकृति पार्क | - | बुरू, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) |
| 2. कैक्टस गार्डन | - | कुलधारा (जैसलमेर) |
| 3. बटरफलाई पार्क | - | जयपुर |
| 4. बोगनवेलिया थीम पार्क | - | उदयपुर एवं जयपुर |
| 5. जैव विविधता पार्क | - | गमधर (उदयपुर) |
| 6. किशनबाग जयपुर के धोरे | - | जयपुर |
| 7. सिटी पार्क | - | जयपुर |

नोट: - मंकी वैली (Monkey Valley) of Rajasthan - गलता जी (जयपुर)

- बटरफलाई वैली - कुलिश स्मृति वन (जयपुर)

वन्य जीवन

असम के बाद, राजस्थान वन्य जीवों में दूसरा स्थान रखता है। आजादी से पहले राजस्थान को "शिकारियों के स्वर्ग" के रूप में जाना जाता था। आजादी के बाद, पेड़ों की अनियंत्रित कटाई और अवैध शिकार के कारण, केंद्र और राज्य सरकार दोनों वन और वन्यजीव संरक्षण के लिए संयुक्त रूप से प्रयासरत है।

वन्य जीवों को दो तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है।

वन्य जीव संरक्षण

I. स्व: स्थाने संरक्षण (In-Situ)

I. स्व: स्थाने संरक्षण :- जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में संरक्षित करना। **उदाहरण** – राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्य, बाघ संरक्षण परियोजना, रामसर साइट, कंजर्वेशन रिजर्व, आखेट निषेध क्षेत्र एवं जैव मंडल

II. बाह्य स्थाने संरक्षण (Ex-Situ)

II. बाह्य स्थाने संरक्षण :- जीवों को उनके प्राकृतिक आवास के बाहर संरक्षित करना। **उदाहरण:-** जंतुआलय, मृग उद्यान, पशु जीन बैंक एवं एक्वेरियम

I. स्व: स्थाने संरक्षण :-

A. राष्ट्रीय पार्क :- राजस्थान में कुल राष्ट्रीय उद्यान तीन हैं जो निम्नलिखित हैं –

नाम	रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान	केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान
जिला	सवाई माधोपुर	भरतपुर	कोटा एवं चित्तौड़गढ़
क्षेत्र	282.03 वर्ग कि.मी	28.73 वर्ग कि.मी	199.55 वर्ग कि.मी
तारीख	1980	1981	2012
टिप्पणी	<ul style="list-style-type: none"> राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान बाघों का घर कहा जाता है। राजस्थान की प्रथम बाघ परियोजना (प्रमुख बाघिन मछली / T-16) त्रिनेत्र गणेश मंदिर, जोगी महल एवं कुक्कुर घाटी स्थित 	<ul style="list-style-type: none"> यूनेस्को धरोहर सूची में शामिल राज्य की एकमात्र प्राकृतिक धरोहर। (1985) शीत ऋतु में साइबेरियन सारस यहाँ आते हैं। इसे पक्षियों का स्वर्ग कहा जाता है। 1981 में इसे रामसर साइट में शामिल किया गया। 	<ul style="list-style-type: none"> राजस्थान का नवीनतम राष्ट्रीय उद्यान गागरोनी तोते के लिए प्रसिद्ध राज्य की तीसरी बाघ परियोजना।

B. राज्य अभयारण्य :- राजस्थान में कुल अभयारण्य 26 है जो निम्नलिखित है -

राज्य अभयारण्य - 26	
<p>सबसे बड़ा</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. राष्ट्रीय मरुउद्यान - 3162KM² 2. कैलादेवी अभयारण्य - 677KM² 3. कुम्भलगढ़ अभयारण्य - 611KM² 	<p>सबसे छोटा</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. सरिस्का -अ - 3KM² 2. सज्जनगढ़ अभयारण्य - 5KM² 3. तालछापर अभयारण्य - 7KM²

C. प्रमुख अभयारण्य

नाम	क्षेत्र	स्थापित वर्ष	विशेषताएं
1. रामसागर	धौलपुर	1955	
2. वन विहार	धौलपुर	1955	
3. केसर बाग	धौलपुर	1955	
4. सरिस्का	अलवर	1955	राजस्थान की दूसरी बाघ परियोजना
सरिस्का 'अ'	अलवर	2012	मोर और हरे कबूतर के लिए प्रसिद्ध
5. सवाई माधोपुर	सवाई माधोपुर	1955	
6. जयसमंद	उदयपुर	1955	इसे "जलचरो" की बस्ती भी कहा जाता है।
7. दर्डा	कोटा और झालावाड़	1955	गागरोनी तोते
8. तालछापर	चुरू	1962	काले हिरण एवं कुरजा पक्षी
9. कुम्भलगढ़	उदयपुर, पाली और राजसमंद	1971	भेड़ियों एवं रणकपुर जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध
10. जवाहरसागर	बूंदी, कोटा, चित्तौड़गढ़	1975	घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध
11. राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल	धौलपुर, करोली, सवाईमाधोपुर, बूंदी, कोटा	1979	मगरमच्छ, डॉल्फिन के लिए प्रसिद्ध

12. सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण्य	चित्तौड़गढ़ और उदयपुर	1979	यहाँ अधिकतम जैव विविधता पाई जाती है। उडन गिलहरी, पैंगोलिन, चीतल और चौसिंगा के लिए प्रसिद्ध
13. नाहरगढ़	जयपुर	1980	इसे जैविक उद्यान के रूप में विकसित किया गया। इसे एकजोटिक पार्क के रूप में स्थापित किया जाएगा। इस अभ्यारण्य में लॉयन स्फ़ारी की शुरुआत की गई।
14. राष्ट्रीय मरु उद्यान	जैसलमेर, बाडमेर (3612 वर्ग किमी)	1980	यह राज्य का सबसे बड़ा अभ्यारण्य है। इस अभ्यारण्य में सेवण घास सर्वाधिक पाई जाती है। गोडावण पक्षी और चिंकारा इस अभ्यारण्य में अधिक पाई जाती है। इस अभ्यारण्य में फॉसिल पार्क स्थित है।
15. रामगढ़ विषधारी	बूंदी	1982	इस अभ्यारण्य में अजगर पाए जाते हैं। मेज नदी इस अभ्यारण्य से बहती है।
16. जमवासमगढ़	जयपुर	1982	यहां धोक वन पाए जाते हैं। यहां जमवाय माता का मन्दिर स्थित है।
17. टाँडगढ़ अरावली	अजमेर, पाली, राजसमंद	1983	
18. फूलवारी की नाल	उदयपुर	1983	इस अभ्यारण्य में सोम, मानसी और वाकल नदियां बहती हैं।
19. भैंसरोडगढ़	चित्तौड़गढ़	1983	घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध।

			ये अभयारण्य चंबल और ब्राह्मणी नदियों के किनारे स्थित है।
20. शेरगढ़	बारां	1983	ये सांपों, शेरगढ़ दुर्ग व परवन नदी के लिए प्रसिद्ध है।
21. कैलादेवी	करौली एवं सवाईमाधोपुर	1983	यहां धोक वन सर्वाधिक पाए जाते हैं।
22. सवाई मानसिंह	सवाईमाधोपुर	1984	
23. बंध बरेठा	भरतपुर	1985	इसे पक्षियों का घरोंदा भी कहा जाता है।
24. सज्जनगढ़	उदयपुर	1987	इसमें प्रथम बायोलॉजिकल पार्क बनाया गया है।
25. बस्सी	चित्तौड़गढ़	1988	
26. माउंट आबू	सिरोही	2008	इस अभयारण्य में "डिकल्पटेरा आबू ऐसिस" वनस्पति पाई जाती है।

D. बाघ परियोजना :- राजस्थान में कुल 4 बाघ परियोजना है जो निम्नलिखित है—

क्र. सं.	बाघ परियोजना	स्थापना	विस्तार	क्षेत्रफल KM ²	शामिल क्षेत्र
1.	रणथम्भौर	1974	सवाईमाधोपुर, करौली, बून्दी, टोंक	1407	रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान, सवाईमाधोपुर अभयारण्य, कैलादेवी अभयारण्य, राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य
2.	सरिस्का	1978	अलवर, जयपुर जयपुर	1213	सरिस्का अभयारण्य, एवं जमवारामढ़ अभयारण्य
3.	मुकुंदरा हिल्स	2013	कोटा, बून्दी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़	760	मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान, दरा अभयारण्य, चम्बल अभयारण्य, जवाहरसागर अभयारण्य
4.	रामगढ़ विषधारी	2021	बून्दी, कोटा, झालावाड़	1502	रामगढ़ विषधारी

E. रामसर साइट / आर्द्र भूमि / नम भूमि (Wet Land) :- वर्तमान में राजस्थान में दो रामसर साइटें हैं

स्थान	वर्ष	विशेषताएं
केवलादेव	1981	साइबेरियन सारस
सांभर	1990	कुरजा एवं राजहंस

F. कंजर्वेशन रिजर्व – 27

➤ वर्तमान में राज्य में कुल 27 कंजर्वेशन रिजर्व हैं।

क्र.सं.	कंजर्वेशन रिजर्व	—	स्थान
1.	जोड़बीड़ गढ़वाला	—	बीकानेर
2.	जवाई बाँध लैपर्ड - I	—	धाली
3.	जवाई बाँध लैपर्ड - II	—	प्राली
4.	बीड़	—	झुंझुनू
5.	बांसियाल – खेतड़ी	—	झुंझुनू
6.	बांसियाल – खेतड़ी बागौर	—	झुंझुनू
7.	मनसा माता	—	झुंझुनू
8.	बीसलपुर	—	टोंक
9.	सुधा माता	—	जालोर, सिरोही
10.	शाकम्भरी	—	सीकर, झुंझुनू
11.	ग्रागेलाव	—	नागौर,
12.	रोटू	—	नागौर
13.	गुढा विश्नोई	—	जोधपुर
14.	उम्मेदगंज पक्षी विहार	—	कोटा
15.	शाहबाद जंगल	—	बारां

16.	बीड़ घास फुलिया खुर्द	—	भीलवाड़ा
17.	बागदरा मगरमच्छ	—	उदयपुर
18.	रण खार	—	जालौर
19.	शाहबाद—तलहटी	—	बारां
20.	वाड़ाखेड़ा	—	सिरोही
21.	झालाना आमागढ़	—	जयपुर
22.	रामगढ़—कुंजी—सुनवास	—	बारां
23.	अरवर गाँव	—	अजमेर
24.	सोरसन	—	बारां
25.	खींचन	—	जोधपुर
26.	हमीरगढ़	—	भीलवाड़ा
27.	बांझ—अमली	—	बारां

G. आखेट निषेध क्षेत्र —

- राजस्थान में कुल 33 आखेट निषेध क्षेत्र हैं।
- सर्वाधिक आखेट निषेध क्षेत्र — जोधपुर (7)
- सबसे बड़ा — कोटसर सम्बतसर — चुरु — बीकानेर
- सबसे छोटा — कनक सागर (बून्दी)

II. बाह्य स्थाने संरक्षण :-

A. जंतुआलय :- राजस्थान में कुल 5 जंतुआलय हैं।

1. **जयपुर जंतुआलय :-** यह राज्य का प्रथम जंतुआलय है जिसे रामसिंह—द्वितीय द्वारा 1876 में रामनिवास बाग में स्थापित किया गया। जिसे वर्तमान में नाहरगढ़ अभयारण्य में स्थानान्तरित किया गया है।
2. **उदयपुर जंतुआलय :-** यह राज्य का दूसरा जंतुआलय है। जिसे 1878 में गुलाबबाग (उदयपुर) में स्थापित किया गया है।
3. **बीकानेर जंतुआलय :-** इसकी स्थापना 1922 में की गई। यह वर्तमान में बन्द है।

4. जोधपुर जन्तुआलय :- इसकी स्थापना 1936 में की गई। यहाँ पक्षीशाला एवं गोडावन प्रजनन केन्द्र स्थित है।

5. कोटा जन्तुआलय :- इसकी स्थापना 1954 में की गई।

B. मृग उद्यान :- राजस्थान में कुल 7 मृग उद्यान हैं।

क्र.सं.	मृग उद्यान	—	स्थान
1.	अशोक	—	जयपुर
2.	संजय	—	जयपुर
3.	अमृता देवी	—	जोधपुर
4.	माचिया सफारी	—	जोधपुर
5.	पुष्कर	—	अजमेर
6.	सज्जनगढ़	—	उदयपुर
7.	दुर्ग	—	चित्तौड़गढ़

► वन्य जीव शुभंकर — वन विभाग ने मार्च, 2016 में प्रत्येक जिले के लिए एक वन्य जीव शुभंकर (Mascot) घोषित किया।

क्र.सं.	जिला	—	शुभंकर	क्र.सं.	जिला	—	शुभंकर
1.	अजमेर	—	खड़मोर पक्षी	2.	भीलवाड़ा	—	मोर
3.	अलवर	—	साभर	4.	बाँसवाड़ा	—	जलपीपी
5.	बारां	—	मगरमच्छ	6.	बाड़मेर	—	लोमड़ी / लौंकी
7.	बीकानेर	—	बटबड़ / रेत का तीतर	8.	भरतपुर	—	साइबेरियन सारस
9.	बूंदी	—	सुर्खाब	10.	चित्तौड़गढ़	—	चौसिंगा
11.	चूरू	—	काला हिरण	12.	झुंझुनूं	—	काला तीतर
13.	दौसा	—	खरगोश	14.	धौलपुर	—	पंचीरा (इंडियन स्क्रीमर)
15.	डूंगरपुर	—	जांघिल	16.	हनुमानगढ़	—	छोटा किलकिला (किंग फिशर)
17.	जैसलमेर	—	गोडावण	19.	झालावाड़	—	गागरोनी तोता
18.	जालौर	—	भालू	21.	करौली	—	मगरमच्छ
20.	जोधपुर	—	कुरजा पक्षी				

22. कोटा	– उदबिलाव	23. नागौर	– राजहंस
24. टोंक	– हंस	25. पाली	– तेंदुआ
26. प्रतापगढ़	– उड़न गिलहरी	27. राजसमंद	– भेड़िया
28. सवाई माधोपुर	– बाघ	29. श्री गंगानगर	– चिंकारा
30. सीकर	– शाहिन (बाज)	31. उदयपुर	– कब्र बिज्जू
32. सिरोही	– जंगली मुर्गी	33. जयपुर	– चीतल

➤ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दू –

(a) मुख्य वन्य जीव

1. चिंकारा :-

- 1981 में राज्य पशु घोषित किया गया।
- वैज्ञानिक नाम – गजेला गजेला”
- नाहरगढ़ अभयारण्य और राष्ट्रीय मरुस्थल अभयारण्य चिंकारा के लिए प्रसिद्ध हैं।

2. गोडावण :-

- 1981 में राज्य पक्षी घोषित किया गया।
- वैज्ञानिक नाम – “Ardeotis Nigriceps”
- इसे “ग्रेट इंडियन बस्टर्ड” एवं “सोन चिड़िया” भी कहा जाता है।
- यह सर्वाधिक जैसलमेर (मरू उद्यान), अजमेर (सांखलिया) एवं बारां (सोरसन) में पाया जाता है।
- गोडावण प्रजनन केंद्र जोधपुर, जैसलमेर एवं बारां (सोरसन) में स्थित है।

कृषि

- ❖ परिचय
- ❖ कृषि का महत्त्व
- ❖ कृषि के प्रकार
- ❖ कृषि का वर्गीकरण
- ❖ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

परिचय :-

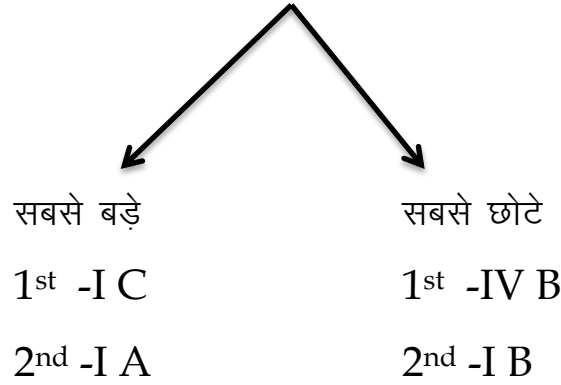
- भारतीय कृषि मुख्यतः मानसून पर आधारित है। (राजस्थान) इस कारण इसे 'मानसून का जुआ' कहा जाता है।
- पूर्वी मैदान में कृषि उत्पादकता अधिक होती है, इस कारण इसे 'कृषि का हृदय स्थल' कहा जाता है। (भारत-उत्तर विशाल मैदान)
- राजस्थान को कुल 10 जलवायु प्रदेशों में बांटा गया है।
- राजस्थान में कृषि जलवायु प्रदेश - 10 है।
- भारत में कृषि जलवायु प्रदेश - 15

राजस्थान में कृषि जलवायु प्रदेश



1. I A – पश्चिमी शुष्क मैदान, जिले –बाड़मेर, जोधपुर
2. I B – उत्तरी-पश्चिमी सिंचित मैदान, जिले– गंगानगर, हनुमानगढ़, (नहरों से अधिक सिंचित)
3. I C – अतिशुष्क एवं आंशिक सिंचित मैदान
विस्तार–जैसलमेर, बीकानेर, चुरू
(नवीनतम कृषि जलवायु प्रदेश)
4. II A – शेखावाटी अन्तः प्रवाह मैदान
विस्तार– नागौर, सीकर, झुंझुनू, आंशिक चुरू
5. II B – लूनी अन्तवर्ती मैदान
विस्तार– पाली, जालौर, सिरोही
6. III A – अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदान
विस्तार – जयपुर, दौसा, अजमेर, टोंक
7. III B – बाढ़ संभाव्य पूर्वी मैदान
विस्तार – अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर (ABCD) एवं आंशिक सवाईमाधोपुर
8. IV A – उपार्द्र दक्षिणी मैदान
विस्तार– उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़, भीलवाड़ा
9. IV B – आर्द्र दक्षिणी मैदान
विस्तार–बांसवाड़ा, डुंगरपुर, प्रतापगढ़ एवं उदयपुर, चित्तौड़ का दक्षिणी भाग
10. V – आर्द्र दक्षिणी-पूर्वी मैदान
विस्तार – कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ एवं आंशिक सवाईमाधोपुर

राजस्थान के कृषि जलवायु प्रदेश



❖ कृषि का महत्व:-

1. रोजगार में योगदान – कुल जनसंख्या में कृषि पर आधारित जनसंख्या

भारत – 54.6 प्रतिशत

राजस्थान – 62 प्रतिशत

2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में योगदान –

✓ आयात – खाद्य तेल

✓ निर्यात – खाद्यान (अनाज + दलहन)

3. GSV (Gross State Value Added) में योगदान –

स्थिर किमतों पर (2011-2012)		प्रचलित/चालू किमतों पर	
वर्ष	प्रतिशत	वर्ष	प्रतिशत
2021 – 2022	29.22	2021 – 2022	29.39
2022 – 2023	28.50	2022 – 2023	28.95

4. उद्योगों में योगदान – कृषि आधारित उद्योग लगभग 15 प्रतिशत है जिसमें सबसे बड़ा उद्योग सूती वस्त्र एवं उसके बाद चीनी उद्योग है।

कृषि के प्रकार

वैज्ञानिक प्रकार

सामान्य प्रकार

वैज्ञानिक प्रकार—

कृषि	उत्पादन
सेरीकल्चर	रेशम / रेशम कीट
पिसीकल्चर	मछली
एपिकल्चर	शहद
विटीकल्चर	अंगूर
होर्टीकल्चर	बागवानी (फल, फूल, सब्जी)
पोमोकल्चर	फल
फलोरीकल्चर	फूल
ऑलेरीकल्चर	सब्जियाँ
ऑलिवीकल्चर	ऑलिव / जैतून
सिल्वीकल्चर	वनों
वर्मीकल्चर	केंचुआ

सामान्य प्रकार—

1. मिश्रित कृषि — कृषि व पशुपालन की संयुक्त रूप से करना।

Note : राजस्थान में मिश्रित कृषि सर्वाधिक बाड़मेर में की जाती है।

2. बारानी कृषि — वह कृषि जो मानसून आधारित होती है बारानी कृषि कहलाती है।

Note : राजस्थान में बारानी कृषि सर्वाधिक बाड़मेर में की जाती है।

3. शुष्क कृषि — वह कृषि जो 75 cm से कम वर्षा पर आधारित होती है।

जैसे— बाजरा, मूंग, मोठ, ग्वार, चना

4. आर्द्र कृषि — वह कृषि जो 75 cm से अधिक वर्षा पर आधारित होती है।

जैसे — गन्ना, चावल, गेहूँ, कपास

5. मोनोकल्चर— एक कृषि वर्ष में एक खेत में एक फसल का उत्पादन।
6. ड्यूओकल्चर — एक कृषि वर्ष में एक खेत में दो फसल का उत्पादन।
7. ओलिगोकल्चर— एक कृषि वर्ष में एक खेत में तीन फसल का उत्पादन।
8. रिलेक्चर — रिले कृषि बहुफसल की एक पद्धति है जिसमें बोई गई फसल के साथ दूसरी फसल को बो दिया जाता है। उसे रिले कृषि कहा जाता है।

Note — कृषि वर्ष का अर्थ — 1 जुलाई से 30 जून

9. खड़ीन कृषि — पश्चिमी राजस्थान में पालीवाल ब्राह्मणों के द्वारा शुरू की गई कृषि को खड़ीन कृषि कहा जाता है।

- यह कृषि मुख्यतः जैसलमेर में प्रचलित है।

10. शिपिटिंग/स्थानांतरित/झूमिंग कृषि — पेड़ों को काटकर एवं जलाकर की जाने वाली कृषि को स्थानांतरित/झूमिंग कृषि कहा जाता है।

अन्य नाम—कर्तन—दहन कृषि

Note : राजस्थान में स्थानांतरित कृषि को 'वालरा' कहा जाता है।

राजस्थान में यह कृषि —

अरावली क्षेत्र में—चिमाता

मैदान में — दजिया

राजस्थान में स्थानांतरित कृषि मुख्यतः बांसवाड़ा, डुंगरपुर एवं उदयपुर में की जाती है। जिसे आदिवासियों के कृषि एवं पर्यावरण की दुश्मन भी कहा जाता है।

भारत — नागालैंड, असम

कृषि फसलों का बर्गीकरण —

A. मौसम के आधार पर

B. उपयोग के आधार पर

A. मौसम के आधार पर

1. खरीफ/स्यालू —

(i) समय — जून — जुलाई से सितम्बर — अक्टूबर (Short Day Plant)

अनाज	दालें	तिलहन	नकदी
बाजरा	मूंग	मूंगफली	कपास
मक्का	मोठ	सोयाबीन	गन्ना
चावल	अरहर/तूअर	तिल	ग्वार
रागी	चवला	अरण्डी	
ज्वार	उड़द	सूर्यमुखी	

2. रबी/उनालू –

- (i) समय – अक्टूबर – नवम्बर से मार्च – अप्रैल (Long Day Plant)
- (ii) फसल – गेहूँ, जौ, चना, मसूर, मटर, मेथी, सरसों, तारामीरा, ईसबगोल, जीरा/राई/सौंफ धनिया, प्याज/लहसुन/अदरक मिर्च/धनिया/हल्दी, अफीम, अलसी, तम्बाकू, बरसीम (फसलों का राजा) इत्यादि।

3. जायद –

- (i) समय – मार्च – अप्रैल से मई – जून
- (ii) फसल – हरी सब्जियाँ, खरबूजा, तरबूज, पशुओं को चारा, ककड़ी इत्यादि।

B. उपयोग के आधार पर

1. खाद्यान/अनाज –

- वे फसलें जिनका उपयोग खाद्य फसलों के रूप में किया जाता है।

उदाहरण:- गेहूँ, जौ, चावल, बाजरा, मक्का, ज्वार इत्यादि।

- नोट:- राजस्थान की प्रमुख खाद्यान फसल बाजरा जबकि देश/विश्व में प्रमुख खाद्यान फसल चावल है।

2. दलहन/भूमि उर्वर फसलें –

- दलहन फसले :- चना (प्रमुख), मसूर, मटर, मूंग, मोठ, उड़द, अरहर, सोयाबीन इत्यादि।
- नोट:- अरहर की दाल भूमि की उर्वरकता को कम करती है।

3. नगदी/व्यापारिक फसलें –

- वे फसले जो उद्योगों में कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

उदाहरण:— कपास, मूंगफली, सरसों, ग्वार, गन्ना

- इसमें अनाज व दलहन को शामिल नहीं किया जाता है।

4. तिलहन फसलें –

- वे फसलें जिनसे तेल उत्पादित किया जाता है।

उदाहरण – तिल, मूंगफली, सरसों (राजस्थान की प्रमुख), तारामीरा, सूर्यमुखी (Sunflower), सोयाबीन इत्यादि।

5. रेशेदार फसलें –

- वे फसलें जिनसे रेशा प्राप्त किया जाता है।

उदाहरण— कपास, जूट इत्यादि।

6. पेय फसलें –

- वे फसलें जिनका उपयोग पेय (पीने) के रूप में किया जाता है।

उदाहरण— चाय, कॉफी, तम्बाकू इत्यादि।

प्रमुख कृषि फसलों के अनुकूल भौतिक दशाएँ

क्र.सं.	फसल का नाम	तापमान	वर्षा की मात्रा	मिट्टी
(1)	बाजरा	30° – 35° से.	25 – 50 सेमी.	बलुई/रेतीली मिट्टी
(2)	मक्का	21° – 27° से.	50 – 80 सेमी.	लाल चिकनी मिट्टी
(3)	जौ	15° – 20° से.	50 – 80 सेमी.	जलोढ़ मिट्टी
(4)	गेंहूँ	15° – 20° से.	50 – 100 सेमी.	जलोढ़ मिट्टी
(5)	कपास	21° – 27° से.	50 – 100 सेमी.	
(6)	गन्ना	21° – 30° से.	125 – 150 सेमी.	

कृषि व वन अनुसंधान केन्द्र

I. कृषि अनुसंधान केन्द्र-

i. केन्द्र (ICAR)- सेवर (भरतपुर), तबीजी (अजमेर) एवं बीछवाल (बीकानेर), काजरी(जोधपुर)

1. केन्द्रीय शुष्क बागवानी अनुसंधान केन्द्र-बीछवाल (बीकानेर- 1993)

2. CAZRI (Central Arid Zone Research Institute)

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान

स्थापना - 1959 जोधपुर

अनुसंधान - पादपों एवं कृषि फसलों पर

Note : काजरी के उपकेन्द्र

राजस्थान (बीकानेर, जैसलमेर, पाली)

गुजरात (कच्छ, भुज)

लद्दाख (लेह)

3. बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र-तबीजी (अजमेर)

स्थापना- 2000

स्थिति - डूमाड़ा (तबीजी, अजमेर)

4. केन्द्रीय सरसों एवं रेपसीड अनुसंधान केन्द्र - सेवर (भरतपुर)

स्थापना - 1993

II. राज्य :-

RARI (Rajasthan Agriculture Research center)

राज्य कृषि अनुसंधान केन्द्र-दुर्गापुरा (जयपुर)

स्थापना – 1943

1. ज्वार अनुसंधान केन्द्र– वल्लभनगर (उदयपुर)
2. मक्का अनुसंधान केन्द्र– बांसवाड़ा
3. चावल अनुसंधान केन्द्र– बांसवाड़ा
4. बाजरा अनुसंधान केन्द्र– जोधपुर
5. ईसबगोल अनुसंधान केन्द्र– जोधपुर
6. बेर अनुसंधान केन्द्र – बीकानेर
7. खजूर अनुसंधान केन्द्र– बीकानेर

II. उत्कृष्टता केन्द्र:-

केन्द्र COE(Centre of Excellence)	जिला
खजूर उत्कृष्टता केन्द्र	सगरा भोजका (जैसलमेर)
बाजरा उत्कृष्टता केन्द्र	जोधपुर
सीताफल उत्कृष्टता केन्द्र	चित्तौड़गढ़
सब्जी उत्कृष्टता केन्द्र	बूंदी
सिट्रस/नींबू वर्गीय पादप	नांता (कोटा)
सिट्रस,मसाले एवं औषधीय पादप	झालावाड़
अमरुदे उत्कृष्टता केन्द्र	देवड़ावास, सवाईमाधोपुर-टोंक
फूलों का उत्कृष्टता केन्द्र	सवाईमाधोपुर-टोंक
अनार उत्कृष्टता केन्द्र ऑलिव (जैतून)	बस्सी,जयपुर

ड्रैगन फ्रूट (पिशाचफल)	
एपीकल्चर उत्कृष्टता केन्द्र	टोंक
अंजीर उत्कृष्टता केन्द्र	सिरोही
आम उत्कृष्टता केन्द्र	खेमरी (धौलपुर)

❖ कृषि संबंधी नीतियाँ –

1. राज्य की नवनीतम कृषि नीति – 26 जून 2013
2. राजस्थान की "जैविक कृषि नीति" –
➤ शुरुआत – जून 2017
3. कृषि प्रसंस्करण, कृषि व्यापार, कृषि निर्यात-प्रोत्साहन नीति

दिसम्बर 2019

(3) कृषि फसलों की विशेष जिन्स / किस्म

क्र.सं. नाम – किस्म

1. गेहूँ – कल्याण सोना-1482, सोनालिका, मालविका, लेरमा, नबी(NABI)-MG(मरू गेहूँ), कोहिनूर, मंगला, गंगा सुनहरी, दुर्गापुरा-65, चम्बल-65, मैक्सियन, लाल बहादुर, शरबती, HD – 3226
2. मक्का – माही कंचन, माही धवल, पूसा HM-4, पूसा HM-8, पूसा HM-9, अरुण, किरण, प्रभात
3. जौ – करन, कैलाश, केदार, ज्योति
4. बाजरा – राज.- 171, RCB- 2, RCB- 911, RHB- 30
5. कपास – नरमा, बीकानेरी नरमा, RST-9, PST-9, वीरनार, वराह लक्ष्मी
6. गन्ना – Co-419, Co-449, Co-1007, Co-1111, Co-0238 (करण-4)

प्रमुख फसलों का उत्पादन—

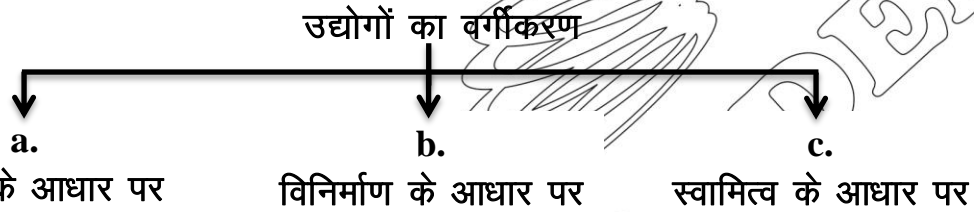
1. **गेहूँ** – (i) हनुमानगढ़ (ii) श्रीगंगानगर
2. **बाजरा** – (i) अलवर (ii) बाड़मेर (iii) जयपुर
3. **जौ** – (i) श्रीगंगानगर (ii) जयपुर
4. **मक्का** – (i) भीलवाड़ा (ii) चित्तौड़गढ़ (iii) उदयपुर
5. **कपास** – (i) हनुमानगढ़ (ii) श्रीगंगानगर
6. **गन्ना** – (i) श्रीगंगानगर (ii) चित्तौड़गढ़ (iii) बूंदी

Springboard
ACADEMY

उद्योग

- उद्योगों की दृष्टि से राजस्थान देश का पिछड़ा हुआ राज्य है।
- इसका मुख्य कारण आधारभूत संरचना का अल्प विकास व जलवायु को माना जाता है।
- कोटा को तीव्र औद्योगिक विकास के कारण राजस्थान की "औद्योगिक नगरी" कहा जाता है।
- उद्योगों की दृष्टि से राजस्थान का देश में 10वाँ स्थान है।
- वर्तमान में राजस्थान में –
 1. सर्वाधिक उद्योग / फ़ैक्ट्री – जयपुर
 2. सर्वाधिक वृहद उद्योग – अलवर

A. उद्योगों का वर्गीकरण :-

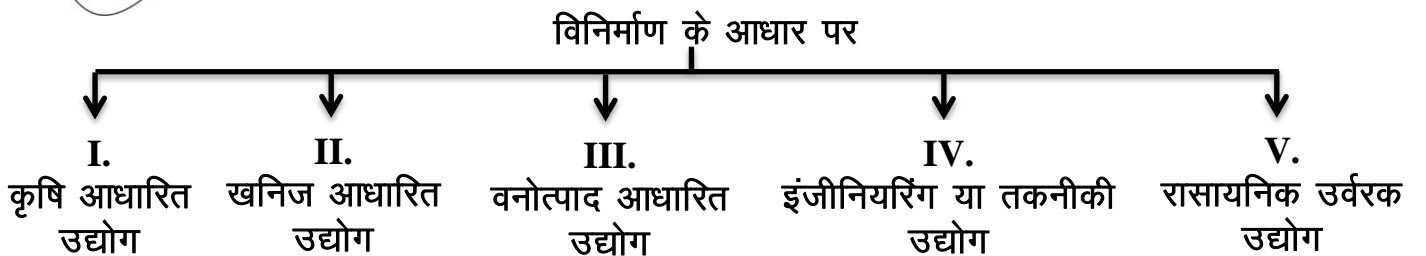


a. आकार के आधार पर :- आकार के आधार पर उद्योगों को 3 भागों में बांटा जाता है जिसका आधार पूँजी एवं टर्नओवर है।

उद्योग	पूँजी / निवेश	टर्नओवर
1. अतिलघु उद्योग	1 करोड़	5 करोड़
2. लघु	1 से 10 करोड़	5 से 50 करोड़
3. मध्यम	10 से 50 करोड़	50 से 250 करोड़

कुटीर उद्योग – निम्न तकनीक पर आधारित उद्योग जिन का उद्देश्य लाभ प्राप्त करने के स्थान पर आजीविका चलाना होता है।

b. विनिर्माण के आधार पर :- विनिर्माण के आधार पर उद्योगों का कच्चे माल के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है।

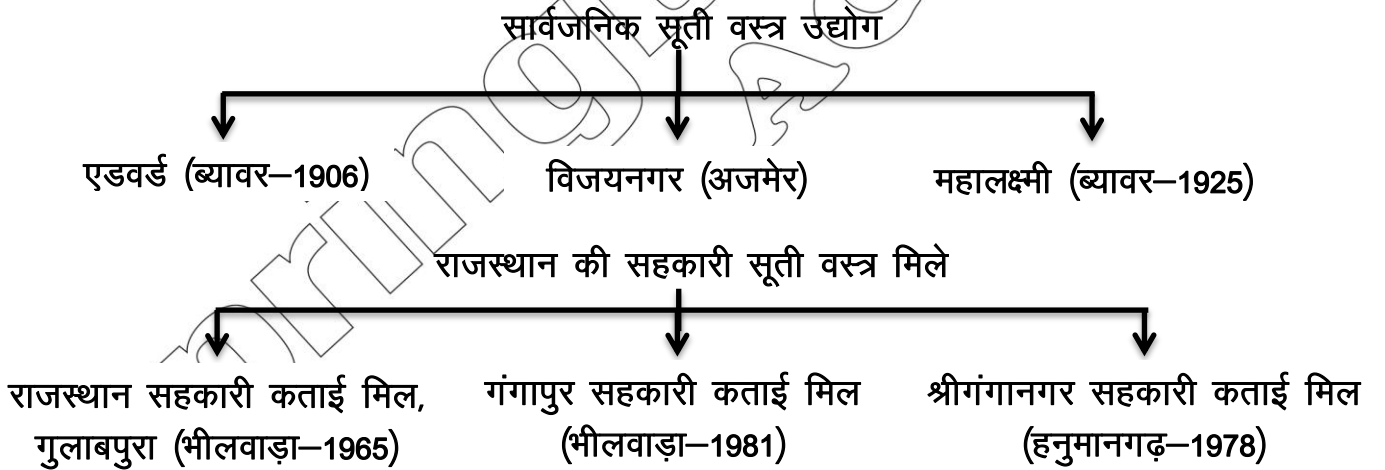


I. कृषि आधारित उद्योग :-

1. सूती वस्त्र उद्योग
2. चीनी उद्योग
3. ऊन उद्योग
4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग
5. डेयरी उद्योग
6. बायोडीजल
7. जैतून तेल उद्योग

1. सूती वस्त्र उद्योग :-

- कच्चा माल – कपास
- प्रथम सूती वस्त्र मिल – दी कृष्णा कॉटन मिल
- स्थापना – 1889 (ब्यावर, अजमेर)
- संस्थापक – सेठ दामोदर दास राठी एवं कर्नल डिक्सन



❖ स्पिनफैड (SPINFED – Rajasthan State Cooperative Spinning and Ginning Mills Federation Limited)

- स्थापना – 1 अप्रैल, 1993
- यह सहकारी सूती वस्त्र मिलों का संघ है।

➤ जिसमें तीनों सहकारी सूती वस्त्र मिल एवं गुलाबपुरा स्पिनिंग & जिनिंग (भीलवाड़ा)सहकारी वस्त्र मिल शामिल है।

नोट : स्पिनफैड (राजस्थान स्टेट कॉर्पोरेटिव स्पिनिंग & जिनिंग मिल फेडरेशन)

स्थापना : 1 अप्रैल 1993

यह सहकारी सूती वस्त्र मिलों का संघ है।

अपवाद : श्रीगंगानगर सहकारी कताई मिल—हनुमानगढ़

गंगमूल – हनुमानगढ़

जयपुर सीमेन्ट फैक्ट्री—सवाईमाधोपुर

➤ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :-

1. महाराजा उम्मेद मिल्स लिमिटेड – पाली (1942) जो राजस्थान की सबसे बड़ी सूती मिल है।

2. सूती वस्त्र उद्योग कृषि आधारित सबसे बड़ा उद्योग है।

3. यह एक परम्परागत उद्योग है।

4. महिलायें सर्वाधिक इसी उद्योग में कार्यरत है।

नोट:- भीलवाड़ा को राजस्थान का मैनचेस्टर / वस्त्रनगरी / टैक्सटाइल सिटी कहा जाता है।

उभरता मैनचेस्टर—भिवाड़ी (अलवर)

2. चीनी उद्योग :-

कच्चा माल – गन्ना एवं चुकन्दर

राजस्थान में चीनी मिलें

➤ मेवाड़ शुगर मिल (1932) चित्तौड़गढ़
प्रथम – निजी चीनी मिल

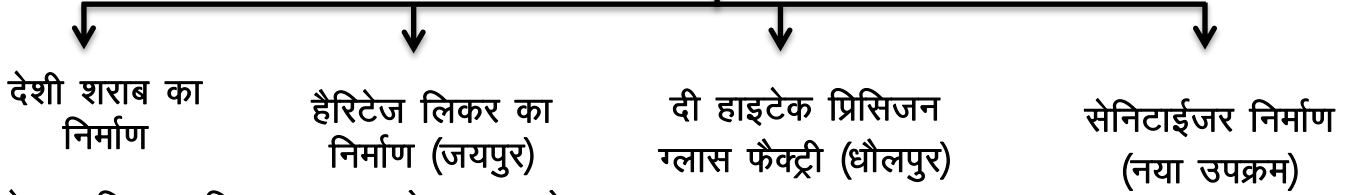
➤ उदयपुर शुगर मिल (1976)

गंगानगर शुगर मिल
(1937) श्रीगंगानगर
प्रथम – सार्वजनिक चीनी
मिल, 1956

केशोरायपाटन शुगर मिल
(1965 बूँदी)
प्रथम – सहकारी चीनी
मिल

नोट:- गंगानगर शुगर मिल एक मात्र शुगर मिल है। जहां गन्ने एवं चुकन्दर (1968) से चीनी बनाई गई। वर्तमान में यह बन्द है। जिसके द्वारा वर्तमान में चार उपक्रमों का संचालन किया जाता है।

गंगानगर शुगर मिल



नोट : कृषि आधारित दूसरा सबसे बड़ा उद्योग

3. ऊन उद्योग :-

- ऊन उत्पादन में राजस्थान (45.91 प्रतिशत) का देश में प्रथम स्थान है। (2nd J & K)
- राजस्थान में सर्वाधिक ऊन उत्पादन – जोधपुर

प्रमुख ऊन केन्द्र/संस्थान –

- केन्द्रीय ऊन बोर्ड – जोधपुर
- राजस्थान में सबसे बड़ी ऊन मण्डी – बीकानेर
- वूल टेस्टिंग प्रयोगशाला – बीकानेर
- स्टेट वूल मिल – बीकानेर
- ऊन प्रशिक्षण केंद्र – जयपुर
- केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केंद्र – अविकानगर (टोंक)

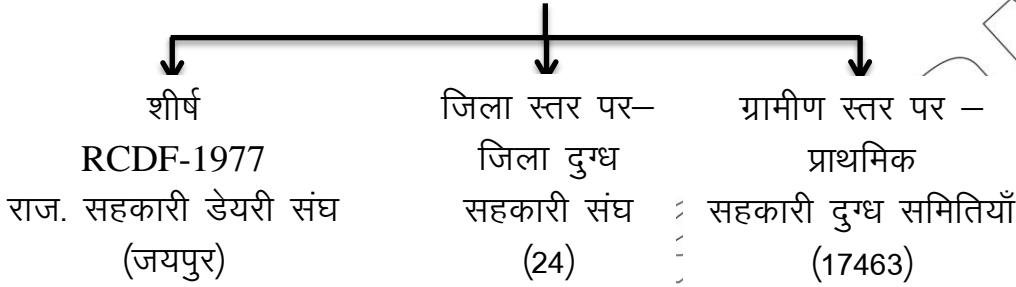
4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग :-

- राजस्थान में प्रथम वनस्पति घी फैक्ट्री – भीलवाड़ा (स्थापना 1964)
- वर्तमान में वनस्पति घी का सर्वाधिक उत्पादन – जयपुर
- सरसों तेल का उत्पादन सर्वाधिक – जयपुर
- सरसों तेल के प्रमुख कारखानें –
 - ✓ चम्बल – जयपुर
 - ✓ वीर बालक – जयपुर
 - ✓ नेताजी – जयपुर
 - ✓ ईजन मार्का – भरतपुर

5. डेयरी उद्योग :-

- राजस्थान में डेयरी उद्योग का सर्वाधिक विकास – जयपुर में हुआ है।
- राजस्थान की प्रथम डेयरी – पद्मा (अजमेर) 1938
- राजस्थान राज्य डेयरी विकास निगम 1975 में विश्व बैंक के सहयोग से **जयपुर** में स्थापित किया गया।
- डेयरी विकास के लिए राज्य में त्रिस्तरीय ढाँचा बनाया गया है।

डेयरी विकास के लिए राज्य में त्रिस्तरीय ढाँचा



- RCDF (Rajasthan Co-Operative Dairy Federation) को राजस्थान डेयरी विकास निगम के स्थान पर बनाया गया।

➤ नोट :- राजस्थान में संचालित प्रमुख डेयरी :-

- ✓ वरमूल (WRMUL) – Western Rajasthan Milk Union Ltd. (जोधपुर)
- ✓ उरमूल (URMUL) - Uttari Rajasthan Milk Union Ltd. (बीकानेर)
- ✓ गंगमूल (Gangmul) - Ganganagar Milk Union Ltd (हनुमानगढ़)
- ✓ मेट्रो डेयरी → बस्सी (जयपुर)

राजस्थान में केमल डेयरी :- 1.बीकानेर 2.जैसलमेर (पोकरण)

- ✓ ऊँटनी के दुग्ध विपणन का केन्द्र जयपुर में स्थापित किया गया है।

6. बायोडीजल :-

- कच्चा माल – रतनजोत / जैट्रोफा एवं करंज
- बायोडीजल रिफाइनरी – कलड़वास (उदयपुर)
- बायोडीजल प्लांट – झामर कोटड़ा (उदयपुर)

7. जैतून तेल/ऑलिव ऑयल :-

- कच्चा माल – जैतून
- जैतून रिफाइनरी – लूणकरणसर (बीकानेर)
- नोट:- ऑलिव टी-प्लांट, ऑलिव उत्कृष्टता केन्द्र- जयपुर-बस्सी में स्थापित किया गया है।

II. खनिज आधारित उद्योग :-

1. सीमेंट उद्योग
2. काँच उद्योग
3. नमक उद्योग
4. मार्बल उद्योग
5. ग्रेनाईट उद्योग
6. अभ्रक उद्योग

1. सीमेंट उद्योग :-

- कच्चा माल – चूना पत्थर, जिप्सम एवं सिलिका
- राजस्थान में प्रथम सीमेंट फैक्ट्री 1915 – (उत्पादन-1917) – ACC (एसोसिएट सीमेंट कम्पनी) सहयोग-विलक-निक्सन
स्थान – लाखेरी (बूंदी)
सीमेन्ट का सर्वाधिक उत्पादन देश में-राजस्थान। राजस्थान में-चित्तौड़गढ़।

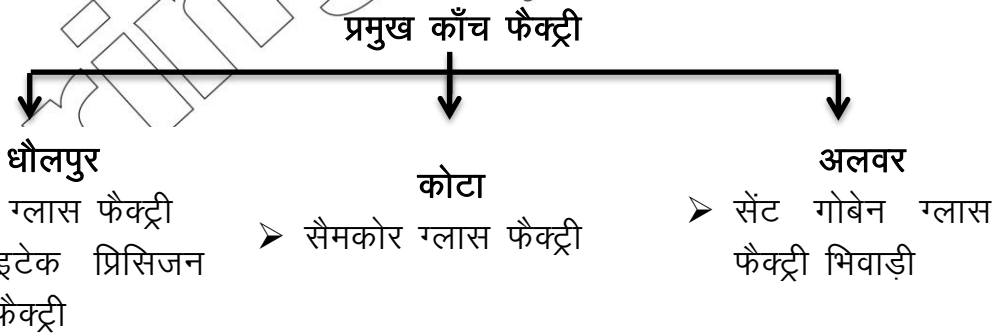
❖ सफेद सीमेंट फैक्ट्री :-

1. जे.के. व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री – गोटन (नागौर), 1984
 2. जे.के. व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री – मांगरोल (चित्तौड़गढ़)
 3. बिरला व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री – खारियाखंगार (जोधपुर)
- सीमेंट उत्पादन की प्रमुख इकाईयाँ :-
 1. जे.के. सीमेंट फैक्ट्री – निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
 2. अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री – चित्तौड़गढ़
 3. चेतक सीमेंट फैक्ट्री – चित्तौड़गढ़

4. लाफार्ज सीमेंट फैक्ट्री – चित्तौड़गढ़
5. वंडर सीमेंट फैक्ट्री – चित्तौड़गढ़
6. एसोसिएट सीमेंट कम्पनी (ACC) – लाखेरी (बूंदी)
7. बांगड़ सीमेंट फैक्ट्री – पाली
8. बिनानी सीमेंट फैक्ट्री – पिंडवाड़ा (सिरोही)
9. श्री सीमेंट फैक्ट्री – ब्यावर, झुंझुनू, श्रीगंगानगर
10. श्री राम सीमेंट फैक्ट्री – श्रीराम नगर (कोटा)
11. ग्रासिम सीमेंट फैक्ट्री – कोटपूतली (जयपुर)
12. मंगलम सीमेंट फैक्ट्री – मोडक (कोटा)
13. जयपुर सीमेंट फैक्ट्री – सवाईमाधोपुर
14. J & K लक्ष्मी फैक्ट्री – सिरोही
15. अंबुजा सीमेंट फैक्ट्री – पाली (राबड़ियावास), नागौर (मुंडवा मारवाड़)

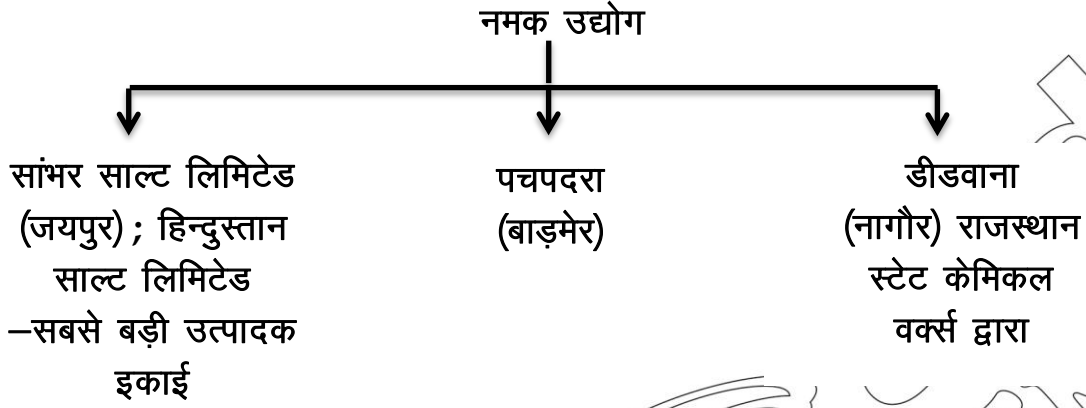
2. काँच उद्योग :-

- कच्चा माल :- सिलिका सैंड, सोडियम सल्फेट, शोरा (चीनी उद्योग से प्राप्त)
- राजस्थान में काँच उद्योग का सर्वाधिक विकास – 1. धौलपुर 2. अलवर



3. नमक उद्योग – इस उद्योग का प्रमुख आधार राजस्थान की खारे पानी की झीलें हैं।

✓ राजस्थान 3rd



4. मार्बल उद्योग :-

- राजस्थान इस उद्योग में देश में प्रथम माना जाता है।
- राजसमन्द से मार्बल सर्वाधिक उत्पादित होता है। क्योंकि यहां मार्बल उत्पादन/प्रोसेसिंग इकाईयाँ सर्वाधिक हैं।
- किशनगढ़ (अजमेर) मार्बल मंडी का सबसे बड़ा केन्द्र है।
- राजस्थान का सफेद मार्बल (मकराना-नागौर) विश्व प्रसिद्ध माना जाता है।

5. ग्रेनाइट उद्योग :-

- इस पत्थर का उत्पादन सर्वाधिक राजस्थान के जालोर, अजमेर, बाड़मेर, सिरोही क्षेत्र से होता है।
- जालोर को राजस्थान में ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।

6. अभ्रक उद्योग :-

- राजस्थान में अभ्रक ईंट बनाने का कारखाना – भीलवाड़ा
- भीलवाड़ा को अभ्रक/माईका सिटी भी कहा जाता है।
- उपयोग – इस उत्पाद से इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाये जाते हैं।

III. वनोत्पाद आधारित उद्योग :-

- कत्था-उदयपुर, चित्तौड़गढ़ (पादप-खैर)
- बीड़ी उद्योग (टोंक)- प्रतापगढ़, चित्तौड़, हाड़ौती (तेंदू पत्ता)
- शराब निर्माण (डूंगरपुर)-बांसवाड़ा, (फूल-महुआ वृक्ष)
- गोंद उत्पादन (चौहटन-बाड़मेर)
- टसर रेशम उत्पादन(कार्यक्रम)-शुरुआत- 1986 (उदयपुर, बांसवाड़ा, कोटा)
- रेशम/सेरीकल्चर (उदयपुर)

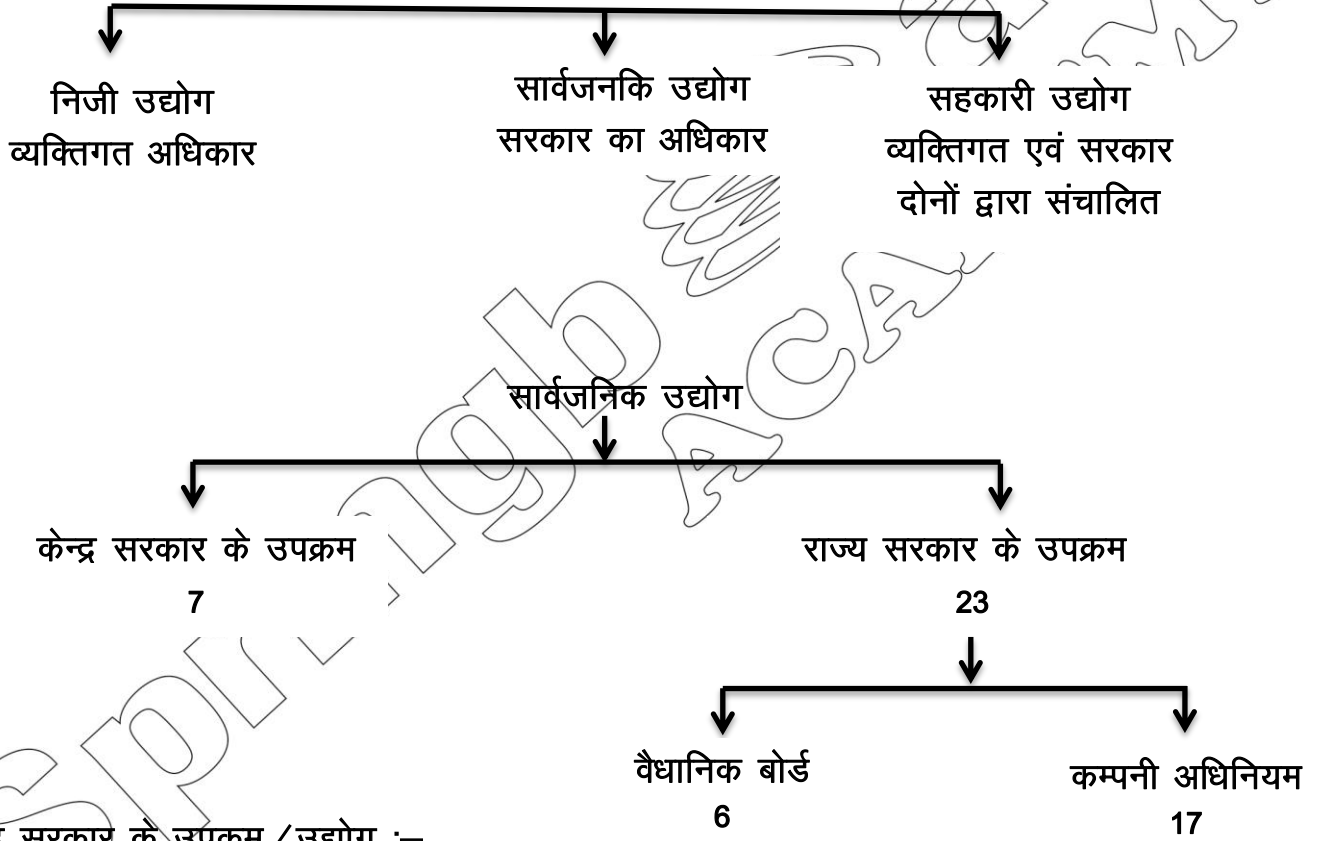
IV. इंजीनियरिंग या तकनीकी उद्योग :-सर्वाधिक विकास-अलवर, जयपुर,कोटा

उद्योग	उत्पाद	स्थान
नेशनल इंजीनियरिंग कम्पनी	वॉल एवं बेरिंग	जयपुर
जयपुर मेटल्स	बिजली के मीटर	जयपुर
केप्सटन मीटर	पाली के मीटर	जयपुर, पाली
राज. इलेक्ट्रॉनिक कॉर्पोरेशन	टी.वी.	जयपुर
मान इण्डस्ट्रीज	लोहे के दरवाजे एवं टॉवर निर्माण	जयपुर
केबल इण्डस्ट्रीज	केबल	कोटा
इंस्ट्रुमेंटेशन	यंत्र/मशीन	कोटा
J & K इलेक्ट्रॉनिक्स	टी.वी.	कोटा
फ्लोर्सपार संयंत्र	लोहे के साथ मिलाकर संयंत्र निर्माण	डूंगरपुर
सिमको वैमन फैक्ट्री (1957) (बंद 2000 पुनः शुरुआत 2008)	रेलवे डिब्बो का निर्माण	भरतपुर
अशोका लीलैड	ऑटोमोबाइल/मोटरगाड़ी	अलवर
होण्डा	ऑटोमोबाइल	खुशखेड़ा (अलवर)
हीरो कॉर्प	ऑटोमोबाइल	जयपुर,अलवर

V. रासायनिक उर्वरक उद्योग :-

1. चम्बल फटिलाइजर्स एवं केमिकल्स – गढ़पान (कोटा)
2. राष्ट्रीय केमिकल्स एवं फटिलाइजर्स (DAP - डार्ड-अमोनियम फॉस्फेट) – कपासन (चित्तौड़गढ़)
3. राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स – डीडवाना (नागौर)
4. पाईराइट्स उर्वरक – सलादीपुरा (सीकर)
5. मोदी उर्वरक उद्योग- अलवर
6. रॉक फॉस्फेट उद्योग – उदयपुर

c. स्वामित्व के आधार पर –



केन्द्र सरकार के उपक्रम/उद्योग :-



वैधानिक बोर्ड - 6

1955	-	राजस्थान वित्त निगम
1957	-	कृषि भण्डारण निगम
1 अक्टूबर, 1964	-	राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC)
1970	-	राजस्थान हाउसिंग बोर्ड निगम - (RHB)
1974	-	राज्य कृषि विपणन बोर्ड
1975	-	राज्य भूमि सुधार मंडल

कम्पनी अधिनियम - 17

नोट -

➤ राजस्थान के कम्पनी अधिनियम में संचालित उपक्रम- 17 जिनमें प्रमुख

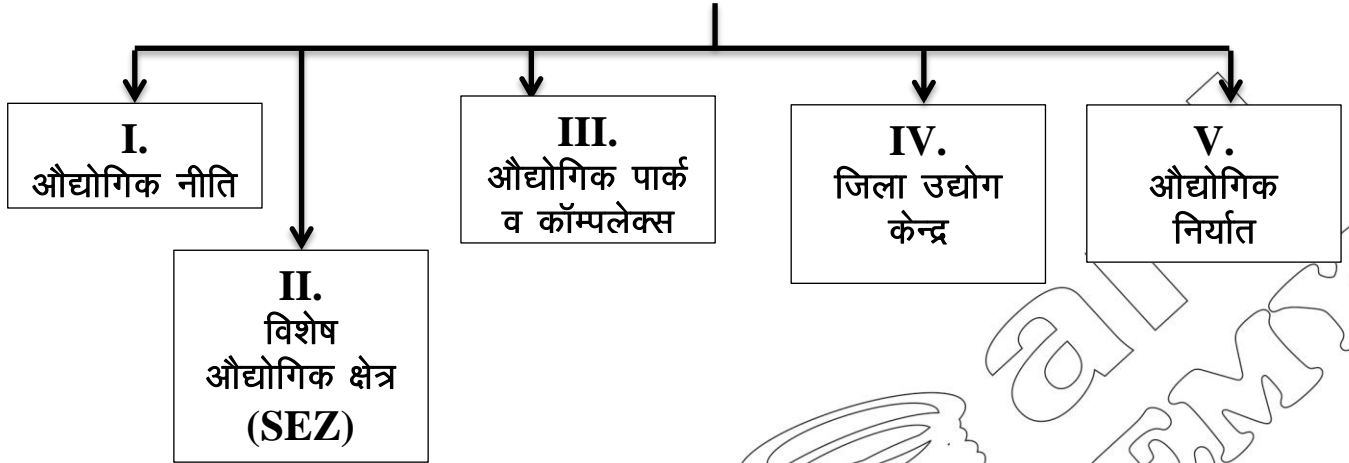
1. RSMML → Raj State Mines & Minerals Ltd. (30 अक्टूबर 1974) - उदयपुर
2. राज्य विद्युत वितरण निगम - जोधपुर, अजमेर, जयपुर
3. REIL - Rajasthan Electronics & Instruments Ltd. - कनकपुरा (जयपुर)

इसके द्वारा सॉफ्टवेयर, IT, नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण किया जाता है।

सॉफ्टवेयर पार्क कनकपुरा जयपुर

यह राजस्थान की नवरत्न कंपनी है।

B. औद्योगिक विकास के प्रयास



राजस्थान की औद्योगिक नीतियाँ	MSME नीतियाँ	हस्तशिल्प नीतियाँ
1978	1 st 20 नवम्बर 2015	1 st 17 सितम्बर 2022
1991	2 nd 17 सितम्बर 2022	
1994		
1998		
2010		
1 जुलाई 2019 नवनीतम औद्योगिक नीति।		

राजस्थान में औद्योगिक विकास के लिए किये जा रहे प्रयास निम्नलिखित हैं—

II. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ – Special Economic Zone) :-

- राज्य में सेज कार्यक्रम रिको के द्वारा चलाया जाता है।
- राजस्थान के प्रमुख सेज –

क्र.सं.	सेज	संबंधित क्षेत्र	अवस्थिति
1.	बोरानाडा सेज	ग्वारगम, हैण्डीक्राफ्ट	जोधपुर
2.	सीतापुरा सेज	जेम्स एण्ड ज्वैलरी	जयपुर
3.	महिन्द्रा सेज	आई.टी., हैण्डीक्राफ्ट	जयपुर (कलवाड़ा)
4.	सोमानी सेज	हार्डवेयर एण्ड सॉफ्टवेयर	अलवर
5.	आर एन बी सेज	टैक्सटाईल	बीकानेर
6.	वाटिका सेज (प्रस्तावित)	आई.टी.	जयपुर

III. औद्योगिक पार्क एवं कॉम्प्लैक्स:-

- जापानी पार्क (जेट्रो) — 1st नीमराना (अलवर)
- नोट:- JETRO— Japan External Trade Organization — 2nd धिलोट (अलवर)
- कोरियन पार्क (KOTRA) — धिलोट (अलवर)
- सिरेमिक जोन — धिलोट
- एग्रो फूड पार्क — श्री गंगानगर
- मेगा फूड पार्क — जोधपुर
- सूचना तकनीकी पार्क (आई.टी. पार्क) — कोटा
- मसाला पार्क (Spice Park) — अलवर
- परिधान पार्क / अपैरल पार्क — रूपनगढ़ (अजमेर)
- प्रस्तावित बीकानेर
- जयपुर
- कोटा
- उदयपुर
- जोधपुर
- 1st मथानिया—जोधपुर,
- 2nd रामगंज मण्डी—कोटा
- जगतपुरा (महल रोड़),

9. स्टोन पार्क — जयपुर
— मण्डोर, जोधपुर
— मासलपुर, करौली
— विसनोदा, धौलपुर
— मण्डाना, कोटा
10. सॉफ्टवेयर पार्क — कनकपुरा, जयपुर
(REIL/Rajasthan electronics Instrument Limited)
11. होजरी पार्क (वस्त्र) — चोंपकी (अलवर)
12. पुष्प पार्क — खुशखेड़ा (अलवर)
13. ऑटोमोबाइल पार्क — पथरेड़ी (अलवर)

औद्योगिक कॉम्प्लेक्स

	जिला
ऊन कॉम्प्लेक्स (Wool Complex)	— खारा (बीकानेर)
	— ब्यावर (अजमेर)
	— गोहना (अजमेर)
	— नरबद्धखेड़ा (अजमेर)
सिरेमिक कॉम्प्लेक्स	— खारा (बीकानेर)
लेदर कॉम्प्लेक्स	— मानपुरा माचेड़ी
पेट्रो केमिकल कॉम्प्लेक्स	— पचपदरा (बाड़मेर)

नोट:— देश का प्रथम निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क सीतापुरा, जयपुर (1997) है।

IV. जिला उद्योग केन्द्र — इसकी स्थापना औद्योगिक विकास के लिए की गई है

जिला उद्योग के केन्द्र— 36; उपकेन्द्र —8

V. औद्योगिक निर्यात — 1. इंजिनियरिंग/अभियांत्रिकी वस्तुएँ

2. वस्त्र (Textile)

3. लौह एवं अलौह

4. हैण्डिक्राफ्ट/हस्त आधारित

5. रासायनिक एवं संबंधित उद्योग

➤ **RIPS 2022 :-**

7 अक्टूबर 2022

उद्देश्य :-

1. सेवा निर्माण एवं उद्योगों में प्रतिवर्ष 15% वृद्धि (वार्षिक)
2. 2027 तक औद्योगिक क्षेत्र में 10 लाख रोजगार
3. ग्रीन ऊर्जा / नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहन
4. सन्तुलित और समावेशी क्षेत्रीय विकास

➤ **दिल्ली – मुम्बई औद्योगिक गलियारा (DMIC – Delhi Mumbai Industrial Corridor)**

- इस परियोजना में तकनीकी व आर्थिक सहयोग “जापान” के द्वारा किया गया है।
- इस परियोजना का विस्तार नोएडा (U.P. दिल्ली) से जवाहर लाल नेहरू पोर्ट (मुम्बई-महाराष्ट्र) तक है।
- इस औद्योगिक गलियारे की कुल लम्बाई 1504 कि.मी. होगी, जिसका 38 प्रतिशत भाग राजस्थान में होगा।
- इस औद्योगिक गलियारे में राजस्थान के मुख्यतः 7 जिलें शामिल हैं जबकि इसके प्रभाव क्षेत्र में 22 जिलें शामिल किये गये हैं।
- इस औद्योगिक गलियारे में 24 औद्योगिक क्षेत्र एवं 8 औद्योगिक निवेश क्षेत्र बनाये जायेंगे। जिसमें राजस्थान के 3 औद्योगिक क्षेत्र एवं 2 औद्योगिक निवेश क्षेत्र शामिल किये गये हैं।
- नोड संख्या 7 – अलवर – खुशखेड़ा – भिवाड़ी – नीमराना – निवेश क्षेत्र
- नोड संख्या 8 – जयपुर – दौसा औद्योगिक क्षेत्र
- नोड संख्या 9 – अजमेर-किशनगढ़ निवेश क्षेत्र
- नोड संख्या 10 – राजसमंद – भीलवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र
- नोड संख्या 11 – पाली-मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र

Springboard
ACADEMY

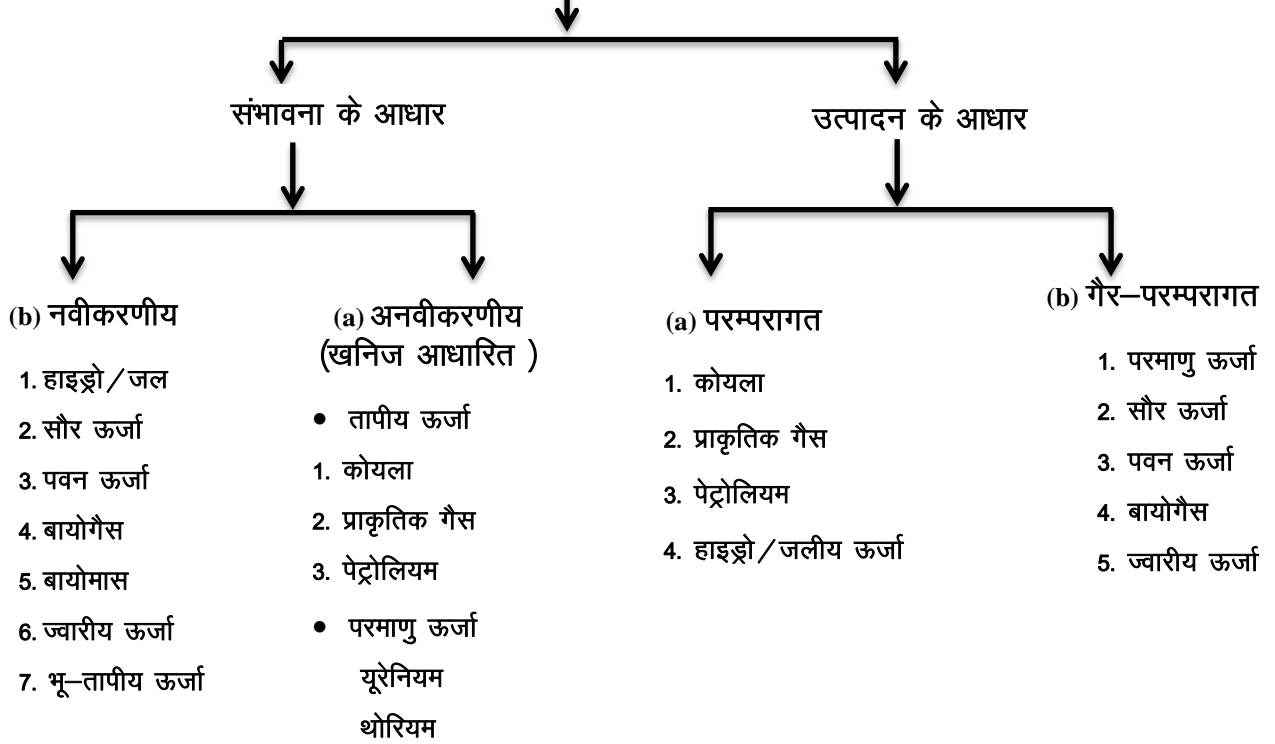
ऊर्जा

- A. ऊर्जा उत्पादन
- B. ऊर्जा का वर्गीकरण
- C. ऊर्जा संबंधित योजना
- D. ऊर्जा संबंधी संस्थान

A. ऊर्जा उत्पादन

1. थर्मल (तापीय ऊर्जा) ऊर्जा – 55-60%
 2. पवन ऊर्जा – 3730.35 MW
 3. सौर ऊर्जा – 3348.60 MW
 4. जल ऊर्जा –
 5. परमाणु ऊर्जा (केन्द्र सरकार)– 456.9 MW
 6. बायोमास ऊर्जा – 101.95 MW
- कुल उत्पादन – 23487.46 MW (Nov. 2022)

B. ऊर्जा संसाधनों का वर्गीकरण



(a) परम्परागत ऊर्जा संसाधन

➤ वे ऊर्जा संसाधन जिनका उपयोग लंबे समय से किया जा रहा है और जिनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए नई तकनीकों की आवश्यकता नहीं होती है, उन्हें पारंपरिक ऊर्जा संसाधन कहा जाता है।

➤ उदाहरण:- 1. जल ऊर्जा, 2. तापीय ऊर्जा :- कोयला, गैस, पेट्रोलियम

(b) गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधन

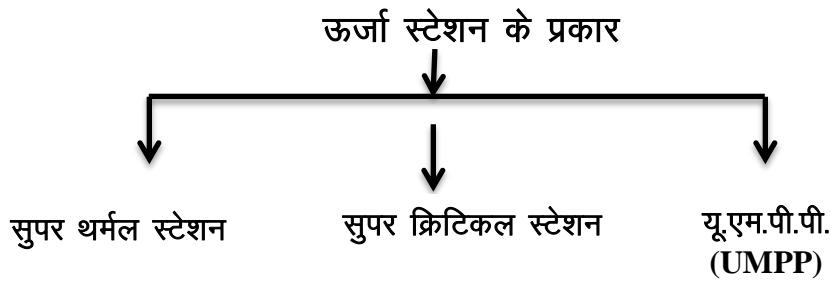
➤ वे ऊर्जा संसाधन जो अपेक्षाकृत नए हो और जिनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए उन्नत तकनीक की आवश्यकता होती है उन्हें गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधन कहा जाता है।

➤ उदाहरण :-परमाणु ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस ऊर्जा, बायोमास ऊर्जा एवं ज्वारीय ऊर्जा इत्यादि।

(1) वर्तमान में ऊर्जा उत्पादन

➤ ऊर्जा उत्पादन में तापीय/थर्मल ऊर्जा का योगदान अधिकतम है।

(2) ऊर्जा स्टेशन के प्रकार



(i) सुपर थर्मल स्टेशन :-

➤ यदि किसी पावर स्टेशन की कुल क्षमता 1000 मेगावाट से अधिक हो तो उसे "सुपर थर्मल पावर स्टेशन" कहा जाता है।

➤ उदाहरण :- सुरतगढ़ सुपर थर्मल स्टेशन, कोटा सुपर थर्मल स्टेशन, कवई सुपर थर्मल स्टेशन

(ii) सुपर क्रिटिकल स्टेशन :-

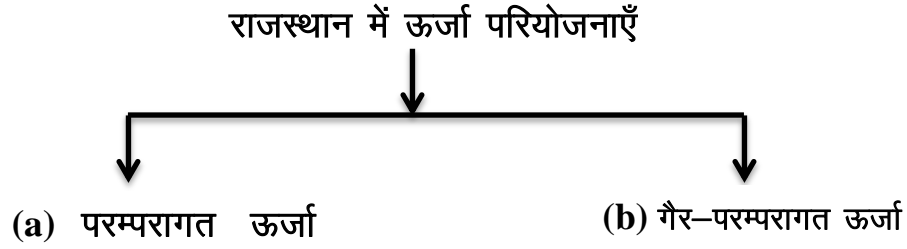
➤ यदि पावर स्टेशन की एक इकाई की उत्पादन क्षमता 500 मेगावाट से अधिक हो तो उसे "सुपर क्रिटिकल पावर स्टेशन" कहा जाता है।

➤ उदाहरण :- छबड़ा (बारां)

(iii) यू.एम.पी.पी (Ultra Mega Power Project) :-

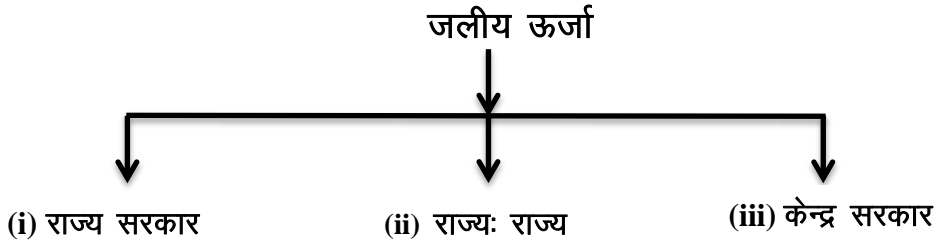
➤ प्रत्येक ऊर्जा स्टेशन की क्षमता 4000 मेगावाट या उससे अधिक हो तो उसे अल्ट्रा मेगा पावर प्रोजेक्ट कहा जाता है।

(4) राजस्थान की ऊर्जा परियोजनाएँ –



(A) परम्परागत ऊर्जा –

(I) जलीय ऊर्जा :- राजस्थान राज्य की जल विद्युत परियोजनाएँ –



(i) राज्य सरकार की जल ऊर्जा परियोजनाएँ

1. जाखम लघु जल विद्युत परियोजना – प्रतापगढ़
उत्पादन क्षमता – 5.4 मेगावाट
2. अनास जल विद्युत परियोजना – बांसवाड़ा
उत्पादन क्षमता – 140 मेगावाट
3. इंदिरा गांधी लघु जल विद्युत परियोजना – श्रीगंगानगर, बीकानेर
उत्पादन क्षमता – 23.85 मेगावाट

(ii) राज्य : राज्य सहयोग की जल विद्युत परियोजनाएँ

1. भाखड़ा-नांगल जल विद्युत परियोजना
 - लाभान्वित राज्य – राजस्थान, पंजाब, हरियाणा
 - उत्पादन क्षमता – 1493 मेगावाट
 - राजस्थान की हिस्सेदारी – 15.2 प्रतिशत (227 मेगावाट)

2. व्यास जल विद्युत परियोजना

- राज्य – राजस्थान, पंजाब, हरियाणा
- राजस्थान का हिस्सा – 422 मेगावाट

3. माही-बजाज सागर जल विद्युत परियोजना –

- लाभान्वित राज्य– राजस्थान और गुजरात (45:55)
- यह परियोजना दो चरणों में निर्मित है–
- 2 युनिट x 25 मेगावाट = 50 मेगावाट
- 2 युनिट x 45 मेगावाट = 90 मेगावाट
- इस परियोजना में उत्पादित 100 प्रतिशत ऊर्जा राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में वितरित की जाती हैं। (140 मेगावाट)

4. चंबल जल विद्युत परियोजना –

- राजस्थान और मध्य प्रदेश की संयुक्त योजना।
 - इस योजना में राजस्थान और मप्र का योगदान बराबर (50–50) है।
 - इस परियोजना में तीन बांधों से कुल 386 मेगावाट जल विद्युत उत्पादन है।
 - ✓ गांधी सागर – 23 मेगावाट x 5 यूनिट = 115 मेगावाट
 - ✓ राणा प्रताप सागर – 43 मेगावाट x 3 यूनिट = 172 मेगावाट
 - ✓ जवाहर सागर – 33 मेगावाट x 3 यूनिट = 99 मेगावाट
- कुल– 386 मेगावाट (राजस्थान 193 मेगावाट)

5. राहुघाट परियोजना – करौली–

- चम्बल नदी पर स्थित परियोजना।
- राजस्थान और मध्यप्रदेश की संयुक्त योजना (50–50)।

➤ उत्पादन क्षमता – 79 मेगावाट ।

(iii) केंद्र सरकार की जल विद्युत परियोजनाएँ

1. सलाल परियोजना – जम्मू और कश्मीर

- यह परियोजना चिनाब नदी पर संचालित है ।
- यह परियोजना एन.एच.पी.सी. (राष्ट्रीय जल विद्युत निगम) द्वारा संचालित है ।
- जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है ।

2. दुलहस्ती परियोजना – जम्मू और कश्मीर

- यह परियोजना NHPC द्वारा संचालित है ।
- यह परियोजना चिनाब नदी पर चलाई जाती हैं ।
- जम्मू और कश्मीर, राजस्थान उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है ।

3. उरी परियोजना – जम्मू और कश्मीर

- यह परियोजना झेलम नदी पर संचालित है ।
- यह परियोजना NHPC द्वारा संचालित है ।
- जम्मू और कश्मीर, राजस्थान उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है ।

4. पार्वती परियोजना – हिमाचल प्रदेश

- यह परियोजना पार्वती नदी पर संचालित है ।
- यह परियोजना NHPC द्वारा संचालित है ।
- इस परियोजना से गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश को लाभ मिलता है ।

5. चमेरा परियोजना – हिमाचल प्रदेश

- यह परियोजना NHPC द्वारा रावी नदी पर संचालित है।
- जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

6. नाथपा झाकरी परियोजना – हिमाचल प्रदेश

- यह परियोजना सतलज नदी पर NHPC द्वारा संचालित है।
- इस परियोजना से उत्तराखण्ड, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश को लाभ मिलता है।

7. टिहरी परियोजना – उत्तराखण्ड

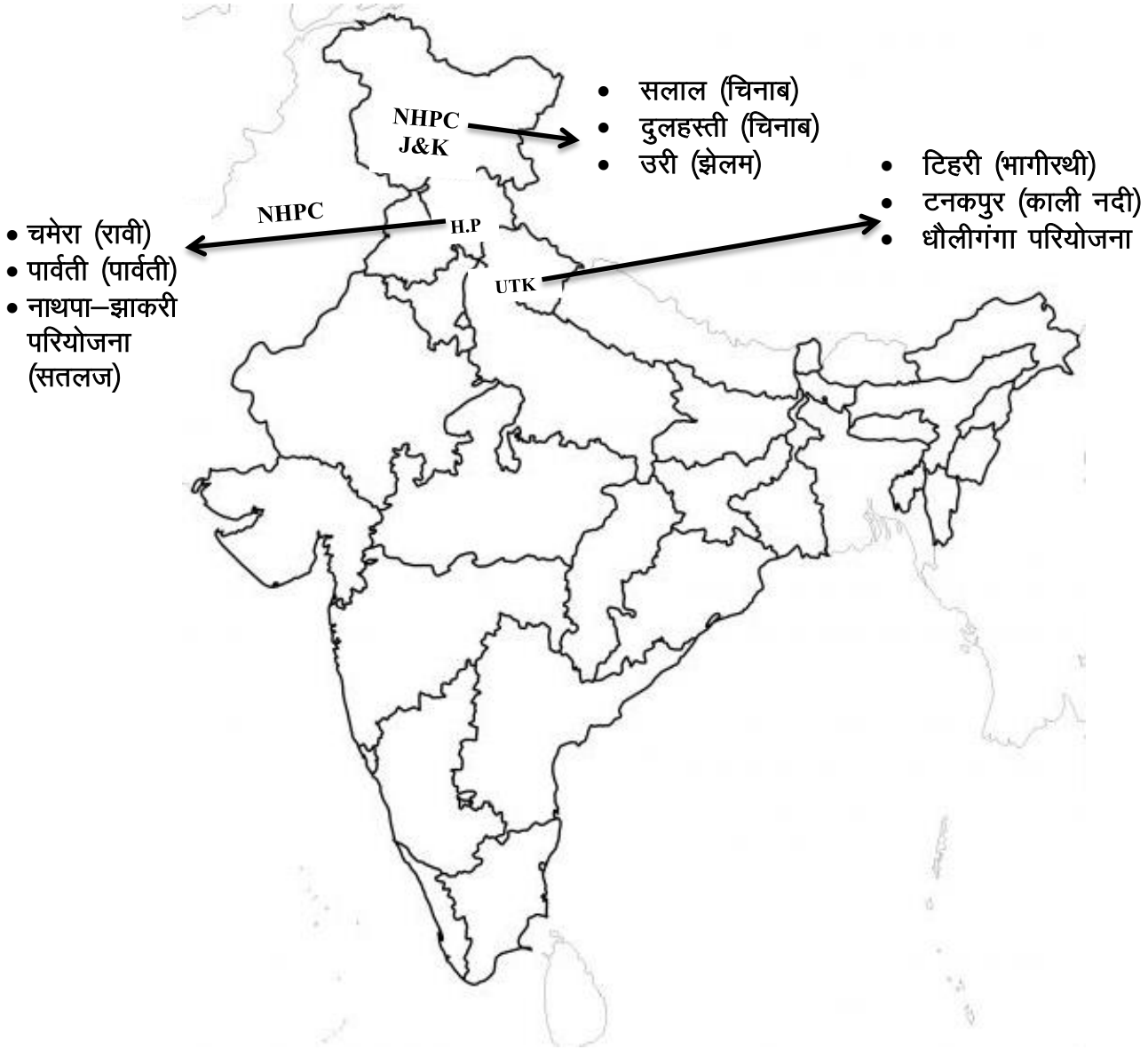
- यह परियोजना टिहरी जल विद्युत विकास निगम लिमिटेड द्वारा भागीरथ नदी पर संचालित है।
- इस परियोजना से राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड को लाभ मिलता है।

8. टनकपुर परियोजना – उत्तराखण्ड

- यह परियोजना एनएचपीसी द्वारा शारदा (काली) नदी पर संचालित है।
- इस परियोजना से जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ को इससे लाभ मिलता है।

9. धौली गंगा परियोजना – उत्तराखण्ड

- यह परियोजना NHPC द्वारा धौली गंगा नदी पर संचालित है।
- इस परियोजना से जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ को इससे लाभ मिलता है।

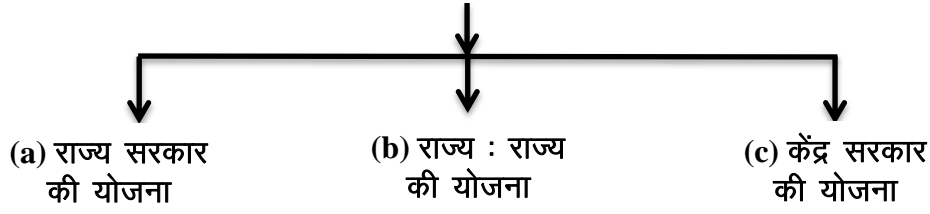


निष्कर्ष:—जल विद्युत परियोजनाओं में अधिक विकास और नियोजन की आवश्यकता है ताकि ऊर्जा उत्पादन बढ़ाकर राजस्थान में ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाई जा सके।

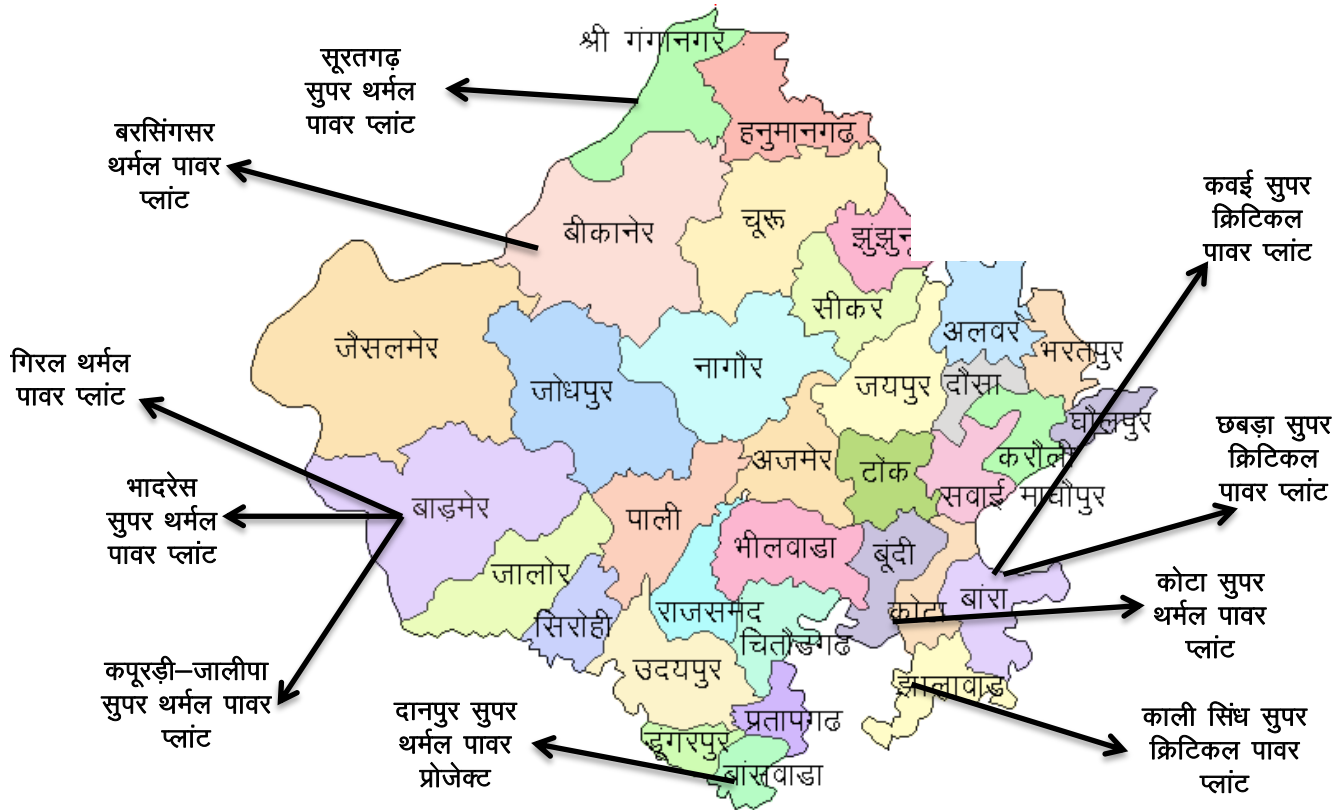
(II) तापीय ऊर्जा :- राजस्थान राज्य की ताप विद्युत परियोजनाएँ –

- ऊर्जा उत्पादन में तापीय ऊर्जा का योगदान सर्वाधिक है।
- इस ऊर्जा का मुख्य स्रोत कोयला, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस है।
- थर्मल ऊर्जा परियोजना के माध्यम से बिजली उत्पादन में कोयले का योगदान सर्वाधिक है।

A. कोयला/लिग्नाइट आधारित परियोजनाएँ



(a) राज्य सरकार की योजना :-



1. सूरतगढ़ सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट – श्री गंगानगर

- यह राजस्थान का पहला सुपर थर्मल पावर प्लांट है।
- इसकी उत्पादन क्षमता 2820 मेगावाट है।

इकाईयाँ— 8, चरण— 5

सूरतगढ़, राजस्थान की सबसे बड़ी ताप विद्युत परियोजना है।

2. कोटा सुपर थर्मल पावर प्लांट – कोटा

➤ यह पहला कोयला आधारित थर्मल पावर प्लांट है।

➤ यह राजस्थान का प्रथम ताप विद्युत परियोजना है जबकि दूसरी सुपर ताप विद्युत योजना परियोजना है।

उत्पादन क्षमता – 1240 मेगावाट

इकाईयाँ– 7, चरण – 5

3. छबड़ा सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट – बांरा

➤ उत्पादन क्षमता – 2320 मेगावाट

इकाईयाँ – 6, चरण– 3

यह राजस्थान की प्रथम क्रिटिकल ताप विद्युत परियोजना है।

4. कवई सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट – बांरा

➤ उत्पादन क्षमता – 1320 मेगावाट

सहयोग–अडानी ग्रुप

5. काली सिंध सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट – झालावाड़

➤ उत्पादन क्षमता – 1200 मेगावाट

प्रस्तावित– 800 मेगावाट (अल्ट्रा पॉवर प्रोजेक्ट)

6. भादरेस सुपर पावर प्लांट – बाड़मेर

➤ उत्पादन क्षमता – 1080 मेगावाट

7. कपूरडी-जालीपा सुपर थर्मल पावर प्लांट – बाड़मेर

➤ उत्पादन क्षमता – 1080 मेगावाट

8. गिरल थर्मल पावर प्लांट – बाड़मेर

➤ उत्पादन क्षमता – 250 मेगावाट

सहयोग – जर्मनी

9. दानपुर सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट – बांसवाड़ा

➤ उत्पादन क्षमता – 1600 मेगावाट

10. बरसिंगसर थर्मल पावर प्लांट – बीकानेर

➤ उत्पादन क्षमता – 250 मेगावाट

11. नेवली थर्मल प्रोजेक्ट – बीकानेर

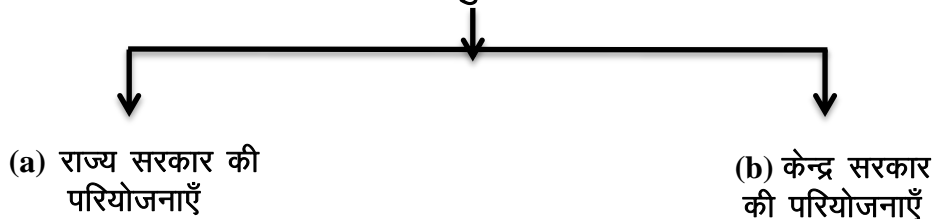
(b) राज्य : राज्य की योजना

1. सतपुड़ा तापीय विद्युत परियोजना – यह राजस्थान – M.P. के द्वारा संचालित है।

(c) केंद्र सरकार की परियोजना

योजना	स्थान	रन बाँय
सिंगरौली थर्मल प्लांट	यू.पी.	एन.टी.पी.सी.
रिहंद सुपर थर्मल पावर प्लांट	यू.पी.	एन.टी.पी.सी.
ऊंचाहार सुपर थर्मल पावर प्लांट	यू.पी.	एन.टी.पी.सी.
कहल गांव सुपर थर्मल पावर प्लांट	बिहार	एन.टी.पी.सी.
तलचर सुपर थर्मल पावर प्लांट	ओडिशा	एन.टी.पी.सी.

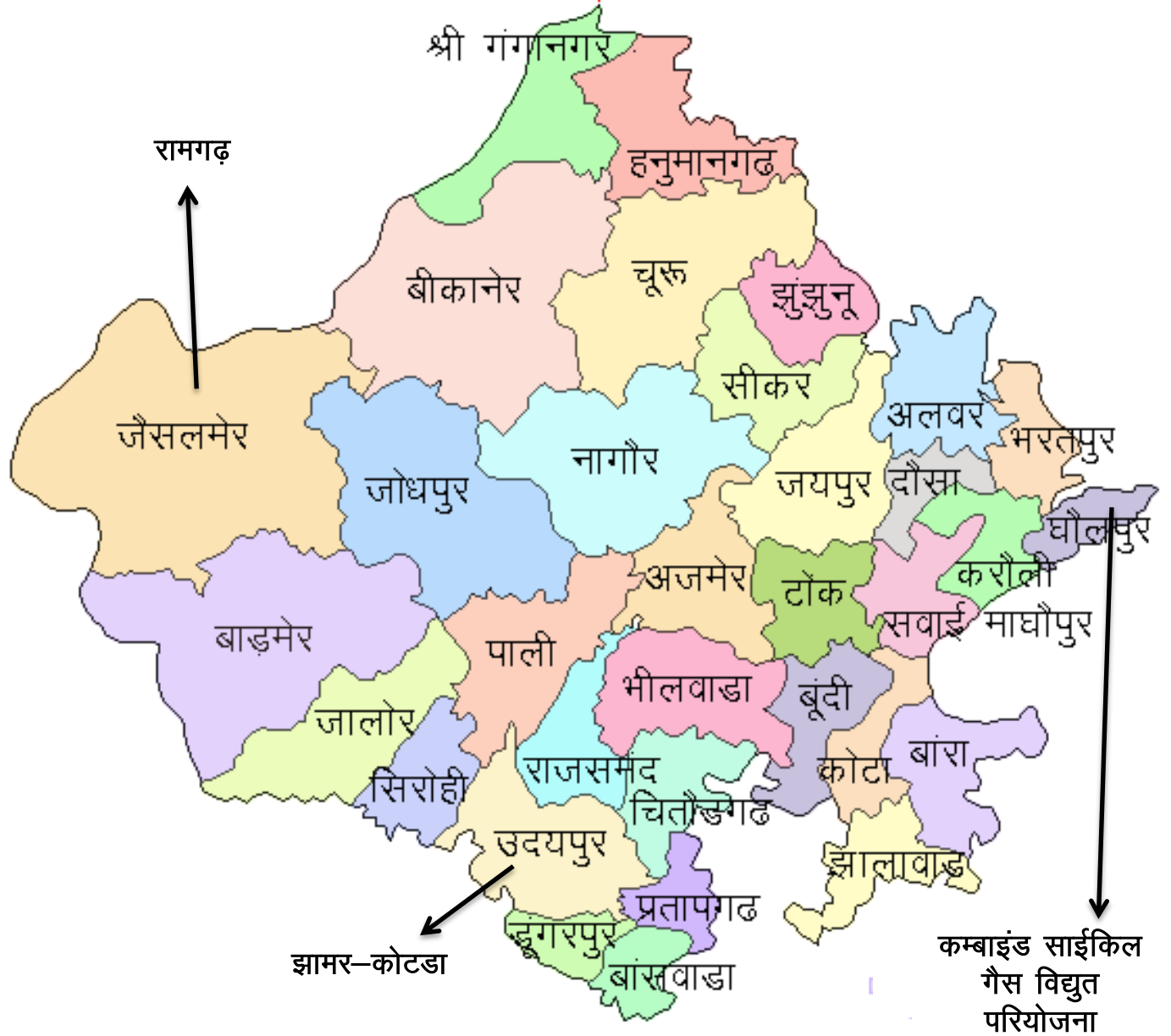
B. गैस विद्युत परियोजना



(a) राज्य सरकार की परियोजनाएँ

1. रामगढ़ गैस विद्युत परियोजना – जैसलमेर

2. कम्बाइंड साईकिल गैस विद्युत परियोजना – धौलपुर
 3. झामर-कोटडा गैस विद्युत परियोजना – उदयपुर
- प्राकृतिक गैस आधारित विद्युत परियोजनाएँ :-



केन्द्र सरकार की परियोजनाएँ

1. अंता – बारां
2. दादरी – उत्तर प्रदेश
3. औरैया – उत्तर प्रदेश

1. अंता गैस विद्युत परियोजना— बारां
HBJ (हजीरा, बिजापुर एवं जगदीशपुर गैस पाईप लाईन)
2. दादरी गैस विद्युत परियोजना— उत्तर प्रदेश
3. औरैया गैस विद्युत परियोजना—उत्तर प्रदेश

नोट:—

- केंद्र सरकार एवं राजस्थान का पहला गैस पावर प्लांट — अंता (बारां)।
- राजस्थान सरकार का पहला गैस पावर प्लांट प्रोजेक्ट — रामगढ़ (जैसलमेर)।

C. नेष्ठा / तरल ईंधन आधारित परियोजनाएं :—

1. धौलपुर पावर प्लांट :—

- पहला चरण — 330 मेगावाट
- दूसरा चरण — 372.7 मेगावाट
- कुल स्थापित क्षमता — 702.7 मेगावाट

2. केशोरायपाटन थर्मल पावर प्लांट :— बूंदी

(B) गैर—परम्परागत ऊर्जा —

(I) परमाणु ऊर्जा —

- राजस्थान परमाणु या आण्विक ऊर्जा स्टेशन — रावत भाटा (चित्तौड़गढ़)
- स्थापना — 30 नवम्बर, 1972 (प्रथम इकाई की शुरुआत—1973)
- संचालन — नाभिकीय ऊर्जा निगम (NPCIL)
- इस संयंत्र की कुल स्थापित क्षमता 1180 मेगावाट है।

इकाई	—	उत्पादन
प्रथम इकाई	—	100 मेगावाट
द्वितीय इकाई	—	200 मेगावाट
तृतीय इकाई	—	220 मेगावाट
चतुर्थ इकाई	—	220 मेगावाट
पंचम इकाई	—	220 मेगावाट

छठी इकाई – 220 मेगावाट
कुल क्षमता – 1180 मेगावाट

- रावतभाटा परमाणु विद्युत गृह में 700 मेगावाट की 2 यूनिट प्रस्तावित हैं।
- राजस्थान को रावतभाटा (राजस्थान) व नरोरा (उ.प्र.) से परमाणु ऊर्जा प्राप्त होती है।
- राजस्थान में दूसरा परमाणु विद्युत गृह बाँसवाड़ा (700 MW × 4 unit = 2800 MW) में प्रस्तावित है।

(II) सौर ऊर्जा –

- भारत में, सौर ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना राजस्थान में है।
- राजस्थान में, जोधपुर में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावना है।
- राजस्थान में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावना के कारण निम्नलिखित हैं –

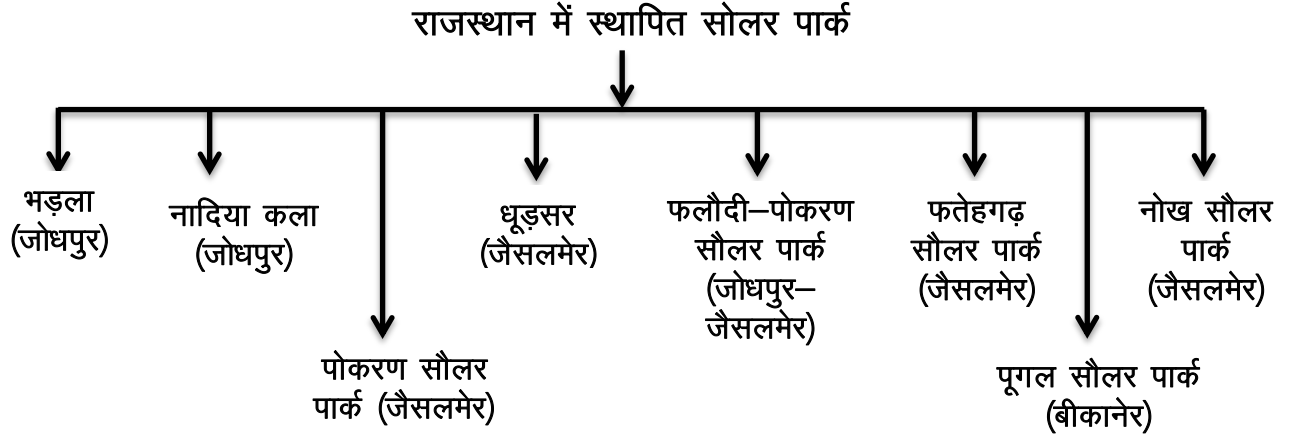
- (1) सौर विकिरण की तीव्रता का अधिक होना।
- (2) राज्य में एक वर्ष में लगभग 325 स्पष्ट धूप के दिन होते हैं।
- (3) निवेशक सौर ऊर्जा परियोजनाओं में अधिक निवेश करते हैं।
- (4) मरुस्थलीय विस्तार अधिक होने के कारण, उच्च तापमान प्राप्त होता है।

नोट:— राजस्थान में नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के आंकलन के अनुसार सौर स्रोतों से 142 गीगावाट (1,42,000 मेगावाट) सौर ऊर्जा प्राप्त करने की क्षमता है।

राजस्थान में सौर ऊर्जा विकास के किये जा रहे प्रयास –

1. सोलर पार्क निर्माण योजना –

- इस योजना के लिए राजस्थान में जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर को चुना गया है।
- 2010 में क्लिंटन फाउंडेशन और राज्य सरकार के मध्य समझौते के तहत, क्लिंटन फाउंडेशन सौर पार्क के विकास हेतु आवश्यक सहायता प्रदान करेगा।
- जोधपुर में एशिया की सबसे बड़ी सोलर पार्क परियोजना प्रस्तावित हैं



भड़ला सौर पार्क –

- भड़ला, जोधपुर में 2245 मेगावाट का सोलर पार्क चार चरणों में विकसित किया गया है।
- भड़ला सौर पार्क फेज – RRECL द्वारा
 - प्रथम फेज – 65 मेगावाट
 - द्वितीय फेज – 680 मेगावाट
 - तृतीय फेज (IL&FS) – 1000 मेगावाट
 - चतुर्थ फेज (अडानी) – 500 मेगावाट
- राजस्थान की पहली निजी क्षेत्र की सौर परियोजना रिलायंस द्वारा खीवसर (नागौर) में शुरू की गई।

2. सोलर सिटी का निर्माण –

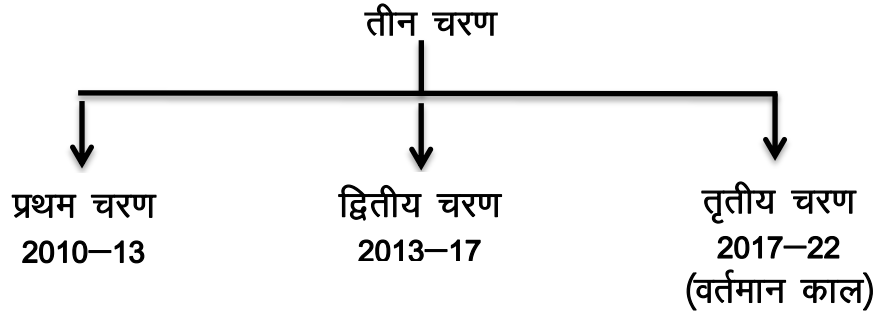
- जिन शहरों में सौर ऊर्जा की क्षमता सर्वाधिक है, उन्हें सोलर सिटी के रूप में विकसित किया जायेगा।
- इसमें जयपुर, अजमेर, जोधपुर शामिल है।
 - नोट :- प्रस्तावित जिले – पुष्कर (अजमेर), जैसलमेर।

3. SEEZ- Solar Energy Enterprises Zone (सौर ऊर्जा उपक्रम जोन)

राजस्थान में सर्वाधिक सौर ऊर्जा की संभावना वाला क्षेत्र 'SEEZ' कहलाता है।
शामिल क्षेत्र– जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर

4. सौर ऊर्जा मिशन –

- सौर ऊर्जा के विकास के लिए देश में जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय सोलर मिशन शुरू किया गया था।
- शुरुआत – जनवरी, 2010
- लक्ष्य – 2022 तक 1,00,000 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन
- यह मिशन तीन चरणों में चलाया जायेगा।

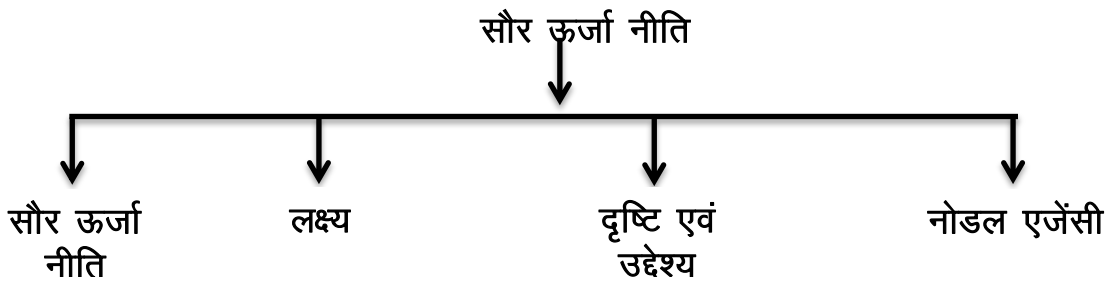


5. निवेश कार्यक्रम –

- राजस्थान इन्वेस्ट समिट
- आयोजन तिथी– 7, 8 अक्टूबर, 2022
- थीम – प्रतिबद्धता एवं वितरण
- इस कार्यक्रम में कुल निवेश – 10 लाख 44 हजार करोड़ रु.
- जिसमें सौर ऊर्जा क्षेत्र में निवेश– 3 लाख करोड़ रु.
- सौर ऊर्जा क्षेत्र में प्रमुख निवेशकर्ता–अडानी + अम्बानी (रिलायंस) + टाटा

6. सौर ऊर्जा नीति

- राजस्थान में प्रथम सौर ऊर्जा नीति 2011, द्वितीय 2014 व नवीनतम सौर ऊर्जा नीति 18 दिसम्बर, 2019 में जारी की गई।



सौर ऊर्जा नीति:–

- इस नीति को राजस्थान सौर ऊर्जा नीति-2019 के नाम से जाना जायेगा।

- यह नीति 18 दिसम्बर 2019 से लागू होगी और जब तक कोई अन्य नीति लागू नहीं होगी, तब तक लागू रहेगी।

नई सौर ऊर्जा नीति के प्रमुख लक्ष्य :-

- इस नीति के तहत राज्य में 2024-25 तक 30,000 मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य हासिल करना है।
- सौर ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में भावी निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना।
- राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने जैसे लक्ष्यों को पूरा करना।

S.No.	Particulars	Capacity
1.	Utility/Grid Scale Solar Parks	24,000 MW
2.	Distributed Generation	4,000 MW
3.	Solar Rooftop	1,000 MW
4.	Solar Pumps	1,000 MW

III. पवन ऊर्जा:-

- नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 120 मीटर ऊंचाई पर किये गए एक अध्ययन के अनुसार, राजस्थान में पवन ऊर्जा की उत्पादन क्षमता लगभग 1,27,756 मेगावाट है।

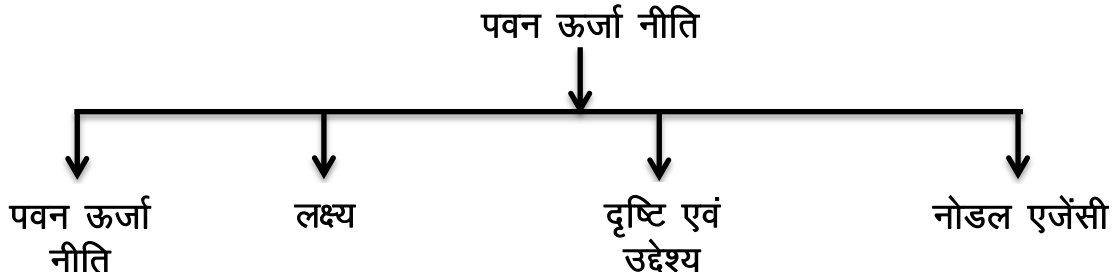
नोट:- राजस्थान राज्य में जैसलमेर में पवन ऊर्जा की संभावना सर्वाधिक है।

मुख्य पवन ऊर्जा संयंत्र:-

संयंत्र	-स्थान
अमर सागर (1 st)	-जैसलमेर
सोढा बाँधन	-जैसलमेर
पोहरा	-जैसलमेर
आकल	-जैसलमेर
हंसुआ	-जैसलमेर
देवगढ़ (2 nd)	-प्रतापगढ़
फलौदी (3 rd)	-जोधपुर
हर्ष विंड एनर्जी	-सीकर
बड़ा-बाग	-जैसलमेर
हाइब्रिड विंड एनर्जी प्लांट	-जैसलमेर

नोट:-

- मैसर्स कालानी इंडस्ट्रीज, ने बड़ा बाग (जैसलमेर) में निजी क्षेत्र की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना की स्थापना की है।
- राजस्थान का सबसे बड़ा पवन पार्क बड़ा बाग (जैसलमेर) में स्थित है।
- राज्य में रेलवे का पहला पवन ऊर्जा संयंत्र कोडियासार में स्थापित किया गया।
- राजस्थान में पवन ऊर्जा में सर्वाधिक योगदान सुजलॉन एनर्जी का है।



पवन ऊर्जा नीति

- इस नीति को राजस्थान पवन एवं हाईब्रिड ऊर्जा नीति-2019 के नाम से जाना जायेगा।
- यह नीति 18 दिसम्बर 2019 से लागू होगी और जब तक कोई अन्य नीति लागू नहीं होगी, तब तक लागू रहेगी।

लक्ष्य

- इस नीति के तहत राज्य में 2024-25 तक 3,500 मेगावाट पवन एवं हाइब्रिड ऊर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य हासिल करना है।

S.No.	Particulars	- Capacity
1.	Hybridization of existing Wind/Solar Plants	- 200 MW
2.	New Wind-Solar Hybrid Projects	- 2,000 MW
3.	Wind-Solar Hybrid with Storage Systems	- 500 MW
4.	Hybridization of existing Conventional Plants	- 800 MW

दृष्टि एवं उद्देश्य

- पवन ऊर्जा परियोजनाओं और आवश्यक भण्डारण प्रणालियों को बढ़ावा देना।
- पवन ऊर्जा परियोजनाओं की मरम्मत को बढ़ावा देना।
- अक्षय ऊर्जा एकीकरण के लिए राज्य में ट्रांसमिशन और वितरण नेटवर्क को मजबूत करना।
- पवन संसाधन आकलन कार्यक्रम को बढ़ावा देना।
- पवन ऊर्जा उपकरणों के निर्माण में उद्योगों को बढ़ावा देना।
- भूमि संसाधनों और पारेषण प्रणालियों के इष्टतम उपयोग के साथ ग्रिड सुरक्षा और स्थिरता की चुनौतियों का सामना करने के लिए पवन और सौर प्रौद्योगिकियों का हाइब्रिडाइजेशन।

राजस्थान रिन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन (आर.आर.ई.सी.) नोडल एजेंसी के रूप में निम्नलिखित कार्य करेगा

- परियोजनाओं का पंजीकरण
- परियोजनाओं की स्वीकृति
- पवन पार्कों का विकास
- सरकारी भूमि के आवंटन की सुविधा।

IV. बायोमास ऊर्जा :-

- राजस्थान में बायोमास ऊर्जा के मुख्य स्रोत सरसों का तेल, विलायती बबूल, चावल की भूसी हैं।
- बायोमास ऊर्जा की सर्वाधिक संभावनाएं श्री गंगानगर जिले में हैं।

प्रमुख बायोमास ऊर्जा संयंत्र :-

बायोमास संयंत्र	—	स्थान
पदमपुर (1st)	—	श्रीगंगानगर
खातोली	—	उनियारा, टोंक
रंगपुर	—	कोटा

चंदेरिया	–	चित्तौड़गढ़
संगरिया	–	हनुमानगढ़
कचेला – बागसरी	–	सांचोर, जालौर

बायोगैस ऊर्जा –

❖ बायोगैस ऊर्जा का मुख्य स्रोत –

- गाय का गोबर
- बायोगैस ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना उदयपुर जिला है।

❖ बायोगैस का रासायनिक संगठन –

- मिथेन – 65 प्रतिशत
- कार्बन डाइऑक्साइड – 30 प्रतिशत
- हाइड्रोजन – 2 प्रतिशत

बायोफ्यूल/बायोडीजल ऊर्जा

- डीजल के रूप में बायोफ्यूल ईंधन महत्वपूर्ण माना जाता है।
- बायोडीजल का मुख्य स्रोत "जेट्रोफा" है।
- राजस्थान में बायोडीजल के विकास के लिए, कलरावास (उदयपुर) में एक बायोडीजल रिफाइनरी स्थापित की गई है।
- राज्य में, एक बायोडीजल संयंत्र झामर – कोटरा, उदयपुर में स्थापित किया गया है।

ऊर्जा संबंधित संस्थान

1. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम –

- उद्देश्य – राज्य में गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का विकास और संरक्षण करना।
- स्थापना – 9 अगस्त, 2002
- राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम की स्थापना REDA एवं RSPCL द्वारा मिलाकर की गई है।

✓ REDA - Rajasthan Energy Development Agency : 1985

✓ RSPCL - Rajasthan State Power Corporation Limited : 1995

2. राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम – जयपुर

3. राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम – जयपुर

4. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम – जयपुर

5. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम – अजमेर

6. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम – जोधपुर

ऊर्जा संबंधित प्रमुख योजनाएँ –

1. उज्जवल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना –

- यह योजना भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय द्वारा 5 नवंबर, 2015 को शुरू की गई थी।
- इस योजना के तहत, भारत सरकार ने 27 जनवरी, 2016 को राज्य सरकार और प्रत्येक डिस्कॉम राज्य के साथ एक त्रिकोणीय एमओयू पर हस्ताक्षर किए।
- यह योजना राज्यों की बिजली वितरण कंपनियों के लिए वित्तीय बदलाव और पुनरुद्धार पैकेज है।
- समस्या का स्थायी समाधान सुनिश्चित करना।
- सभी के लिए लंबे समय तक सस्ती और सुलभ ऊर्जा 24 x 7

2. सौभाग्य योजना(प्रधानमंत्री सहज हर घर बिजली योजना) – 25 सितम्बर, 2017

- इस योजना का उद्देश्य हर गाँव के हर घर में सक्षम बिजली पहुँचाना है।
- गरीब लोगों को बिजली का मुफ्त कनेक्शन

3. कुसुम योजना –

- किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान योजना।
- प्रारंभ – 2018–19

➤ लक्ष्य – 30800 मेगावाट

➤ इस योजना के तहत 2022 तक 3 करोड़ सोलर पंप लगाए जाएंगे।

उद्देश्य –

1. किसान को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करना।

2. अतिरिक्त ऊर्जा को ग्रिड को वितरित की जा सकती है।

4. सौर रूफ-टॉप स्कीम –

शुरूआत–20 अगस्त 2019

अनुदान– 0-3 KW = 40%

3KW-10KW = 20%

ऊर्जा संबंधित महत्वपूर्ण दिन

➤ 20 अगस्त – अक्षय ऊर्जा दिवस

➤ 14 दिसम्बर – राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस

➤ अर्थ आवर डे – यह पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा की बचत का संदेश देने के लिए ऑस्ट्रेलिया से शुरू किया गया था जिसमें 2009 से भारत शामिल हुआ। इस दिन आवश्यक उपकरण को छोड़कर सभी उपकरणों को बंद करने की अपील की जाती है यह मार्च के किसी भी शनिवार को सांय 8:30 से 9:30 बजे के बीच मनाया जाता है।

जनसंख्या

जनगणना का इतिहास –

- प्राचीन काल – अर्थशास्त्र – चाणक्य (मौर्य काल)
- मध्य काल – आइने – अकबरी – अबुल फजल (मुगल काल)
- आधुनिक काल – 1872 लॉर्ड मेयो द्वारा आधुनिक जनगणना की शुरुआत

नोट:–

- 1881 में लार्ड रिपन के काल में व्यवस्थित और दशकीय जनगणना की शुरुआत हुई।
- जनगणना संघ सूची का विषय है। यह संविधान की 7 वीं अनुसूची में शामिल है।
- 1948 में, जनसंख्या जनगणना अधिनियम पारित किया गया था।
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग का गठन 1993 में किया गया था।
- जनगणना गृह मंत्रालय के जनगणना विभाग द्वारा करवाई जाती है।

जनगणना 2011

- क्रमानुसार – 15th
- व्यवस्थित/दशकीय – 14th
- स्वतंत्रता के बाद – 7th
- 21 वीं शताब्दी की – 2nd
- 15वीं जनगणना बजट – 2200 करोड़
- प्रति व्यक्ति लागत – 18.19 रुपये
- 2011 की जनगणना में शामिल कुल जिले – 640 (राजस्थान – 33 जिले)
- जनगणना शुभंकर – प्रगणक शिक्षिका
- जनगणना आदर्श वाक्य – “हमारी जनगणना, हमारा भविष्य”

❖ विशेष बिंदु –

- (1) राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर पहली बार बनाया गया है।
- (2) प्रथम बार घरों की जनगणना
- (3) किन्नरों को जनगणना में पहली बार शामिल किया गया उनकी गिनती पुरुष वर्ग में की गयी।
- (4) प्रथम पेपरलेस जनगणना।
- (5) जातीय जनगणना दूसरी बार 2011 में की गई। (प्रथम बार – 1931)
- (6) 2011 की जनगणना दो चरणों में संपन्न हुई –
 - ✓ पहला चरण – 15 मई से 30 जून, 2010
 - ✓ दूसरा चरण – 9 फरवरी से 28 फरवरी, 2011

1. कुल जनसंख्या –

➤ भारत की कुल जनसंख्या – 121.085 करोड़

राजस्थान की कुल जनसंख्या – 6.85 करोड़ (पुरुष–51.86% एवं महिलाएँ–48.14%)

सर्वाधिक	न्यूनतम
1. जयपुर – 66.26 लाख	1. जैसलमेर – 6.69 लाख
2. जोधपुर – 36.87 लाख	2. प्रतापगढ़ – 8.67 लाख
3. अलवर – 36.74 लाख	3. सिरोही – 10.36 लाख
4. नागौर – 33.07 लाख	4. बून्दी – 11.10 लाख
5. उदयपुर – 30.68 लाख	5. राजसमंद – 11.56 लाख

- राजस्थान में भारत की कुल जनसंख्या का 5.67 प्रतिशत और विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1 प्रतिशत हिस्सा है।
- 2011 के अनुसार, जनसंख्या की दृष्टि से 8वां स्थान रखता है। लेकिन वर्तमान में राजस्थान भारत में 7वाँ स्थान रखता है।
- शिशु जनसंख्या (0–6 वर्ष) राजस्थान की कुल जनसंख्या का 15.54 प्रतिशत है।

2. कुल जनसंख्या –

जनसंख्या वृद्धि दर – 21.30 प्रतिशत

सर्वाधिक	न्यूनतम
(1) बाड़मेर – 32.5 प्रतिशत	(1) श्री गंगानगर – 10 प्रतिशत
(2) जैसलमेर – 31.8 प्रतिशत	(2) झुंझुनूं – 11.7 प्रतिशत
(3) जोधपुर – 27.7 प्रतिशत	(3) पाली – 11.9 प्रतिशत
(4) बांसवाड़ा – 26.58 प्रतिशत	(4) बून्दी – 15.4 प्रतिशत

ग्रामीण (19 प्रतिशत) व नगरीय (29 प्रतिशत) जनसंख्या वृद्धि दर

सर्वाधिक		न्यूनतम	
ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय
(1) जैसलमेर	(1) अलवर	(1) कोटा	(1) डूंगरपुर
(2) बाड़मेर	(2) दौसा	(2) श्री गंगानगर	(2) प्रतापगढ़
(3) बांसवाड़ा	(3) बारां	(3) झुंझुनूं	(3) हनुमानगढ़

- राजस्थान में सर्वाधिक ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर 1911–21 (-6.29 प्रतिशत) के दशक में रही। इसे 'जनसंख्या विभाजक दशक' कहा जाता है।
- राजस्थान में 1911 – 21, दशक में जनसंख्या घटने का कारण –
 1. प्लेग माहमारी
 2. प्रथम विश्व युद्ध
 3. राष्ट्रीय आंदोलनों की शुरुआत
- राजस्थान की जनसंख्या की वृद्धि दर में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज – 1971–81 (32.97 प्रतिशत)
- 1991–2001 में राजस्थान की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की गई।

3. जनसंख्या घनत्व :-

जनसंख्या घनत्व 200	
सर्वाधिक	सबसे कम
1. जयपुर - 595	1. जैसलमेर - 17
2. भरतपुर - 503	2. बीकानेर - 78
3. दौसा - 476	3. बाड़मेर - 92
4. अलवर - 438	4. चूरु - 147

❖ 100 से कम जनसंख्या घनत्व वाले जिले - जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर

✓ मरुस्थलीय जिलों (पश्चिमी राजस्थान) में जनसंख्या घनत्व सबसे कम मिलता है।

4. लिंगानुपात -

➤ प्रति हजार पुरुषों की संख्या पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात कहा जाता है।

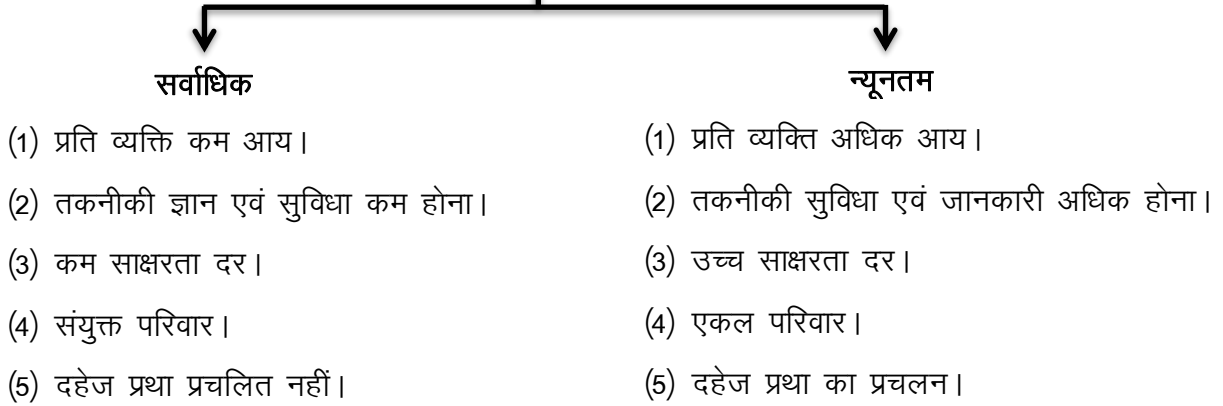
कुल औसत लिंगानुपात - 928

सर्वाधिक	न्यूनतम
(1) डूंगरपुर - 994	(1) धौलपुर - 846
(2) राजसमंद - 990	(2) जैसलमेर - 852
(3) पाली - 987	(3) करौली - 861
(4) प्रतापगढ़ - 983	(4) भरतपुर - 880

राज्य में लिंगानुपात

ग्रामीण 933		शहरी 914	
सर्वाधिक	न्यूनतम	सर्वाधिक	न्यूनतम
1. पाली - 1003	1. धौलपुर - 841	1. टोंक - 985	1. जैसलमेर - 807
2. राजसमंद - 998	2. करौली - 856	2. बाँसवाड़ा - 964	2. धौलपुर - 864
3. डूंगरपुर - 996	3. जैसलमेर - 859	3. प्रतापगढ़ - 963	3. अलवर - 872

न्यूनतम और अधिकतम लिंगानुपात के पीछे कारण

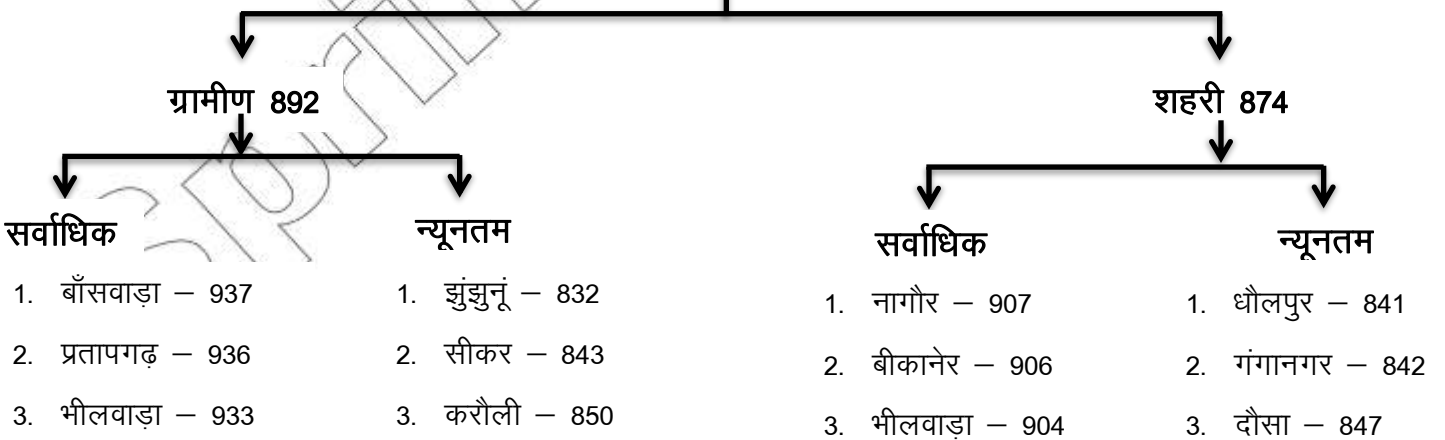


शिशु लिंगानुपात -

शिशु लिंगानुपात



राज्य में शिशु लिंगानुपात



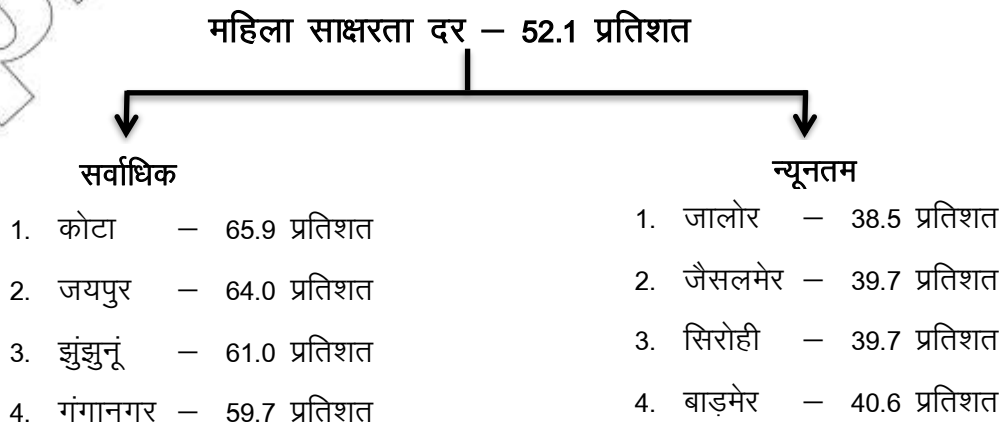
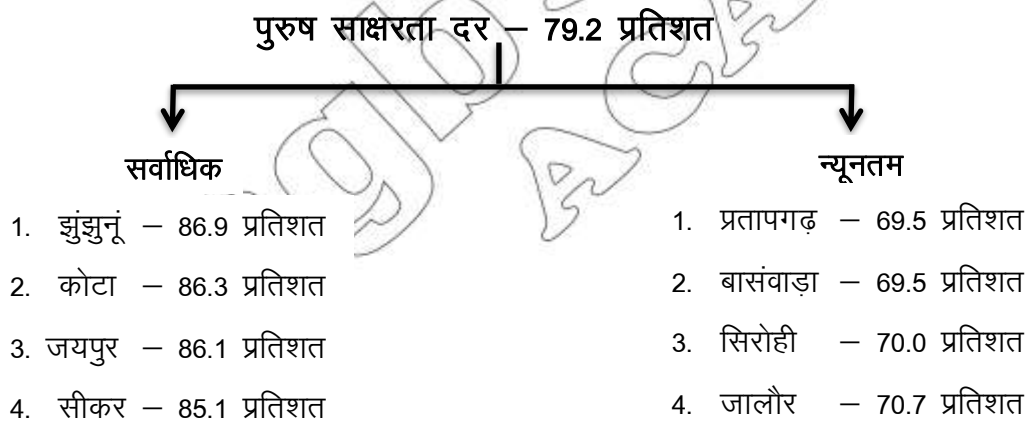
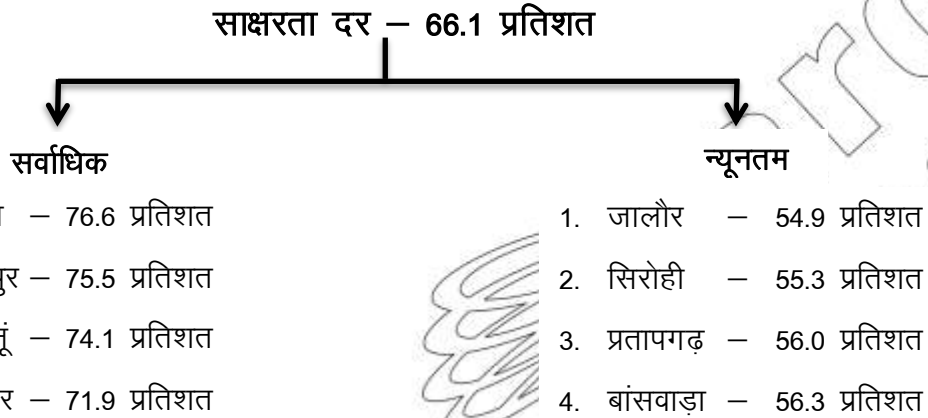
नोट:-

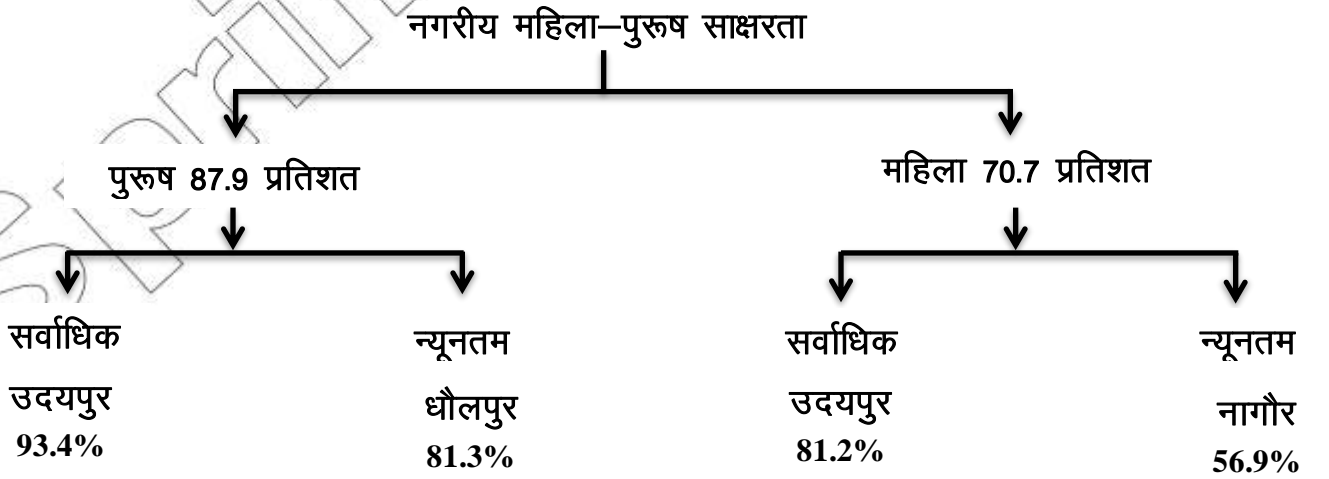
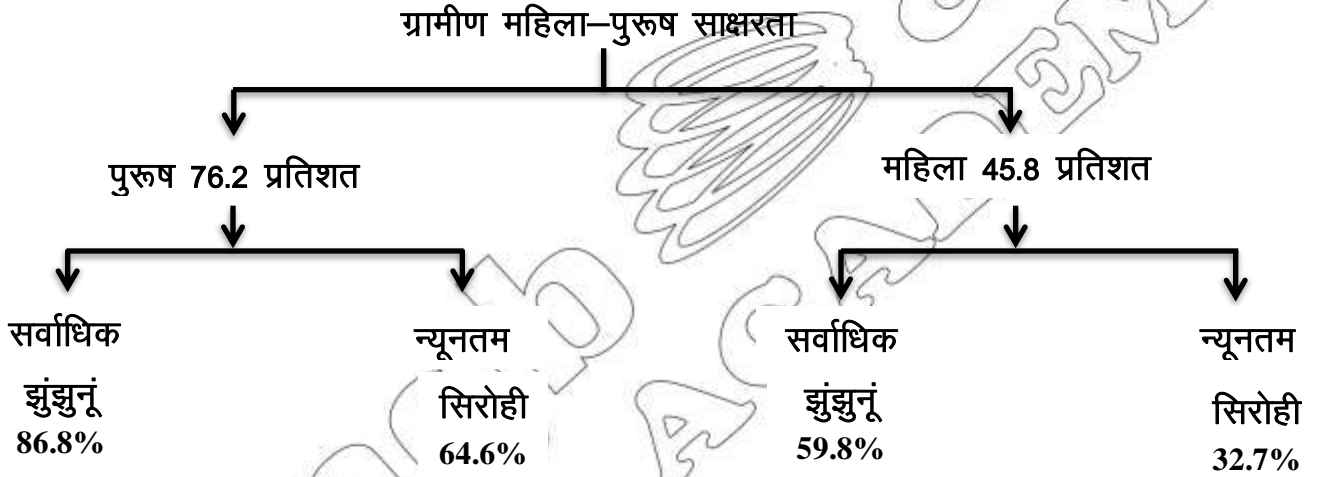
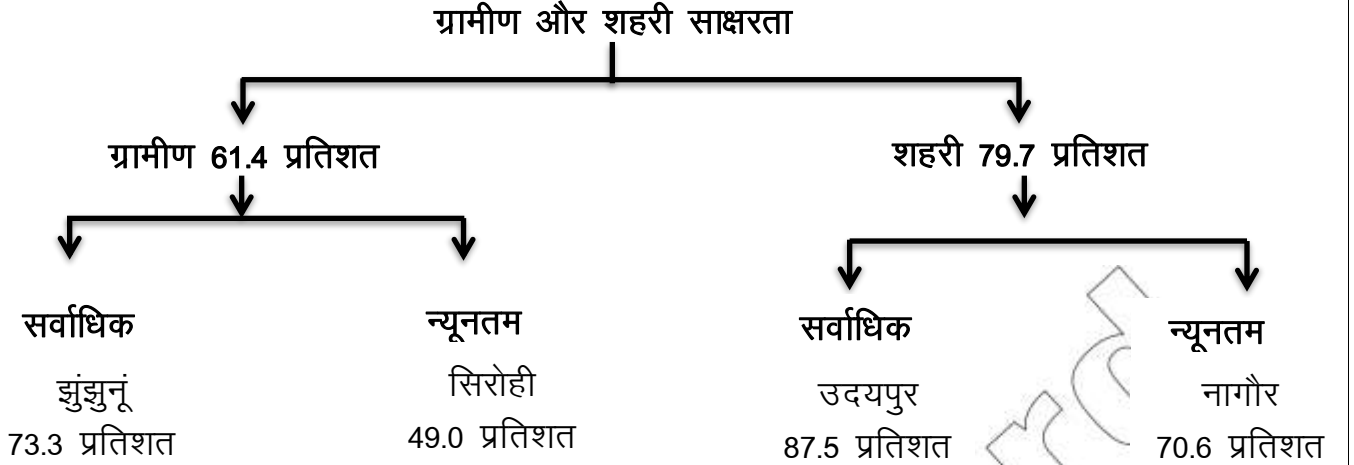
➤ राजस्थान के सभी जिलों में लिंगानुपात 1000 से कम है।

- राजस्थान का औसत लिंगानुपात (928) भारत के औसत लिंगानुपात (943) से कम है।
- राजस्थान में सामान्य लिंगानुपात में औसत लिंगानुपात से कम वाले जिलें – 15 हैं।
- राजस्थान में शिशु लिंगानुपात में औसत शिशु लिंगानुपात से कम वाले जिलें – 12 हैं।

5. साक्षरता :-

- 6 वर्ष से अधिक का व्यक्ति जिसे अक्षर ज्ञान हो। उसे साक्षर कहा जाता है।

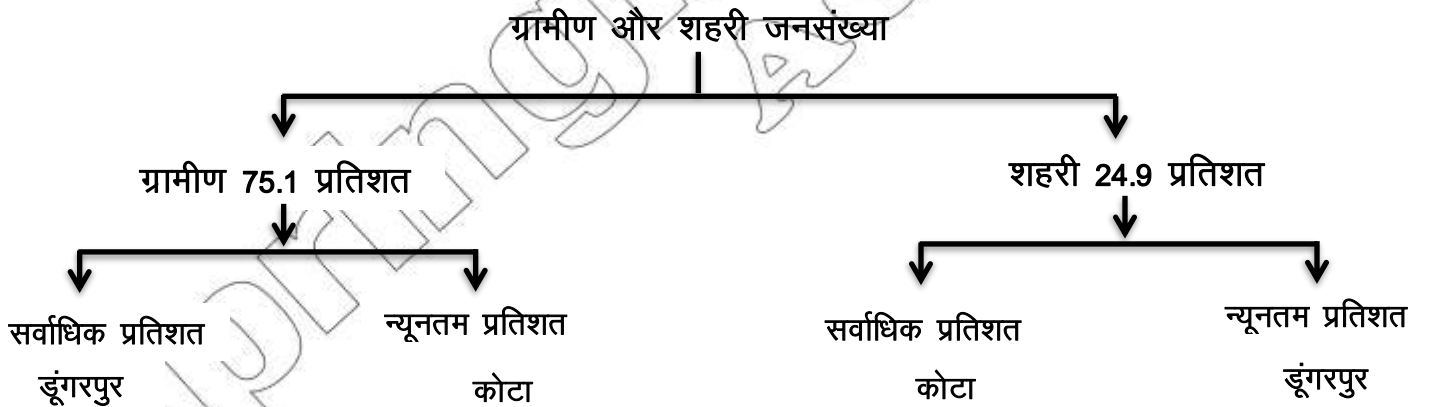
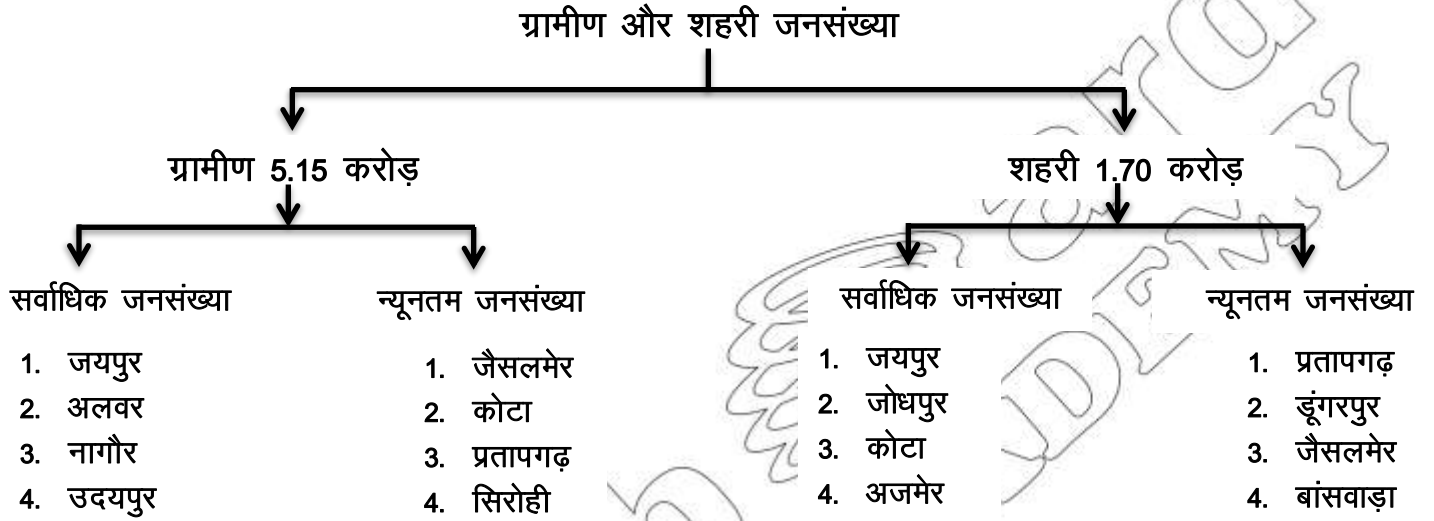




नोट:-

- बाड़मेर और चूरु में साक्षरता दर में कमी आई है, शेष सभी जिलों ने साक्षरता दर में वृद्धि हुई है।
- राजस्थान में पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच का अंतर सर्वाधिक है।
- राजस्थान में औसत साक्षरता (66.1 प्रतिशत) से कम साक्षरता वाले जिलें - 19 हैं।

6. ग्रामीण और शहरी जनसंख्या



7. राजस्थान में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति

	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
प्रतिशत	17.8 प्रतिशत	13.5 प्रतिशत
कुल जनसंख्या	122.21 लाख	92.38 लाख
सर्वाधिक जनसंख्या	1. जयपुर 2. श्री गंगानगर	1. उदयपुर, 2. बांसवाड़ा
सर्वाधिक प्रतिशत	1. श्री गंगानगर 2. हनुमानगढ़	1. बांसवाड़ा, 2. डूंगरपुर
न्यूनतम जनसंख्या	1. डूंगरपुर 2. प्रतापगढ़	1. बीकानेर 2. नागौर
न्यूनतम प्रतिशत	1. डूंगरपुर 2. बांसवाड़ा	1. नागौर 2. बीकानेर
लिंगानुपात	923	948

8. राजस्थान में विभिन्न धर्मों की जनसंख्या

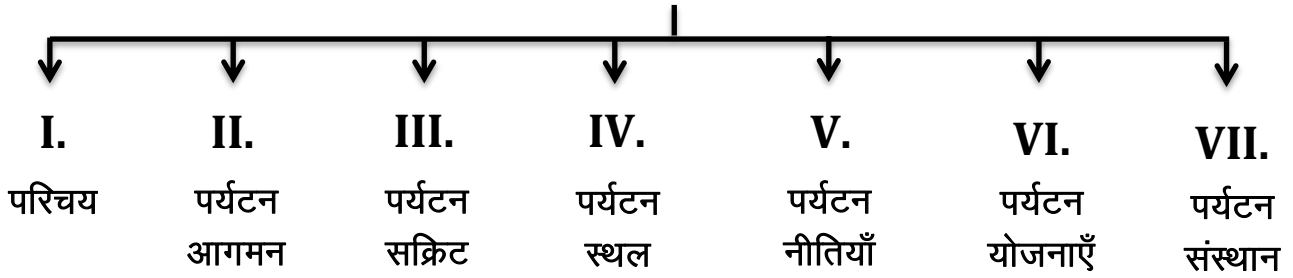
राजस्थान में विभिन्न धर्मों की जनसंख्या			
धर्म	प्रतिशत	सर्वाधिक जनसंख्या	सर्वाधिक प्रतिशत
हिन्दू	88.49 प्रतिशत	जयपुर	दौसा
मुस्लिम	9.07 प्रतिशत	जयपुर	जैसलमेर
सिख	1.27 प्रतिशत	श्री गंगानगर	श्री गंगानगर
जैन	0.91 प्रतिशत	जयपुर	उदयपुर
ईसाई	0.14 प्रतिशत	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा
बौद्ध	0.02 प्रतिशत	अलवर	अलवर

नोट:- राजस्थान राज्य की जनसंख्या नीति – 20 जनवरी, 2000

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति – 15 फरवरी, 2000

पर्यटन

पर्यटन



I. परिचय

- मोहम्मद युनुस समिति की सिफारिश पर 4 मार्च, 1989 को पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया।
- 2004-05 में पर्यटन को "जन-उद्योग" का दर्जा दिया गया।
- राजस्थान में 4 पर्यटन संभाग हैं- 1. जोधपुर 2. अजमेर 3. उदयपुर 4. कोटा
- राजस्थान पर्यटन की टैग लाईन "राजस्थान – भारत का अतुल्य राज्य"
- पर्यटन विभाग का स्लोगन "पधारो म्हारे देस"
- पर्यटन स्लोगन के साथ प्रतीकात्मक पशु "ऊँट" को दर्शाया गया है।

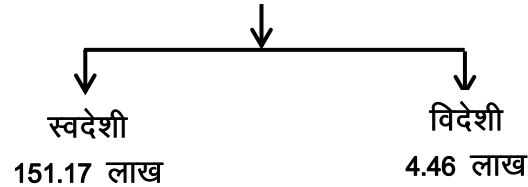


RAJASTHAN

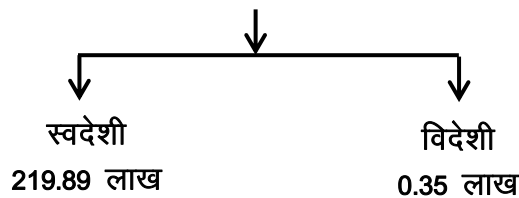
The Incredible State of India !

II. पर्यटन आगमन

- वर्ष 2020 में राजस्थान में कुल पर्यटन आगमन – 155.63 लाख



- वर्ष 2021 में राजस्थान में कुल पर्यटन आगमन – 220.24 लाख



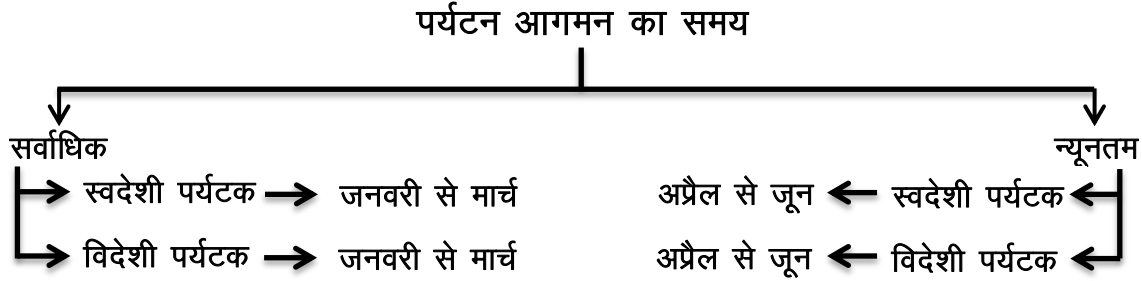
- स्वदेशी पर्यटकों में 2020-21 में 45.46 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि विदेशी पर्यटकों में 92.15 प्रतिशत की कमी हुई है।

➤ 2020 में राजस्थान में विदेशी पर्यटकों का सर्वाधिक आगमन –

1. फ्रांस-14 प्रतिशत 2. यू.के.-12 प्रतिशत 3. यू.एस.ए.-11 प्रतिशत 4. जर्मनी-7 प्रतिशत

➤ स्वदेशी पर्यटकों का सर्वाधिक आगमन गुजरात से होता है।

➤ वर्तमान में देश में आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान में आता है।



➤ नोट:-

✓ राजस्थान में स्वदेशी पर्यटकों का सर्वाधिक आगमन – Ist अजमेर IInd पुष्कर

✓ राजस्थान में विदेशी पर्यटकों का सर्वाधिक आगमन – Ist जयपुर IInd उदयपुर

III. पर्यटन सर्किट :-

- | | |
|--------------------------|-----------------------|
| A. सामान्य पर्यटन सर्किट | B. पुरातत्व सर्किट |
| C. ईको एडवेंचर सर्किट | D. वाईल्ड लाईफ सर्किट |
| E. ट्राइबल पर्यटन सर्किट | F. आध्यात्मिक सर्किट |

A. सामान्य पर्यटन सर्किट

➤ पर्यटन विकास के आधार पर राजस्थान को 10 पर्यटन सर्किटों में बाँटा गया है।

- | | |
|--------------------|---|
| 1. शेखावाटी | – चुरू, सीकर, झुंझुनू |
| 2. अलवर सर्किट | – अलवर (सिलीसेढ़-सरिस्का) |
| 3. भरतपुर सर्किट | – भरतपुर, डीग, धौलपुर |
| 4. ढूँढाड सर्किट | – जयपुर, आमेर, सामोद, रामगढ़, दौसा, आभानेरी |
| 5. रणथम्भौर सर्किट | – रणथम्भौर, सवाईमाधोपुर-टोंक |

6. हाड़ौती सर्किट – कोटा, बूँदी, झालावाड़
7. मेवाड़ सर्किट – उदयपुर, चित्तौडगढ़, कुम्भलगढ़, नाथद्वारा
8. माउंट आबू सर्किट – माउंट आबू, रणकपुर, जालौर
9. मेरवाड़ा सर्किट – अजमेर, पुष्कर, नागौर, मेड़ता
10. मरू त्रिकोण – बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर

➤ **नोट:- स्वर्णिम त्रिकोण (Golden Triangle)** – जयपुर, दिल्ली, आगरा पर्यटन केंद्रों को कहा जाता है।

B. पुरातत्व सर्किट

➤ राजस्थान के सातों संभाग मुख्यालयों को पुरातत्व सर्किट बनाया गया है।

1. जोधपुर सर्किट
2. अजमेर सर्किट
3. जयपुर सर्किट
4. बीकानेर सर्किट
5. उदयपुर सर्किट
6. कोटा सर्किट
7. भरतपुर सर्किट

C. ईको एडवेंचर सर्किट

➤ इसमें राजस्थान के 10 जिलों को शामिल किया गया है जिसमें जयपुर, अलवर, धौलपुर, कोटा, उदयपुर, चित्तौडगढ़, राजसमंद, जैसलमेर, जोधपुर, सिरोही शामिल है।

D. वाईल्ड लाईफ सर्किट

➤ इसमें अलवर, करौली, धौलपुर, जयपुर, सिरोही, राजसमंद एवं प्रतापगढ़ को शामिल किया गया है।

E. ट्राइबल पर्यटन सर्किट

➤ इसमें बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ एवं उदयपुर को शामिल किया गया है।

F. आध्यात्मिक सर्किट

1. **बुद्धा सर्किट :-** जयपुर, झालावाड़ जिलों में बौद्ध धर्म के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बौद्ध धर्म से संबंधित स्थानों का विकास किया गया है।

2. **कृष्णा सर्किट :-** स्वदेश दर्शन योजना 2014-15 केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय के अनुसार देश के 5 राज्यों (उत्तरप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, ओड़िशा) में 12 कृष्णा स्थलों का पर्यटन की दृष्टि से विकास किया जाएगा।

➤ राजस्थान में शामिल मंदिर

- ✓ राजसमंद – श्रीनाथ जी
- ✓ जयपुर – गोविन्द देवजी, गलता जी, कनक वृंदावन
- ✓ सीकर – खाटूश्यामजी

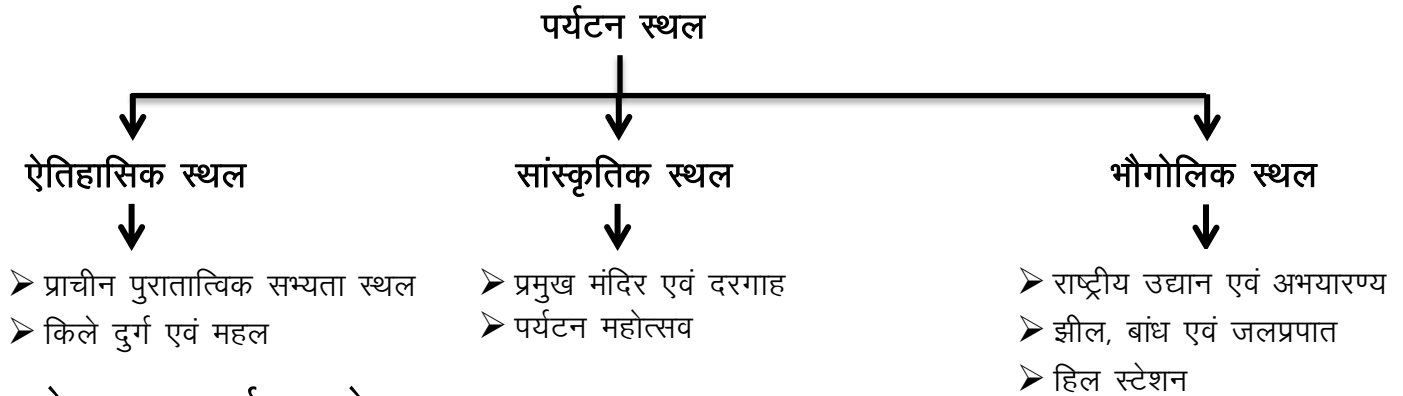
3. **बालाजी सर्किट :-**

➤ राजस्थान में बालाजी सर्किट में शामिल प्रमुख मंदिर –

- ✓ सालासर – चुरु
- ✓ पांडुपोल – अलवर
- ✓ मेहंदीपुर – दौसा
- ✓ सामोद वीर हनुमान मंदिर – जयपुर

4. **तीर्थ सर्किट :-** इसमें अजमेर, पुष्कर, नाथद्वारा एवं महावीर जी (करौली) को शामिल किया गया है।

IV. पर्यटन स्थल



नोट:- प्रमुख पर्यटन महोत्सव :-

जनवरी		
➤ ऊंट महोत्सव	-	बीकानेर
➤ जयपुर लिट्रेचर फेस्टिवल	-	डिग्गी पैलेस (जयपुर)

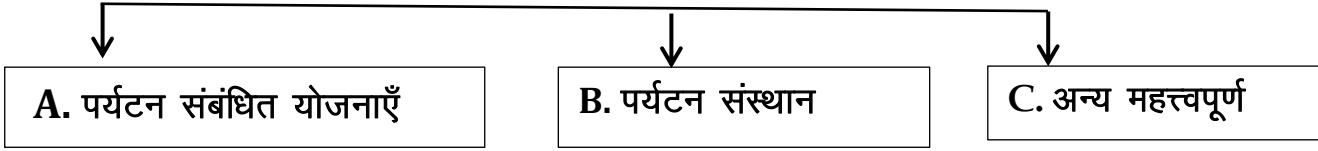
फरवरी		
➤ बेणेश्वर मेला	—	डूंगरपुर
➤ मरू महोत्सव	—	जैसलमेर
➤ उदयपुर वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल	—	उदयपुर
मार्च		
➤ ब्रज महोत्सव	—	भरतपुर
➤ धुलण्डी महोत्सव	—	होली के अगले दिन
➤ राजस्थान महोत्सव	—	27 से 30 मार्च
अप्रैल		
➤ गणगौर उत्सव	—	जयपुर का प्रसिद्ध
➤ मेवाड़ महोत्सव	—	उदयपुर
मई		
➤ ग्रीष्म उत्सव	—	माउण्ट आबू
अगस्त		
➤ तीज उत्सव	—	श्रावण शुक्ल तृतीया (जयपुर)
➤ कजली तीज	—	भाद्रपद कृष्ण तृतीया (बूँदी)
अक्टूबर		
➤ राजस्थान कबीर यात्रा	—	बीकानेर क्षेत्र में
➤ आभानेरी उत्सव	—	दौसा
➤ मारवाड़ उत्सव (मांड उत्सव)	—	जोधपुर
अक्टूबर – नवम्बर		
➤ दशहरा उत्सव	—	कोटा
➤ पुष्कर उत्सव	—	अजमेर
➤ कोलायत मेला	—	बीकानेर
➤ मत्स्य महोत्सव	—	अलवर
➤ चन्द्रभागा महोत्सव	—	झालावाड़
➤ बूँदी उत्सव	—	बूँदी
दिसम्बर		
➤ कुम्भलगढ़ उत्सव	—	(1–3 दिसम्बर) राजसमंद
➤ रणकपुर उत्सव	—	(21–22 दिसम्बर) पाली

➤ शीतकालीन उत्सव	—	(29–30 दिसम्बर) माउण्ट आबू
------------------	---	----------------------------

V. पर्यटन नीतियाँ :-

- राजस्थान पर्यटन नीति जारी करने वाला देश का प्रथम राज्य है।
- राजस्थान की पर्यटन नीतियाँ – (1) 2001 (2) 2007 (3) 2015 (4) 9 सितम्बर 2020
- राजस्थान की ईको टूरिज्म पॉलिसी :- 1st - 4 फरवरी 2010, 2nd - 15 जुलाई, 2021
- राजस्थान होटल पॉलिसी – 2006

पर्यटन



A. पर्यटन संबंधित योजनाएँ

1. पेइंग गेस्ट योजना :-

- शुरुआत :- 27 सितम्बर 1991
- 2012 में इसे सम्पूर्ण राज्य में लागू कर दिया गया।

2. हेरिटेज होटल योजना :-

- 1991 में भारत सरकार द्वारा हेरिटेज होटल की नवीन श्रेणी को मान्यता दी।
- हेरिटेज के लिए आवश्यक शर्तें :-
 - ✓ 50 वर्ष से पुरानी इमारतों जैसे-किलों, महलों, हवेलियों एवं दुर्गों को बनाया जाता है।
 - ✓ हेरिटेज होटलों को सेवा एवं सुविधाओं के आधार पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है - 1. हेरिटेज 2. हेरिटेज क्लासिक 3. हेरिटेज ग्रैंड इत्यादि।
- नोट:- राजस्थान में 'अजीत भवन (जोधपुर)' को देश का प्रथम हेरिटेज होटल बनाया गया।

3. मेवाड़ कॉम्प्लेक्स योजना/मेवाड़ संकुल -

- महाराणा प्रताप की 400वीं पुण्यतिथि (1997) पर उनके जीवन से संबंधित स्थानों (गोगुन्दा, चावंड, दिवेर, हल्दीघाटी) का पर्यटन की दृष्टि से विकास करना।

4. वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना :-

- देवस्थान विभाग द्वारा शुरू की गई।
- शुरुआत - 2013

5. हृदय योजना (HRIDAY-Heritage City Development and Augmentation Yojana) :-

- शुरुआत - 2015
- उद्देश्य - देश के राष्ट्रीय विरासत स्थलों के विकास एवं संवर्द्धन के लिए चलाई गई योजना।
- इसमें राजस्थान के **अजमेर** को शामिल किया गया।

6. प्रसाद योजना(PRASHAD - 'Pilgrimage Rejuvenation And Spiritual Augmentation Drive'):-

- शुरुआत – जनवरी 2015
- पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा शुरु।
- यह तीर्थ स्थलों, आध्यात्मिक एवं विरासत स्थलों के परिवर्धन के लिए शुरु।
- इस योजना के तहत राजस्थान में अजमेर-पुष्कर का विकास किया जायेगा।

7. गेस्ट हाउस पॉलिसी

- शुरुआत – 16 अप्रैल 2021

प्रावधान-

- गेस्ट हाउस स्कीम केवल शहरी क्षेत्र के लिए लागू की गई।
- गेस्ट हाउस चलाने के लिए कम से कम 6 न्यूनतम

B. पर्यटन संस्थान :-

1. पर्यटन विभाग-

- स्थापना – 1956 (जयपुर)
- पर्यटन संबंधित गतिविधियों के संचालन हेतु।
- पर्यटन विभाग के द्वारा मानव संसाधन विकास के लिए संचालित प्रशिक्षण संस्थान-
 1. होटल प्रबंध संस्थान – जोधपुर, उदयपुर, जयपुर
 2. फूड क्राफ्ट संस्थान – अजमेर, सुमेरपुर (पाली)
- पर्यटन विभाग के राज्य के बाहर देश में प्रमुख 4 महानगरों में पर्यटक स्वागत/सूचना केन्द्र है- 1. दिल्ली 2. कोलकाता 3. चेन्नई 4. मुंबई
- राज्य में पर्यटन विभाग के सूचना केन्द्रों की संख्या 42 है।
- पर्यटन विभाग के अधीन संचालित संस्थान – 4
 1. राजस्थान राज्य होटल निगम लिमिटेड (RSHC)
 - स्थापना – 7 जून 1965 (जयपुर)
 2. राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (RTDC) :-
 - स्थापना – 1 अप्रैल, 1979 (जयपुर)
 - उद्देश्य – पर्यटकों को आवास, भोजन एवं यातायात सुविधाएं उपलब्ध करवाना।
 3. राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेंट (RITTMAN) :-
 - स्थापना – 29 अप्रैल, 1996 (जयपुर)
 - उद्देश्य – पर्यटन गतिविधियों को बढ़ाने के लिए संसाधनों का विकास एवं पर्यटन संबंधित नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाना।

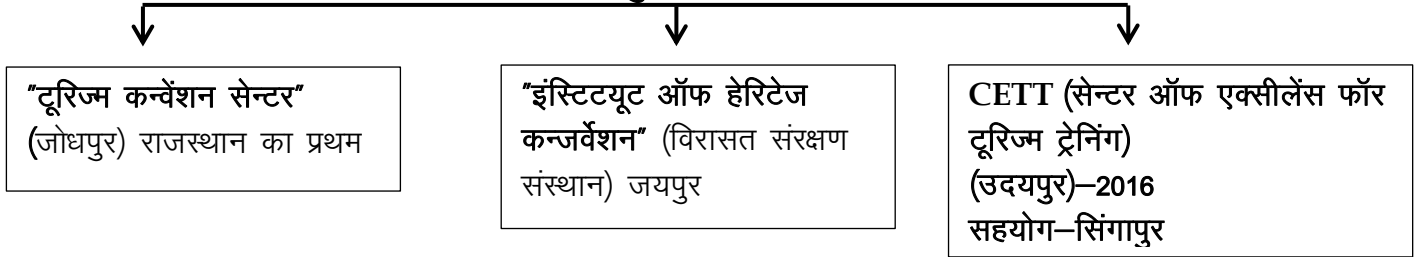
4. राज्य मेला प्राधिकरण –

- देवस्थान विभाग के अधीन 2011 में गठन।
- दिसम्बर 2019 तक 42 मेले पंजीकृत हैं।

C. अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दू –

- राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का लगभग 15 प्रतिशत योगदान है।
- बजट 2020–21 में “पर्यटन विकास कोष” के लिए 500 करोड़ की घोषणा की। जिसे बजट 2021–22 में बढ़ाकर 1000 करोड़ कर दिया गया।
- ढोला मारु टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स (जैसलमेर)

प्रमुख संस्थान



- नोट:– विश्व पर्यटन दिवस – 27 सितम्बर